प्रज्वल पराजुली द्वारा रचित ‘द गोर्खास डॉटर’ का हिंदी अनुवाद एवं नेपाली अस्मिता के विशेष संदर्भ में नेपाली कथा-साहित्य का अध्ययन

(PRAJWAL PARAJULY DWARA RACHIT ‘THE GURKHA’S DAUGHTER’ KA HINDI ANUVAD EVAM NEPALI ASMITA KE VISHESH SANDARBHA MEIN NEPALI KATHA SAHITYA KA ADHYAYAN)

(HINDI TRANSLATION OF ‘THE GURKHA’S DAUGHTER’ WRITTEN BY PRAJWAL PARAJULY AND THE STUDY OF NEPALI FICTION WITH SPECIAL REFERENCE TO NEPALI IDENTITY)

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

शोध निर्देशक
प्रो. देवशंकर नवीन

शोधार्थी
लखिमा देउरी

भारतीय भाषा केंद्र
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110067

2017

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
भारतीय भाषा केन्द्र
Centre of Indian Languages
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
School of Language, Literature & Culture Studies
नई दिल्ली–110067, भारत NEW DELHI-110067, INDIA

Date: 21 / 07 /2017

DECLARATION

I hereby declare that the research work done in this Ph.D. thesis entitled "**PRAJWAL PARAJULY DWARA RACHIT 'THE GURKHA'S DAUGHTER' KA HINDI ANUVAD EVAM NEPALI ASMITA KE VISHESH SANDARBHA MEIN NEPALI KATHA SAHITYA KA ADHYAYAN" [HINDI TRANSLATION OF 'THE GURKHA'S DAUGHTER' WRITTEN BY PRAJWAL PARAJULY AND THE STUDY OF NEPALI FICTION WITH SPECIAL REFERENCE TO NEPALI IDENTITY]** submitted by me is an original research work and has not been previously submitted for any other degree in this or any other University/Institution.

Lakhima Deori

Lakhima Deori
(Research Scholar)

Prof. Deo Shankar Navin
(Supervisor)
CIL/SLL&CS/JNU

Dr. Deo Shankar Navin
Professor
Centre of Indian Languages
School of Language, Literature & Culture Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi-110 067

Prof. Gobind Prasad
(Chairperson)
CIL/SLL&CS/JNU

अध्यक्ष / Chairperson
भारतीय भाषा केन्द्र / CIL
भा.,सा० एवं सं.,अ०सं० / SLL&CS
ज०ने०वि० / J.N.U
नई दिल्ली / New Delhi-110067

GRAM: JAYENU, Tel.: (91-011) 26741557, 26742676 Extn.: 4217, (D) 26704217; Telefax: (91-011) 26704217
Email: chair_cil@mail.jnu.ac.in, jnucil@gmail.com

विषय – सूची

प्रस्तावना	i-v
पहला अध्याय : लेखक एवं कृति का परिचय	**001**
1.1 प्रज्वल पराजुली का जीवन परिचय	
1.2 प्रज्वल पराजुली का लेखन विषय	
1.3 *द गोर्खास डॉटर* कहानी-संग्रह की अंतर्वस्तु	
दूसरा अध्याय : प्रज्वल पराजुली के लेखन में नेपाली अस्मिता के प्रश्न	**012**
2.1 भारतीय नेपाली और नेपाल के नेपाली में अंतर	
2.2 नेपाली अस्मिता के प्रश्नों पर चर्चा	
2.3 मूल पाठ में निहित सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याएँ	
तीसरा अध्याय : *द गोर्खास डॉटर का हिंदी अनुवाद*	**034**
चौथा अध्याय : मूल एवं लक्ष्य पाठ में अनुवाद से जुड़ी समस्याएँ	**230**
4.1 सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण : सांस्कृतिक प्रतीक, रीति-रिवाज़, स्थानीय विशिष्टता आदि का व्याख्यात्मक विवेचन	
4.2 भाषागत संरचनाओं के अनुवाद की समस्याएँ	
4.3 समतुल्यता के आधार पर मूल एवं लक्ष्य पाठ का विश्लेषण	
उपसंहार	**266**
संदर्भ ग्रंथ-सूची	**270**
परिशिष्ट	

प्रस्तावना

अनुवाद एक स्वतंत्र साहित्यिक एवं सृजनात्मक विधा के रूप में स्थापित हो चुका है। जिस गति से ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र विस्तृत हो रहा है, हमारी सृजनात्मक दृष्टि का भी विस्तार होता जा रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो एक विश्वव्यापी दृष्टि संभव होती जा रही है। वैज्ञानिक, वाणिज्यिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक तथा साहित्यिक आदान-प्रदान के कारण मानवीय जीवन मूल्यों एवं अंतर्राष्ट्रीय विचार-विमर्श में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। इन महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों के अविर्भाव में निःसंदेह अनुवाद का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। अनुवाद एक अत्यंत ही रोचक विधा है। अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है, जो भिन्न-भिन्न रूपों में प्रत्येक स्थान पर व्याप्त है। किसी भी वस्तु के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष ज्ञान के अमूर्त्त बिम्बों को शब्दों, प्रतीकों, संकेतों को लिखित एवं मौखिक किसी भी रूप में अभिव्यक्त करने का नाम ही अनुवाद है। दुनिया की किसी भी भाषा में उस भाषा को बोलने वाले समाज की संस्कृति मौजूद होती है और प्रत्येक भाषा में अभिव्यक्ति की एक विशेष शैली का प्रयोग किया जाता है। इसी अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को अनुवाद कहते हैं। अनुवाद के माध्यम से हम विश्व-संस्कृति की कल्पना कर सकते हैं।

प्रस्तुत शोध में भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य के लेखक प्रज्वल पराजुली की रचना द *गोर्खास डॉटर* का हिंदी अनुवाद किया गया है और साथ ही भारतीय नेपाली अस्मिता के विषय पर चर्चा की गई है। प्रज्वल पराजुली ने भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य को अपनी प्रतिभा से समृद्ध किया है। उनकी कृतियाँ, पाठकों के मानस को विशेष तौर पर प्रभावित करती हैं। प्रज्वल पराजुली की रूचि मानव मन के भीतरी संघर्ष को चित्रित करने में अधिक है। द *गोर्खास डॉटर* कहानी-संग्रह का नेपाली समाज के प्रति योगदान सराहनीय है। प्रज्वल पराजुली के लेखन की एक विशेषता यह है कि वे आदर्शोन्मुख-सामाजिक कृतियाँ लिखते हैं। उन्होंने इस कृति में मध्यवर्गीय समाज के जीवन के हर पहलुओं की शाश्वत समस्याओं के यथार्थ पक्ष का उद्घाटन किया है। साथ ही युगीन परिवेश के अनुरूप नवीन जीवन मूल्यों को आत्मसात करने की आग्रहशील दृष्टि प्रदान की है। प्रज्वल पराजुली ने अपनी कृति में बहुत ही महत्त्वपूर्ण मुद्दों को उठाया है। उनकी लेखन शैली बहुत ही रोचक, अभिव्यंजक तथा भावपूर्ण है। नेपाली समाज के लोगों की भावनाओं को उभारने में ये कहानियाँ सक्षम हुई है। यह कहानियाँ बहुत ही मौलिक है एवं व्यावहारिक जीवन का चित्र खींचती है। इन कहानियों में नेपाली समाज एवं संस्कृति में व्याप्त समस्याओं, राजनीतिक भ्रष्टाचार, दलित शोषण, आदिवासी शोषण, नेपाली प्रवासी, विस्थापित नेपाली आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही, पश्चिम की ओर नेपालियों के पलायन के विषय को भी उभारा गया है। कहानियों में मुख्य रूप से पात्रों पर बल दिया गया है, जिससे घरेलू घटनाओं पर ध्यान जाता है। ये कहानियाँ लोगों के मन में नेपाली लोगों के प्रति परिकल्पना तथा रूढ़िबद्धता को दूर करने में सहायक हुई हैं।

प्रज्वल पराजुली की रचना को शोध का विषय बनाने का प्रमुख कारण यह रहा है कि इसकी विषयवस्तु ज्वलंत एवं प्रासंगिक पहलुओं से जुड़ा हुआ है। इनकी रचना *द गोर्खास डॉटर* नेपाली समाज का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करने में सक्षम है। मुख्यतः शोधार्थी ने इस कृति के हिंदी अनुवाद और मूल कृति के माध्यम से नेपाली अस्मिता के विषय को नज़दीक से देखने का प्रयास किया है। नेपाली समाज के संघर्ष को हिंदी पाठकों तक पहुँचाना ही इस शोध का लक्ष्य है। उदाहरण के रूप में भाषा को देख सकते हैं। इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि भारतीय नेपालियों की स्थिति दयनीय होती जा रही है। नेपाली समाज का एक वर्ग तो उन्नति कर गया, परन्तु आधुनिकता और उन्नति केवल सुख नहीं लाते, उनके साथ अनेक बुराइयाँ भी लाते हैं। अपने भारतीय होने की पहचान को लेकर वे आज भी संघर्ष कर रहे हैं। इस संघर्ष की भूमिका संक्षेप में प्रस्तुत है – दार्जिलिंग, सिक्किम के भारतीय नेपालियों से यह कहना सरासर ग़लत है कि वे नेपाल से आए हैं या फिर विदेशी हैं, क्योंकि उनका स्थानांतरण कभी हुआ ही नहीं। सन् 1815 की सगौली संधि से पूर्व सिक्किम (सुखिम पूर्व नाम), दार्जिलिंग (दोर्जीलिंग पूर्व नाम) तथा दार्जिलिंग के अन्य कुछ हिस्से नेपाल में थे। सगौली संधि के बाद ही दार्जिलिंग, कलिम्पोंग, कुर्सेओंग *ब्रिटिश इंडियन एम्पायर* के अंतर्गत आ गया था। सन् 1975 तक सिक्किम स्वतंत्र राष्ट्र था, उसके बाद यह भारत राष्ट्र में शामिल हो गया। सन् 1907 *आल इंडिया गोर्खा लीग* ने भारत के ही अंदर अलग राज्य की मांग की। वे भाषा और संस्कृति के आधार पर पश्चिम बंगाल से अलग होना चाहते थे। सन् 1955 में भाषा के आधार पर असम, नागालैंड, त्रिपुरा, गोर्खालैंड आदि नए राज्य बनाने के लिए *स्टेट आर्गेनाइज़ेशन कॉमिटी* बनाई गई। सिवाय गोर्खालैंड के, अन्य सभी को राज्य प्राप्त हो गया। जिसके बाद, सन् 1980 में सुभाष घिशिंग के नेतृत्व में *गोर्खा नेशनल लिबरेशन फ्रंट* का गठन किया गया, जिनका उद्देश्य गोर्खालैंड प्राप्त करना था। यह आंदोलन बहुत ही हिंसक था। दार्जिलिंग के लोगों को गोर्खालैंड नहीं मिल पाया, उसके बदले कुछ अन्य माँगों के साथ उन्हें *गोर्खा टेरीटोरियल ऑटोनोमस काउंसिल* दे दिया गया। सन् 2007 में बिमल गुरुंग ने *गोर्खा जन मुक्ति मोर्चा* का गठन कर, उसका नेतृत्व किया। जिसमें इन्होंने दुबारा गोर्खालैंड की मांग की। सन् 2017 में पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा नेपाली भाषी स्थानों में दार्जिलिंग, कलिम्पोंग आदि के सरकारी स्कूलों में बंगाली भाषा अनिवार्य करने के प्रस्ताव को सुनने के बाद, गोर्खालैंड आंदोलन ने अब बहुत ही हिंसक रूप ले लिया है। इस हिंसक आंदोलन में कई लोग मारे भी गए। वहाँ की यातायात व्यवस्था, स्कूल, कॉलेज, इंटरनेट आदि सभी कुछ बंद कर दिया गया। यहाँ भी देखें तो भाषा के चलते यह आंदोलन हो रहा है। एक व्यक्ति की पहचान तथा अस्तित्व में भाषा एक अहम भूमिका निभाता है। भारतीय नेपालियों के अनुसार बंगाली भाषा को उन पर थोपना, उनकी पहचान पर एक हमला है। इसी के चलते गोर्खालैंड आंदोलन ने अब आग का रूप ले लिया है। मूल लेखक ने इस प्रकार के ज्वलंत मुद्दों को अपनी कहानियों में स्थान दिया है।

चयनित मूल कहानी-संग्रह अंग्रेज़ी भाषा में है, जिसका हिंदी में अनुवाद किया गया है। दोनों भाषा की प्रकृति एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। लेखक ने मुख्य रूप से नेपाली समाज को प्रकाश में

लाने का प्रयास किया है, जिसे सार्थकता प्रदान करने के लिए अंग्रेज़ी के साथ कई नेपाली शब्दों का प्रयोग अपने कहानी-संग्रह में किया है। यह कहानियाँ दैनिक जीवन में घटित होने वाली घटनाओं पर आधारित है। यह काल्पनिक होने पर भी नेपाली जीवन से गहराई तक जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं। इन कहानियों पर यदि हम चिंतन करने बैठे, तो हमें इनके प्रतीकों और विषयगत मूल्यों का महत्त्व पता चलता है। लेखक ने नेपाली लोगों के मनोवैज्ञानिक आशा, निराशा, अशांति, अप्रवासीयों के विषय को प्रत्यक्ष रूप में सामने लाया है। इनकी कहानी में नेपाली पहचान की खोज को अतिमार्मिक और अतिसंवेदनशील ढंग से प्रस्तुत किया है।

नेपाली अस्मिता से संबंधित अन्य दो नेपाली कृतियों का सहारा लिया गया है, लील बहादुर छेत्री द्वारा लिखित *ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ* तथा बिक्रमबीर थापा द्वारा लिखित *तीस्ता देखि सतलज सम्म*। दोनों ही लेखक साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत है। दोनों उपन्यास में नेपाली अस्मिता की समस्या को उजागर किया गया है। लील बहादुर छेत्री तथा बिक्रमबीर थापा ने जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे राजनीतिक, सामाजिक, व्यक्तिगत आदि को अपने वर्णनात्मक क्षमता से पहचान तथा आकार दिया है।

वैचारिक आदान-प्रदान की चेतना से सामाजिक वैचारिकता में एक नई भूमि तैयार करने में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। द *गोर्खास डॉटर* के अनुवाद द्वारा भारतीय नेपाली समाज में व्याप्त समस्याओं को वैसे ही व्यक्त करने का प्रयास किया गया है, जैसा मूल पाठ में निहित है। अनुवाद के दौरान प्रयास यही रहा कि अनूदित पाठ, पाठकों को उसी रूप में आंदोलित कर सके, जिस रूप में मूल पाठ ने किया है।

प्रस्तुत शोध को मुख्य रूप से चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में शीर्षक 'लेखक एवं कृति का परिचय' के अंतर्गत मूल लेखक प्रज्वल पराजुली का जीवन परिचय और उनके लेखन विषय की विस्तृत जानकारी दी गई है। साथ ही द *गोर्खास डॉटर* कहानी-संग्रह का संक्षिप्त विवरण और उनके मूल भाव की चर्चा की गई है। दूसरे अध्याय का शीर्षक 'प्रज्वल पराजुली के लेखन में नेपाली अस्मिता के प्रश्न' है। इसके अंतर्गत तीन उप-अध्याय हैं –

- भारतीय नेपाली और नेपाल के नेपाली में अंतर
- मूल पाठ में निहित अस्मिता के प्रश्नों पर चर्चा
- मूल पाठ में निहित सामाजिक,राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याएँ

काफ़ी समय से नेपाली समाज अपनी अस्मिता की धारणा को लेकर प्रश्न करता आया है। लेकिन समय के साथ नेपाली अस्मिता का यह प्रश्न तीव्रता से चिंता का विषय बनता जा रहा है। इन सभी की चर्चा शोध में विस्तार रूप से उप-अध्यायों में किया गया है। तीसरे अध्याय में द *गोर्खास डॉटर* का हिंदी अनुवाद किया गया है। मूल कृति की भाषा अंग्रेज़ी है, जिसका अनुवाद हिंदी में किया गया है। लोप

और संयोजन तथा समतुल्यता के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए इस कृति का अनुवाद किया गया है। चौथा अध्याय का शीर्षक है, 'मूल पाठ और लक्ष्य पाठ में अनुवाद से जुड़ी समस्याएँ'। इस अध्याय में नेपाली समाज की परम्परा, रीति-रिवाज़, आस्था आदि से जुड़े पदों का विश्लेषण, मुहावरों-लोकोक्तियों, प्रतिक आदि का आंकलन तथा उनके हिंदी अनुवाद की चुनौतियों पर विचार किया गया है। कहानियों के अनुवाद के साथ-साथ नेपाली अस्मिता के प्रश्नों के लिए अन्य रचनाओं और उन पर विभिन्न आलोचकों द्वारा लिखी पुस्तकों, आलेखों एवं टिप्पणियों को गहरे बौद्धिक स्तर पर समझने की कोशिश की गई है। अनुवाद में मूल भाषा से लक्ष्य भाषा की यात्रा में न केवल भाषिक परिवर्तन आवश्यक है, बल्कि भाव सम्प्रेषण भी महत्त्वपूर्ण है। इसलिए मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में अंतरण के लिए अनुवाद के सिद्धांतों का भी ध्यान रखा गया है। शोधकार्य में अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद की सामान्य समस्याओं पर विचार किया गया है। अनेक नेपाली शब्दों, विदेशी शब्दों तथा लोक व्यवहार में प्रयोग होने वाली उक्तियों को समझने के लिए अनेक कोशों की सहायता ली गई है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरु प्रो. देवशंकर नवीन के निर्देशन में तैयार हुआ है। उनकी छात्रा होना मेरे लिए गर्व की बात है। इस शोध की पूर्णता तक के सफ़र में उनका सहयोग हमेशा मिलता रहा, न सिर्फ एक शोध-निर्देशक के तौर पर, अपितु एक अभिभावक के तौर पर भी। शोध विषय की रूपरेखा तैयार करने से लेकर संपूर्ण शोध के दौरान उनका अपेक्षित सहयोग मिलता रहा। उनके अति महत्त्वपूर्ण दिशा निर्देशन ने प्रतिपल मुझमें उत्साह का संचार किया। उनके संचार के लिए मैं कृतज्ञ रहूँगी। मेरे पूर्व निर्देशक प्रो. चमन लाल, प्रो. रणजीत साहा तथा प्रो. रामचंद्र के दिशा निर्देशन के लिए मैं सदा उनकी आभारी रहूँगी।

पिता का आशीर्वाद एवं भाई-बहन का विश्वास सदा मुझे प्रेरणा एवं शक्ति प्रदान करता रहा, उनके प्रति आभार व्यक्त कर मैं उस कृतार्थता से मुक्त होने का प्रयास भी नहीं कर सकती। मुनीन्द्र, विजोएता और सांगे ने अपने सुझाव और सहयोग के साथ कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध कराई। जे.एन.यू में दार्जिलिंग, सिक्किम और नेपाल, हर जगह के नेपाली दोस्तों ने अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव एवं विचार-विमर्श से मेरी काफ़ी सहायता की है।

साथ ही अपने निर्देशक तथा अन्य विद्वानों से भी समय-समय पर सहायता लेनी पड़ी। अनेक सहायक ग्रंथों, मित्रों एवं गुरुजनों के निर्देशन के बावजूद कहानी का अनुवाद लेखक की मानसिकता को अपनी पूर्ण संवेदना एवं भाव के साथ अनुवाद में उतारने में समग्र रूप से सफलता का अनुभव असंभव सा है, किन्तु कुछ हद तक शोधार्थी ने अनुवाद करते समय लेखक की मानसिकता को, विभिन्न स्तरों, भाषागत जटिलता आदि को समझने का प्रयास किया गया है। इन सब बाधाओं से गुज़रने के बाद ही

आठ कहानियों का अनुवाद संभव हो पाया है। इस प्रसंग में लेखक प्रज्वल पराजुली को स्मरण करना मेरा अनिवार्य दायित्व बनता है। उनके सहयोग के बिना मेरा यह कार्य संपन्न होना असंभव था। उनके स्नेहपूर्ण सहयोग के लिए मैं उनकी आभारी हूँ। इस क्रम में अपने दोस्तों – मेहा, अजय, सीमा, सेरिंग, सुमेध, मिनाश्री, पूजा, चंद्रिमा, रमेश, मुन्नी, अपूर्वा एवं अग्रज रवि भैया के सहयोग को याद कर सुखानुभूति होती है। इन सबके प्रति आभार व्यक्त करना मुझे अपनी ही नज़रों में गिरा देगा।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में प्रयुक्त अध्ययन सामग्री के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, साहित्य अकादेमी और तीन मूर्ति की पुस्तकालय के कर्मचारियों से मिले सहयोग और शोध में प्रयुक्त पुस्तकों के लेखकों और संपादकों के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ।

गुरुजनों के दिशा निर्देशन, स्वजनों के प्रोत्साहन से, मित्रों के निष्प्रयोजन स्नेह एवं सहयोग से अनुप्राणित होकर तथा अपने परिश्रम का प्राण डालकर शोध-प्रबंध का जो आकर बना है, वह इस रूप में प्रस्तुत है।

लखिमा देउरी

जुलाई 2017

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

पहला अध्याय

लेखक एवं कृति का परिचय

1.1 प्रज्वल पराजुली का जीवन परिचय

1.2 प्रज्वल पराजुली का लेखन विषय

1.3 द *गोर्खास डॉटर* कहानी-संग्रह की अंतर्वस्तु

लेखक एवं कृति का परिचय

1.1 प्रज्वल पराजुली का जीवन परिचय

द गोर्खास डॉटर के लेखक, प्रज्वल पराजुली सिक्किम के रहने वाले नेपाली मूल के भारतीय हैं। उनका जन्म 24 अक्टूबर, सन् 1984 को हुआ। इनके पिता का नाम बी.सी. शर्मा है और माता का सरला भट्टराई। इनकी माता नेपाल से हैं और पिता भारत से। प्रज्वल पराजुली का मूल घर दार्जिलिंग है, परन्तु बहुत पहले ही उनका परिवार सिक्किम की राजधानी गंगटोक में बस गया था। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा 'ताशी नामग्याल अकादमी', गंगटोक से हासिल की। उन्होंने 'ट्रूमैन स्टेट यूनिवर्सिटी', किर्स्कविल्ल, मिज़ोरी से 'कम्युनिकेशन' में बी.ए. किया है। इसके बाद ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के 'क्रिएटिव राइटिंग' (रचनात्मक लेखन) से उन्होंने एम.ए हासिल किया। 'क्रिएटिव राइटिंग' से पहले वे पत्रकारिता करते थे। वे प्रोफेसर एवलीन कार्लसन से बहुत प्रभावित रहे हैं। उस विश्वविद्यालय में प्रोफेसर कार्लसन 'क्रिएटिव राइटिंग' पढ़ाती थीं। पहले उनकी रुचि 'क्रिएटिव राइटिंग' में कम थी। बाद में प्रोफेसर एवलीन कार्लसन ने ही उन्हें रचनात्मक लेखन लेने के लिए प्रोत्साहित किया। जिसके लिए प्रज्वल पराजुली आज तक उनके आभारी हैं।

प्रज्वल पराजुली को *कुएरकस बुक्स* की ओर से दो किताबों की डील मिली थी। पहला कहानी-संग्रह सितम्बर, सन् 2011 में *कुएरकस बुक्स* अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा *द गोर्खास डॉटर* के रूप में छपा, जिससे अन्य प्रकाशकों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ। *द गोर्खास डॉटर* का नेपाली अनुवाद सन् 2015 में *गोर्खा की छोरी* शीर्षक से प्रकाशित हुआ। प्रज्वल पराजुली के माता-पिता ने ही मिलकर इस पुस्तक का अनुवाद किया। उन्होंने दो किताबों में से एक कहानी-संग्रह लिखा और दूसरा एक उपन्यास। उनका उपन्यास *लैड वेयर आई फ्ली* सन् 2013 में *कुएरकस बुक्स* द्वारा ही छपा। अपने पहले कथा संकलन पर काम करते हुए ही उन्होंने ऑक्सफॉर्ड विश्वविद्यालय से 'क्रिएटिव राइटिंग' में स्नातकोत्तर कार्यक्रम की स्वीकृति प्राप्त की। *कुएरकस* के प्रधान सम्पादक जॉन रिले ने प्रज्वल पराजुली के बारे में कहा है कि प्रज्वल पराजुली की भाषा में एक रंग और तीव्रता है, साथ ही अपनी किताबों में उन्होंने जो दुनिया बसाई है, उस कारण वे एक कुशल युवा लेखक बन गए हैं। वे एक ऐसे लेखक हैं, जिनके प्रकाशन के लिए हम उत्साहित हैं।[1] अभी प्रज्वल पराजुली *कुएरकस* द्वारा हस्ताक्षरित सबसे कम

---

[1] The colour and intensity of Prajwal Parajuly's language and the world he peoples his work with, makes him an astonishing accomplished young writer and one we are excited to be publishing.

--India, Oxford student in two-book deal", *The Times of India* (2011), Retrieved from, timesofindia.indiatimes.com/life-style/books/features/Oxford-student-in-two-book-deal/articleshow/10267998.cms?

उम्र के लेखक हैं और साथ ही सबसे युवा भारतीय भी, जिन्होंने एक बहुराष्ट्रीय पुस्तक डील के साथ व्यापारिक समझौता किया है। दक्षिण एशिया के लगभग सभी समाचार पत्रों, विशेषकर द *टाईम्स ऑफ इंडिया* ने उनके प्रारंभिक कार्यों की सराहना की है। लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं में उनके विषय में लेख छपे हैं, जैसे- द *संडे गार्डियन, डेक्कन हेराल्ड, ऑक्सफोर्ड टाइम्स, आयरिश एग्जामिनर, द हिन्दू,* द *अटलांटिक मैगज़ीन, टी.ई.एफ.एल. मैगज़ीन* आदि तथा दूरदर्शन और डी.डी.भारती में *किताबनामा : बुक्स एंड बियॉन्ड* आदि में उनका साक्षात्कार भी प्रसारित हुआ है। इनकी पुस्तक को सन् 2013 में 'डीलन थॉमस प्राइज़' के लिए मनोनीत किया गया। इनकी पुस्तकें दक्षिण एशियाई साहित्य जगत में भी काफ़ी चर्चित रही हैं।

कई लोगों को लगा था कि इनकी कृति नहीं चल पाएगी। परन्तु उसका एकदम उल्टा हुआ। यह कृति देश-विदेश में विख्यात हो गई। प्रज्वल पराजुली अच्छे लेखक तो हैं ही, साथ ही अच्छे वक्ता भी हैं। अपनी किताबों के विमोचन में जब वे कृति के कुछ हिस्से पढ़कर सुनाते हैं, तो वहाँ बैठे श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। नेपाली समुदाय के लोगों का मानना है कि प्रज्वल पराजुली का लेखन नेपालियों के प्रति बनी गलत पूर्वधारणा को दूर करने में सहायक होगा।

अमेरिका की सबसे ज़्यादा बिकने वाली पत्रिका द *विलेज वौइस* में वे स्तंभकार के तौर पर कार्य करते थे। उनके जीवन में एक ऐसा मोड़ आया जिससे वे अपनी नेपाली जड़ों में खिंचे चले आए। उन्होंने सन् 2009 में अपनी नौकरी छोड़ दी और दक्षिण एशिया, ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, भूटान का दौरा किया, जहाँ उन्हें नेपाली शरणार्थी, अप्रवासियों की कहानियाँ मिली। उन्हें अपना जीवन नीरस लगने लगा था। उन्होंने स्वयं से प्रश्न किया कि क्या वे पचास वर्षों तक यही कार्य करना चाहते हैं? बहुत विचार करने के बाद उन्होंने अपनी लिखने की रुचि को चुना और अपनी प्रतिष्ठित नौकरी छोड़ दी। उन्होंने भारत और नेपाल के कोने-कोने की यात्रा अपने कॉलेज के मित्र के साथ की। मित्र के लौट जाने के पश्चात उन्होंने आगे अकेले ही भारत की यात्रा की। यात्रा समाप्त करने के बाद उन्होंने कुछ समय के लिए अपने घर सिक्किम में रहकर कहानी-संग्रह के कुछ पाठ लिखे। बाकी कहानियाँ उन्होंने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के प्रथम वर्ष में पूरी कर ली थी।

उनसे पहले भी नेपाली समुदाय की समस्याओं पर असम, सिक्किम, नेपाल, भूटान आदि जगहों के अनेक लेखकों ने लिखा है, जैसे – बिक्रम बीर थापा, मंजुश्री थापा, सम्राट उपाध्याय, नारायण वान्गले आदि। परन्तु सभी के लेख हिमालय से जुड़े राज्यों तक ही सीमित थे। परन्तु इन्होंने पूरे विश्व के नेपालियों को अपनी कृति में समा लिया है। प्रज्वल पराजुली की किताब अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, ब्रिटेन, भारत तथा यूएई में सबसे अधिक बिकने वाली किताब है। इस कहानी-संग्रह की आठ कहानियों को जोड़ने वाला सेतु नेपाली अस्मिता है।

नेपाली समाज में अपने साहित्यिक योगदान के लिए प्रज्वल पराजुली नेपाली पाठकों के बीच काफ़ी लोकप्रिय रहे हैं। वे नेपाली भाषा, संस्कृति एवं साहित्य के प्रति हमेशा समर्पित रहे हैं। वे लैड

वेयर आई फ्ली उपन्यास के ज़रिए एक परिपक्व उपन्यासकार बनकर उभरे तथा उनका व्यक्तित्व और भी निखर कर सामने आया। भारतीय नेपालियों और नेपाल के लोगों के बीच अपनी साहित्यिक कृतियों के कारण इनकी विशिष्ट पहचान है। सम्पूर्ण भारतीय साहित्य को उनकी देन अमूल्य है। वे अंग्रेज़ी भाषा के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार एवं कथाकार हैं। यह कहानी-संग्रह न केवल एक नेपाली का है, बल्कि विश्व का हर नेपाली इस कहानी-संग्रह से भावात्मक रूप से जुड़ पाता है।

1.2 प्रज्वल पराजुली का लेखन विषय

प्रज्वल पराजुली नेपाली भाषी भारतीय हैं। उन्होंने दोनों देशों के नेपाली समुदाय को बड़े करीब से देखा-परखा है। द *गोर्खास डॉटर* की हर कहानी की पृष्ठभूमि में सच्चाई है। इन्होंने पूरे अनुसंधान के बाद ही इसकी रचना की है। साथ ही इन्होंने स्वयं भी अपनी अस्मिता संबंधी प्रश्नों के उत्तर खोजने की कोशिश की है।

'नो लैंड इज़ हर लैंड' (न घर का न घाट का) कहानी लेखक के दिल के काफ़ी करीब है। भूटान, जो दुनिया के खूबसूरत देशों में से एक है, ऐसे देश में नेपाली समुदाय के साथ बहुत ही नाइंसाफी हुई है। 'Bhutan's ethnic cleansing' अर्थात 'भूटान का संजाति परिमार्जन', जिसके चलते भूटान सरकार नेपाली लोगों का भूटान से अस्तित्व ही मिटा देना चाहती थी।[2] सन् 1980 के उत्तरार्ध में भूटानी अभिजात वर्ग को नेपाली समाज की बढ़ती आबादी तथा उनकी संस्कृति से ख़तरा महसूस होने लगा था। इससे पूर्व भूटान में नेपाली भाषा, सरकारी भाषा के रूप में प्रयोग की जाती थी। अभिजात वर्ग को यह डर था कि कहीं नेपाली भाषा तथा संस्कृति के चलते उनकी अपनी 'ज़ोंगखा भाषा' लुप्त न हो जाए। भूटान सरकार ने नेपाली समाज के खिलाफ ऐसे भेदभावपूर्ण नागरिकता कानूनों का गठन किया, जिसके कारण नेपाली आबादी के छठवें हिस्से के निष्कासन का मार्ग तैयार हो गया। भूटान के नेपालियों का निष्कासन सन् 1990 तक चलता रहा। वहाँ से अधिकतर लोग नेपाल की ओर पलायन कर गए। नेपाल में भूटानी अप्रवासी कैंप भरे पड़े हैं। भूटान सरकार ने इन लोगों को अनाथ बनाकर छोड़ दिया। भूटान के नेपालियों की भाषा और संस्कृति लुप्त होने के कगार पर आ गई थी, जिस कारण नेपाली लोगों ने पूरे भूटान में आंदोलन छेड़ दिया था। कई लोगों का मानना है कि भूटानी नेपालियों की यह दुर्दशा इस कारण भी हुई। लेकिन, अगर यही कारण था, तो उन्हें कड़ा दंड देना चाहिए था। पर उन्हें देश बाहर कर दिया गया और दुबारा अपने देश लौटने के सारे रास्ते बंद कर दिए गए। उनके साथ घोर अन्याय हुआ है और इस अन्याय की गूंज भविष्य तक सुनाई देती रहेगी। भूटान के अप्रवासी नेपालियों की समस्या का उल्लेख द *गोर्खास डॉटर* में तो है ही, साथ ही इसका उल्लेख उनके उपन्यास *लैंड वेयर*

---

[2] In the late 1980s Bhutanese elites regarded a growing ethnic Nepali population as a demographic and cultural threat. The government enacted discriminatory citizenship laws directed against ethnic Nepalis, that stripped about one-sixth of the population of their citizenship and paved the way for their expulsion.

--Frelick, Bill (2008)"Bhutan's ethnic cleansing", *New Statesman*, Retrieved from, URL: https://www.hrw.org/news/2008/02/01/bhutans-ethnic-cleansing

आई फ्ली में भी किया गया है। प्रज्वल पराजुली ने इस समस्या पर *न्यू स्टेट्समैन* पत्रिका में एक लेख भी लिखा है, 'What use is Gross Domestic Happiness to Bhutan's 106,000 global refugees?'[3] इनकी कृतियों में ऐसे पात्रों की रचना की गई है, जो भूटानी शरणार्थियों की यातना को दर्शाने में सक्षम हैं।

इनके लेखन ने नेपाली समुदाय की समस्याओं पर दूसरे लोगों का ध्यान आकर्षित करने में सफलता प्राप्त की है। इनकी कृतियों में नेपाली भाषा के प्रति इनके लगाव की छाप साफ देखने को मिलती है। जगह-जगह इन्होंने नेपाली शब्दों का प्रयोग किया है, परन्तु वे अटपटे बिल्कुल भी नहीं लगते। बल्कि अंग्रेज़ी पाठकों में भी उस शब्द के अर्थ को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न कर देते हैं। भारत तथा विश्व के अन्य देशों में बसे नेपाली लोग, जिन्हें नेपाली भाषा पढ़ना नहीं आता, उन्हें भी यह कृतियाँ पढ़कर अपने समुदाय की समस्याओं का ज्ञान हो जाएगा। उनकी भाषा, पात्र और प्रसंग को जोड़े रखती है और साथ ही सीधी और सरल होने के कारण अपने अर्थ एवं संवेदना को पाठकों तक पूरी सक्षमता से अभिव्यक्त एवं संप्रेषित कर पाई है।

अधिकतर नेपाली लोगों को अपने जीवन में भेद-भाव एक-न-एक बार तो सहना पड़ा है। कुछ लोग इसे अनदेखा और अनसुना कर देते हैं, परन्तु कुछ इस अन्याय के खिलाफ़ आवाज़ भी उठाते हैं। हालाँकि प्रज्वल पराजुली जब इस कृति को लिखने बैठे थे, तब उनका कोई इरादा नहीं था कि वे नेपाली समुदाय की समस्याओं को उजागर करेंगे। परन्तु जाने-अनजाने ही सही उन्होंने महत्त्वपूर्ण मुद्दों को उठाया है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि साहित्य जगत में नेपाली समस्याओं पर लिखने वाले तो कई आए, मगर प्रज्वल पराजुली ही देश-विदेश में सबसे विख्यात हुए हैं। इसका एक कारण यह भी है कि वे अंग्रेज़ी भाषा में लिखते हैं, जो कि विश्वव्यापी भाषा है। साथ ही इनकी लेखन शैली में एक जादू है, जो पाठकों को पूरी कृति एक ही बार में पढ़कर समाप्त कर देने पर मजबूर कर देता है। नेपाली भाषा में भी इन समस्याओं पर लिखा गया है, जो कि काफ़ी विख्यात और महत्त्वपूर्ण भी है। परन्तु, यह केवल नेपाली समाज तक ही सीमित है। लील बहादुर छेत्री, बिक्रम बीर थापा, इंद्रा बहादुर राई आदि नेपाली भाषा के विख्यात लेखक हैं।

प्रज्वल पराजुली ने नेपाली समुदाय से सम्बंधित समस्याओं के साथ-साथ भारत में समलैंगिकता से संबंधित नज़रिए को भी प्रकाश में लाने की कोशिश की है। *लैंड वेयर आई फ्ली* उपन्यास में इस समस्या को पात्र 'रुतवा' के माध्यम से दर्शाया गया है।[4] इस विषय से लोगों में

[3] Parajuly, Prajwal (2014), "What use is Gross Domestic Happiness to Bhutan's 106,000 global refugees?", *New Statesman,* Retrieved from, URL: www.newstatesman.com/world-affairs/2014/02/what-use-gross-domestic-happiness-bhutans-106000-global-refugess

[4] I decided to take all the taboo issues in the Indian subcontinent such as homosexuality, inter-caste marriages and eunuchs, and have a blast with them.

जागरूकता फैलेगी। अपने प्रतिदिन के अनुभव को उन्होंने अपनी कृतियों में उतारा है। उनके लेखन में कई सारी चीज़ें उनके ही जीवन से प्रभावित हैं। कई वाकये उनके जीवन में घटित हुए हैं। उन्होंने हर एक चीज़ बारीकी से लिखी है। उदाहरण-- 'द गोर्खास डॉटर' कहानी में जिस 'बिशाल बाजार' का उल्लेख है, वह भी उनके ही जीवन से उद्धृत है। उनके अनुसार वे स्वयं सन् 1987-88 में तीन साल की उम्र में काठमांडू के 'बिशाल बाजार' गए थे।[5] अपने उपन्यास में उन्होंने 'गोर्खा जन मुक्ति मोर्चा' के लिए 'गोर्खा जन शक्ति मोर्चा'[6] शब्द का प्रयोग किया है। इस आंदोलन के चलते समाज को जो नुकसान हो रहा है, उसका भी उल्लेख किया गया है। नेपाली समुदाय जिन कठिन परिस्थितियों में रहते हैं, उन्हें प्रज्वल पराजुली ने अपने पात्रों के माध्यम से बड़ी गहराई से प्रकट किया है। अंग्रेज़ी में लिखने वाले लेखकों में से वे एक ऐसे लेखक हैं, जिन्होंने नेपाली जीवन की कठिनाइयों को जीवंत कर दिया है। इसका लोगों पर मार्मिक प्रभाव पड़ा है। ऐसा लगता है, मानो उनकी कृति ने अपनी एक दुनिया बना ली हो और उस दुनिया के छोटे-छोटे पात्र अपनी कथा, व्यथा, आकांक्षा, विफलता, प्रेम, मतभेद आदि को सामने लेकर आते हैं।

प्रज्वल पराजुली ने हिमालय से जुड़े स्थानों पर कहानियाँ रची हैं। वहाँ की खूबसूरती वाकई काबिले तारीफ है। परन्तु अपने लेखों में प्रकृति की तारीफ में कलम न चलाते हुए, उन्होंने अधिकतर ध्यान पात्रों तथा नेपाली समुदाय की दयनीय स्थिति पर दिया है। द *गोर्खास डॉटर* कहानी-संग्रह यथार्थ और कल्पना का मेल है। लेखक ने कई समस्याओं को सामने लाने की कोशिश की है, जैसे- माओवादी की समस्या, महिलाओं की दयनीय स्थिति, जातिवाद की समस्या, भूटानी नेपाली शरणार्थियों की समस्या, अन्धविश्वास, गोर्खालैंड मूवमेंट आदि।[7] एक ओर भारत-नेपाल में भाषा और संस्कृति आदि की समानता के कारण एकता है, तो दूसरी ओर देश की सीमा के कारण अंतर भी।

विश्व का हर साहित्यकार अपने साहित्य में समाज विषयक धारणाओं को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में प्रकट करता है। प्रज्वल पराजुली का साहित्य अपने युग के समाज का फलक है। उनके कहानी-संग्रह में नेपाली समाज का जो चित्रण हुआ है, उसका स्वरूप मध्यवर्गीय एवं निम्नवर्गीय है। उन्होंने देश

--Housham, jane (2015), "Land Where I Flee by Prajwal Parajuly review – a caustic look at family life",*The Guardian,* Retrieved from, URL: https://www.theguardian.com/books/2015/jan/23/land-where-i-flee-prajwal-parajuly-review

[5] My book is a love letter to the nepali language: Prajwal Parajuly, *Online Khabar,* Retrieved from, URL: english.onlinekhabar.com/2016/05/03/376327

[6] Sharma, Anuradha (2017), "Prajwal Parajuly / The Gurkha's son", *livemint,* Retrieved from, URL: www.livemint.com/leisure/xvCdCondSh4E0hgiLzDcXK/Prajwal-Parajuly--The-Gurkhas-son.html

[7] Parajuly has written with zeal of an anthropologist and the wonder of a child on the life and culture of the Nepali-speaking community in India, Nepal, Bhutan and the West. He has painstakingly stuffed his books with every aspect of the multi-ethnic linguistic community- marginalization, the Gorkhaland movement, the Bhutanese refugee crisis, Maoism, women's rights, the caste system, and the Indian and Western stereotypes.

--Sharma, Anuradha (2017), "Prajwal Parajuly / The Gurkha's son", *livemint,* Retrieved from, URL: www.livemint.com/leisure/xvCdCondSh4E0hgiLzDcXK/Prajwal-Parajuly--The-Gurkhas-son.html

के शहरी जीवन को जितने विस्तार से चित्रित किया है, उतना ही ग्रामीण जीवन को भी। यथार्थ और कल्पना के संयोजन ने कृति को और भी शक्तिशाली बना दिया है। प्रज्वल पराजुली का ध्यान समाज की वास्तविकता पर अधिक केन्द्रित रहा है।

प्रज्वल पराजुली, उन गिने-चुने भारतीय लेखकों में हैं, जिन्होंने अंग्रेज़ी भाषा में साहित्य-सृजन किया और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। लेखक ने अपनी कृति में कथावस्तु का इतना साकार चित्रण किया कि पाठक इसे वास्तविकता के रूप में स्वीकारने को विवश हो गया। प्रस्तुत कहानी-संग्रह में प्रज्वल पराजुली ने अपनी योग्यता एवं कौशल का समुचित परिचय दिया है। उनके कहानी-संग्रह के पात्र समाज में कहीं भी देखे जा सकते हैं। ये पात्र काल्पनिक होते हुए भी यथार्थ प्रतीत होते हैं। प्रज्वल पराजुली संवेदनाओं को पूरी सूक्ष्मता से उद्घाटित करते हैं। उनका लेखन प्रकृति के निरंतर बदलते स्वरुप को मानवीय मनोदशाओं के साथ संयोजित कर देने की योग्यता रखता है। कहानी की पृष्टभूमि न मालूम होते हुए भी, शीर्षक ही पाठकों को आकर्षित करने में सफल होता है।

1.3 द *गोर्खास डॉटर* कहानी-संग्रह की अंतर्वस्तु

ऐसा पहली बार हुआ है कि भारत, नेपाल और भूटान पर मार्मिक कहानी-संग्रह लिखा गया है। इस संकलन में पात्रों की विस्तृत श्रृंखला है, जैसे- ब्रिटिश आर्मी के गोर्खा अफसर, शरणार्थी जो किसी भी देश के निवासी नहीं, भारतीय नेपाली अप्रवासी, नौजवान जो विदेशों में अच्छी ज़िन्दगी बिता रहे हैं, छोटे बच्चे जो एकता में विश्वास रखते हैं, जिनका मानना है कि केवल मौत ही उन्हें अलग कर सकती है, औरतें जो अपने अनिश्चित धुंधले भविष्य के अकेलेपन और गम को पी जाती हैं आदि। द *गोर्खास डॉटर* को हम आधुनिक जीवन का कहानी-संग्रह कह सकते हैं, ऐसा इसलिए, क्योंकि सभी कहानियों का विषय भिन्न-भिन्न लोगों के जीवन और भावनाओं को दर्शाता है। साथ ही समकालीन नेपाली अस्मिता को भी साथ लिए चलता है। प्रज्वल पराजुली का दृष्टिकोण काल्पनिक से अधिक यथार्थवादी है। हर कहानी की शुरुआत में लेखक ने भारत-नेपाल के स्थानों का निर्दिष्ट नक्शा दिया है, ताकि पाठक कहानी को और गहनता से अनुभव कर सके तथा स्पष्ट अवधारणा से पाठ का आनंद उठा सके। प्रथम कहानी 'द क्लेफ्ट' (फाँक) है। यह कहानी दो पात्रों को लेकर आगे बढ़ती है। पार्वती एक नेपाली विधवा है, जो एक रुढ़िवादी और जिद्दी महिला है तथा काली बारह वर्षीय लड़की है, जो उसके घर पर काम करती है। उसके होंठों में फाँक है यानि फटा हुआ है। जिस कारण उसके दांत बाहर निकले हुए लगते हैं। उसके फाँक को ठीक कर देने का झूठा वादा करके लोग उससे मुफ्त में काम करवाते हैं। काली को उसकी मालकिन 'पार्वती' डूअर्स से काठमांडू लाती है। काली की माँ, बिना पैसे लिए उसे पार्वती को सौंप देती है, क्योंकि काली के बहुत सारे भाई-बहन थे, जिन्हें पालना उसकी माँ के लिए नामुमकिन था। उसके परिवार वाले उसे बोझ समझते थे, इसलिए उसे दूसरे के पल्ले डाल देते हैं। उसके विकृत होंठ और काले रंग के चलते उसे हमेशा सताया जाता और वह लगातार दुर्व्यवहार का शिकार होती है। उसके गवाँरपन की उसकी मालकिन हमेशा खिल्ली उड़ाती थी। पर चाहे कितनी भी खिल्ली उड़ाए,

अपने रिश्तेदार के सामने उसका साथ भी देती थी। हकीकत में दोनों एक-दूसरे पर निर्भर थे। इस कहानी में एक विधवा के जीवन के सूनेपन को दर्शाया गया है। अपने पति को खोने के बाद, ससुराल वालों के साथ रिश्तों तथा व्यवहार में जो बदलाव आता है, उसका बहुत अच्छा चित्रण किया गया है। सामानांतर में एक अन्य कहानी भी चलती है, जहाँ काली को एक चालबाज, भारत (मुंबई) में अभिनेत्री बनने का सपना दिखाता है। इसके लिए वह नेपाल से भारत भागने की योजना बनाता है। वास्तव में काली को वह भारत में बेचना चाहता था। वह उसे आकर्षक सपने दिखाकर लुभाता था। नेपाल बहुत बड़ा देश नहीं है और गरीबी भारी मात्रा में गाँवों और कस्बों में है। यह कहानी न केवल काली की है, बल्कि उन अधिकतर गरीब लड़कियों की है, जिन्हें उनके परिवार वाले त्याग देते हैं, क्योंकि वे उन्हें बदसूरत मानते हैं और दूसरा क्योंकि वे गरीब होते हैं। मानव तस्करी और वेश्यावृत्ति की समस्या को इस कहानी में उजागर किया गया है। रिश्तों के बीच जो कड़वाहट तथा दूरियाँ आ जाती है, उस दूरी के अंतर को पूरा करने का यह कहानी एक प्रयास है।

दूसरी कहानी है, 'लेट स्लीपिंग डॉग्स लाई' (सोते शेर को न जगाओ) है। इसका मुख्य पात्र 'मुन्नू' है, जो एक मुसलमान है। उसका परिवार बिहार से आकर कालिम्पोंग में बस गया था। इसमें दिखाया गया है कि कुछ चीज़ों को वैसे-का-वैसा ही रहने देना चाहिए। मुन्नू, बिहार से आए एक मुसलमान परिवार की दूसरी पीढ़ी है, जो कि कलिम्पोंग में पान की दुकान चलाता है। साथ ही अन्य कई सारी चीज़ें भी बेचता है। उसके पड़ोसी गुरुंग दम्पति की बेटी ने उसकी नाक में दम कर रखा था। मुन्नू के दुकान से वह बहुत सारे सामान ले जाती, जिसके पैसे तक वह नहीं चुकाती थी। कभी-कभार वह चोरी भी करती थी। उसकी मकान मालकिन पेशे से डॉक्टर थी, जिसकी श्रीमती गुरुंग से अच्छी-खासी दोस्ती थी। मुन्नू की बीवी जब गर्भवती हो जाती है, तब उसका इलाज मकान मालकिन ही करती है। समय बीतने के साथ मुन्नू और डॉक्टर की अच्छी पहचान हो जाती है। एक दिन डॉक्टर के ज़िद करने पर मुन्नू, गुरुंग की बेटी के कारण जो समस्याएँ झेलनी पड़ रही थीं, उसका बखान उसके के सामने कर देता है। जिसके बाद अपनी ही दुकान के सामने उसे श्रीमती गुरुंग से बहुत बुरा-भला सुना पड़ता है। इस लड़ाई के दौरान उसे अपने बाहरी होने का सबसे ज़्यादा एहसास होता है। बिहार से होते हुए भी उसकी बोली नेपाली थी, यहाँ तक कि वह सोचता तक नेपाली में था। परन्तु, नगरवासियों ने उसे कभी नहीं स्वीकारा। उसकी बीवी पहले बहुत ही शर्मीली और पुराने ख़यालात की होती है। मुन्नू के ज़िद्द करने पर ही वह दूसरी महिलाओं से मिलती है। लेकिन धीरे-धीरे उसका स्वाभाव एकदम बदल जाता है और जो रूप सामने आता है, उसे देखकर मुन्नू खुद हैरान रह जाता है। एक समाज में जो स्वयं अनेक मायनों में असमान है, वहाँ एक बाहरी व्यक्ति किस प्रकार अपने पड़ोसियों के साथ पारस्परिक विचार-विमर्श करता है, इसका बहुत ही मार्मिक चित्रण किया गया है।

तीसरी कहानी 'ए फादर्स जर्नी' (पिता की अनुभूति) है। इस कहानी में एक पिता की भावना का पूर्णरूपेण चित्रण किया गया है। यह एक सामान्य ब्राह्मण परिवार की कहानी है, जिसमें यह दिखाया गया है कि किस तरह एक पिता अपनी बेटी को पाल-पोसकर बड़ा करता है और समय आने पर न

चाहते हुए भी रीति-रिवाज़ तथा सामाजिक नियमों के चलते उसका हाथ दूसरे के हाथ में दे देता है। यह प्रबीन और उसकी लाडली बेटी सुप्रिया की कहानी है। सुप्रिया जब छोटी होती है, उनके बीच बहुत खूबसूरत दोस्ती का रिश्ता होता है। पर, उसके यौवनावस्था में पहुँचने पर उनके रिश्तों में कड़वाहट आ जाती है। नेपाली समाज में लड़की के यौवनावस्था में पहुँचने पर कई रीति-रिवाज़ों का पालन करना पड़ता है। लड़की को सात दिनों तक घर के एक कोने में बंद कर दिया जाता है। उसे किसी भी मर्द, यहाँ तक कि अपने पिता या भाई को भी देखने की इजाज़त नहीं होती। प्रबीन ऐसे रिवाज़ो का पालन नहीं करना चाहता था, परन्तु समाज से बंधे होने के कारण उसे भी इन नियमों का पालन करना पड़ता है। बाद में जब सुप्रिया अपने लिए एक वर चुनती है, तो उसे भी इसका ज्ञान होता है कि वह उसके लायक नहीं। पर, सिर्फ इसलिए कि वह ब्राह्मण है, उसे यह विवाह उचित प्रतीत होता है। इसमें दिखाया गया है कि सामाजिक मानदंडों को चाहे लोग संदेह की नज़र से क्यों न देखें, परन्तु किसी-न-किसी रूप में उन्हें समाज के इन मापदंडों को स्वीकारना ही पड़ता है। इसमें वर्तमान 'गोर्खालैंड मूवमेंट' से संबंधित परिस्थितियों का वर्णन भी किया गया है। यह कहानी एक पिता के नज़रिए से दर्शायी गई है, जो काफ़ी हृदय विदारक है। इसमें नेपाली समाज में प्रचलित जातिप्रथा का वर्णन भी किया गया है। यह कहानी समाज पर एक कटाक्ष है।

चौथी कहानी 'मिस्ड ब्लेसिंग' (खोया हुआ आशीर्वाद) है। इसमें मध्यवर्गीय परिवार की समस्याओं तथा धर्म पर चर्चा की गई है। यह एक सामाजिक-सांस्कृतिक विषय पर गढ़ी गई प्रासंगिक कहानी है। राजीव एक होशियार लड़का है, जिसने इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की है, अपनी दादी के बुढ़ापे की लाठी बनने के लिए वह अच्छी-खासी नौकरी छोड़ देता है। वह दार्जिलिंग के अपने छोटे-से घर में अपने छोटे भाई, दादी और गाँव के एक लड़के के साथ रहता है, जो काम में उसकी थोड़ी बहुत मदद कर देता है। राजीव को बैंगलोर में अच्छी नौकरी मिलती है, पर वह दार्जिलिंग छोड़कर इसलिए नहीं जाता क्योंकि उसे लगता है कि उसके माता-पिता के गुज़र जाने के बाद दादी को संभालना उसकी नैतिक ज़िम्मेदारी है। दार्जिलिंग की राजनीतिक स्थिति अस्थिर होने के कारण वह यहाँ एक अच्छी नौकरी ढूँढने में अपने आपको असमर्थ पाता है। दशहरे के दौरान उसके अमीर रिश्तेदार जब उसके यहाँ ठहरने वाले होते हैं, उसका प्रबंध नामुमकिन होते हुए भी वह जुगाड़ करने का प्रयास करता है, जबकि उसके घर में एक ही कमरा होता है। उसके लिए यह बोझ इतना अधिक बढ़ जाता है कि उसकी कुंठा, निराशा, गुस्सा सब का गलत समय पर, गलत जगह पर विस्फोट होने लगता है। दशहरे के समय उसने आशीर्वाद की जो आशा रखी थी, वह भी उसे नहीं मिलती।

पाँचवीं कहानी 'नो लैंड इज़ हर लैंड' (न घर का न घाट का) है। इसमें भूटानी अप्रवासियों का वर्णन है। यह अनामिका छेत्री की कहानी है, जो भूटान के फुन्छोलिंग की रहने वाली है। राजनीतिक अस्थिरता के कारण भूटान से नेपालियों को निकाल दिया गया था। अनामिका और उसका परिवार भी भूटान के नेपाली रिफ्यूजी थे। अनामिका छेत्री की कहानी बहुत ही दिलचस्प और मार्मिक है। उसे दो देशों से निकाल दिया जाता है। दोनों ही समय सरकार की नीतियों के चलते उसे देश छोड़ना पड़ता है।

भूटानी नेपाली होने के कारण उसे अपनी मातृभूमि भूटान छोड़कर नेपाल के एक शरणार्थी कैंप में अपने परिवार के साथ रहना पड़ता है। नेपाल में भी उसे बाहरी के रूप में ही देखा जाता है। दो बार उसकी शादी होती है, जिससे दो अलग पति से दो बच्चियाँ होती हैं। इस कारण समाज उसे बदचलन महिला के रूप में देखता है। यह अस्तित्व को ढूँढ़ने की उसकी संघर्ष-गाथा है। वह भूटान लौटने के बारे में विचार करना छोड़ देती है, क्योंकि यहाँ उसके साथ नाइंसाफी तो हुई ही थी, साथ-साथ बदसलूकी के साथ देश से निकाला भी दिया गया था। कई साल नेपाल में बिताने के बावजूद नेपाल भी उसे घर का अहसास दिलाने में नाकामयाब हो जाता है। यहाँ भी वह अपने को आश्वस्त नहीं पाती है। लेकिन, अंत में जब उसे अमेरिका में पुनर्वास का अवसर मिलता है, तब जाकर उसे राहत मिलती है और वह अपने आपको सुरक्षित महसूस करती है। आश्वासन का यह अहसास उसे पहले कभी नहीं हुआ था। नेपाली होते हुए भी नेपाल ने उसे दिल से नहीं अपनाया था। वहाँ उसे अनगिनत यातनाओं का सामना करना पड़ता था। यह अनामिका की तरह हज़ारों नेपाली अप्रवासियों की संघर्ष गाथा है। यह कहानी एक संभावित महाकाव्य हो सकती है। यह एक ऐसी औरत की कहानी है, जिसके माध्यम से 1,06,000 भूटानी-नेपाली निर्वासित लोगों की व्यथा, परिवेश आदि का ज्ञान होता है। साथ ही, वह नेपाली अप्रवासियों का प्रतिनिधित्व भी करती है।

अगली कहानी 'द गोर्खास डॉटर' (गोर्खा की छोरी) है। यह कहानी सबसे मुख्य है। यह पूरे पुस्तक का प्रतिनिधित्व करती है। इस कहानी में 'गोर्खा' के अर्थ का विश्लेषण है तथा गोर्खा वीरों के बारे में वर्णन है। इसमें भारतीय सैनिकों की कार्यावधि का ब्यौरा है। यह कहानी गीता और कथावाचक की घनिष्ठ मित्रता को बयान करती है, जिनके पिता एक साथ ब्रिटिश फौज में सैनिक हैं। दोनों में से गीता साहसी थी और अधिकतर बदमाशी की योजना वही बनाती थी। कथावाचक को कई रहस्य गीता के चलते रखने पड़ते हैं। इस कहानी में व्यस्कों के अजीब व्यवहारों को एक मासूमियत की नज़रिए से दिखाया गया है। बच्चों के हँसी-मज़ाक से समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है एवं पूरी कहानी को रचा गया है, जिससे यह लोगों के दिलों पर अपनी एक छाप छोड़ देता है। ब्रिटिश राज के समय से ये वीर सिपाही देश के लिए अपना बलिदान देते चले आ रहे हैं, तभी आज भी इंग्लैंड में 'गोर्खा रेजिमेंट' का वजूद है। इस कहानी में गोर्खा सिपाहियों के जीवन का पूरा ब्यौरा मौजूद है। साथ ही इसमें नेपाली संस्कृति की झलक भी मिलती है।

बाकी दो कहानियाँ 'पासिंग फैंसी' (क्षणिक स्वप्नचित्र) और 'द इमिग्रेंट्स' (प्रवासी) हैं। इनमें उन नेपालियों का वर्णन है, जो विदेश जाने की लालसा रखते हैं। परन्तु, अधिकतर सच्चाई उनकी कल्पना से कोसों दूर होती है। वहाँ पहुँचने के बाद भी उनका संघर्ष समाप्त नहीं होता। जिसका कहानी-संग्रह में काफ़ी हद तक यथार्थ वर्णन किया गया है। उन्हें किस प्रकार रोज़मर्रा के जीवन में संघर्ष करना पड़ता है, उनका विस्तृत वर्णन किया गया है। नेपाल में रोज़गार कम है, तभी अधिकतर नौजवान विदेश जाने को उत्सुक रहते हैं, चाहे वे विदेश जाकर कोई निम्न कार्य ही क्यों न करें। कहानी 'पासिंग फेंसी' (क्षणिक स्वप्नचित्र) एक शादीशुदा महिला की कहानी है, जिसके तीनों बच्चे विदेश चले जाते हैं और

जो सेवानिवृत्ति के बाद अपने जीवन को एक दिशा देने की कोशिश कर रही है। उसके पति, बच्चे और पड़ोसी के साथ संबंधों के विविध आयामों को बड़ी कुशलता के साथ दिखाया गया है। उस महिला और उसके पड़ोसी के बीच जो मधुर संबंध बनता है, उसका बड़ा रोचक वर्णन किया गया है।

आखिरी कहानी है, 'द इमिग्रेंट्स' (प्रवासी)। कहानी का नायक जब एक दिन अपने सबसे मनपसंद रेस्टोरेंट में खाने जाता है, वहाँ उसकी मुलाक़ात 'एन' नाम की एक विदेशी महिला से होती है। जिसके बाद वह एक अजीब स्थिति में पड़ जाता है। एन अपनी कामवाली नेपाली लड़की साबित्री से उसकी मुलाकात करवाती है। विदेश में आकर अच्छी नौकरी करने के बावजूद, अपना घर खरीदने के बावजूद, इतना कुछ हासिल करने के बाद भी, उसे अभी तक वैध नागरिकता नहीं मिली थी। दूसरी ओर साबित्री को लॉटरी के चलते वहाँ का ग्रीन कार्ड अर्थात नागरिकता मिल जाती है। पर दोनों किस तरह एक-दूसरे की मदद करके आगे बढ़ते हैं, इसका रोचक वर्णन किया गया है।

द गोर्खास डॉटर कहानी-संग्रह की सुगठित कथावस्तु, पात्रों की संवेदनशीलता, उनके मनोवैज्ञानिक चित्रण एवं भाषा शैली के कलात्मक प्रयोग आदि के चलते प्रज्वल पराजुली का लेखन आज भी लोकप्रिय है। उन्होंने सामाजिक परिस्थितियों के यथार्थ पक्ष को बहुत ही सार्थकता के साथ प्रस्तुत किया है। यह संग्रह न केवल मानव जीवन के यथार्थ पक्ष को उद्घाटित करता है, बल्कि उसके प्रति आस्थावादी दृष्टिकोण रखता है। इनके लेखन में मध्यवर्गीय नेपाली समाज में व्याप्त आर्थिक, राजनितिक रूढ़ियों तथा संकटग्रस्त नैतिकता से जुड़ी समस्याओं को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है। साहित्यिक दृष्टि से प्रज्वल पराजुली का योगदान महत्वपूर्ण है। इन्होंने अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से नेपाली समुदाय के परिप्रेक्ष्य में अपनी कृतियों का सृजन किया है। इनकी लेखन शैली इतनी रोचक है कि प्रारंभ से अंत तक प्रवाहमय है। इनमें पाठकों एवं दर्शकों के चित को अभिभूत करने की गहन क्षमता है। इस कहानी-संग्रह में जिन समस्याओं को उठाया है, वे नेपाली समाज के समकालीन समस्याओं से सीधा साक्षात्कार कराते हैं। इसमें निहित पात्र नेपाली समाज के समकालीन जीवन से जुड़कर और भी प्रभावी और विश्वसनीय प्रतीत होते हैं।

दूसरा अध्याय

प्रज्वल पराजुली के लेखन में नेपाली अस्मिता के प्रश्न

2.1 भारतीय नेपाली और नेपाल के नेपाली में अंतर

2.2 नेपाली अस्मिता के प्रश्नों पर चर्चा

2.3 मूल पाठ में निहित सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याएँ

प्रज्वल पराजुली के लेखन में नेपाली अस्मिता के प्रश्न

द *गोर्खास डॉटर* के लेखक प्रज्वल पराजुली ने नेपाली समुदाय के जीवन को बहुत नज़दीक से देखा-परखा है। वे उनके हर्ष-विषाद, शांति-संघर्ष, स्वार्थ-परमार्थ के साक्षी ही नहीं, उनके अधिकारों के प्रवक्ता भी हैं। हालाँकि वे सिक्किम के निवासी हैं, परन्तु उनका साहित्य चीख-चीखकर नेपाली समाज के संघर्ष का बखान करता है। साथ ही, उन्होंने नेपाली समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी पहलुओं को अपनी रचना में स्थान दिया है। द *गोर्खास डॉटर* में कई ऐतिहासिक तथ्य भी मिलते हैं, जैसे यहाँ भूटानी अप्रवासियों तथा गोर्खा सैनिकों की वीरता का वर्णन किया गया है। लेखक ने इस कहानी-संग्रह में देश-विदेश के अन्य हिस्सों में बसे नेपाली समाज की जीवन शैली को समेटा है। इसमें नेपाली जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। संग्रह की हर कहानी नेपाली समुदाय पर केन्द्रित है। यह कृति वर्तमान दौर के लिए काफी प्रासंगिक हैं। इसमें नेपाली अस्मिता के सवाल को तो उठाया ही है, साथ ही भूटान के नेपाली अप्रवासियों के संघर्ष को भी दिखाया गया है। इसके अलावा इसमें जातिप्रथा का वर्णन है, गोर्खा सिपाहियों के संघर्षमय जीवन को दर्शाया गया है और दूसरे समाज के लोगों का नेपालियों के प्रति पूर्वधारणा आदि पहलुओं को भी दिखाया गया है। इस कृति ने साहित्य जगत में नेपाली समुदाय के लिए एक नई लकीर खींची है।

द *गोर्खास डॉटर* कहानी-संग्रह में प्रज्वल पराजुली की आठ कहानियाँ संकलित हैं। ये कहानियाँ नेपाली समुदाय पर केंद्रित हैं, जिनमें बहुत ही सीमित पात्र हैं। ये पात्र सामान्य नेपालियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'सारा स्नेदेर्मन' और 'मार्क टुरिन' ने अपने एक लेख में लिखा है कि हमेशा से यह भ्रम लोगों में है कि जो व्यक्ति नेपाली है, वह नेपाल से है। यही कारण है कि नेपाली मूल के भारतीयों को 'नेपाली' की संज्ञा दे दी जाती है। इसी कारण भारतीय नेपाली मुख्यतः भारत के उत्तर पूर्व, दार्जिलिंग, सिक्किम के लोगों ने एक अन्य विकल्प तैयार किया है। सुभाष घिसिंग जो दार्जिलिंग के निवासी हैं, उन्होंने 'गोर्खा' पद प्रसारित किया है, परन्तु इस पद की स्वीकृति अभी तक पूरे भारत में नहीं हुई है। साथ ही 'भरपाली' और 'नेपमूल' जैसे अन्य पदों का भी प्रस्ताव रखा गया। यह प्रयोग अब भी जारी है।[8]

---

[8] There is some genuine confusion when one leaves the borders of Nepal, because Indian citizens of Nepali origin face a political problem by being identified as 'Nepali'. Given that the term 'Nepali' is not about to change in its reference to the citizen of Nepal, however, the Nepali speaking Indian citizens of the Indian North East as well as Darjeeling, Sikkim, have tried to come up with alternative formulations by which they would prefer to be called. These include the term 'Gorkha', propagated by Subhas Ghising of Darjeeling, which has not found significant acceptance elsewhere in India; as well as the more recent 'Bharpali' and 'Nepamul'. The experiment continues.

--Shneiderman, Sara and Mark Turin (2006), 'Seeking the tribe Ethno Politics in Darjeeeling and Sikkim', *Himal Southasian,* Retrieved from, URL : old.himalmag.com/component/content/article/1662-seeking-the-tribe.html

2.1 भारतीय नेपाली और नेपाल के नेपाली में अंतर

'नेपलीज़' नेपाल के नागरिक को कहते हैं, जबकी 'नेपाली' नेपाली भाषी भारतीय नागरिक को कहते हैं। यह शब्द भारतीय नेपाली की जातीय पहचान के लिए प्रयोग किया जाता है।[9] हालाँकि इन शब्दों पर आज तक विवाद चलता आ रहा है। सन् 1835 तक सिक्किम, एक स्वायत्त राज्य हुआ करता था। ब्रिटिश सरकार ने सिक्किम के राजा को मजबूर कर तोहफे के तौर पर दार्जिलिंग लेकर, उस पर कब्ज़ा कर लिया। धीरे-धीरे ब्रिटिश सरकार ने कलिम्पोंग, कुर्सेओंग सभी स्थानों को अपने कब्ज़े में ले लिया अर्थात ऐतिहासिक दृष्टि से भी देखा जाए तो भारतीय नेपाली, भारत के ही हैं। वे आज भी अपनी ही जगह में हैं। संक्षेप में कहें तो भारतीय नेपालियों का यही इतिहास है। नेपाल के नेपाली जो भारत में आए, उनकी स्थिति एवं इतिहास बिलकुल भिन्न है। भारतीय नेपाली ब्रिटिश सरकार के समक्ष बाध्य थे, परन्तु नेपाल के नेपाली भारत में अधिकतर जीविका की खोज में आते हैं। इस तरह नौकरी की तलाश में आए हुए लोग अधिकतर गरीब परिवारों से संबंध रखते हैं।

भारतीय नेपाली और नेपाल के नेपाली में अंतर स्पष्ट नहीं होने के कारण सारी भ्रांतियाँ पैदा होती हैं। नेपाल से जो लोग जीविका के लिए आते हैं, सामान्यतः छोटे-मोटे काम करते हैं। होटलों में, लोगों के घरों में, भवन-निर्माण स्थलों में, रसोई घर में काम कर वे जीवन-बसर करते हैं। परन्तु अब धीरे-धीरे नेपाल से भी कई पढ़े-लिखे लोग अच्छे पदों पर नौकरियाँ करने लगे हैं। नेपालियों के साथ, यहाँ तक कि भारतीय नेपालियों के साथ भी भारत के अन्य लोगों का पारस्परिक विचार-विनिमय नहीं हो पाता है। इस कारण बहुसंख्यक लोग भारतीय नेपाली और नेपाल के नेपालियों में अंतर नहीं जानते हैं। दोनों देशों की नेपाली भाषा लगभग समान है। साथ ही दोनों तरफ के नेपाली दिखते भी एक जैसे ही हैं। इस कारण भी लोगों को वहम होता है और वे सभी को नेपाल का निवासी ही समझते हैं। हालाँकि भारतीय नेपाली और नेपाल के नेपालियों के भाषिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में काफ़ी अंतर है। प्रस्तुत कहानी-संग्रह में भारत के तथा अन्य अंचल के नेपाली जन-जीवन, उनकी भाषा में मिलने वाली स्थानीयता, रहन-सहन, खान-पान में भिन्नता का स्पष्ट चित्रण किया गया है। नेपाली-नेपाली के बीच स्थान के दूरत्व के चलते भाषिक-सांस्कृतिक विविधता और विभिन्नता का चित्र भी कृति में सजीवता से दिखाया गया है। कहानी 'द इमिग्रेंट्स' (प्रवासी) में इसका अच्छा उदाहरण दिया गया है। कहानी में नायक भारत से है और नायिका नेपाल से, उनके बीच बातचीत से पता चलता है कि इनकी भाषा में कितनी भिन्नता है -

---

[9] Before going further with the discussion let us be clear with the terms 'Nepalese' and `Nepali'. The former is basically used to represent people with Nepalese citizenship while the latter is used to denote the Nepali speaking Indian nationals. 'Nepalese' refers to the national identity or nationality of the people of Nepal while the term 'Nepali' connotes the ethnic identity of the Indian Nepalis.

-- Khawas, Vimal (2005), Nepali vs. Nepalese, *The Hindu,* Retrieved from, URL: www.thehindu.com/op/2005/06/19/stories/2005061901081400.htm

'Everyone in Darjeeling speaks Nepali. We speak Nepali at home. I am Nepali.'

'But for a Nepali your Nepali is really bad,' she pointed out.

'We speak a different Nepali from the Nepali you people in Nepal do.'[10]

भारतीय नेपालियों को भारत के अन्य नागरिकों की तरह समान अधिकार और सुविधा प्राप्त नहीं है। असम, मणिपुर, नागालैंड आदि में वे बहुत पहले से बसे हैं तथा भारत सरकार द्वारा उन्हें जो क्षेत्र दिया गया है, उसमें उनकी संख्या के अनुसार उन्हें सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक एवं कानूनी प्रतिष्ठा दी गई है। भारतीय नेपाली जो दार्जिलिंग और सिक्किम के हैं या वहाँ जन्मे तथा पले-बढ़े हैं, उनकी परिस्थिति असम, मेघालय या मणिपुर के भारतीय नेपालियों से बिलकुल भिन्न हैं। एक तो यह कि दार्जिलिंग तथा सिक्किम में नेपाली लोगों का प्रभुत्व है। हालाँकि अन्य राज्यों में भी नेपालियों की संख्या अच्छी है, परन्तु इन राज्यों में वे अल्पसंख्यक हैं। दार्जिलिंग तथा सिक्किम को छोड़ अन्य राज्यों के नेपालियों को जीवन तथा संपत्ति की असुरक्षा हमेशा लगी रहती है। इसकी चिंता दार्जिलिंग और सिक्किम वालों को नहीं होती है। भारत का नेपाल के साथ धार्मिक संबंध तो सभी को ज्ञात है, पर साथ ही ऐतिहासिक संबंध भी है। फिर भी भारत में नेपाली लोगों के साथ सौतेला व्यवहार किया जाता है।

अन्य भारतीय भाषा के समान ही नेपाली भाषा तथा साहित्य काफ़ी समृद्ध है। भारत के संविधान के अंतर्गत सन् 1992 में नेपाली भाषा को आठवीं अनुसूची में स्थान प्राप्त हुआ।[11] इस भाषा में भी साहित्य का विपुल भण्डार है। नेपाली में अनेक समाचार-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। नेपाली भाषा का साहित्य विश्व में अपनी अलग पहचान बनाने में सक्षम हो सका है। विश्व के बहुत से देशों में अब इस भाषा का अध्ययन होता है। जैसे-

i) University of London, School of Oriented and African Studies (SOAS), London, UK.
ii) Cornell University (a) Summer Intensive Language Course (b) Department of Asian Studies, New York, USA.
iii) University of Wisconsin – Madison's South Asian Summer Language Institute (SASLI) USA.
iv) Indian Institute, Amsterdam, Netherlands

साथ ही भारत में काशी हिंदू विश्वविद्यालय, नार्थ बंगाल विश्वविद्यालय, गुवाहाटी विश्वविद्यालय आदि में नेपाली भाषा का पठन-पाठन होता है।

---

[10] मूल पाठ, पृ. 253

[11] Hutt, J. Michael and Pratyoush Onta, *Political change and Public culture in Post-1990 Nepal,* Cambridge University Press, UK, 2017, pg.132

भारत में सन् 2000 से नेपाली भाषा को विभाषी तक पहुँचाने का कार्य भारत सरकार ने 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' के अंतर्गत 'भारतीय भाषा संस्थान', मैसूर के पूर्वोतर क्षेत्र भाषा केन्द्र, गुवाहाटी (असम) को दिया गया है। भारत सरकार की सूचना प्रविधि मंत्रालय द्वारा इस भाषा का कंप्यूटरीकरण कर इसमें वर्तनी, व्याकरण आदि समाविष्ट करके 'प्रोग्रामिंग' (Programming) का कार्य चल रहा है। 'आई-आई-टी', मुम्बई से संचालित 'इण्डो-वर्डनेट योजना' में नेपाली भाषा का भी समावेश हो चुका है और 'सिडेक' (पुणे) में भी नेपाली भाषा का केन्द्र स्थापित हुआ है। साथ ही 'सिडेक' (पुणे) ने इस भाषा का फॉण्ट (font) भी तैयार कर लिया है। अतः नेपाली भाषा का भविष्य और भी उज्ज्वल है, जो इसकी विशेषताओं के कारण ही है।

इस बात से इंकार भी नहीं किया जा सकता कि भारत और नेपाल दोनों ही देशों के नेपाली समुदाय की संस्कृति तथा भाषा मिलती जुलती है, केवल तुच्छ अंतर मात्र है। भाषा में केवल कुछ रूपांतर है, पर साथ ही बहुत सारे शब्दों में विभिन्नताएं भी है। उदाहरण –

नेपाल की नेपाली	**भारतीय नेपाली**
दाई (भाई)	दाज्यू
ढोका (दरवाजा)	दयिलो
सुस्तरी (आलस्य)	बिस्तारी
प्वाल (छेद)	दुलो
खलती (जेब)	गोजी
भुजा (चावल)	भात
झ्याल (खिड़की)	खिड़की
पसल (दुकान)	दोकान
गोलबेरा (टमाटर)	रमबेरा
साचों (चाबी)	चाबी
धारा (नदी)	कल
भरयांग (सीडी)	सीडी
कागती (नींबू)	नींबू
अनी(और)	अंता
बिरामी (बीमार)	बीमार

नेपाली भाषा को भारतीय संविधान में मान्यता दिए जाने का मतलब है कि इसका समृद्ध साहित्यिक अस्तित्व मौजूद है। नेपाली साहित्य ख़ास कर दार्जिलिंग और पूर्वोत्तर समेत उत्तर भारत में फल-फूल रहा है। हर साल 'साहित्य अकादमी' जिन भारतीय भाषाओं में अमूल्य साहित्यिक योगदान देने वाले लेखकों को सम्मानित करती है, उनमें नेपाली भाषा भी शामिल है। ऑल इंडिया रेडियो दिन में तीन बार नेपाली में एक-एक घंटे का कार्यक्रम प्रसारित करता है। इन कार्यक्रमों में समाचार, गीत और नाटक प्रसारित होते हैं। सरकार द्वारा इतना कुछ करने के बावजूद भारतीय नेपालियों का सामाजिक स्तर बहुत ज़्यादा उठ नहीं पाया है।

2.2 नेपाली अस्मिता के प्रश्नों पर चर्चा

नेपाली लोगों के पूर्वजों ने अपने देश भारत के लिए अपना जीवन बलिदान किया है। उनकी आने वाली पीढ़ी को भारत में सुरक्षा मिलनी चाहिए थी, जो कि उन्हें सही मायनों में नहीं मिली है। यह उनको एक भारतीय होने के नाते सभी समान अधिकार मिलना चाहिए। मणिपुर के सोगलमांग कांड, असम के विदेशी भगाओ आंदोलन को हम उदाहरण स्वरूप देख सकते हैं। यह आंदोलन मुख्य रूप से नेपाली लोगों को तथाकथित स्थानों से भगाने के लिए वहाँ के निवासियों ने किया था।

हर नेपाली से यह सवाल किया जाता है कि वह आख़िर नेपाली है या भारतीय? नेपाली या विदेशी की संज्ञा से मुख्यधारा के कुछ भारतीय उन्हें पुकारते हैं। क्यों भारतीय नेपालियों को नेपाल के नेपालियों के साथ जोड़ा जाता हैं? क्यों मुख्यधारा के भारतीय यह स्वीकार नहीं कर लेते कि एक करोड़ से भी ज़्यादा भारतीय नेपाली पीढ़ियों से भारत के प्रामाणिक नागरिक हैं? लोगों को यह भ्रम है कि भारतीय नेपाली या तो अप्रवासी नेपाली या नेपाल के नागरिक हैं। कई कारणों से भारतीय नेपाली अपने आपको नेपाल के नेपालियों से अलग साबित करना चाहते हैं। भारतीय होते हुए भी नेपालियों को विदेशी ही माना जाता है। उनके इस पहचान के लक्ष्य को आगे बढ़ाने में नाम, संज्ञा एवं शब्दावली एक बड़ी चुनौती थी और आज भी है। अपनी एक अलग पहचान बनाने के लिए उन्होंने कई शब्दावलियों के साथ परीक्षण। जैसे – 'गोर्खा', 'गोर्खाली', 'भार्पाली' या 'भारतीय नेपाली', 'भार्गोली' या 'भारतीय गोर्खाली' आदि। परन्तु इससे भी उनकी पहचान में कोई फर्क नहीं पड़ा है। भारत के कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर भारतीय नेपाली साहित्य पढ़ाया जाता है, परन्तु इससे भी भारत के अन्य समुदाय उनके साथ विदेशियों वाला व्यवहार ही करते हैं।

प्रज्वल पराजुली की कृति इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि वह नेपाली अस्मिता के प्रश्नों को सामने रखने के साथ-साथ दुनिया को उनके अस्तित्व के होने का एहसास दिलाता है। उन्होंने कृति में अधिकतर अपने निजी जीवन के अनुभवों को अभिव्यक्त किया है। कृति उनके जीवन से जुड़ी होने के बावजूद, अधिकतर नेपाली लोगों की समस्याओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। भारतीय नेपालियों की पहचान की जो समस्या है, जैसे- सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि को इन कहानियों द्वारा दर्शाया गया है। सामाजिक भेदभाव हर कदम पर नेपाली समुदाय को झेलना पड़ता है। दार्जिलिंग में

सांस्कृतिक स्तर पर बंगालियों का काफ़ी प्रभाव रहा है, क्योंकि पश्चिम बंगाल में बंगालियों का प्रभुत्व है। हालाँकि राजनीतिक स्तर पर दार्जिलिंग को स्वायत्त परिषद् प्राप्त है, परन्तु उन्हें पर्याप्त प्रतिनिधित्व का मौका आज भी नहीं दिया जाता।

हर जाति की अस्मिता उनकी संस्कृति में निहित रहती है, नेपाली जाति की भी अस्मिता उनकी संस्कृति में निहित है, जिसे कुछ अंश तक भाषा और साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया गया है। गोर्खालैंड आंदोलन का प्रभाव हम नेपाली समकालीन साहित्य में देख सकते हैं। यह आंदोलन उनकी अस्मिता का आंदोलन कैसे बन गया, इस पर भी चर्चा की जाएगी। पश्चिम बंगाल में बंगालियों का प्रभुत्व बहुसंख्या में है, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो। बंगाली समुदाय, नेपाली तथा वहाँ के आदिवासी समुदायों से बहुत आगे हैं। जिसके कारण भी नेपालियों पर इतना दबाव पड़ गया कि उन्होंने दुनिया को दिखा देना चाहा कि वे अशिक्षित लोगों का एक गिरोहमात्र नहीं है, बल्कि उनके पास भी अपना उत्कृष्ट साहित्य, कला आदि मौजूद है। इस कारण भी कवि भानुभक्त को भारतीय नेपाली साहित्य के प्रतीक के रूप में मानने लगे। 'भानुभक्त जयंती' हर साल 13 जुलाई को मनाई जाती है। सर्वप्रथम कवि भानुभक्त ने ही रामायण का नेपाली भाषा में अनुवाद किया था। परन्तु कवि भानुभक्त को भारतीय नेपाली साहित्य जगत का प्रतीक मानना गोर्खालैंड आंदोलन से जुड़े लोगों के अनुसार सही बात नहीं थी। उन्हें भारतीय नेपाली साहित्य का प्रतीक मानने पर गोर्खालैंड आंदोलन में रूकावट आ सकती थी। गोर्खालैंड आंदोलन के समर्थकों ने दार्जिलिंग में भानुभक्त दिवस पर रोक लगा दी। इसका एक कारण तो यह था कि कवि भानुभक्त स्वयं नेपाल के निवासी थे तथा दूसरा यह कि इनकों प्रतीक मानना अपनी ही बात का प्रतिवाद करने के समान था। परिणामस्वरूप 'कवि अगम सिंह गिरि जयंती' 27 दिसम्बर को मनाने लगे, जो कि भारत के विख्यात लेखक तथा निवासी थे। परन्तु, आज भी सिक्किम में 'भानुभक्त दिवस' मनाया जाता है।

नेपाली अस्मिता इस कहानी-संग्रह का मूल विषय है और देखा जाए तो सभी समस्याएँ इसी के इर्द-गिर्द घूमती है। भारतीय नेपालियों को अपनी पहचान को हमेशा साबित करना पड़ता है। भारत में ही अधिकतर नेपाली समुदाय के लोगों को आए दिन अपनी भारतीयता का प्रमाण देना पड़ता है। हर एक नेपाली व्यक्ति ने अपने जीवन में एक-न-एक बार "क्या आप नेपाल से हैं?" ऐसे वाहियात सवालों का सामना किया है। भारत में कुछ ऐसे भी लोग हैं, जो इस बात से अनजान हैं कि भारतीय नेपालियों का भी अस्तित्व है और कई लोग इस सच्चाई को जानते हुए भी मात्र उनकी खिल्ली उड़ाने के लिए अनजान बनने का ढोंग करते हैं।

नेपाली समुदाय से अनेक उत्कृष्ट बुद्धिजीवी सामने आए हैं, जैसे- प्रो. महेंद्र पी. लामा, प्रो. टी.बी. सुब्बा, प्रो. हरका बहादुर छेत्री आदि जो कि देश-विदेश में मशहूर हैं। प्रोफेसर महेंद्र पी. लामा भारत में सबसे कम उम्र के सिक्किम यूनिवर्सिटी के कुलपति बने थे। ऐसे बुद्धिजीवियों के होते हुए भी नेपाली समाज की बौद्धिकता को सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है। सभी के साथ मिलकर रहने के बावजूद, एक नागरिक का कर्तव्य ईमानदारी से निभाने के बावजूद, वे अपने आप को असुरक्षित पाते

हैं। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक अधिकारों का उपयोग यहाँ के प्रथम दर्ज़े के नागरिकों के समान निर्बाध रूप से न कर पाने के कारण उत्पन्न ग्लानि तथा क्षोभ के कारण उन्हें स्वयं अनुभव होने लगता है कि अब भारत में नेपाली जीवन पूर्ण रूप से सुरक्षित नहीं है। इसका कारण भी दिया गया है कि एक ओर नेपाली अपनी जातीय एकता से विमुख हो रहे हैं, तो दूसरी ओर अन्य जातियों के शोषण से पीड़ित है। *द गोर्खास डॉटर* कृति में लेखक ने यह सन्देश दिया है कि ऐसी स्थिति में संगठित जातीय एकता आवश्यक है, तो दूसरी ओर मुक्ति की राह उन्हें स्वयं ढूँढ़ निकालनी होगी।

नेपालियों की एक अन्य समस्या ज़मीन से संबंधित कागज़ात न होने के कारण बेदखली तथा उससे उपजा उत्पीड़न है। इसका वर्णन बिक्रम बीर थापा के उपन्यास *तीस्ता देखि सतलज सम्म* में बखूबी दर्शाया गया है। जब कुछ नेपालियों को भारत सरकार ने भारत के कई जगहों पर ला बसाया था, उस समय उनके पास ज़मीन के पट्टे नहीं थे। जब रेल की पटरी उनके गाँव से बनने लगी, जैसे – असम का एक स्थान 'जागुन', तब उन लोगों ने अपनी ज़मीन भी खो दी और उन्हें एक पैसा तक नहीं मिला। ऐसा उनके अशिक्षित होने के कारण भी हुआ है। असम में प्रथम बसने वाले नेपाली बहुत ही सरल थे। तभी अपने ज़मीन के कागज़ात बनाने तक का विचार नहीं किया। जिसके चलते अब उनका भविष्य धुंधला हो गया है। असम के नेपालियों के पास ज़मीन के प्रमाण-पत्र नहीं थे। परन्तु मेघालय के नेपालियों के पास प्रमाण पत्र होते हुए भी वे आज तक वहाँ के नहीं हो पाए है। वहीं की जनजाति पहले पहाड़ों में रहती थी। ब्रिटिश फौज के नेपाली सिपाहियों को ब्रिटिश सरकार ने वहाँ बसाया, जहाँ पहले घना जंगल था, जिसे उन्होंने साफ कर बसने योग्य बनाया। इसी कारण आज भी वहाँ नेपाली नाम से जगहों के नामकरण हैं, जैसे – 'बड़ा पानी', 'बड़ा पत्थर', 'लक्ष्मी नाला', 'माई पर्वत' आदि। 'मेघालय लैंड ट्रांसफर एक्ट' के अनुसार नेपाली लोग अपनी ज़मीन केवल खासी, गारो आदि मेघालय की जनजातियों को ही बेच सकते हैं। यहाँ तक कि वे अपने ही साथी नेपाली को भी नहीं बेच सकते। ऐसा इस कारण भी है, ताकि इनकी ज़मीन को हथिया सके। इस अधिनियम के अनुसार बाहर के लोग मेघालय में ज़मीन नहीं खरीद सकते, अगर कोई नेपाली व्यक्ति मुसीबत के चलते अपनी ज़मीन बेच देता है या गिरवी रखता है, तो वह बाद में दोबारा उस ज़मीन को नहीं खरीद सकता। यही स्थिति अभी मणिपुर में बसे नेपाली लोगों की भी हो गई है। सन् 1972 से पहले आकर बसने वालों को ही मणिपुर में निवास करने का अधिकार होगा। इस कारण वहाँ के नेपाली समुदाय में काफ़ी अफरा-तफरी मच गई है। उनके बेघर होने तक की नौबत आ गई है। हाल ही में मणिपुर में 'The Manipur Regulation of Non-Local People Act, 2016' के तहत वहाँ बसे नेपाली समुदाय को नई अधिसूचना मिली है। इस अधिनियम के कुछ प्रावधान इस प्रकार है –

- Locals are those who were citizens of India and residents of the state immediately before Manipur gained statehood in January 21, 1972, and their descendants residing in the state.

- Non-locals are citizens of India but were not residents of the state immediately before January 21, 1972.
- Once implemented, every non-local will have to get registered and obtain a pass to visit to place or stay as a tenant. Passes will be valid for 6 months and will have to be extended after that.
- Any house owner who fails to inform the authorities about leasing his property to non-locals will be fined anything between two thousand to five thousand rupees.
- Provisions will not be applicable to employees of union and state government, public undertakings, constitutional bodies, leaders of recognised political parties and students of educational institutions located in Manipur.[12]

सिक्किम राज्य में नेपालियों की बहुसंख्या के कारण उनमें वैसी असुरक्षा नहीं है, जैसी दार्जिलिंग और भारत के अन्य राज्यों में बसे नेपालियों की है। भारत में भारतीय नेपालियों की अन्य समस्याएँ कुछ इस प्रकार हैं - जातीय अस्मिता की रक्षा, नेपाली जातीय पहचान को कायम रखना तथा भविष्य में आने वाली पीढ़ी के लिए सुरक्षित जीविका और जीवनयापन व्यवस्था के लिए कोशिश करना। इस कहानी-संग्रह में मूल रूप से इन्हीं समस्याओं को कथानक के माध्यम से उद्घाटित करने की कोशिश की गई है। गोर्खा सैनिकों के सेवानिवृत होने के बाद, जब अपने ही देश में उनसे सवाल किया जाता है कि आप किस देश के निवासी है? तब उन पर क्या बीतती होगी, इस पर विचार करना चाहिए। पूरी जवानी देश की सेवा में न्योच्छावर कर देने के बाद जब अपना ही देश पराया कर दे, तो उससे खौफनाक बात और क्या हो सकती है। अपनी भारतीय नेपाली अस्मिता के सवाल एवं अपने अनुभव को ही प्रज्वल पराजुली ने इस कहानी-संग्रह का रूप दिया है।

2.3 मूल पाठ में निहित सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक समस्याएँ

सामाजिक कारण : नेपाली समाज में जातिवाद की समस्या

जाति प्रथा, हिन्दुत्व में व्यावहारिकता से जुड़ा तथ्य है। इसकी उत्पत्ति, मूल्यांकन, और अस्तित्व भारत के लिए सामान्य है। यह बहुत हद तक जातिवाद की पश्चिमी अवधारणा जैसी है, जहाँ लोगों के साथ भेदभाव उनके शरीर के रंग के कारण होता है। इसी तरह, जाति प्रथा में, भेदभाव जन्म के आधार पर किया जाता है, जैसे व्यक्ति का सामाजिक स्तर उसकी जाति के आधार पर परिभाषित करना, जिसमें

---

[12] Parasar, Utpal (2016), "Manipur's new draft bill to control entry of 'non-locals' faces opposition", *Hindustan Times* Retrieved from, URL: www.hindustantimes.com/india-news/manipur-s-new-draft-bill-to-control-entry-of-non-locals-faces-opposition/story-O7i7rwdUejZLJWg3aeeO8J.html

उसका जन्म होता है। दूसरे शब्दों में, जाति के आधार पर व्यक्ति के जन्म के समय ही निश्चित हो जाता है कि वह समाज के किस उच्च या निम्न स्तर से संबंध रखता है। जाति व्यवस्था हिंदुओं के सामाजिक जीवन की विशिष्ट व्यवस्था है, जो उनके आचरण, नैतिकता और विचारों को सर्वाधिक प्रभावित करती है। यह व्यवस्था कितनी पुरानी है, इसका उत्तर देना कठिन है। सनातनी हिंदू इसे दैवी या ईश्वर प्रेरित व्यवस्था मानते हैं और ऋग्वेद से इसका सम्बंध जोड़ते हैं। लेकिन आधुनिक विद्वान इसे मानवकृत व्यवस्था मानते हैं जो किसी एक व्यक्ति द्वारा कदापि नहीं बनाई गई बल्कि विभिन्न काल की परिस्थितियों के अनुसार विकसित हुई है। यद्यपि प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में मनुष्यों को चार वर्णों में विभाजित किया गया है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा प्रत्येक वर्ण का अपना विशिष्ट धर्म निरूपित किया गया है, अंतर्जातीय भोज अथवा अंतर्जातीय विवाह का निषेध किया गया है तथापि वास्तविकता यह है कि हिंदू अनेक जातियों और उपजातियों में विभाजित है और अंतर्जातीय भोज तथा अंतर्जातीय विवाह के प्रतिबन्ध विभिन्न समय में तथा भारत के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न रहे हैं। आजकल अंतर्जातीय भोज संबंधी प्रतिबंध विशेषकर शहरों में प्रायः समाप्त हो गए हैं और अंतर्जातीय विवाह संबंधी प्रतिबंध भी शिथिल पड़ गए हैं। फिर भी, जाति व्यवस्था पढ़े-लिखे भारतीयों में आज भी हावी है।

नेपाली समाज में जातिप्रथा सदियों से चली आ रही है। इस कहानी-संग्रह में जातिवाद की समस्या को दिखाया गया है। हिंदू धर्म में जातिवाद एक श्राप की तरह है, जो किसी भी समाज को अपाहिज बना देता है। नेपाली समुदाय में हिंदुओं की जनसंख्या काफी है, जिसके कारण नेपाली समाज में जातिवाद की इस कुरीति का काफ़ी प्रचलन है। नेपाली समाज में भी कार्यानुसार जाति के नाम रखे गए हैं। चयामे (भंगी), मुमाले (कुम्हार), दमाई (नगाड़ा बजाने वाला) इत्यादि। यह एक समुदाय के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए भी अभिशाप है।

"Occupational Structure of the Gorkha Society

Sl. No.	Caste	Traditional Occupation
1.	Bahuns	Priests
2.	Chettris	Warriors
3.	Thakuris	Aristocrats
4.	Newars	Businessmen
5.	Rais, Limbus, Yakhas, Mangers	Agriculturists

6.	Thamis, Sunuwars, Gurungs	Shepherds
7.	Tamangs	Horse Traders/Cavaliers
8.	Bhujels	Beaten Rice Makers
9.	Jogis	Ascetics
10.	Sherpas	Porters
11.	Yolmus	Paper Makers
12.	Lepchas	Shifting cultivators (Jhum cultivators) in Eastern Nepal, Darjeeling-Sikkim Himalayas
13.	Bhutias	Petty Businessmen
14.	Kamis	Iron Smiths
15.	Damais	Tailors/Musicians
16.	Sarkis	Cobblers

The Gorkha caste like Bahun, Chettri and Thakuri belonged to Tagadhari group. The tagadhari meant those castes which had to compulsorily wear the sacred threads and they were to be purely vegetarians by food habit. The caste like Manger and Gurung were partially Hindu and again partially Buddhist because they use to practice Buddhist rituals along with Hindi cultural (Matwali) ceremonies. The Mangers, Gurungs along with Rais, Limbus, Yakhas, Newars, Sunuwars, Tamangs, Bhujels, Jogis, Yolmus, Sherpas, Lepchas and Bhutias were broadly considered as Matwalis who were supposed to use wine and offer meat as ritual food items compulsorily."[13]

कुछ लोगों का मानना है कि जाति प्रथा का प्रचलन अब समाप्त हो गया है। परन्तु यह मिथ्या ही है, क्योंकि नेपाली समाज में अब भी खुलेआम न सही, पर इस रीति का पालन तो करते ही हैं। उदाहरण के लिए 'ए फादर्स जर्नी' (एक पिता की अनुभूति) कहानी को देख सकते हैं। प्रबीन बचपन से ही अपनी बेटी सुप्रिया के दिमाग में यह डाल देता है कि वे ब्राह्मण हैं और ब्राह्मण सर्वश्रेठ जाति है। यह भी कि अगर भविष्य में यही प्रतिष्ठा या रुतबा चाहिए तो उसे एक ब्राह्मण से ही शादी करनी होगी। उदाहरण के रूप में पिता- पुत्री के बीच इस संदर्भ में इस प्रकार चर्चा होती है –

---

[13] Sharma, Khemraj, *Gorkhas in the wilderness,* Concept Publishing Company Pvt, Ltd.,2013, pg.205

मूल पाठ : '...No one can become a Brahmin unless they are born Brahmin.'

'Are we better than everyone?'

'Yes, we are the best, the very best. You should be proud you were

born a Brahmin.'[14]

अनुवाद : "...कोई भी ब्राह्मण नहीं बन सकता, जब तक वह ब्राह्मण के घर जन्म नहीं लेता।'

"क्या हम औरों के मुकाबले सबसे श्रेष्ठ हैं?"

"हाँ, हम सर्वश्रेष्ठ हैं। तुम्हें गर्व होना चाहिए कि तुम एक ब्राह्मण बनकर पैदा हुई हो।"

भारत की मुख्यधारा में तो वर्ग और जाति मतभेद है ही, पर स्वयं नेपाली समुदाय में भी यह समस्या है। नेपाली समाज में भी इसकी जड़ें इतनी मज़बूत है कि इस रुढ़िवाद को जड़ से उखाड़ना नामुमकिन है। यह ज्वलंत समस्या कहानी 'पिता की अनुभूति' में दिखाई गई है। ऐतिहासिक दृष्टि से जाति व्यवस्था आरम्भिक वैदिक काल में भी विद्यमान थी, यद्यपि उस समय इसका रूप अस्पष्ट था। उत्तर वैदिक युग और सूत्रकाल में यह पुश्तैनी बन गई और विभिन्न पेशे और विभिन्न जातियों का प्रतिनिधित्व करने लगी। वेदपाठी, कर्मकांडी और पुरोहिती करने वाले 'ब्राह्मण' कहलाए। देश का शासन करने वाले तथा युद्ध कला में निपुण व्यक्ति 'क्षत्रिय' कहलाए और सर्वसाधारण जिनका मुख्य धंधा व्यवसाय और वाणिज्य था, 'वैश्य' कहलाए। बाकी बचे लोग जिनका धन्धा सेवा करना था, 'शूद्र' नाम से पुकारे जाने लगे। प्राचीन काल में जब बालक समिधा हाथ में लेकर पहली बार गुरुकुल जाता था, तो कर्म से वर्ण का निर्धारण होता था। अर्थात बालक के कर्म-गुण-स्वभाव को परख कर गुरुकुल में गुरु बालक का वर्ण निर्धारण करते थे। यदि ज्ञानी बुद्धिमान है तो ब्राह्मण, यदि निडर बलशाली है तो क्षत्रिय आदि। एक ब्राह्मण के घर शूद्र और एक शूद्र के यहाँ ब्राह्मण का जन्म हो सकता था। लेकिन धीरे-धीरे यह व्यवस्था लोप हो गई और जन्म से वर्ण व्यवस्था आ गई और हिंदू धर्म का पतन प्रारम्भ हो गया। लोगों के व्यवसाय विरासत बन गए और जाति व्यवस्था भी व्यवसाय से जन्म में और फिर विरासत के रुप में बदल गई। अब एक व्यक्ति की जाति उसके जन्म के आधार पर तय होती है। यह बहुत शर्म की बात है कि 21वीं शताब्दी में जहाँ मानव समाज ने वैज्ञानिक तौर पर इतनी तरक्की की है कि लोग मंगल ग्रह पर भी ज़मीन खरीदने की योजना बना रहे हैं, वहाँ भारतीय समाज अब भी जाति प्रथा जैसी प्राचीन व्यवस्था में विश्वास रखता है।

---

[14] मूल पाठ, पृ. 67

समाज में जाति के आधार पर तथाकथित निम्नजातियों, विशेषरूप से जिन्हें शूद्रों और अछूतों के रुप में वर्णित किया गया है, उनके साथ विभिन्न प्रकार के शोषण किए जाते हैं। इस व्यवस्था की शुरुआत में, शूद्रों और अछूतों से तथाकथित ऊपरी जाति के लोगों द्वारा दासों की तरह बर्ताव किया जाता था। वे केवल निम्न स्तर के कार्य करते थे, लेकिन उनके पास कोई भी शक्ति और विशेषाधिकार नहीं थे। सभी तरह के विशेषाधिकार ब्राह्मणों और क्षत्रियों के पास थे। धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक या सामाजिक सभी प्रकार की नेतृत्व वाली स्थितियों पर केवल तथाकथित उच्च जाति के लोगों द्वारा नियम-कानून बनाए जाते थे। हालांकि, बहुत से समाज सुधारकों जैसे - राजा राम मोहन राय आदि ने अपना सारा जीवन निम्न स्तर के लोगों के उद्धारीकरण के लिए लगा दिया और जाति प्रथा के उन्मूलन के लिए बहुत से सुधार आन्दोलन चलाए। लेकिन यह हमारे सामाजिक परिवेश में इतनी गहराई में बस चुकी है कि इसे जड़ से निकलना कठिन है।

भाग्यवाद को बढ़ावा :

धर्म, भाग्यवाद एवं नियतिवाद को बढ़ावा देकर एक ओर तो शोषण को ईश्वरी इच्छा का नाम देता है, तो वहीं दूसरी ओर अन्याय की चक्की में पिस रहे व्यक्ति को अकर्मण्य बनाता है। धार्मिक चेतना के अंतर्गत भाग्यवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रायः धार्मिक नेता समाज की विषमताओं की व्याख्या भाग्य के खेल के रूप में करते आए हैं। भाग्य का निर्माण मानवीय प्रयासों से संभव नहीं है, इसलिए उसकी मूक स्वीकृति का पाठ नेता सिखाते रहे हैं। समाज में जो भी अन्याय, अत्याचार तथा शोषण व्याप्त है, उसे ईश्वरीय विधान समझकर स्वीकार कर लेना भाग्यवादी मान्यताओं का घोतक है। कहा जाता है कि धर्म और अन्धविश्वास साथ-साथ चलते हैं और इस बात को नकारा नहीं जा सकता। किसी भी धर्म को बिना सोचे- समझे अत्यधिक मानने वाले रुढ़िवादी होते हैं। वे रीति-रिवाजों को अपनाने के लिए विवश हो जाते हैं , क्योंकि उनके पीछे अन्धविश्वास रहता है। 'मिस्ड ब्लेसिंग' (खोया हुआ आशीर्वाद) कहानी में हिंदू और ईसाई धर्म पर विचार-विमर्श किया गया है। किसी व्यक्ति के अस्तित्व का एहसास कराने में धर्म भी प्रमुख भूमिका निभाता है। इस कहानी में राजीव हिंदू परिवार से है, जिसके कारण वह दशहरा धूम-धाम से मनाता है। वह ईसाई धर्म की विचारधारा से कभी संतुष्ट नहीं होता। उसके अनुसार स्कॉट नामक ईसाई मिशनरी के चलते उनका सारा गाँव ईसाई धर्म में परिवर्तित होता जा रहा था। उनके साथ वह हमेशा बहस तथा वाद-विवाद करता, लेकिन रात में सोने से पहले राजीव खुद ईसाई धर्म की प्रार्थना कर सोता है। इसमें यह दिखाया गया है कि आस्था की कोई सीमा नहीं होती। उदाहरण –

> **मूल पाठ** : 'Through the dark, he looked at where his parent's pictures hung, saw their faces in his mind's eye and said a prayer over and over again. It was a Christian prayer he had been taught at St Paul's.'[15]

[15] मूल पाठ, पृ.137

अनुवाद : "अंधेरे में वह दीवार पर लगी अपने माता-पिता की तस्वीर की ओर देखता है। आँखें मूंदकर वह मन की आंखों से उनकी तस्वीर देखता है और फिर मन-ही-मन एक ही प्रार्थना बार-बार दोहराता है। यह प्रार्थना कोई और नहीं बल्कि एक ईसाई प्रार्थना था, जो उसने सेन्ट पॉल्स में पढ़ते समय सिखा था।"

राजीव इन्हीं कारणों से धार्मिक असमंजस में पड़ जाता है। धर्म मनुष्य के अस्तित्व को आकार प्रदान करता है। बहुधार्मिक देश में ऐसी स्थिति आना सामान्य सी बात है।

नेपाली समाज में महिलाओं की स्थिति :

भारत के अन्य समुदायों की तरह नेपाली समुदाय में भी चमड़े के रंग को लेकर लड़कियों को परखा जाता है। लोगों को आज भी लगता है कि लड़की का रंग अगर काला हो तो उसके लिए अच्छे घरों से रिश्ता आना मुश्किल है। यहाँ तक कि कई परिवारजन स्वयं ही अपने परिवार के लिए गोरी बहू की मांग करते हैं। नेपाली समाज इससे अछूता नहीं है। कई बच्चों के घर के नाम उनके रंग के अनुसार दिए जाते हैं। कहानी 'द क्लेफ्ट' (फाँक) की पात्र 'काली' का रंग काला था तो उसका नाम काली रख दिया गया। बच्ची का रंग गोरा होता है तो उसका नाम सेती रख देते हैं। 'सेती' अर्थात सफ़ेद। हिंदी में भी ऐसे कई शब्दों का प्रचलन है, जैसे - कालू, कलुआ आदि। इस कहानी संग्रह में नेपाल और भारतीय समाज में रंग के कारण जो भेद-भाव होता है, उसे उजागर किया गया है। 'नो लैंड इज़ हर लैंड' (न घर का न घाट का) कहानी में समाज पर कटाक्ष दिखाया गया है कि अगर कोई महिला अकेली है तो उसका यह मतलब नहीं कि वह बदचलन औरत है। दो पति के होने का यह अर्थ कदापि नहीं कि महिला का चाल-चलन अच्छा नहीं। पीछे की सच्चाई को जाने बिना ही लोग महिलाओं को बदनाम कर देते हैं।

'नो लैंड इज़ हर लैंड' (न घर का न घाट का) और 'लेट स्लीपिंग डॉग्स लाई' (सोते शेर को न जगाओं), दोनों कहानियों में लड़की पैदा होने पर परिवारजन माँ को दोषी बना देते हैं। इस तरह समाज में हो रही त्रासदी के कटु सत्य को दर्शाया गया है। कई उच्च और निम्न वर्ग के लोग बेटी को अभिशाप मानते हैं। लड़की का पैदा होना बोझ माना जाता है, क्योंकि उनके लिए दहेज जमा करना पड़ता है। असल में ऐसा दहेज जैसी कुप्रथा के कारण होता है। भारत में ही जिन समाजों में दहेज प्रथा नहीं है, वहाँ बेटियों को बोझ नहीं समझते। उन्हें बराबर का हक प्राप्त है, जैसे- मेघालय का खासी समुदाय। यहाँ शादी के बाद पुरुष अपने पत्नी के घर चला जाता है। दहेज प्रथा का पूर्वोत्तर भारत में प्रचलन नहीं है। फलतः वहाँ महिलाओं को भी समान अधिकार है। दहेज प्रथा समाप्त हो जाने पर भारत के अन्य हिस्सों में भी लड़कियों को समानअधिकार प्राप्त हो जाएगा।

नेपाली समाज में विधवा समस्या :

विधवा महिलाओं में आज भी समाज का डर बना रहता है। नेपाली महिलाओं की स्थिति दयनीय है। चाहे अमीर हो या गरीब, उन्हें हमेशा समाज का डर बना रहता है। इसका एक मुख्य कारण अशिक्षित होना है। उनकी स्थिति में तभी सुधार आ सकता है, जब वे स्वयं को बदलने का प्रयास करें। दूसरा

कारण है, अन्धविश्वास। उदाहरण- हिंदू धर्म में जो लड़कियाँ मांगलिक होती हैं, उन्हें लोग अशुभ समझते हैं। उन्हें समाज अलग नज़रिए से देखता है। इस कुरीति को भी लेखक ने उजागर किया है। 'द गोर्खास डॉटर' (गोर्खा की बेटी) कहानी में इसका उल्लेख है, उदाहरण –

> **मूल पाठ** : "...a slew of astrologers had confirmed what my birth-chart clearly stated: that I was unlucky for Appa, that the house would not be completed until I was past fifteen and that I was accident-prone and Manglik, which meant I'd have trouble finding a man to get married to."[16]
>
> **अनुवाद** : "ज्योतिषियों ने आपा को यह पुष्टि कर दी थी कि मेरी कुंडली में साफ-लिखा है कि मैं बदकिस्मत हूँ। जब तक मैं साल की न हो जाऊँ, हमारे घर का निर्माण कभी पूरा नहीं हो पायेगा, मेरे योग में दुर्घटना लिखी है और मांगलिक दोष होने के कारण मेरे लिए वर ढूँढना मुश्किल होगा।"

इस समस्या के पीछे निहित सामाजिक-सांस्कृतिक कारणों का विश्लेषण करने की ज़रूरत है। स्त्रियों के प्रति हिंदू समाज का दृष्टिकोण, चाहे वह नेपाल हो या भारत शुरू से ही पितृसत्तात्मक रहा है। वैदिक युग में स्त्रियों का कुछ अधिकार अवश्य प्राप्त थे, लेकिन बाद में वह पितृसत्तात्मक समाज का उपनिवेश बनती गई। जिन स्त्रियों ने वैदिक सूक्तियों की रचना की थी, उन्हें वेद पाठ से भी वंचित कर दिया गया। उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों के बचे अधिकार भी इतिहासकारों ने छीन लिए और उन्हें आजीवन पुरुषों का गुलाम बना दिया। मनु के अनुसार स्त्री को कभी स्वतंत्र छोड़ना ही नहीं चाहिए। उसे बचपन में पिता, युवावस्था में पति और बुढ़ापे में पुत्र के अधीन रहना चाहिए।[17]

एंजेल्स ने पितृसत्तात्मक समाज के उदय के पीछे व्यक्तिगत संपत्ति के लालच को मुख्य कारण माना है। अपनी पुस्तक *परिवार व्यक्तिगत, संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति* में मातृसत्ता से पितृसत्ता के परिवर्तन की प्रकिया के विषय में लिखते हुए वे कहते हैं, "पाषणकाल में खेती का अधिकारी पूरा कबीला होता था तथा हल और फावड़े अविकसित अवस्था में थे। पुरुष को खेती करनी पड़ती थी और औरत बागवानी संभालती थी। श्रम के इस आदिम विभाजन के काल में स्त्री और पुरुष पारस्परिक समानता के आधार पर समाज को संगठित कर रहे थे। वस्तुतः अधिक शारीरिक शक्ति की अपेक्षा वाले काम पुरुष और हल्के काम स्त्रियाँ करतीं थीं। धातुओं के संबंध में जानकारी बढ़ने के साथ विकास की संभावनाएँ अधिक व्यापक हुई। व्यक्तिगत संपत्ति के लोभ में पुरुष में स्वामित्व की भावना विकसित हुई। वह ज़मीन का मालिक था, गुलामों का मालिक था और अब स्त्री का मालिक भी बन गया। यहीं से

---

[16] मूल पाठ, पृ. 179

[17] "पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे न स्त्री स्वातंत्र महीति।।" मनुस्मृति, पृ. 9-3

औरत की गुलामी की कहानी शुरू हुई। जिस स्थिति ने घरेलू कामकाज संभालने के कारण औरत को परिवार में सर्वोच्च सत्ता के सिंहासन पर बिठाया था, वही अब औरत की गुलामी का आधार बन गई।"[18]

पितृसत्ता की स्थापना के बाद पुरुषों ने नए नियम बनाने शुरू किए और स्त्रियों को पुर्णतः गुलाम बना दिया। उसके जीवन के तमाम फैसले पुरुषों द्वारा किए जाने लगे। पति के मरने पर पुनर्विवाह पर पाबन्दी लगा दी गई। साथ ही पति की चिता में कूदकर सती बनने के लिए उन्हें मजबूर भी किया गया। पहले भी इसकी चर्चा की गई है कि विधवाओं द्वारा विवाह करने पर समाज उन्हें सम्मान की नज़र से नहीं देखता। इस कारण भी कई विधवाएँ अपनी इच्छाओं का गला घोंट देती हैं। संकलित कहानियों में विधवा-जीवन की त्रासदी दिखाई गई है, जहाँ रुदन है, अपमान है और है प्रताड़ना। विधवा होते ही पुरुष वर्ग उस पर अपनी गिद्ध-दृष्टि लगाए रहता है और यहाँ तक कि दूसरी औरतें भी उस पर लांछन लगाने से पीछे नहीं हटतीं। प्रस्तुत कहानियों में विधवा समस्या को समग्रता से उठाया गया है और उसका समाधान खोजने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की गई है।

दाम्पत्य जीवन में महिलाओं की समस्याएँ :

कहानी 'पासिंग फैंसी' (क्षणिक स्वप्नचित्र) में दिखाया गया है कि दाम्पत्य जीवन जब नीरस या एकरस हो जाता है, तभी लोग दूसरी चीज़ों, दूसरे लोगों से आकर्षित होने लगते हैं। 'पासिंग फैंसी' कहानी में वैवाहिक जीवन के विविध पक्षों को दर्शाया गया है। कहानी में दो पात्रों श्रीमान् और श्रीमती का जीवन खुशहाल है, परन्तु जबसे श्रीमती अपने पड़ोसी भट्टाराई से मिलने लगी है, उसकी सोच बदल गई है। विवाह की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि वह सुख के विषय में कोई आश्वासन नहीं देता। जब स्त्री को वैवाहिक जीवन विकृत लगने लगता है, ऐसी स्थिति को बदले की चाह में ही स्त्री अपनी स्वतंत्रता खोजने लगती है। अपनी अस्मिता की खोज में लग जाती है।

वेश्यावृत्ति की समस्या :

सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ वेश्यावृत्ति का भी पूरी दुनिया में चरम उभार हो चुका है। इस दौर के समाज में वेश्यावृत्ति के अलग-अलग रूप सामने आए हैं। जिस्मफरोशी पैसा कमाने का सबसे आसान ज़रिया बन चुकी है। गरीब और विकासशील देश, जैसे- भारत, नेपाल, थाईलैंड, बांग्लादेश आदि में वेश्यावृत्ति अत्यधिक मात्रा में है। वैसे वेश्यावृत्ति या जिस्मफरोशी के व्यापार का प्रचलन सदियों से चला आ रहा है। बेबीलोन के मंदिरों से लेकर भारत के मंदिरों में देवदासी प्रथा, वेश्यावृत्ति का आदिम रूप है। वेश्याएँ सम्पदा और शक्ति की प्रतीक मानी जाती थी। मुगलों के हरम में सैकड़ों औरतें रहती थीं। जब भारत में अंग्रेज़ों ने अधिकार जमा लिया, तब से इसका रूप ही बदल गया। राजाओं ने

---

[18] एंजेल्स, *स्त्री उपेक्षिता : सीमोन द बोउआर*, पृ. 33

अग्रेज़ों को खुश करने के लिए तवायफों को तोहफे के रूप में पेश करना शुरू कर दिया और अब यह एक व्यापार बन चुका है, देह व्यापार।

प्रस्तुत कहानी-संग्रह में एक समस्या वेश्यावृत्ति की उठाई गई है। हालाँकि 'द क्लेफ्ट' (फाँक) कहानी में स्पष्ट दर्शाया नहीं गया है, परन्तु काली के उस अनजान आदमी के साथ बातचीत से पता चलता है कि वह आदमी असल में एक दलाल है, जो काली जैसी गाँव की भोली-भाली लड़कियों को बहला-फुसलाकर, उन्हें भारत में बेचने का धंधा करता है –

> **मूल पाठ :** '*You have a pretty face,* he always said. *It's a pity your bad lip conceals it. Your eyes are so expressive; they are an actress's eyes. Have you ever dreamed of being an actress? Do you have a good voice? Can you sing for me?*[19]
>
> **अनुवाद :** *तुम्हारा चेहरा खूबसूरत है,* वह हमेशा कहता था। *तरस आता है, तुम्हारे बुरे होंठ इसे छुपा देते हैं। तुम्हारी आँखे सब कह जाती है। ये अभिनेत्री की आँखे हैं, क्या तुम्हारी आवाज़ अच्छी है? क्या तुम मेरे लिए गाओगी?*

चाहे कोई भी समाज हो, वेश्या बनने के कारण बहुत भिन्न नहीं होते। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि अच्छे परिवारों की लड़कियाँ भी इस देह व्यापार के दलदल में फँस जाती है। इसके कुछ मनोवैज्ञानिक कारण भी हैं, जैसे- भौतिक सुख, लालच आदि। नेपाल की एक एनजीओ (Non-Governmental Organization) 'मईती नेपाल'[20] विश्वविख्यात है। उनकी एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में करीब दो लाख नेपाली लड़कियाँ देह व्यापार करती हैं। उनमें से अधिकांश चौदह साल से कम उम्र की हैं। नेपाल से लड़कियों को बहला फुसला कर या अगवा कर भारत लाए जाने का चलन बढ़ता जा रहा है।

जब कोई स्त्री अनैतिकता और व्यभिचार को अपनाकर बदले में धन या वस्तु प्राप्त करती है, तो उसे वेश्यावृत्ति कहा जाता है। भारतीय कानून व्यवस्था में वेश्यावृत्ति को यौन अपराध माना गया है। हम देखते हैं कि आदिकाल से ही नारी शरीर का विविध रूपों में शोषण होता चला आ रहा है। यहाँ तक कि राजाओं-महाराजाओं ने अपने शासन काल में मनोरंजन के लिए गणिकाओं को अपने यहाँ स्थान दे रखा था। आधुनिक युग में वैधानिक दृष्टि से वेश्यावृत्ति को अपराध माने जाने के कारण समाज में ऊपरी तौर पर वेश्यावृत्ति नज़र नहीं आती, पर बड़े-बड़े होटलों में कॉलगर्ल्स वेश्या का ही आधुनिक पश्चिमी रूप है। आधुनिक युग में स्त्रियों को वेश्यावृत्ति की ओर प्रेरित करने वाले प्रमुख कारण आर्थिक हैं।

---

[19] मूल पाठ, पृ.11

[20] A group of socially committed professionals (teachers, journalists and social workers) formed Maiti Nepal in 1993 to fight child labor and sex trafficking. This social organization also engages in criminal investigation and prosecution. Maiti's focus has always been on the prevention of the trafficking of women and girls. Rescuing girls forced into prostitution and helping them find economic alternatives have been key struggles. Rehabilitations, education and job training are key initiatives. *Maiti Nepal,* Retrieved from, URL: www.endslaverynow.org/maiti-nepal

वेश्यावृत्ति के बहुत सारे कारण है, उनमें से एक सबसे प्रमुख कारण है गरीबी। गरीब महिलाओं की बेबसी उन्हें अपना शरीर बेचने के लिए मजबूर कर देती है और कई बार तो दलाल गाँव की मासूम लड़कियों को बहला फुसलाकर इस दलदल में फँसा देते है। वेश्यावृत्ति के और भी कई कारण हैं। जैसे गरीब माता-पिता द्वारा इस व्यापार में डाल दिया जाना, बुरी संगत, यौन शिक्षा का अभाव आदि। अनेक स्त्रियाँ परिवारजनों का पेट भरने के लिए विवश होकर इस पेशे को अपनाती हैं। जीविकोपार्जन के अन्य साधनों के अभाव तथा अन्य कार्यों के अत्यंत श्रमसाध्य एवं अल्पवेतन होने के कारण वे वेश्यावृत्ति की ओर आकर्षित होती हैं। वेश्यावृति का एक कारण सामाजिक भी है। समाज ने अपनी मान्यताओं, रूढ़ियों और त्रुटिपूर्ण नीतियों द्वारा इस समस्या को और जटिल बना दिया है। विवाह-संस्कार के कठोर नियम, दहेज प्रथा, विधवा विवाह पर प्रतिबंध, सामान्य चारित्रिक भूल के लिए सामाजिक बहिष्कार, अनमेल विवाह आदि अनेक कारणों ने इस वृत्ति को बढ़ावा दिया है। समाज में स्त्रियाँ, पुरुषों के मुकाबले शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से कमज़ोर होती हैं। वेश्याएँ तथा स्त्री व्यापार में संलग्न अनेक व्यक्ति भोली-भाली लड़कियों की विषम आर्थिक स्थिति का लाभ उठाकर तथा सुखमय भविष्य का प्रलोभन देकर उन्हें इस व्यवसाय में प्रविष्ट कराते हैं।

कहानी-संग्रह में महिलाओं का शोषित, पीड़ित रूप तो नज़र आया, परन्तु लेखक ने यह भी दिखाया है कि औरतें, मर्दों के हाथ की कठपुतली नहीं हैं। वे भी पुरुषों के समान ही हैं। प्रज्वल पराजुली ने अपनी कहानियों- 'द इमिग्रेंट्स' (प्रवासी) की नायिका साबित्री, 'नो लैंड इज़ हर लैंड' (न घर का, न घाट का) की नायिका अनामिका, 'ए फादर्स जर्नी' (एक पिता की अनुभूति) की नायिका सुप्रिया, 'पासिंग फैंसी' (क्षणिक स्वप्नचित्र) की नायिका श्रीमती में महिलाओं का स्वतंत्र व्यक्तित्व भी दिखाया है। वे मर्दों को जवाब देने से नहीं कतरातीं। सभी पात्र आर्थिक और सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर हैं। अनामिका अपने पति की मार खाकर नहीं बैठती, बल्कि अपनी बेटियों को लेकर अपने पिता के पास लौट जाती है। वह अकेले अपने बूढ़े पिता और दो बेटियों का खर्च चलाती है। कुप्रथाओं और कुरीतियों को समाज से दूर करने के उदेश्य से लेखक ने नारी के बदलते रूप का चित्रण कर महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र दर्शाया है। नारी जाति को कभी अपने अस्तित्व तथा व्यक्तित्व का बलिदान नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने पैरों पर स्वयं खड़ा होना चाहिए। उन्हें आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि पूर्णरूप से आत्मनिर्भर और स्वतंत्र होना चाहिए, अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए। समाज को अगर विकास के पथ पर ले जाना है, तो महिलाओं को भी समान अधिकार मिलना चाहिए।

बाल मजदूरी की समस्या :

'द क्लेफ्ट' (फाँक) कहानी में पात्र काली बाल्यावस्था से ही दूसरे के घर पर नौकरानी का काम करने लगती है। जिससे उनका बचपन ही छिन जाता है। कहानी 'मिस्ड ब्लेसिंग'(खोया हुआ आशीर्वाद) में भी टीकम के माध्यम से गाँव के उन गरीब बच्चों का जीवन दिखाया गया है, जो गरीबी के चलते शहर में अपने रिश्तेदारों के घर नौकरों जैसा काम करता है और साथ-ही-साथ पढ़ाई भी जारी रखता है। कहानी में लेखक ने संकीर्ण मानसिकता वाले नेपालियों के संकुचित व्यवहार से भी अवगत कराया है।

गरीबी के कारण गाँव के लोग शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। काली की तरह ऐसे हज़ारों बच्चे हैं, जो काम की तलाश में बहुत ही छोटी उम्र में घर छोड़ देते हैं या खुद परिवार के लोग उन्हें भेज देते हैं। भारत में भी कई जगहों पर नेपाली बच्चे काम करते हैं। और आज भी नेपाल के हवाई अड्डे पर इमीग्रेशन लेबर की एक अलग कतार होती है, जिसमें वे नेपाली लोग शामिल होते हैं, जो आए दिन छोटी-मोटी मजदूरी के लिए विदेश जाते हैं। ऐसे मजदूरी करने वाले बच्चों एवं लोगों के साथ उनके मालिक कभी-कभी अमानवीय व्यवहार करते हैं। वे यह भूल जाते हैं, जो बच्चे उनके घर में काम कर रहे हैं, आखिर वे भी एक इंसान हैं। काली तथा टीकम जैसे पात्रों के माध्यम से घर में काम करने वाले बच्चों के प्रति किए जाने वाले दुर्व्यवहार को दर्शाया गया है। उदाहरण के लिए काली को घर में जिस कमरे में रखा गया, वह कमरा इंसानों के बैठने लायक तक नहीं था। गाड़ी में भी उसे भेड़-बकरियों की तरह पीछे डिक्की में डाल दिया जाता है। पूरे रास्ते यात्रा में वह डिक्की में सिकुड़कर बैठी रहती है। काली की वह विधवा मालकिन बहुत बूरी गालियाँ देती थी। दूसरी कहानी में राजीव अपनी नाकामयाबी का सारा गुस्सा टीकम पर इतनी बुरी तरह से मार कर निकालता है कि अगले दिन टीकम का मुँह बिल्कुल सूझ जाता है –

मूल पाठ : 'He boxed Tikam's ears and then slapped him hard on the face. He pulled his hair. Tikam's sobs grew louder as the beating progressed to kicking. Tikam was now on all fours. The kicks were aimed at the shins, the stomach and the head.'

अनुवाद : "राजीव, टीकम के कान पर घूसा मारता है। उसके बाल खींचता है और फिर थप्पड़ मारने लगता है। टीकम की रोने की आवाज़ और बढ़ गई, जब घूसा लातों में बदल गया। टीकम अब घुटनों के बल नीचे गिर गया था। राजीव उसकी पसलियों, पेट और सिर पर निशाना लगा कर लाते जमा रहा था।"

वास्तविकता में भी आए दिन ऐसी खबरें सुनने में आती रहती हैं, जहाँ लोग अपने नौकरों को हर दिन मारते-पीटते हैं। इस कहानी में नौकरों पर किए जाने वाले अविश्वास को भी दिखाया गया है। उन्हें शक की नज़र से देखा जाता है। उदाहरणार्थ जब काली अपने जमा किए पैसे मालकिन को सँभालने के लिए देती है, उसकी मालकिन बिना सच्चाई जाने उस पर चोरी का इलज़ाम लगा देती है -

मूल पाठ : Kaali was quite for a while. 'I have 400 rupees I brought with me,' she said.

'It might get lost in the *halla-gulla* here, so will you please keep it?'

'Where did you get the money from? Have you been stealing?'

'No, no, this is from *Dashain* and *bhailinee* money we earned during *Tihaar.*'[21]

अनुवाद : काली कुछ देर के लिए चुप रहती है। "मेरे चार सौ रूपए, मैं अपने साथ लाई हूँ," उसने कहा। "ये इस हल्ले-गुल्ले में कहीं खो न जाएँ, क्या आप अपने पास रखेंगी?"

"ये पैसे तुम्हारे पास कहाँ से आए? क्या तुम चोरी करने लगी हो?"

"नहीं, नहीं ये दसई[22] और भईलीनी[23] के पैसे हैं, जिन्हें मैंने तिहार के दौरान कमाए थे।"

राजनीतिक समस्याएँ :

नेपाली समुदाय भारत में कई राज्यों में बसा है, जैसे सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड। गोर्खालैंड की माँग दार्जिलिंग के नेपाली समुदाय ने शुरू की थी। 'गोर्खा' यानी भारतीय मूल के नेपाली तथा 'लैंड' यानी ज़मीन। विदेशों में तो नेपाली चाहे कहीं से भी हों, उन्हें नेपाल से ही समझा जाता है। भारत में भी उनकी यही स्थिति है। गोर्खालैंड के अन्दर वे कलिम्पोंग, दार्जिलिंग, कुरसिओंग और सिलीगुड़ी के कुछ हिस्सों की माँग कर रहे हैं। वहाँ का नेपाली समाज पश्चिम बंगाल से अलग एक स्वतंत्र राज्य की माँग भारतीय संविधान के अन्तर्गत कर रहा है। स्वतंत्रता पूर्व से ही गोर्खालैंड की माँग शुरू हो गई थी, परन्तु स्वतंत्रता संग्राम के चलते वह आंदोलन थम सा गया था। परन्तु, सन् 1980 के आसपास सुभाष घिसिंग के नेतृत्व में आन्दोलन दुबारा शुरु हो गया। उनके दल 'गोर्खा नेशनल लिबरेशन फ्रंट' ने बहुत ही हिंसक संघर्ष चलाया, जिसके बाद इस पक्ष में पश्चिम बंगाल और नई दिल्ली सरकार के बीच त्रिपक्षीय समझौता हुआ। फलस्वरूप 'दार्जिलिंग गोर्खा हिल काउंसिल' की स्थापना हुई। दार्जिलिंग ज़िले का नेतृत्व सही न होने के कारण फिर से सन् 2008 से यह आंदोलन शुरू हो गया, जिसके बाद इसका नेतृत्व 'गोर्खा जन मुक्ति मोर्चा' के नाम से बिमल गुरुंग ने संभाला। पश्चिम बंगाल से पृथक प्रशासनिक स्वायत्ता लेने के लिए दार्जिलिंग के नेपालियों ने बहुत लम्बे समय से संघर्ष करना शुरू किया था। मुख्य तीन पहाड़ी जनजाति लेपचा, भूटिया और नेपाली, इन तीन समुदायों ने मिलकर सन् 1907 में प्रथम बार पृथक प्रशासनिक इकाई की मांग की पहल की थी। इसी प्रकार की मांग दोबारा 1919, 1929, 1934, 1949 में भी की गई। सन् 1980 के बाद 'गोर्खालैंड आंदोलन' एक व्यवस्थित तथा ठोस मांग के साथ आगे बढ़ने लगा। परन्तु सन् 1986 में यह आंदोलन काफी हिंसक हो गया था। 'गोर्खा नेशनल लिबरेशन फ्रंट' तथा 'कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया' के समर्थकों के बीच लड़ाई में कई लोगों ने अपनी जान गँवाई, साथ ही कई सारे पुलिसवालों की भी जानें गईं। ऐसे हिंसक वारदातों का सिलसिला अगस्त, सन् 1988 तक चलता रहा, जब तक 'गोर्खा नेशनल लिबरेशन फ्रंट', पश्चिम बंगाल सरकार और भारत सरकार के

---

[21] मूल पाठ, पृ.37

[22] दशहरा

[23] दीपावली के समय लड़कियों का झुण्ड लोगों के घरों में जाकर नाचते-गाते आशीर्वाद देते हैं, जिसके बदले उन्हें पैसे मिलते हैं।

बीच त्रिपर्टी अग्रीमेंट (Tripartite Agreement) नहीं हो गया।[24] जिसके बाद 'दार्जिलिंग गोर्खा हिल काउंसिल' की उत्पत्ति हुई। 'दार्जिलिंग गोर्खा हिल काउंसिल' आज भी कार्यत है।

दार्जिलिंग के लोग स्वतंत्र राज्य इसलिए भी चाहते हैं क्योंकि दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल के अधीन होने के कारण बंगालियों द्वारा उपेक्षित है। 'गोर्खा जन मुक्ति मोर्चा' की स्थापना के बावजूद यह अन्य राज्यों की तुलना में पिछड़ा हुआ है। पश्चिम बंगाल सरकार को दार्जिलिंग पर्यटन द्वारा भारी मात्रा में आय प्राप्त होती है। यह सरकार की अवहेलना ही कही जाएगी कि वहाँ आज तक अच्छी सड़क तक नहीं है। रास्ते आज भी संकीर्ण हैं, जहाँ गाड़ियाँ काफ़ी मुश्किल से गुज़रती है। शिक्षा के नाम पर न तो कोई केन्द्रीय विश्वविद्यालय है और न ही कोई केन्द्रीय तकनीकी संस्थान। उनकी मातृभाषा नेपाली है, परन्तु वहाँ शिक्षा का माध्यम बंगाली है। देश-विदेश में दार्जिलिंग की चाय पत्ती मशहूर है, परन्तु वहाँ के निवासियों को कोई मुनाफा नहीं मिलता। साथ ही वहाँ बेरोज़गारी अधिक है। इसी कारण नेपाली समाज अपने हक के लिए गोर्खालैंड की माँग कर रहा है। यह आंदोलन आज भी जारी है। इन समस्याओं को द *गोर्खास डॉटर* में यथार्थपूर्वक संजोया गया है।

नेपाल से आए नेपालियों की संख्या भारत में काफ़ी है और यह समुदाय यहाँ के हर एक कोने में निवास करता है। विशेषकर ऐसे राज्यों में जो नेपाल की सीमा के पास हैं। ब्रिटिश उपनिवेशवाद की ज़रूरतों के चलते भी कई नेपाली भारी मात्रा में भारत में आए। चाहे वे वीर सैनिक के लिए हों, चाय पत्ती तोड़ने के लिए लाए गए मजदूर हो या किसान आदि। नेपाल में गरीबी तो थी ही, जिस कारण उन्हें भारत आकर पैसे कमाने में कोई आपत्ति नहीं थी।

आर्थिक समस्याएँ :

अशिक्षा, अज्ञानता और अन्धविश्वास के कारण भारत की जसंख्या में लगातार वृद्धि हुई है। औद्योगीकरण के चलते छोटे एवं कुटीर उद्योग अपना अस्तित्व नहीं बचा पाते हैं। आधुनिक शिक्षा पद्धति के कारण बेरोज़गारी बढ़ती जा रही है। 'मिस्ड ब्लेसिंग' कहानी में राजीव के पास इंजीनियरिंग की डिग्री है, पर नौकरी नहीं मिलती। दार्जिलिंग के अधिकतर युवाओं की वास्तविक स्थिति यही है। पढ़ाई करने के बावजूद बहुत सारे नौजवान गाड़ी चालक बनकर रह जाते हैं या छोटे मोटे व्यवसाय करते हैं। ऐसा नहीं कि नेपाली समुदाय में बड़े ओहदे के अफसर नहीं, परन्तु उनकी संख्या अल्पमात्र है। इस समाज में अधिकांश लोग किसान, कृषि मजदूरी, चाय बगान में मजदूरी, ग्वाला आदि हैं। खेती या मजदूरी ही इनकी जीविका का साधन है, परन्तु अनेक कृषकों और कृषि मजदूरों आदि को भी गाँव में मजदूरी के अलावा रोजगार के अन्य अवसर न मिलने के कारण आंशिक बेरोज़गारी का सामना करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में कहे तो गाँव के पढ़े-लिखे लोग गाँव लौटना नहीं चाहते, भले ही उन्हें शहर में कैसी भी नौकरी करनी पड़े। समय की गति के साथ व्यक्ति तथा समाज में परिवर्तन स्वाभाविक है।

---

[24] 25 July 1988, a tripartite agreement was finally signed between the GNLF, the West Bengal state government, and the Indian government on 22nd August 1988. *Leadership and the Gorkhaland Movement* Retrieved from, Shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/137574/7/07_chapter_03.pdf,

विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी के विकास तथा नित्य नवीन खोजों ने परिवर्तन के इस आयाम को और भी तेज़ कर दिया है। फलतः युगों से संचित मानव जीवन एवं व्यवहार की सरलता और ठहराव में औद्योगीकरण के चलते एक ज़ोरदार बदलाव आया है। इस बदलाव ने मनुष्य जाति को अधिक जटिल एवं पेचीदा बना दिया है। जीवन के प्रत्येक पक्ष में हुए परिवर्तनों ने शहर और गाँव के जीवन की संरचना में कई परिवर्तन ला दिए हैं। इस कहानी-संग्रह में देखा जा सकता है कि इस औद्योगीकरण के चलते ही अधिकतर नेपाली नौकरी की तलाश में अपने गाँवों को छोड़ शहरों की ओर जाना चाहते हैं, तथा शहरों को छोड़ विदेशों की ओर। कहानी 'द क्लेफ्ट', 'नो लैंड इज़ हर लैंड', 'पासिंग फैंसी', 'द इमिग्रेंट्स', 'द गोर्खास डॉटर', इन सभी में विदेश जाने की लालसा देखने को मिलती है।

नेपाली समाज की वास्तविक अवस्था का यथार्थ चित्रण इस कहानी-संग्रह में किया गया है। सामाजिक विषमताओं, भ्रष्टाचार तथा व्यक्तिगत स्वार्थों से आक्रांत समाज की दयनीय स्थितियों का चित्रण यहाँ किया गया है। प्रज्वल पराजुली सामाजिक-यथार्थवादी साहित्यकार हैं। वे समाज और व्यक्तित्व के पारस्परिक संबंधों, उसके आचार-विचार तथा उसकी राष्ट्रीय, आर्थिक एवं नैतिक अवस्था का मूल्यांकन तत्कालीन परिस्थितियों के आधार पर करते हैं। नेपाली समाज की नई पीढ़ी को अपने पूर्वजों के बलिदानों को समझना होगा। इस कहानी-संग्रह में लेखक ने नेपाली समाज को अपने हक के लिए लड़ने तथा अन्याय का विरोध करने के लिए प्रेरित किया है।

तीसरा अध्याय

द गोर्खास डॉटर का हिंदी अनुवाद

नासूर

पार्वती अपने बालों में नारियल का तेल लगाकर नौकरानी से सर की मालिश करवा रही थी, जब बीरतामोद से उसके देवर का फ़ोन आया। दोनों मुख्य घर के जर्जीरित काठ की सीढ़ियों पर बैठते हुए थे। पार्वती अपने पैर फैलाकर बैठ गई और नौकरानी मुसतैदी से पार्वती के बालों की मोटी उलझनों के बीच अपनी उंगलियाँ फैरने लगी।

“चुडैल कहीं की,” पार्वती मन-ही-मन मुस्कुराते हुए बोली। “अच्छा हुआ वह मर गई।”

“मर गई,” लड़की की आवाज़ गूँज उठी।

“क्या तुझे पता भी है, मैं किसके बारे में कह रही हूँ, बुद्धू लड़की?” पार्वती ने हल्के से नौकरानी के हाथ पर चपत लगाई।

“जी, आपकी माँ।”

“मेरी माँ नहीं, सास। काली कलूटी कहीं की। तेरा नाम काली है और तेरा दिमाग तो तेरे चेहरे से भी ज़्यादा काला है। तु कुछ नहीं समझती।”

“लेकिन आप तो उन्हें आमा कहकर पुकारती हैं, न?”

“बेशक! मुझे कहना ही पड़ता है। मैं अपने पति की माँ को और किस नाम से बुलाऊँगी? बेटी? यह तेरी खुशनसीबी है जो तुझे यहाँ काम मिल गया, काली। जैसी तेरी सोच है, तुझे तो हर जगह से बाहर फेंक देंगे। यह मत भूल, तू दिखती कैसी है - कोयले की तरह काली और तेरे होंठ एकदम भद्दे हैं। अगर मेरे पति ज़िन्दा होते, तो तुझे कब का घर से निकाल बाहर कर दिया होता।”

पार्वती, नौकरानी के होंठ देखने के लिए पीछे मुड़ती है। काली के दांत, फांक के नीचे से ऐसे दिख रहे थे, मानो कोई चूहा पनीर के एक टुकड़े को कुतरने के लिए तैयार हो रहा हो। पार्वती अपनी उंगलियों से उसके कुरूप होठों को छुती है।

“क्या यहाँ दर्द होता है?” उसने पूछा।

“नहीं, मुझे इसकी आदत है।”

“तु कभी शिकायत नहीं करती, तभी तेरे पास आज भी एक घर है, काली। तु अंधी की तरह बर्तन धोती है, आज ही मैंने तीन थालियाँ दुबारा धोई हैं और पोछा भी बच्चे की तरह लगाती है। किसी काम में तु अच्छी नहीं है और दिखती भी ऐसी है, सिर्फ तेरे व्यवहार के चलते, मैं तेरे साथ रह लेती हूँ।”

काली अब पार्वती के सिर पर आहिस्ता-आहिस्ता घेरा बनाने लगी। जो बाल पहले फीके दिख रहे थे, वह अब काठमांडू की धूप में चमक उठे और वह उसके बालों के साथ आँख मिचौली खेल रही थी। अचानक पार्वती ज़ोर से चीख उठी, काली ने अपने अंगूठे और तर्जनी उंगली के बीच एक मोटी जूँ को दबोचकर बाहर निकाला।

"यह देखो," काली ने पार्वती को अपने हाथों की लकीरों में रेंगते हुए कीड़े को दिखाते हुए कहा। "यह एक धारे[25] है। यह जुमरा[26] से कई ज़्यादा खून चूसता है।"

काली ने जुएँ को ज़मीन पर फेंक दिया और इससे पहले कि वह कहीं भागता, उसने अपने अंगूठे से उसे मसल दिया, जिससे थोड़े खून के धब्बे उछल कर उसके दांत के फांक पर जा लगी।

"पता नहीं ये मेरे बालों में कहाँ से आ रहे हैं," पार्वती ने कहा। "शायद इसीलिए कि मैं गीले बालों में बांध लेती हूँ।"

"ये चीजें गीले बालों में पनपती हैं," काली ने कहा।

"तुझे सब कुछ पता है, है न?"

"मुझे तो कोई और कारण नहीं दिख रहा।"

"कहते हैं न - जब तुम एक देखते हो, तो तुम्हें सौ नहीं दिखते।"

"मुझे तो और नहीं दिख रहे।"

"वह इसलिए, क्योंकि तु किसी भी काम को ढंग से नहीं कर सकती, मैंने तुझसे कहा न था?" पार्वती ने शांति से कहा, "शायद यह आमा की आत्मा है।"

"आप बीरतामोद कब जाएँगी?" काली ने पूछा।

"क्यों? ताकि तु सारा दिन टीवी देख सके? तुझे क्या लगता है कि मैं जानती नहीं, जब मैं बाहर जाती हूँ, तब तु क्या गुल खिलाती है?"

"नहीं, नहीं, मैं बस जानना चाहती हूँ। आप कब जाएँगी?"

"मैं अभी मातम मना रही हूँ," तिरछी मुस्कान के साथ पार्वती ने कहा। "मैं कुछ भी सही नहीं सोच पा रही हूँ। मुझे यकीन है, सारे रिश्तेदार अपने साथ कोई-न-कोई योजना लेकर ज़रुर आएँगे।"

"क्या मैं भी चलूँ?"

---

[25] जूँ

[26] जूँए के अंडे

“क्यों? तुझे प्लेन में चढ़ना है, लालची लड़की?”

“मुझे तो पता भी नहीं था कि हम प्लेन से जाएँगे।”

“आज और कल के लिए शायद प्लेन की टिकट नहीं मिलेगी, न ही परसों के लिए। ‘बोकसी’[27], हर चीज़ मुश्किल बना देती है। जीते जी नाक में दम कर रखा था और अब मरने के बाद भी पीछे नहीं छोड़ रही।”

“आपको क्या लगता है, वह हमें सुन सकती हैं?”

“सुनने दो, मुझे परवाह नहीं। पर तूने तो उनके बारे में कुछ नहीं कहा, फिर तु क्यों इतना घबरा रही है? अगर उनकी आत्मा यहाँ भटक भी रही है, तो वह सिर्फ मुझे डराएगी। तू चिंता मत कर, तेरा चेहरा तो भूतों को भी डरा देगा। क्या तु चौदह साल की हो गई है, काली?”

“तेरह।”

“अगर तु हमारे साथ और चार साल रहेगी, तो शायद मैं तेरे लिए सर्जरी का इंतज़ाम करुँगी। क्या तुझे इससे खुशी मिलेगी?”

“और स्कूल?” उसने एक जूँ देखा पर उसे निकाला नहीं।

“क्यों तुझे स्कूल जाना हैं?” पार्वती ने सीधा काली की ओर देखा। “देख, मैंने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की है, फिर भी मैं बिना काम किए घर पर बैठी रहती हूँ। तुझे स्कूल जाने की ज़रूरत नहीं। ज़रूरी चीज़ें तु मुझ से सीख सकती है। कुछ पहल तो दिखा। जब मैं कोई काम नहीं करती तब अपनी किताब और पेंसिल मेरे पास ले आना। लेकिन ऐसा तु करेगी क्यों? तु तो बत्तीसपुताली के आस-पड़ोस के बच्चों के साथ कूदते रहने में व्यस्त रहती है, सर्जरी के बाद कितनी सुन्दर दिखेगी, इसी सोच में तु सपनों की दुनिया में खोई रहती है। याद रख, सर्जरी चार साल के बाद ही होगी, इसे तय करने से पहले मैं तेरे हर ग़लती का हिसाब रखूँगी।”

हाँ, हम होठों को ठीक कर देंगे, उसने कहा था। *और स्कूल का भी बंदोबस्त कर देंगे। अब तुमने स्कूल जाने की बात कही है, तो लगता है तुम्हारे पास दिमाग है, जिसे हम ज़ाया नहीं कर सकते, ज़ाया करना भी नहीं चाहिए। अपनी मालकिन के यहाँ तुम दिमाग सुन्न करने वाले काम करती हो, जिससे तुम्हारे दिमाग में ज़ंग लग गया है।*

दालान में फोन बजते ही काली के मनमोहक दिन का सपना वहीं रूक गया।

---

[27] चुडैल

“जाओ, फोन उठाओ,” पार्वती ने आदेश दिया। “रिश्तेदारों ने ज़रूर सफर का बंदोबस्त किया होगा। अगर कोई मेरे बारे में पूछे, तो कह देना, मैं रो रही हूँ।”

“और अगर वे आपसे बात करना चाहें तो?”

“कहना मैं बात नहीं कर सकती।”

काली दौड़कर फोन के पास गई और पार्वती दूसरे फोन (विस्तार फोन) पर सुनने लगी।

“नमस्ते, भउजू,” दूसरी छोर की आवाज़ ने कहा। वह पार्वती के मृत पति की बहन सरिता थी।

“नहीं मैं काली हूँ।”

एकाएक आवाज़ बदल गई, “भउजू[28] कहाँ हैं?”

“वह रो रही हैं।”

“बुलाओ उन्हें।”

“मैं नहीं बुला सकती, वह रो रही हैं।”

“मुझे परवाह नहीं। फोन पर बुलाओ। मेरी माँ मरी है, उनकी नहीं, पर मैं तो नहीं रो रही।”

“वह बात नहीं करना चाहतीं।”

“तुम बहुत बुद्धू हो। क्या तुम वही भद्दे होठों वाली हो?”

“जी।”

“ख़ैर, भउजू से कहो तैयार हो जाए। मेरा देवर बीरतामोद के लिए अपनी गाड़ी और ड्राइवर देने को राज़ी हो गया है। एक सीट भउजू के लिए बच गई है। उनसे कह देना उनका हिस्सा दो हज़ार रुपए होगा।”

“और मैं?”

“तुम अंतिम संस्कार में क्या करोगी? तुम घर पर ही क्यों नहीं बैठती या अगर जाने के लिए मरी जा रही है, तो तुम गाड़ी की डिक्की में बैठ जाना। सफ़र बहुत लम्बा होगा, लेकिन आगे बैठने वालों की तुलना में, तुझे पीछे ज़्यादा जगह मिलेगी। ठीक है, हम वहाँ एक घंटे में पहुँच रहे हैं। उन्हें तैयार हो जाने के लिए कह देना।”

---

[28] भाभी

“मैं कह दूँगी, लेकिन वह अगर मेरी बात सुनने से इंकार कर दे तो?”

“और तुम मेहरबानी करके अपना चेहरा साफ कर लेना और कुछ साफ कपड़े पहनना। मैं बिल्कुल साफ़ कपड़े देखना चाहती हूँ।”

काली को अपनी मालकिन को फोन में हुई बातचीत के बारे में बताने की ज़रूरत नहीं पड़ी। पार्वती लंगड़ाते हुए दालान में गई, उसके चेहरे पर आघात का भाव दिख रहा था।

“उसकी हिम्मत कैसे हुई?” वह गुस्से में कहती है। “तु साफ-सुथरी है। हमने तुझे साफ आदतें सिखाई हैं। क्या तु दिन में एक बार नहीं नहाती और कभी-कभार एक हफ्ते में दो बार? और किसी को तेरे बुरे होठों के बारे में बात करने का कोई हक नहीं। तु ऐसी जन्मी है, इसमें तेरी कोई गलती नहीं। क्या उसने नहीं कहा कि वह एक घंटे में यहाँ आ रही है? हमें सामान बांधना है, काली। काफ़ी काम बाकी हैं।”

“क्या मैं भी जा रही हूँ?”

“बेशक तु भी जा रही है, बुद्धू। जाने वह किसे अपने साथ गाड़ी में ला रही है। जगह नहीं? शायद भाड़े में रहने वाली अपनी ऑस्ट्रेलियन पेइंग गेस्ट को भी लाएगी, वह उसे हर जगह साथ ले जाती है - हथिनी कहीं की। तु डिक्की में बैठ सकती है। क्यों नहीं बैठेगी, मैं दो हजार रुपए दे रही हूँ। बाकी लोग कितने रुपए दे रहे हैं, मुझे पता है। वे कुछ भी पैसे नहीं देंगे। तेरे साहब के परिवार वाले हमेशा हमारे बड़े दिल का फायदा उठाते हैं। चाहे मैं जितना भी अच्छा करूँ उनके लिए काफी नहीं है।”

दूसरी मंजिल की सीढ़ियों के नीचे काली का छोटा-सा बिस्तर था, जिसके अंदर गत्ते के डब्बों में उसने अपनी बेशकीमती सामान रखी थी, तीन रंग-बिरंगी स्कर्ट जिसमें अब भी कीमत के टैग लगे हुए थे और चार सौ रुपये के नोट एक लीव-52[29] की प्लास्टिक के बोतल में रखे थे। काली ने प्लास्टिक बैग में स्कर्ट डाले, पैसे बाहर निकाले और स्कर्ट की जेब में पैसे रख लिए। उसने अपने छोटे से बैंगनी रंग के आईने में देखकर अपने माथे से पसीना पोछा और पार्वती के सामान को बाँधने में हाथ बटाने वापस चली गई।

उसने कहा था, *अब तुम्हें बस किसी भी तरह भारतीय सीमा तक पहुँचना है। मेरा एक रिश्तेदार तुम्हें वहाँ से आगे ले जाएगा। ये तुम्हारे लिए कुछ रुपए हैं। क्या तुम जानती हो तुम्हारी मालकिन तुम्हें दुबारा कब बीरतामोद ले जाएगी? वहाँ से सीमा बस आधे घंटे की दूरी पर है।*

[29] दवाई

पार्वती की अटैची पहले से ही तैयार थी और वह रसोईघर के नल पर बालों को धोने चली गई। उसने काली से बालों के एक हिस्से को पकड़ने को कहा, तब तक वह बाकी बचे बालों में शैम्पू लगाती है।

"देखो, सब झड़ रहे हैं," पार्वती ने कहा। "जल्दी ही, कुछ भी नहीं बचेगा।"

"आपके बाल घने हैं," काली ने सांत्वना दिया। "पूरी तरह से झड़ जाने के लिए इन्हें कई साल लग जाएँगे।"

"तुझे कुछ नहीं पता। तु कितने समय से हमारे साथ है? चार साल? जब तु आई थी तब एक बच्ची थी और आज भी तेरा दिमाग एक बच्ची का ही है।"

"मुझे लगता है, जब मैं यहाँ आई थी तब मैं आठ साल की थी। मुझे यहाँ काम करते हुए पाँच साल हो गए है।"

"हाँ, हाँ, चार साल या पाँच साल, क्या फर्क पड़ता है? जब हम तुझे यहाँ लाए थे, तब हड्डियों के ढांचे के सिवा तु कुछ नहीं थी। तुम्हारी माँ को और लड़की नहीं चाहिए थी।"

पार्वती ने यह कहानी पहले भी सुनाई थी। बल्कि काली यह साप्ताहिक तौर पर सुनती थी। उसकी माँ के ऊपर भी दबाव था, खाने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ती जा रही थी, तब उसकी माँ ने तय किया कि जो परिवार में सबसे कमज़ोर है, उसे ही बाहर कर दिया जाए। एक तो वह लड़की के रूप में जन्मी थी और उसके ऊपर उसके होंठो में फांक थी, सभी में वह सबसे बेकार थी। वह जन्म से ही बीमार रहती थी, उनके लिए वह एक बोझ के समान थी, जो किसी की संपत्ति नहीं बन सकती थी। भारत-भूटान सीमा के डुवर्स में स्थित झोपड़पट्टी में एक दिन जब एक जवान विधवा नौकरानी की तलाश में आई, तो उसकी माँ ने उसे मुफ्त में दे दिया।

"तब तेरी ज़िंदगी कितनी दुखी थी। क्या तुम्हें वह याद है?" पार्वती ने पूछा।

"नहीं, मुझे याद नहीं," काली कहती है। "मुझे सिर्फ तब से याद है, जब से मैं यहाँ आई हूँ।"

"यह अच्छा है, तुझे कुछ याद नहीं। झोपड़ी के बाहर की मिट्टी खा-खाकर तु बीमार हो गई थी। तेरे भाई-बहन तुझसे नफरत करते थे, पर मैं उन्हें दोष नहीं दूंगी, क्योंकि तु दिखती ही डरावनी है। तेरा बाप बेकार आदमी था। सोचती हूँ, क्या वह आज भी ज़िन्दा हैं।"

"मुझे उनकी भी याद नहीं आती।"

"तुझे यह भी याद नहीं कि मुझे किस तरह आठ साल की लड़की के पीछे भागना पड़ा था, तुझे शायद भनक लग गई थी कि मैं तुझे दूर ले जाने आई हूँ। कितनी मूर्ख थी- तुझे अंदाज़ा भी नहीं था कि

मेरे साथ तु कितनी अच्छी जिंदगी बिताएगी। तुझे तो याद ही नहीं रहता कि मुझे कितनी चम्मच चीनी चाहिए। तुझे यह भी याद नहीं कि सरिता ने अभी तेरी कितनी बुराई की थी। तुझे कुछ भी याद नहीं रहता। क्या करूँ, मैं तेरा?"

काली को पता था, पार्वती अब कौन-सा किस्सा सुनाने वाली है। जांघिया वाला किस्सा बार-बार सुनाकर भी पार्वती इससे कभी नहीं उबती।

"और तूने जांघिया नहीं पहने थे, गंवार कहीं की - तेरे लिए एक जोड़ा खरीदा था, जिसे तु सिर के ऊपर पहनती थी, उसके बारे में मैंने तुझे कितनी बार बताया था? तुझे लगा वे तुझे नहीं आएँगे। देख तु कहाँ से कहाँ पहुँच गई है, फिर भी तेरा दिमाग वहीं का वहीं है - मानसिक रूप से तु अभी भी आदिवासी है।"

जांघिए वाले किस्से को पार्वती इतनी बार दोहरा चूकी थी कि काली को अब बिल्कुल शर्म नहीं आती। शुरूआत के कुछ दिनों में जब काली उसके साथ आकर रहने लगी थी, पार्वती ने मानों यह तय ही कर लिया था कि वह हर किसी का मनोरंजन करने के लिए जांघिया वाला किस्सा सुनाएगी। जब वे रात को बस में बीरतामोद से काठमांडू सफर कर रहे थे, जब शौचालय के लिए बस रुकी पार्वती यह देखकर दंग रह गई कि हाल ही में आई आठ साल की नौकरानी उकडूं होकर बस के बगल में रास्ते में ही बैठकर पेशाब कर रही थी और दुनिया उसके नीचे की पूरी बनावट का नज़ारा देख रही थी।

"और स्कर्ट के नीचे उसने कुछ नहीं पहना था," किस्सा सुनाने के बाद पार्वती व्याकुलता से काली को पुकारती, ताकि उसके मेहमान जंगल से आई उस छोटी लड़की को देख सकें, जिसने पहले कभी जांघिया नहीं देखा था।

"सरिता ने मुझे नाक साफ करने को कहा है," काली ने कहा। "लेकिन मेरी नाक तो साफ है, है न?"

तुम्हारे बिगड़े होंठ को देखकर तरस आता है, ये तुम्हारी खुबसूरती को ढक देती है। तुम्हारी आँखें सब कह जाती हैं। ये अभिनेत्री की आँखें हैं, क्या तुम्हारी आवाज़ भी अच्छी है? क्या मेरे लिए गाओगी? वह हमेशा कहता था।

"तु बिल्कुल भी मेरे परिवार के लोंगों का सम्मान नहीं करती है। तुझे सरिता को दीदी कहना चाहिए। वह मेरी ननद है। बस वह दूसरों को नीचा दिखाना चाहती है। दूसरों को नीचा दिखाकर उसे अच्छा लगता है।"

"रास्ते में खाने के लिए कुछ बाँध दूँ?"

"हमेशा खाने के बारे में ही सोचती है, खानछुयी[30] कहीं की। ज़रूर तेरे होंठ के दूसरे छेद की वजह से तुझे हरदम भूख लगी रहती है। हाँ, अपने लिए कुछ चिउड़ा बाँध ले और यहीं मुझे कुछ खाने को दे। मुझसे उम्मीद की जाएगी कि मैं तेरह या शायद पैंतालीस दिनों तक बेस्वाद खाना खाऊँ। न नमक, न तेल, कुछ नहीं और शायद दिन में एक ही बार खाने को मिले। वह औरत तो चल बसी, पर हमेशा वह हमें सताती रहेगी। कल रात की बची सब्ज़ी और चावल गर्म करके ले आ।"

जब तक काली ने चूल्हे पर फूलगोभी की सब्ज़ी गर्म करने को चढाया, तब तक पार्वती घर में इधर-उधर पेंच और ताला लगाने लगी।

"ऐ, सरिता मैय्या[31], लगता है तु दिन भर रो रही थी," पार्वती गाड़ी में चढ़ते हुए कहती है। "उनकी उम्र के बारे में भी सोचो। उन्होंने अच्छी-ख़ासी ज़िन्दगी बिताई है।"

"नहीं, असल में, मैं इतना नहीं रोई हूँ," सरिता ने जवाब दिया। "मुझे ज़्यादा दुख नहीं हुआ, पर जब आपकी नौकरानी ने कहा कि आप फोन पर नहीं आ सकी, क्योंकि आप रो रही थी। तब मुझे बुरा लगा कि मुझे क्यों दुख महसूस नहीं हो रहा। शायद पछतावे के कारण। आमा ने कभी आपके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। फिर भी आपको उनकी मौत का दुःख है। यह अजीब सी बात है।"

सरिता के बेटे से अपनी कुरूपता पर कसे ताने को अनसुना करने के बाद, काली सही सलामत डिक्की में सामान के ऊपर जाकर बैठ गई। वह अपने आगे बैठे यात्री को घूर रही थी और अपनी हँसी रोकने की कोशिश कर रही थी। पार्वती बड़ी-बड़ी आँखों से उसे चुप रहने का इशारा कर रही थी। पर काली ने किसी पर ध्यान नहीं दिया, वह सिर्फ उस बूढ़ी, विदेशी यात्री जो पसीने से लदी थी, उसे ही घूरे जा रही थी। आख़िरकार जब गाड़ी चली, तब उस विदेशी यात्री ने असंतोष जताया।

"सरिता, वह मेरे साथ इतना बुरा बर्ताव भी नहीं करती थी। कौन से परिवार में सास-बहू में अनबन नहीं होती? जब दो औरतें एक ही आदमी का प्यार जीतना चाहते हों, ऐसे में मनमुटाव होना ज़ाहिर सी बात है। तुमने ही मुझसे एक बार कहा था कि तुम्हारी भी अपनी सास से नहीं बनती। वैसे, क्या यह वही औरत है, जो तुम्हारे साथ रहती है?," पार्वती ने पूछा।

"हाँ, पर जिसके प्यार के लिए तुम दोनों लड़ रही थी, वह बहुत पहले ही गुज़र गया था।"

"वैसे अब तुम्हारी माँ भी गुज़र गई है। यह अच्छी बात नहीं है कि वह मुझसे कैसा बर्ताव करती थी, इस पर हम बहस करें। दुबारा पूछती हूँ, कौन है यह औरत?"

---

[30] लालची, भुक्खड़

[31] दुलार से पुकारा गया नाम

"ओ, यह मेरी माँ एरीन है," सरिता ने कहा, और आगे अंग्रेज़ी में कहती है, "एरीन, यह मेरी भाभी है। मैं इन्हें बता रही थी कि किस तरह आज से आप मेरी माँ हो।"

एरीन पार्वती को देखकर मुस्कुराई, उसने भी वापस मुस्कुराने की कोशिश की।

सरिता नेपाली में कहती है, "यह एक पेइंग गेस्ट है। मेरे साथ एक महीने से रह रही है। आज जब आमा के गुज़र जाने की खबर मिली, तब इन्होंने कहा कि मैं अपने आप को अकेला न समझूँ, आज से वह मेरी माँ है। मैं इन्हें आमा बुलाती हूँ, और इन्हें यह अच्छा लगता है। इन्हें नेपाली अंतिम संस्कार देखना था, तो मैंने साथ आने को कह दिया। आपके पास अभी पैसे हैं क्या? हमें पेट्रोल भर लेना चाहिए, इससे पहले कि हम किसी अनजान जगह में फस जाएँ।"

पैसे का ध्यान रखना, वह हमेशा मुझे याद दिलाते थे। *किसी को भनक लगने मत देना कि तुम्हारे पास पैसे हैं। बीरतामोद से सीमा तक का बस का किराया दस रूपए से ज़्यादा नहीं होगा। वैसे, शायद तुम्हें मुफ्त में भी सफर करने को मिल जाए क्योंकि जिस तरीके का तुम्हारा स्वभाव है, वह किसी भी कट्टर अजनबी को दया के लिए प्रेरित कर देगा।*

"तुम इसे अपनी माँ की अंतिम संस्कार देखने ले जा रही हो?" पार्वती ने बेझीझक कहा और फिर अपने बटुए में दो हजार का नोट ढूँढ़ने लगती है, "तुम्हारी माँ अभी गुज़री है और तुमने एक नई माँ भी बना ली। तुम तो बड़ा ही आसान जीवन जी रही हो।"

"अरे, आप इन ऑस्ट्रेलियन लोगों को नहीं जानती। एक बार अगर वह आपको पसंद कर लें, तो वे आपके स्पॉन्सर भी बन जाते हैं। आप केवल दो साल में ऑस्ट्रेलियन नागरिक बन जाएँगी। और वह पहले से ही मुझपर मेहरबान है कि मैं अपनी माँ - जन्म देने वाली माँ की अंतिम संस्कार में उन्हें ले जा रही हूँ।"

"अगर सन्नी अपने लिए नई माँ ढूँढ ले, तो तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा," पार्वती ने सरिता के बेटे की और इशारा करके कहा, जो मुँह फुलाए खिड़की के पास बैठा था।

"क्यों नहीं? अगर इससे उसे लाभ हो, तो बुराई क्या है? मेरे जीते जी भी वह एक माँ रख सकता है।"

"और तुम्हारा पति अंतिम संस्कार के लिए कब आ रहा हैं?" पार्वती ने पूछा।

"शायद वे आ नहीं पाएँगे। उन्हें कल काम से चीन जाना है। लेकिन वे तेरहवें दिन के काम[32] तक आ जाएँगे। हमारे परिवार के प्रतिनिधि के तौर पर मेरा बेटा, मैं और मेरी आमा आई हैं।"

[32] प्रतिष्ठान

"सही है, तुम्हारी माँ की अंतिम संस्कार में तुम्हारे घर से प्रतिनिधि के तौर पर तुम, तुम्हारा बेटा और तुम्हारी नई माँ आई है," सरिता पर ताना कसती हुई, पार्वती बोली।

वे अब मुख्य शहर की भीड़भाड़ को पीछे छोड़ आए थे और सांप की तरह टेढ़े-मेढ़े रास्ते को पार करने लगे थे। खूबसूरत पहाड़ के नज़ारे को देखकर एरीन ने तस्वीर लेना शरू कर दिया। एक आज्ञाकारी बेटी की तरह सरिता ने उससे पूछा कि क्या वह बाहर निकलकर तस्वीर खींचना चाहती हैं?

"इसकी ज़रूरत नहीं," एरीन बुदबुदाई।

"नहीं, आमा, इसमें कोई तकलीफ की बात नहीं आईए, आईए," सरिता ने कहा और फिर ड्राइवर को गाड़ी रोकने को कहा, एरीन बाहर निकली और पहाड़ों की ओर देखने लगी, फिर एक लम्बी साँस लेकर तस्वीर खींचने लगी, थोड़ी देर प्रार्थना किया और फिर गाड़ी के अंदर आ गई।

"इनका कैमरा तो टीवी के बराबर है," पार्वती ने कहा।

"इस तरह की अंग्रेज़ी शब्दों का इस्तेमाल मत कीजिए, इनको पता चल जाएगा कि हम इनके बारे में बात कर रहे हैं।"

"आसपास के लोगों को लग रहा होगा कि हम घूमने आए हैं, न कि आमा के मौत का मातम मनाने," पार्वती ने आगे कहा। "और ये बार-बार क्यों प्रार्थना करती हैं? क्या ये आशीर्वाद के लिए अपने यीशु को बुलाती हैं?"

"ये हिन्दू है।"

"शायद ही कोई गोरा हिन्दू होगा।"

सरिता ने नेपाली से बदलकर अंग्रेज़ी में कहा, "एरीन, मेरी भाभी को यकीन नहीं हो रहा है कि आप हिन्दू हैं।"

"शायद मुझे इसके लिए श्लोक सुनाना पड़ेगा," एरीन ने कहा।

"बिल्कुल," सरिता ने बेटी के हैसियत से कहा।

"अच्छा, इन्हें श्लोक भी आते हैं?" पार्वती ने सरिता से उस भाषा में पूछा जिस भाषा को वह अच्छी तरह जानती भी नहीं है, वह अपने आप से प्रभावित थी, क्योंकि उनकी बातचीत उसे समझ आ गई थी ।

“हाँ, वह जानती है। आपको पता है, पंडित इनको पशुपतिनाथ मंदिर में घुसने से मना कर रहे थे, उनके अनुसार सिर्फ हिन्दुओं को ही अंदर जाने की अनुमति है। तब इन्होंने हनुमान चालीसा पंडितों के सामने कह सुनाया। उस समय आपको पंडितों का चेहरा देखना चाहिए था।”

एरीन आगे की सीट पर मुँह दबाकर हँसने लगी। जिसके कारण उसके गाल गुलाबी हो गए थे। काली भी हँस पड़ी।

“क्या इन्हें हमारी भाषा समझ आती है?” पार्वती फुसफुसाकर कहती है।

“नहीं लेकिन इन्हें पता है कि मैं कौन-सा किस्सा सुना रही हूँ, यह मैं सभी को सुनाती हूँ। मुझे लगता है, इससे वह गर्व महसूस करती हैं।”

“मुझे यकीन नहीं होता, तुम उसे आमा बुलाती हो। वह तो नेपाली भी नहीं बोलती। मैं तो ऐसा कभी नहीं कर सकूँगी।”

“लेकिन आपकी नौकरानी भी तो आपको आमा बुलाती है?”

“नहीं।”

“मुझे लगा वह बुलाती है। शायद उसके आमा कहकर बुलाने से आपके लिए काफी चीज़े आसान हो जाएँगी। क्या यह अभी भी चोरी करती है?”

“नहीं, काली चोरी नहीं करती। वह हमारे साथ पाँच सालों से है। वह अच्छी लड़की है।” पार्वती ने अपनी आँखों के कोने से काली को देखा, उनकी बातें काली ध्यान से सुन रही थी। “अगर वह ऐसी ही अच्छी रही तो शायद इसके होंठ का ऑपरेशन करा देंगे। इसमें बहुत सारे पैसे तो खर्च होंगे, लेकिन काली को छोड़ कोई है ही नहीं, जिस पर मैं पैसे खर्च करूँ।”

मेरी मालकिन ने मुझसे वादा किया है कि जब मैं पंद्रह साल का हो जाऊँगा, तब वह किसी से कहकर मुझे गाड़ी चलाना सिखाएंगे, उसने कहा था। मैं जब सोलह साल का हो गया तब उन्होंने कहा कि मेरा कद लंबा नहीं है। मैं जब सत्रह साल का हो गया, तब उन्होंने कहा कि अच्छा होगा अगर मैं कानूनी रूप से बालिग हो जाऊँ। जब मैं अठारह का हुआ तब उन्होंने कहा कि पिछले साल मेरा काम संतोषजनक नहीं था, इसलिए मैं गाड़ी सीखने के लायक नहीं हूँ। मैंने गाड़ी चलाना तब तक नहीं सीखा, जब तक मैं भाग नहीं गया। इन लोगों को झूठे वादे करना बहुत आता है। बताओ मुझे, क्या तुम्हारी मालकिन ने तुमसे कहा नहीं कि वह तुम्हारे होंठ ठीक कर देगी?

“हाँ, कम-से-कम यह अच्छा हुआ कि दाई के गुज़र जाने से पहले ही उन्होंने घर बना लिया। आप बहुत खुशनसीब हैं, आपको बच्चों की पढ़ाई के लिए पैसे जमा करना नहीं पड़ता। आजकल तो सबसे मूर्ख आदमी भी अमेरिका जाना चाहता है। सोचती हूँ, हमारे पास इतने पैसे आएँगे कहाँ से।”

“हमारे यहाँ छह साल में तीन लोगों की मौत हुई है,” कहीं पैसे की बात न कर बैठे, इसलिए पार्वती ने बात घुमा दी। “तुम्हें नहीं लगता कि शायद हम शापित हैं?”

“पता नहीं, बाबा गुज़र गए क्योंकि वह बीमार थे और उनकी उम्र भी हो गई थी।”

“हाँ, वह तो होना ही था। क्या लगता है, तुम्हें आमा स्वर्ग जाएँगी?”

“मुझे नहीं लगता, उन्होंने हमेशा कई लोगों को तकलीफ दी है। वह स्वर्ग के लायक नहीं है। मुझे पता है वह मेरी माँ है, सगी माँ, लेकिन सच आखिर सच है। शुक्र है, भगवान ने मुझे दूसरी माँ दे दी।”

सरिता ने एरीन के दाहिने कन्धे को हल्के से सहलाया।

“मुझे नहीं लगता वह मेरे साथ बुरा बर्ताव ही करती थी। वह कभी-कभार अच्छी भी थी। बेटे की दुर्घटना में मौत, पति का चल बसना अगर मैं उन्हें और समझने की कोशिश करती तो शायद उन्हें अच्छे से झेल पाती। शायद वह बीरतामोद के बदले मेरे साथ काठमांडू में रह सकती थी। शायद मैं उन्हें यहाँ रहने का प्रस्ताव दे सकती थी।”

“अगर तुम दोंनो साथ रहती तो वह तुम्हें ज़िन्दा जला देती। तुम्हारा पूरा खून चूस लेती, छोटे-छोटे टुकड़े कर देती और खासी[33] की तरह खा जाती। सच बताना, भउजु जब आपको खबर मिली तब आपको कैसा लगा?”

“मैं दुखी थी। पूछो काली से। मैं अपने आप को रोने से रोक नहीं पा रही थी। अब मैं ठीक हूँ- काफी संभल गई हूँ - लेकिन उस वक्त आँसू रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। सीमारा[34] बारिश की तरह वह बहते ही जा रहे थे। मुझे पता नहीं था, यह चीज़े मुझे इतना प्रभावित करेंगी।”

“आप वाकई एक अच्छी इंसान हैं, मैं उतनी अच्छी कभी बन ही नहीं पाऊँगी। हम जिसके बारे में बात कर रहे हैं वह मेरी माँ है, जन्म देने वाली माँ। मैं जानती हूँ, मुझे दुख महसूस होना चाहिए, मुझे रोना चाहिए, पर मुझसे ये सब नहीं हो रहा।”

“तुम्हारी इकलौती माँ, सरिता। यह दूसरी माँ वाली बातें बेकार की है।”

“मुझे पता था, आपको यह बात बेहूदा लगेंगी। अगर आप ऐसा नहीं सोचेंगी तो मुझे अच्छा लगेगा। यह औरत अच्छी है। कितनी अच्छी है, आपको पता लगता अगर आप उससे बात कर पाती।”

“ओह, उससे अपनी टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में क्या बात करूँगी?”

---

[33] बकरी का मांस, मटन

[34] नेपाल में स्थित एक शहर, जहाँ भारी मात्रा में बारिश होती है

काली अचानक कहती है कि उसे पेशाब करना है, जिससे सरिता चिढ़ जाती है।

“सफ़र पर निकले सिर्फ पाँच घंटे भी नहीं हुए और तुझे पेशाब आ गया?” सरिता ने कहा। “मैंने तुझे घर से निकलने से पहले ही ध्यान रखने को कहा था।”

गोदावरी विलेज रिज़ॉर्ट पार करने के बाद, सरिता ने ड्राइवर से राफ्टर[35] और पर्यटकों के भीड़ वाले इलाके से थोड़ी दूर गाड़ी रोकने को कहती है। सभी बाहर अपने पैर फैलाने के लिए उतरते हैं। सरिता और एरीन झाड़ियों के पीछे गुम हो जाते हैं। काली गाड़ी के पास दुबककर बैठ जाती है और उसके पैरों के बीच से एक छोटी नाली-सी बहती हुई, लाल चीटियों की एक कतार तथा अन्य चीज़ों को भी सींचती हुई बहने लगती है और चीटियाँ तेज़ी से इधर-उधर सूखे की ओर भागने लगती है।

“क्यों तुम लड़कों की तरह खड़े होकर पेशाब नहीं करती, काली?” सन्नी रास्ते के दूसरे छोर से चीखने लगा। “तु तो लड़के की तरह दिखती है, तुझे लड़के की तरह पेशाब करना चाहिए।” इस टिप्पणी ने शांत बैठे ड्राइवर के मुँह से ठहाका निकाल दिया।

पार्वती झुककर वहीं बैठ गई, जहाँ काली ने पेशाब किया था। वहाँ उसने एक चीटीं को ज़िन्दगी के लिए संघर्ष करते देखकर, वह अपने आप से बातें करने लगी, “मरे हुए लोगों को कब पता चलता है कि वे मरने वाले हैं?”

“नहीं, उन्हें पता नहीं चलता वे कब मरने वाले हैं। बस मर जाते है,” काली गंभीरता से कहती है।

“चुप कर, काली,” गाड़ी के अंदर घूसते हुए पार्वती कहती है। “जब तुझसे कुछ पूछा जाए, तभी मुँह खोला कर। क्या तुझे अपने किसी नज़दीकी व्यक्ति को खोने का अहसास है?”

जैसे ही ड्राइवर ने कहा कि ज़्यादा सामान के कारण गाड़ी बंद हो गई है, जिस तेज़ी से लोग अंदर चढ़े थे, लगभग उसी तेज़ी से सभी तुरंत उतर गए।

“सन्नी, क्या गाड़ी को धक्का दोगे?” ड्राइवर ने गाड़ी को फिर से एक बार शुरू करने की कोशिश की।

“ठीक है, लेकिन काली को भी धक्का देना होगा, आखिर वह भी एक लड़का है,” सन्नी शोर मचाते हुए गाड़ी को धक्का दे रहा था, साथ ही बात को बढ़ा-चढ़ाकर तमाशा खड़ा कर रहा था। एरीन, सन्नी के साथ जुट गई। जब ड्राइवर ने गाड़ी में चढ़ जाने का इशारा किया, तब सरीता गर्व से एरीन की ओर देखने लगी।

---

[35] नौका चलने का एक खेल

“देखा, आमा किसी भी काम को छोटा या बड़ा नहीं समझती,” सरिता ने कहा।

आधे घंटे के अंदर आकाश का गुलाबी चमकीला रंग, काले गाढ़े रंग में बदलने लगा था। जब वे मैदानी इलाके में पहुँचेंगे, तब तापमान गर्म हो जाएगा। लेकिन अब ठंड बढ़ती जा रही थी। पार्वती ने सन्नी से उसकी तरफ की खिड़की बंद करने को कहा, पर वह उसे खुला रखने की जिद्द पर अड़ा रहा। जब पार्वती ने असहमति जताई, तब खिड़की आधा खुला रखने के लिए दोनों के बीच समझौता हुआ। जब एक ट्रक गर्जन करते हुए उनकी गाड़ी को पीछे छोड़ते हुए निकली, तब पार्वती ने सरीता को हल्का धक्का दिया ताकि वह सन्नी से बात करे, पर सरीता चुपचाप बैठी रही, जिससे मजबूरी में पार्वती ने बात को दुबारा उठाया।

“ठीक है, भानजे, अब खिड़की बंद करनें का वक्त आ गया है,” उसने कहा। “हमें कल के लिए आराम करना है और अगर तुम रात भर खिड़की खुला रखोगें तो तुम्हारी माँ ठंड से सिकुड़ कर मर जाएगी।”

सन्नी ने नाक और भौंहें सिकोड़ा पर कहा कुछ नहीं। सरिता ख़ामोश थी।

“भांजे खिड़की बंद कर दो,” आवाज़ में थोड़ी सी सख्ती लाकर पार्वती ने कहा।

“और आधा घंटा, माइजु[36],” बेशर्म होकर उसने कहा।

“आधे घंटे में हम बर्फ में बन जाएँगे।”

सन्नी चुपचाप अपने आप में कुछ बड़बड़ाने लगा और खिड़की बंद कर दी।

“तुम इसे कभी डाँटती भी हो या नहीं?” पार्वती ने सरिता से पूछा।

“नहीं, जब से आमा हमारे साथ रहने लगी है, तब से मैंने इसे नहीं डाँटा है। बच्चों को अनुशासित करने के लिए इन्होंने मुझे कई चीज़ें सिखाई हैं। उसे हम कुछ करने से नहीं रोकते। वह कहती है, इससे वह आत्मविश्वासी युवक बनेगा। उन्होंने मुझसे यह भी कहा है कि अगर वह क्रिकेट की गेंद से खिड़की का शीशा तोड़ दे, तो भी मैं उसे न डाँटू। छांगुनारायण और नगरकोट जैसी यात्रा से जब भी सन्नी लौटता है, वह काफ़ी खुश दिखता है। इन यात्राओं के कारण वह जानवर और पेड़-पौधों के बारे में बहुत सारी जानकारी प्राप्त करता है। मैं यह भी कह सकती हूँ कि इसने नेपाल के बारे में हम से और स्कूल से भी ज़्यादा, आमा से सीखा है।”

“लेकिन हमारा रहन-सहन अलग हैं, सरिता। यह गोरी है। यह एक विदेशी है। बच्चों को बड़ा करने का हमारा तरीका अलग होता है। हमें इन्हें पीटना चाहिए। इन्हें बड़ों की बातें सुननी चाहिए। सन्नी

[36] मामी

तेरह साल का है। जल्द ही इसे सम्भालना तुम्हारे लिए और भी मुश्किल हो जाएगा। तेरह से उन्नीस साल की उम्र सबसे मुश्किल होते हैं।"

"मुझे पता नहीं, भउजु। मुझे बचपन में बहुत मार पड़ी थी। आमा जो गुज़र गई है, वह मुझे हरदम मारती थी। बिना मार-पीट किए भी काम चल सकता था।"

"हमारी पीढ़ी का ऐसा कौन होगा जो बिना मार खाए बड़ा हुआ होगा? मुझे पता नहीं ये गोरी तुम्हें क्या पट्टी पढ़ा रही है, पर तुम्हें अपने बच्चे को वैसे ही बड़ा करना चाहिए, जैसे दूसरे नेपाली करते हैं।"

जैसे ही 'गोरी' शब्द का इस्तेमाल किया, सरिता ने झट से एक नज़र एरीन की ओर देखा, जो गहरी नींद में सो रही थी। पार्वती, काली को देखने के लिए मुड़ी कि वह क्या कर रही है। देखा कि वह तीन बैग के बीच फैलकर लेटी थी और शॉल से अपने शरीर को गले से पैर तक ढ़की हुई थी। वह पार्वती को ढ़ीठ मुस्कान देती है, ऐसा लग रहा था जैसे पूरी गाड़ी में सबसे आराम से वह ही बैठी हो।

"मुझे लगता है, आमा की बात में दम है," सरिता ने कहा। "अगर मेरी जन्म देने वाली माँ ने मुझे बचपन में कागज़ के कपड़ों की सिलाई सिखने के लिए बढ़ावा दिया होता, तो शायद मैं आज फैशन डिज़ाइनर बन जाती और फ़िल्मी सितारों के कपड़े बनाती। जब मैंने कहा कि मुझे फैशन डिजाइनिंग पढ़ना है, तब उन्होंने कहा कि शायद मैं छोटी जात की तरह दर्ज़ी बन कर रह जाऊँगी। इस बात के लिए आमा ने दाई[37] से मुझे मार भही पड़वाई।"

हाँ, तुम एक अभिनेत्री भी बन सकती हो, लोग सर्जरी के बाद तुम्हारी अंदरूनी खूबसूरती देखेंगे, उसने कहा था। *बम्बई एक अलग दुनिया है। वह मैं ही था, जिसने मनीषा कोईराला को बम्बई जाने के लिए प्रेरित किया था। अब देखो वह कितनी बड़ी अभिनेत्री बन गई है। हालाँकि मैं इन सबका श्रेय अकेला नहीं ले सकता, क्योंकि वह पहले से ही बहुत खूबसूरत थी। तुम भी अच्छे कपड़ों के साथ फिल्म अभिनेत्री बन सकती हो। खैर, मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ, ताकि तुम इन सब अभिनेत्रियों की तरह अश्लील कपड़े न पहनो। वह मुझे अच्छा नहीं लगेगा।*

"दाई, यानी साहब[38]?" पार्वती ने पूछा, क्योंकि वह हैरान थी कि उसके विनम्र पति ऐसा क्रूर काम कैसे कर सकते हैं।

"हाँ, आपके साहब," सरिता ने कहा। "उन्होंने मुझे सीसनु[39] के पत्ते से मारा था। उसे वह पहले ठंडे पानी में डुबोते और सीधे मेरे ऊपर उन पत्ते से मेरे हाथ, पैर, हर जगह मारते थे। आमा बैठकर उसे

---

[37] बड़ा भाई

[38] अपने पति के लिए साहब शब्द का भी प्रयोग करते हैं

[39] बिछुआ, खुजली वाले पत्ते

और उकसाती थी। *कोई भी हमारे घर में दर्जी नहीं बन सकता,* आमा यह कहकर चिल्लाई थी। यादें आज भी ताज़ा हैं। उसके छह महीने बाद ही मेरी शादी हो गई थी।"

"देखा जाए तो सब कुछ अच्छा ही हुआ। तुम्हारे पास एक स्वस्थ बेटा है। तुम्हारा पति अच्छा पैसा कमा लेता है। और अब तुम अपने नए घर जाने वाली हो। मुझे तो पिटाई से तुम्हारा कोई नुकसान, नहीं दिख रहा?"

"सोचो ज़रा, क्या नज़ारा होगा? एक अठारह साल की जवान लड़की को कोई ऐसे सभी के सामने मारता है, भला? मुझे इतनी शर्म आ रही थी कि मैंने रास्ते में चलने से मना कर दिया था। इस बारे में बस्ती के सभी लोग बातें करने लगे थे। इसके लिए मैं कभी दाई को माफ़ नहीं कर पाई।"

"तुम और तुम्हारे दाई कभी इतने करीब नहीं थे।"

"असल में, हम दोनों काफी करीब थे। पर इस किस्से के बाद दूरियाँ आ गई।"

"उन्होंने मुझे यह बात कभी नहीं बताई।"

"लगता है, आप भी इतने करीब नहीं थे।"

"लेकिन हम दोनों शादीशुदा थे।"

"पर इसका ये मतलब नहीं, आप हर चीज़ एक-दूसरे को बताए। आमा जो कहती हैं, मुझे अच्छा लगता है। उनका मानना है कि शादी करना इतना ज़रूरी नहीं है। जब आप अविवाहित होते है, तब आपसे उम्मीदें कम रखी जाती हैं।"

"तुम्हारी आमा मुझे घर तोड़ने वाली लगती हैं। जल्दी ही, तुम मुझसे कहोगी कि तलाक सामान्य बात है।"

"होना भी चाहिए," सरिता कहती है। "क्या मैंने आपको बताया, मैंने कॉलेज जाना शुरू कर दिया है?"

"हे भगवान! कॉलेज? इस उम्र में?"

"हाँ, तीन महीने पहले मैंने पदमा कन्या में दाखिला ले लिया है। मुझसे उम्र में छोटे छात्रों के साथ कक्षा में बैठना अजीब सा लगता है। जब मैं उन्हें बताती हूँ कि उनकी उम्र का मेरा बेटा है, ये सुनकर वे हैरान रह जाते हैं।"

"वे तुझे पगली समझते होंगे, सरिता। मुझे भी लगता है, तुम पागल हो गई हो। तुम्हारा पति है और एक बेटा है, जो जवान होता जा रहा है, तुम्हें उनका ध्यान रखना चाहिए। तुम्हें उनकी देखभाल

करनी चाहिए। कॉलेज? इस उम्र में? अच्छा, अब यह मत कहना कि यह भी तुम्हारी आमा ने सिखाया है। जल्द ही वह तुम्हारा ईसाई धर्म परिवर्तन भी कर देगी।"

"मैं पहले भी बता चुकी हूँ, ये हिन्दू हैं।"

"उसे जो धर्म मानना है माने, पर लगता है उसने ठान लिया है, वह ज़रूर तुम्हारा घर तोड़ के रहेगी। इस बारे में ज्वाई[40] का क्या कहना है?"

"उसे लगता है, मैं बहुत नासमझ हूँ। लेकिन आमा के सामने वह कुछ नहीं कहता। जब आमा आसपास होती है, तब वह ऐसी बातें करता है, जिस पर वह खुद विश्वास नहीं करता। जैसे औरतों की मुक्ति वगैरा-वगैरा, लेकिन जैसे ही आमा नज़रों से ओझल हो जाती हैं, वह मुझसे कहने लग जाता है कि मैं बहुत बेवकूफ़ हूँ। उसने यह भी राय दी थी कि हम उन्हें घर से बाहर निकाल दें, लेकिन वह किराया बहुत अच्छा देती है, नुक्सान वह करना नहीं चाहता।"

अचानक ड्राइवर ने झटके से पहिए को मोड़ा ताकि उनकी गाड़ी सामने से आने वाले ट्रक से टकरा न जाए।

"बजीया[41]," उसने चिल्लाया।

गाड़ी के मुड़ने से और उसकी गाली से सिर्फ काली को छोड़ सभी जग गए।

"रात में शराब के नशे में धुत ये ड्राइवर," पार्वती गुर्राई।

"सभी ठीक हैं?" एरीन ने पूछा। उसने सिर गिनना शुरू किया और पाया कि सफर के शुरूआत में जितने थे, उससे कम थे। "उसके घर में काम करने वाली कहाँ हैं?"

"वह सो रही है, आमा," उसने दिलासा दिया और उसके कंधों पर थपकी दी। "वह ठीक है।"

"ओह, ठीक है," एरीन ने कहा और अपनी सुस्त आँखें फिर बंद कर ली।

मौत के साथ इस अचानक मुठभेड़ से ड्राइवर काफी हिल गया था, रात के खाने के लिए वहीं गाड़ी रोकने के लिए उसने सभी से पूछा। पार्वती खुशी-खुशी उसकी राय से सहमत हो गई। उसे काफ़ी भूख लगी थी। फिर, उसे अहसास हुआ कि उसकी सास की मृत्यु के कारण उससे अपेक्षा रहती है कि वह तेरह दिनों तक कम-से-कम अच्छे भोजन से परहेज रखे, यह सोचकर वह अपनी सीट पर लौट आई।

---

[40] दामाद

[41] हरामी

“अगर आप खा भी लेंगी, तो कोई बात नहीं है, भउजु,” सरिता ने कहा। “मैं खा नहीं पाऊँगी, मेरा मन नहीं मानेगा।”

“इस परिवार में मेरी शादी हुई है, तो यह मेरा परिवार भी है, सरिता। अगर तुम खाओगी तो यह स्वीकार्य होगा क्योंकि तुम अब दूसरे परिवार की हो। बस मांस मत खाना।”

“वह मेरी माँ भी थी। आपने कैसे सोच लिया कि मैं खाऊँगी।”

“लेकिन तुम्हें भूख लगी है। मुमकिन हो तो कल से तुम अपना व्रत और बलिदान शुरू कर लेना।”

“हाँ, आप भी क्यों नहीं ऐसा कर लेती, भउजु? आज रात खा लेते हैं और कल से औपचारिकता शुरू करते हैं।”

जैसे ही ड्राइवर ने शहर के एक जगमगाते हुए भोजनालय में गाड़ी रोकी, जहाँ भोजनगृह और रात में चलने वाली बसें भरी हुई थी, तो दोनों भाभी-ननद ने यह साफ कर दिया कि अगर उन्होंने खा लिया तो वे कभी अपने आप को माफ नहीं कर पाएँगे। काली, एरीन, सन्नी और ड्राइवर चारों भोजनगृह की ओर गए, सरिता और पार्वती फल, दूध खरीदने निकलीं। इतनी देर रात उनके स्वादानुसार उन्हें गाढ़ा दूध नहीं मिला, जिसके चलते चाय और केले से काम चलाना पड़ा। जब तक बाक़ी लोग लौटे, पार्वती और उसकी ननद दोनों ने मिलकर एक दर्जन केले खा लिए थे। सुबह काली के लिए पार्वती ने एक केला छुपकर रखा था, पर उस आखिरी केले को भी उसके बाँटकर खा लिया।

“दोनों के हिस्से छह-छह केले पड़े, लगता है हमें बहुत भूख लगी थी,” पार्वती ने इस उम्मीद में कहा कि शायद सरिता को भी नींद नहीं आ रही हो।

“दिनेश, तुमने क्या खाया?” सरिता ने ड्राइवर से पूछा।

“खाना अच्छा था,” दिनेश ने खुशी से डकार लेते हुए कहा। “इन्होंने मुर्गा, मछली और मटन खाया।”

“काली तुमने तो सुअर की तरह खाया होगा?” पार्वती ने पूछा।

“हाँ, इसने अच्छी तरह खाया,” एकाएक उस बातूनी ड्राइवर ने जवाब दिया। “लेकिन मैडम ने ज़्यादा खाया। मैंने कभी किसी औरत को इस तरह खाते नहीं देखा। मुझे पता नहीं था कि एक कुइरे[42] इतना सारा नेपाली खाना खा सकती है। कहीं उनका पेट मसाले से बिगड़ तो नहीं जाएगा?”

[42] खास तौर पर गोरी विदेशी महिला के लिए प्रयोग किया जाता है।

तुम्हें यहाँ मांस खाने को मिलता है? उसने पूछा था। *तुम कितनी बार मांस खाती हो? मेरी मालकिन के यहाँ, वे कभी-कभी मांस खाते थे। और जब बनता था, आमतौर पर वे मेरे लिए थोड़ा रसा और एक छोटा मांस का टुकड़ा छोड़ देते थे। मैं थाली को अपने चेहरे के पास लाता था और चाट कर साफ कर देता था। तुम्हारी नई जिंदगी अलग होगी। तुम जितना खाना चाहोगी, उतना खाने को मिलेगा, लेकिन हम नहीं चाहते कि तुम मोटी हो जाओ। क्या तुमने कभी मोटी अभिनेत्री देखी है?*

"इन्हें इसकी आदत है। इनको नेपाली खाना अच्छा लगता है।"

"अच्छा, तुम जो भी पकाती हो वह सब कुछ खाती है?" पार्वती ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ, सब कुछ। पहले इन्हें हड्डी चबाने में तकलीफ थी, पर अब उसकी भी आदी हो गई है। इनकी उम्र काफ़ी हो गई है, इन्हें पकाने में मुश्किल होती है। वरना, मुझे यकीन है ये एक उम्दा नेपाली बावर्ची बनती।"

"शायद तुम उन्हें सिखा सकती हो। मैंने सुना है कि तुम बहुत स्वादिष्ट मुर्गा पकाती हो, सरिता।"

"मैं और भी नए पकवान सीख रही हूँ। मैं गृह विज्ञान की क्लास पी.के.[43] में कर रही हूँ। हमें बहुत परीक्षण करने को मिलता है।"

"अच्छा, तो तुम वाकई में कॉलेज में ऐसा कोर्स सीखने जाती हो, जिसे तुम घर पर ही सीख सकती हो?" पार्वती ने पूछा।

"नहीं, यह तो बस कोर्स के विषयों में से एक क्लास है। और भी कई हैं, पर मुझे यही सबसे ज़्यादा पसंद है। शायद मैं गृह विज्ञान में बी.ए. करूँगी और उसके बाद एम.ए.।"

"किसने सुना होगा किसी किशोर उम्र के लड़के की माँ के बारे में, जो इतनी महत्त्वाकांक्षी है? मुझे लगता है कि तुम अपना वक़्त और पैसा नाले में बहा रही हो।"

"नहीं, मैं पैसे ज़ाया नहीं कर रही हूँ। आमा कहती है कि यह पूर्ण निवेश है और शिक्षा हमेशा पूंजी निवेश है।"

"अब तुम काली की तरह बातें कर रही हो। वह भी कुछ दिनों से स्कूल जाने की ज़िद कर रही है।"

"फिर क्यों नहीं भेजती? वह दिनभर कुछ ख़ास तो करती नहीं।"

"क्या करेगी वह ऐसी शिक्षा और ऐसे चेहरे का। सारी मेहनत बेकार चली जाएगी।"

---

[43] पद्मा कन्या कॉलेज

“तुम्हें दिन में वह तंग नहीं करेगी,” सरिता विरोध करते हुए कहती है।

“मुझे दिन में वह घर पर ही चाहिए।”

“वह आपकी साथी है, है न? मुझे हमेशा से पता था कि आपको उससे बहुत लगाव है।”

“कौन भला अपने नौकर से लगाव रखता है, सरिता? तुम्हारी तरह मुझे व्यस्त रखने के लिए अगर मेरा भी एक बेटा या बेटी होती, तो मैं खुशी-खुशी ऐसी ज़िन्दगी को स्वीकार कर जी लेती। तुम्हारे पति की तरह अगर मेरे पति ज़िन्दा होते, तो मैं उनकी ज़रूरतों और खुशियों का ध्यान रखती, न कि किसी कॉलेज के पीछ भागती फिरती।”

“मुझे पता है, भउजु, आप किसी से यह सुनने की उम्मीद नहीं करती, लेकिन मुझे आपकी ज़िन्दगी पसंद है,” सरिता आगे सीधा देखते हुए कहती है। “जैसी ज़िन्दगी आप जी रहीं हैं, उसे देखकर मुझे जलन होती है।”

“कोई किसी विधवा की ज़िन्दगी से क्यों ईर्ष्या करेगा, सरिता?” पार्वती ने आहें भरी। “भविष्य में किसी की राह देखूँ ऐसा भी कोई नहीं - न स्कूल, न बच्चे, जिसकी शादी होने का मैं इंतजार करूँ - न बेटे जो मेरी देखभाल करें, न पति जिसके घर आने की इंतज़ार करूँ, न जवान बेटी जिसकी चिंता सताती रहे और शायद मैं ही सबसे बदनसीब औरत हूँ। मैं नहीं चाहती कि मेरे दुश्मन को भी मेरी जैसी ज़िन्दगी नसीब हो, सरिता।”

“तभी तो। आपकी ज़िन्दगी की बस एक चीज़ बुरी थी, वह थी आपकी सास का अचानक आपसे मिलने आ जाना, जो कि अब गुज़र चुकी है। आपके फैसले पर सवाल खड़े करने वाला पति नहीं है। अपनी शैतानियों से आपको तंग करने वाले बच्चें नहीं है और न ही उनके भविष्य के लिए पैसे जमा करने की ज़रूरत है। अगर मैं आपकी जगह होती तो मैं दाई के पेंशन के पैसे से बनारस, बौद्धगया, तिरूपति, भारत की हर जगह तीर्थ यात्रा करती। आप अपना सामान बांधकर किसी भी दिन, कहीं भी चली जा सकती हैं। आपको न बच्चों के छुट्टियों के अनुकूल योजना करना पड़ता है और न ही आपको घर के बजट की चिंता करने की ज़रूरत है।”

“फिर भी मैं एक विधवा हूँ, सरिता,” पार्वती ने कहा। “मैं एक नेपाली विधवा हूँ। मेरे साथ भेदभाव किया जाता है। जब हम बीरतामोद पहुँचेंगे तब तुम देखना, मुझे किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में हिस्सा लेने नहीं दिया जाएगा। दुनिया विधवाओं को दूसरी नज़र से देखती है। उसके ऊपर बांझ होने पर और भी बदत्तर बर्ताव होता है। मैं जब तुम्हारे गले में रंग-बिरंगे पोते[44] देखती हूँ और सिंदूर की मोटाई, तब मुझे कितनी जलन होती है, तुम्हें इसका अंदाज़ा भी है। मैंने तो यहाँ तक कि तीज मनाना भी बंद कर दिया है। क्यों भला मैं ऐसा करूँगी? देखो, मैं एक विधवा हूँ।”

---

[44] नेपाली विवाहित महिलाओं का छोटी-छोटी मोतियों से बना मंगलसूत्र

ड्राइवर ने गाड़ी रोकी और हल्का होने के लिए बाहर निकल आया। यह ज़ाहिर सी बात है, वह उनके मौजूदगी में धूम्रपान नहीं करना चाहता था।

"उसे पीने दो," पार्वती ने कहा। "वैसे भी उसे रातभर जगे रहना है। हमसे छुपाने की ज़रूरत नहीं है। कितना सभ्य लड़का है।"

सरिता ने देखा सन्नी सोया हुआ है या नहीं और फिर पूछा, "भउजु! क्या आपने कभी सिगरेट पिया है?"

"मैं क्यों पीऊँगी?"

"कभी नहीं?"

"एक बार खैनी चखी थी, लेकिन खैनी से मेरे पूरे मुँह में जलन होने लगी थी। दुबारा कभी नहीं चखूंगी। मैं नहीं पूछूँगी कि तुमने चखा है या नहीं, लेकिन मुझे लग रहा है कि तुमने ज़रूर सिगरेट आज़माया होगा।"

"हाँ, मैंने आज़माया है।"

"कब?"

"कॉलेज में कुछ लड़कियों ने तय किया कि स्कूल के बाद सिगरेट पीयेंगे। मैंने भी कई कश लगाए। पता है आपको, इससे मुझे आराम महसूस हुआ।"

"मुझे नहीं लगता कि वही आख़री बार था।"

"नहीं, हर दिन घर जाने से पहले एक पीती हूँ। इससे मुझे साफ सोचने में मदद मिलती है। सिर्फ आमा को पता है। वह मुझे सन्नी के आसपास पीने से मना करती है।"

जब सरिता ने ड्राइवर को आते देखा, उसने पार्वती को चिकोटी काटी और इशारा किया कि वे इस मामले पर बातें करना बंद कर दें।

"चलो, मैं खुश हूँ, कम-से-कम यह विचार इस गोरी ने तुम्हारे दिमाग में नहीं डाला।"

"आमा ने मेरी ज़िन्दगी को बहुत प्रभावित किया है और आगे भी प्रभावित करती रहेंगी।"

वे मुश्किल से कुछ ही किलोमीटर बढ़े थे, कि कोशी नदी के बांध में पहुँचने से कुछ ही मिनट पहले उनके गाड़ी के एक पहिए ने धोखा दे दिया।

"जब भी मैं इस रास्ते से सफ़र करती हूँ, हमेशा बिगड़े पहिए की शिकार हुई हूँ। ऐसा लगता है जैसे इस रास्ते पर कील और सुई उगते हैं," पार्वती ने कहा।

"शुक्र है, पर्यटकों को माओवादी नुकसान नहीं पहुँचाते, अगर वे एक बार आमा को हमारे साथ देख लेंगे, फिर हमें कुछ नहीं होगा," सरिता जम्हाई लेते हुए कहती है। "आमा बहुत ही अनमोल है।"

माउवादियों ने नेपाल खत्म कर दिया है, उसने कहा था। *अगर एक दिन तुम अपनी मालकिन के चंगुल से छूट भी जाओगी, फिर भी तुम इस देश में रहकर क्या करोगी? माओवादियों के साथ शामिल हो जाओगी? हथियार उठाओगी और मासूम गाँववालों पर गोली चलाओगी? उनके साथ जबरन वसूली करोगी? काली, अब वक्त आ गया है, तुम देश छोड़कर चली जाओ और अपनी जिंदगी को बेहतर बनाओ। जो अमीर है, वे अमेरिका या इंग्लैण्ड जाते हैं। तुम बम्बई जाओगी और बॉलीवुड की सबसे बड़ी अभिनेत्री बनोगी।*

"यहाँ आओ," पार्वती ने काली से कहा जो गाड़ी से उतरने के बाद खोई हुई सी थी। "तुम यहाँ सुरक्षित रहोगी।"

काली हिचकिचाते हुए उसकी ओर बढ़ी।

"ऐसा लगता है, हममें से सबसे आराम से तुम ही बैठी थी। क्या तुम्हें भूख लगी है? जाकर चिउड़ा ले आओ।

"मैं बिल्कुल भी सो नहीं पाई। आपको मेरे बारे में बातें करते हुए, मैं सुन रही थी।"

"झूठी। जब हम रात के खाने के लिए रुके, तब तुम खर्राटे लेकर सो रही थी।"

ड्राइवर के पहिए को ठीक करने की ठक-ठक की आवाज़ और काली के चिउड़ा चबाने की आवाज़, दोनों एक से लग रहे थे। एरीन और सरिता जंगल में गायब हो गई, जबकी पार्वती ने उन्हें ज़्यादा दूर घुमने से मना किया था। जब वे लौटीं, सरिता पहले से और ज़्यादा ताज़ादम दिखी। पार्वती ने अनुमान लगा लिया कि उसकी ननद ने ज़रूर एक सिगरेट पिया होगा। सिगरेट की गंध को हटाने के लिए वह चुइंगम चबा रही थी, लेकिन उससे फ़ायदा नहीं हुआ।

एक बार जब पहिया बदल गया, फिर सभी अपनी सीटों पर आकर बैठ गए, ड्राइवर सरिता से थकावट की शिकायत करने लगा। उसने कहा कि अगर थोड़ा गाना-वाना होता तो बाकी बचे सफर में उसे जगाए रखता, लेकिन उसकी गाड़ी में रेडियो नहीं है। सरिता ने एरीन को स्थिति बताई, फटाक से एरीन ने अपना डिस्कमेन ड्राइवर के हाथ में थमा दिया और खुद सोने से पहले उसे दिखा दिया कि हेडफोन कैसे पहनते हैं। पार्वती और सरिता पीछे वाली सीट पर बैठकर मुस्कुराने लगे।

कुछ देर की शांति के बाद सरिता ने कहा, "मैं उन्हें तलाक देने की सोच रही हूँ।"

यह सुनते ही पार्वती की चीख निकल गई। अभी तक, उसे हल्का सा अंदाज़ा हो गया था कि उसकी ननद के साथ हुई मीठी बातचीत किस ओर जा रही है। उसे लगा शायद उसकी ननद उसके पति

के परिवार का कोई दुखड़ा सुनाएगी या पैसे की तंगी के लिए पार्वती से मदद मांगेगी, लेकिन पार्वती ने इतनी बड़ी खबर की उम्मीद कभी नहीं की थी। तलाक? तलाक एक ऐसी चीज़ थी, जो उनकी दुनिया में होती ही नहीं है। आपने सुना होगा कि तलाक के लिए एक औरत तभी आवेदन देती है, जब उसके पति की मार असहनीय हो जाती है। सभी जानते है, तलाक के बाद एक औरत को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। अमीर होटल मालिक की पत्नियों के तलाक के बारे में उन्होंने सुना था। तलाक का विचार और भी ज़्यादा बेहूदा इसलिए लगा क्योंकि उसकी माँ को गुज़रे चौबीस घंटे भी नहीं हुए थे और सरिता तलाक की बात कर रही थी।

"तुम सोई नहीं हो," पार्वती ने कहा। "अभी तुम बकवास कर रही हो, तुम अपनी माँ के मौत के सदमे से उभर नहीं पाई हो। शायद तुम्हें नींद की ज़रूरत है।"

"नहीं, मैंने तलाक के बारे में काफी विचार किया है। इससे मुझे ज़िन्दा होने का एहसास होता है। मुझे सब सही लगता है। और मुझे खुशी है कि मैं इस बारे में आपसे बात कर रही हूँ। दाई कब के गुज़र चुके और सिर्फ उनके चलते हम एक-दूसरे से बंधे हुए थे। मुझे आपसे न कोई लाभ होगा है और न नुकसान। साल में एक बार बड़ी मुश्किल से हम एक-दूसरे से मिलते हैं। इस विषय पर बात करने के लिए आप ही सबसे सही व्यक्ति हैं।"

"अब भी मैं तुम्हारे मरे भाई की बीवी हूँ, सरिता," पार्वती साफ़-साफ़ नहीं कह पाती, उसे कहीं-न-कहीं लग रहा था कि सरिता सही है। उनके संबंध को जोड़ने वाला उसका पति, सरिता का भाई, बहुत पहले इस दुनिया से जा चुका था। वे एक-दूसरे को इतनी अच्छी तरह से नहीं जानते थे, बल्कि पार्वती को तो यह भी याद नहीं कि तीनकुने में सरिता का घर कैसा दिखता है। इतने नज़दीकी रिश्तेदार होने के बावजूद भी इतने दिनों तक नहीं मिले, उसे सरिता का फ़ोन नम्बर तक नहीं मालूम। वाकई में वे लोग अजनबी थे, इसलिए दूसरा क्या सोचेगा उसका ज़्यादा डर नहीं था। यह स्वाभाविक सी बात है कि उसकी भाभी इस बात को गुप्त रखेगी। यह तो संयोगवश अपनी माँ की अंतिम संस्कार से कुछ धंटों पहले उसे बताना पड़ गया। पिछले साल से वे नहीं मिले थे, जब मिले हैं, तो वे बातें साझा करने लग गए, चाहे वह अच्छा या बुरा समय क्यों न हों।

"आमा को लगता है कि मुझमें इस दुनिया में बहुत कुछ करने की क्षमता है।"

"यह दुनिया ही तुम्हारा परिवार है, सरिता। तुम इनका क्या करोगी, तुम्हारी क्षमता इस पर निर्भर करती है।"

"मैं जानती हूँ, आपको लगता है कि आमा बेकार है, पर वह ही पहली व्यक्ति हैं, जिन्होंने मेरी सोच और कला की सराहना की है। उन्होंने ही मुझे दुबारा सिलाई सीखने के लिए प्रेरित किया है। मैंने आमा की बदोलत कॉलेज जाने का साहस इकट्ठा किया है। अगर वे मेरे सपनों को पूरा करने का एहसास दिलाने में मेरी मदद करती हैं, तो मैं उन्हें क्यों रोकूँ?"

तुम्हें ऐसी जगह में होना चाहिए जहाँ तुम्हारी सराहना हो, न की जहाँ तुम पर चौबीसों घंटे चिल्लाया जाए, उसने कहा था। *मैं झूठ नहीं बोलूँगा – मशहूर होने का रास्ता बहुत मुश्किल भरा होगा। तुमने जो कुछ भी सीखी है, सब कुछ भुलाना होगा। मुकाबला कठिन है, इसीलिए मेरा चचेरा भाई तुम्हें कुछ चीज़ें सिखाएगा, जो तुम्हें अमीर, ताकतवर मर्दों के पक्ष को जीतने के लिए करना पड़े। काली, तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल है, तुम अपनी मालकिन को कुछ मत बताना, वरना सब कुछ चौपट हो जाएगा। तुम्हें वादा करना होगा कि तुम जब अमीर बन जाओगी तब तुम हम जैसे छोटे लोगों को नहीं भूलोगी। ठीक है, ये वादा करो, केटी*[45]।

"और तुम्हारे पति और बेटे का क्या होगा, सरिता? वे ही तुम्हारे सपने होने चाहिए। समय के साथ ये कॉलेज का सपना खत्म हो जाएगा, जब तुम्हें पता चलेगा कि अकेलापन कैसे काट खाने को दौड़ता है। मैं इस अकेलेपन को जी चुकी हूँ और यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। कम-से-कम तुम्हारा पति तुम्हें मारता तो नहीं है। तुम्हारी शादी को चौदह साल हो चुके है। इस पागलपन के चलते, सब कुछ यूँ ज़ाया मत करो। हम लोग नेपाली हैं। हम इन लोगों से बहुत अलग हैं।"

"लेकिन मैं दुखी हूँ, भउजु, सच में बहुत दुखी हूँ। मैं अपने बेटे से प्यार करती हूँ और सोचा उसके लिए मैं यह मुसीबत भी भुगत लूँगी। लेकिन..."

"सरिता, तुम किसे भुगतने की बात कर रही हो? अगर तुम्हारा पति तुम्हें शराब पीकर पीटे और तुम्हारे सिर पर बर्तन मारे, तो उसे भुगतना कहते हैं। भुगतना तब कहो, अगर तुम्हारा पति दूसरी औरतों के साथ संबंध रखे या रखैल रखे। पति का होना भुगतना नहीं होता। तुम्हारे पास एक पति है जो बहुत ही अच्छा आदमी है और साथ ही भरोसेमंद भी है। वह तुम्हारे बेटे का ख्याल रखता है, एक अच्छा पिता है। उसने तुम्हें कॉलेज जाने के लिए भी अनुमति दी है, जबकि उसे यह साफ पसंद नहीं। एक गोरी औरत ने तुम्हें प्यार का क्या प्रवचन दे दिया है कि तुम जिसके लिए अपना सबकुछ बर्बाद करने पर तुली हुई हो? वह शादी को पश्चिमी नज़रिए से देखती है। जो तुम्हारे और ज्वाई के बीच है, वह बहुत ख़ास है। किसी के भी कहने पर, कम-से-कम एक गोरी औरत के कहने पर ऐसा मत करो, जिसने उम्रभर अकेले जीवन बिताया है, जो खुद विदेश में दूसरे के परिवार के साथ रहती है। यह एक सफल शादी है। इस रिश्ते की खूबसूरती तुम्हें बाहर से देखने की ज़रूरत है।"

"आमा कहती है कि मैं ऑस्ट्रेलिया जा सकती हूँ।"

"तुम अपने पति और बेटे के साथ भी ऑस्ट्रेलिया जा सकती हो। वहाँ भी तुम अपने पति और बच्चे के साथ एक नई ज़िन्दगी की शुरूआत कर सकती हो। उनके साथ रहकर भी काम के साथ-साथ पढ़ाई कर सकती हो। तुम्हें एक चीज़ पाने के लिए दूसरे चीज़ का बलिदान देने की ज़रूरत नहीं है। असहमति, बहस और झगड़े तो आम बात है, पर यही तो इसकी खूबसूरती है। अगर मैं तुम्हारे मृत भाई को ज़िन्दा कर सकूँ और मुझसे कहा जाए कि लड़ाई न करे, फिर भी उसके लौटकर आने पर, हम एक

[45] लड़की

बार तो झगड़ेंगे ही, पर मैं उसे खुशी-खुशी उनको अपना लूँगी। ज़िन्दगी और भी अच्छी हो जाती है, जब उसे बाँटने वाला कोई मिल जाता है। तुम अकेली रहना नहीं चाहोगी, सरिता। पाँच साल के अकेलेपन ने मुझे अधमरा बना दिया है। कभी-कभार मैं खुद को नहीं पहचान पाती हूँ। मुझे अपने आप में बदलाव दिख रहा है, तुम्हारे भाई के गुज़र जाने से पहले और आज की पार्वती में बहुत अंतर है। मेरी सलाह मानो - अपने पति से इस विषय पर बात कर लो। शायद वह ऑस्ट्रेलिया जाने को तैयार हो जाए। अगर यह अच्छा मौका है, तो क्यों नहीं? और फिर तुम अपनी आमा से बात करो। उसे बताओ कि तुम अपने पति को छोड़ना नहीं चाहती। अगर वह एक देवी है, जैसा कि तुम दावा करती हो, तो वह ज़रूर समझगी।"

नए दिन के साथ धूप बढ़ती जा रही थी और सफर बढ़ते हुए गाड़ी में घुटन सी महसूस होने लगी थी। सन्नी उठते ही खिड़की खोलकर ठंडी हवा का आनन्द लेने लगता है। एरीन ने अपना डिस्कमैन वापस माँगा, फिर खिड़की खोलकर तस्वीरें खींचने लगीं। ड्राइवर अब आराम से गाड़ी चला रहा था, कुछ घंटे पहले ही उसने मौत को इतने करीब से देखा था, जिसके चलते वह बड़ी गाड़ियों को पीछे छोड़कर आगे जाने की कोशिश नहीं कर रहा था। जैसे ही काली उठकर बैठने की कोशिश कर रही थी, अचानक गाड़ी ने मोड़ ले लिया और उसका सिर गाड़ी की छत से जा टकराया।

"कुछ नहीं, बस वह बेवकूफ काली थी," अपने पति से सरिता ने फोन पर कहा। "ढंग से सीधी भी खड़ी नहीं रह सकती। ठीक है, अब मुझे जाना है। हम पहुँचने ही वाले हैं। क्या आपको शंख की आवाज़ सुनाई दे रही है? लगता है, उन्होंने गोदान कर ही दिया है, रूको, यह तो पंडित के लिए बछड़ा है। अच्छा रखती हूँ। नए जगह में अपने खाने का ध्यान रखना। सुनने में आया है कि वे लोग चार पैरों वाले सभी चीज़ें खा जाते हैं, है न? छिय्या[46]।"

"काली कितना बुरा नाम है, काली," पार्वती कहती है। "आज से तुम अपना नाम रेखा कहना।"

"रेखा अच्छा नाम है," सरिता ने खिल्ली उड़ाई। "अभिनेत्री रेखा की तरह।"

काली अचम्भे से बाहर की ओर देख रही थी।

"वैसे सरिता शायद हम तेरह दिन के अनुष्ठान के बाद सीलीगुड़ी जा सकते हैं।"

तुम बम्बई जाने से पहले कुछ दिनों के लिए सीलीगुड़ी में रहोगी, उसने कहा था। *तुम्हें वैसा ही करना होगा जैसा मेरा भाई कहे। वह एक अच्छा आदमी है, लेकिन अपना आपा जल्दी खो देता है। याद रखना उसे तुमसे कोई लाभ नहीं हो रहा है। वह तुम पर एक एहसान कर रहा है, क्योंकि मैंने उसे यकीन दिलाया है, तुममें बहुत कुछ करने की क्षमता है। तुम्हें यह समझना होगा कि वह तुम्हें जो भी*

---

[46] छी

करने को कहे, अगर तुम्हें सीखाया भी गया हो कि वह चीज़ गलत है, फिर भी तुम्हें उसका कहना मानना पड़गा, क्योंकि बड़ी अभिनेत्री बनने का वही एक रास्ता है।

“मैंने सुना है कि इन फांक होठों की सर्जरी नेपाल की तुलना में भारत में काफी सस्ती है,” घर की ओर बढ़ते हुए पार्वती कहती है और आगे फुसफुसाते हुए कहने लगी, “मैं काफी थकी हुई हूँ, मातम करने के लिए एक अलग कमरे का बंदोबस्त करने की हालत में नहीं हूँ। आशा करती हूँ कि उन्होंने इसका इंतज़ाम कर रखा होगा।”

“भउजु, मैं आपकी मदद कर दूँगी,” सरिता ने कहा।

“काली, काली,” पार्वती ने चिल्लाया। “हाँ, तरसती हुई आँखों से रास्ते को ताक रही थी, लगता है रात भर का सफर तेरे लिए काफी नहीं था। या तु अपने गरीब परिवार के पास लौटना चाहती है? तुझे पता है, यह वही का रास्ता है।”

“अच्छा, तो यही है भारत जाने का रास्ता?” काली ने पूछा।

“हाँ, बुद्धू यही है।”

काली कुछ देर के लिए चुप रहती है। “मेरे चार सौ रूपए, मैं अपने साथ लाई हूँ,” उसने कहा। “ये इस हल्ले-गुल्ले में कहीं खो न जाएँ, क्या इसे आप अपने पास रखेंगी?”

“ये पैसे तुम्हारे पास कहाँ से आए? क्या तुम चोरी करने लगी हो?”

“नहीं, नहीं ये दसई[47] और भईलीनी[48] के पैसे हैं, जिन्हें मैंने तिहार[49] के दौरान कमाए थे।”

“हाँ, हो सकता है। मैं भूल जाती हूँ कि तुम अपनी बेसुरी सी आवाज़ लेकर घर-घर गाती फिरती हो। तुम्हें लोगों ने बाहर नहीं फेंक दिया, शायद त्योहार के चलते बड़े दिल वाले बन गए थे। जब हम घर से निकल रहे थे, तभी पैसे क्यों नहीं दिए, काली? अब मुझे दे दो, लेकिन इसका अब तमाशा मत खड़ा कर देना। हर चीज़ का एक समय और जगह होता है, लड़की, हर चीज़ का एक समय और जगह।”

*****

[47] दशहरा

[48] दीपावली के समय लड़कियों का झुण्ड लोगों के घरों में जाकर नाचते-गाते आशीर्वाद देते हैं, जिसके बदले उन्हें पैसे मिलते हैं।

[49] दीपावली

सोते शेर को न जगाओ

मुन्नू का वास्तविक नाम किसी को पता नहीं था। वह थोड़ी देर अपनी परेशान करने वाली बीवी के बारे में सोचना भूलकर, सामने खड़ी लम्बी-चौड़ी लड़की के अभिवादन का मुस्कुराते हुए जवाब देता है। लेकिन मुस्कुराहट मुन्नू की आँखों में नहीं दिख रही थी, घबराते हुए वह ग्राहक की ओर देखता है।

"कैसी हो, बईनी[50]?" आँखें चुराते हुए, मुन्नू पूछता है। "तुमने खाना खाया?"

"नहीं, आमा घर पर नहीं है और कामवाली बीमार है," श्रद्धांजलि ने जवाब दिया। "मुझे कुछ नूडल्स की ज़रूरत है। इन कुलियों के बच्चों से भी ज़्यादा मुझे भूख लगी है।"

वह हद से ज़्यादा विनम्र थी। वह अपने पड़ोसियों और सहेलियों के माता-पिता को ही नहीं, बल्कि अपने नौकरों को भी नमस्ते करती थी। एक अमीर बाप की बेटी का इतना आदर नौकरों को कभी-कभी घबराहट में डाल देता था। जिसके कारण उसके अभिवादन करने से पहले ही वे नमस्ते कर देते थे। बड़े आदमी की बेटी से इतना आदर मिलने पर, उन्हें शर्मिंदगी महसूस होती थी। शुरूआत में कुछ लोगों को लगता था कि वह उनकी खिल्ली उड़ा रही है, क्योंकि समाज की इस वर्ग व्यवस्था के चलते उनके दिमाग में यह घर कर गया है कि चापलूसी छोटे लोग करते हैं, यहाँ तक कि उनके ड्राईवर को भी यही लगता था। लेकिन उसके लगातार अभिवादन करने के चलते अब उन्होंने यह मान लिया है कि वह उसके परवरिश के कारण ऐसी है।

मुन्नू को पता था कि वह नूडल्स माँगेगी। आज श्रद्धांजली हद से ज़्यादा बात कर रही थी। वह प्रायः ऐसा करती है और उसे पता था, आगे क्या होने वाला है।

"वाई-वाई[51] या मेगी, बईनी?" उसने पूछा।

"एक वाई-वाई और एक मैगी दे दीजिए। दोनों शाकाहारी वाले दीजिए।"

मुन्नू अपने एल-आकार की दुकान पर, छत को छू रहे ताक़ पर रखे नूडल्स और चिप्स की ओर मुड़ा। हर दिन की ज़रूरतों के सामान के लिए आस-पड़ोस के लोग और राहगीर, जो उस व्यस्त रास्ते से बस-स्टैण्ड की ओर गुज़रते थे - वे सभी पान, चॉकलेट बार्स, चिप्स, टॉफी, कॉण्डम (दराज़ में छुपा कर रखता है), सॉफ्ट ड्रिंक, पेन, कॉपी और सिगरेट के लिए मुन्नू के सुविधाजनक दुकान पर निर्भर करते थे।

---

[50] बहन

[51] एक प्रकार का नूडल

उसके मकान मालिक, कालिमपोंग की प्रसिद्ध डॉक्टर और आर्किटेक्ट[52] की जोड़ी ने संकोच करते हुए भी रास्ते के स्तर पर एक छोटा-सी जगह को मुन्नू को सस्ते भाड़े पर दे दिया था। मकान मालिक ने थोड़ी नाराज़गी दिखाई कि एक पान की दुकान उसके सात मंजिल की इमारत के सौंदर्य को बिगाड़ देगी। बिल्डिंग ख़ूबसूरत थी, जिसे बड़ी ही मुश्किल से बहुत पैसे खर्च कर बनाया गया था, इतना खर्चा तो उन्होंने केवल अपनी बेटी की श्वेतरक्तता के असफल उपचार में खर्च किए थे - पर मुन्नू अड़ा रहा। उसने वादा किया कि वह दुकान को मक्खियों से दूर रखेगा और प्रस्ताव रखा कि वह न केवल दुकान के सामने की सफाई करेगा बल्कि सीढ़ियाँ भी साफ़ करेगा। मकान मालिक मुन्नू को पसन्द करता था। उसके पिता से उसकी तुलना करें तो उसमें व्यापारी के गुण कम थे – उसके पिता के बारे में अफ़वाह थी कि वह मक्का में घर खरीदने वाला है – इसीलिए वे जितना हो सके उतना मुन्नू के दुकान के लिए सहायता करने की कोशिश करते थे।

मुन्नू के किराए पर लेने के बाद भी सौ स्क्वेयर फीट की जगह खाली रह गई थी। एक यात्रा संस्था ने शहर के कुछ पर्यटन स्थानों की यात्राओं के लिए अपने दुकान के बाहर लाल, हरे और पीले रंग के शब्दों में विज्ञापन लगा रखा था, वे पूरे मंजिल के लिए अच्छा पैसा दे रहे थे। लेकिन न मुन्नू और न ही वह संस्था उस सौ फीट के उस कमरे को लेना चाहता था। उस कमरे को मकान मालिक ने अपनी ह्यूण्डाय सैण्ट्रो गाड़ी के लिए गराज़ की तरह इस्तेमाल करने की कोशिश की थी, पर पहली ही रात जब ड्राईवर ने गाड़ी घुसाई, तब पूरी इमारत ज़ोरों से हिलने लग गई थी। ऐसा उन्होंने तब महसूस किया था जब उनकी बेटी, जो गुज़र गई है वह छत पर उछल-कूद करती थी। शुरुआत के कुछ महीनों तक गराज़ खाली रहा, फिर एक दिन एक दूसरे मुसलमान ने मुन्नू के बराबर पैसे देकर उस जगह को ले लिया। उसके बाद रास्ते के स्तर पर दोनों अगल-बगल एक छोटी और एक बड़ी, दो पान की दुकान खड़ी हो गई।

शुरुआत में, मुन्नू को बगल वाले प्रतियोगी के दुकान से घबराहट होती थी। दोनों ने दुकान पर बेचने के लिए एक ही तरह के समान इकट्ठा कर रखे थे। लेकिन उसे जल्दी अहसास हो गया कि उसका यह डर बेकार है। रेली रोड के हर हिस्से और बैद्यनाथ के अड़ोसी-पड़ोसी आदत से मजबूर होकर, उसकी दुकान पर ही आते थे। राहगीरों के लिए दोनों दुकानें एक समान थी। वैसे मुन्नू का ध्यान इस ओर ज़रूर गया था कि उसके ग्राहक कुछ कम हो गए हैं, पर वह इतनी चिंता की बात नहीं थी। नई दुकान अगर भरपूर मुनाफा कमाने लगेगा, तो वह सीधे मकान मालिक से कह कर उस खाली जगह को भी भाड़े में ले लेगा। फिर भी सुरक्षा के लिए वह दूसरे दुकान का पट्टा खत्म होने से पहले ही उस जगह को किराए पर ले लेना चाहता था। व्यापर में घाटा उसकी घबराहट का कारण नहीं था। अभी उसके सर दर्द का कारण वह जानवर थी, जो अभी उसके सामने खड़ी थी।

---

[52] वास्तुकार

करीबन छह फीट लम्बी, शायद वह कालिमपोंग कि सबसे लम्बी लड़की थी। उसका चेहरा वैसा था, जिसका कुछ किया नहीं जा सकता था। जिसे मुन्नू दया की नज़र से देखता था, क्योंकि उसका हर हिस्सा एक-दूसरे से हटकर था, जो अद्भुत दिखता था। और सब मिलने पर एक असामान्य चेहरा था - जो पूरी तरह न तो बदसूरत था, पर थोड़ा अजीब था। मुन्नू अपने आप को महिलाओं की सुंदरता का मापतोल करने में माहिर समझता था, अपनी इस योग्यता पर उसे गर्व था। उसके अनुसार वह अच्छी दिखती, अगर उसके चेहरे का कुछ हिस्सा थोड़ा और कुरुप होता - शायद एक दाँत बाहर या एक गमड़ा नाक पर होना चाहिए था। यह साफ़ था कि वह खूबसूरत दिखने के लिए बहुत मेहनत करती थी। वह एक हाई स्कूल की लड़की थी, लेकिन वह गहरा, चमकीले रंग की लिप-ग्लॉस लगाती थी, जो उसके बनावटी लाल रंग के बालों की चमक के बराबर थी।

उसने इस लड़की को बढ़ते देखा था। बचपन में वह काफ़ी मोटी थी। कई बार तो उसने पड़ोस के लड़कों को भी मारा था। पर अब वह बाँस की तरह पतली हो गई है। कई दिनों तक वह बीमार रही और स्कूल में भी अनुपस्थित रही थी। कभी-कभी उसके दुकान पर वह सिर्फ एक शॉल और लाल रंग के दिल बने पजामे पहनकर, एक पैकेट गुड्डे या बरबन बिस्किट माँगने आ जाती थी। 'नन्हीं शैतान' यह उपनाम उसके पिता और मुन्नू ने दिया था। मुन्नू अब भी उससे थोड़ा घबराता था। उसके ऊपरी होंठ पर एक तिल था, मुन्नू के अनुसार उसकी बोली हमेशा तीखी होगी। हमेशा तीखी बोली, यह सोचकर वह काँप जाता था।

"आपकी बेटी आजकल मुझे दिखती ही नहीं," उसने शीशे के समकोणीय काउंटर को खोलते मुन्नू के पीछे खड़े होकर कहा। उसके अंदर विदेशी मिठाईयाँ, डेयरी मिल्क और फ्रुट एन नट, वहाँ पर चॉकलेट बार्स रखी हुई थी। ये डब्बों में रखी मिठाईयों से भी अधिक महँगी थी।

मुन्नू ने पीछे धम की आवाज़ सुनी, पर वह नहीं मुड़ा। काउंटर के सीट के पास रखे नूडल्स के ढेर को हटाने का एक रास्ता उसे ढूँढना था। मुँह में आखरी बचे जर्दा पान को चबाना जारी रखा, जिसका उसने हाल ही में मीठे पान के बदले खाना शुरू किया था। और फिर मैगी, वाई-वाई को तीन हफ्ते पुराने अखबार के तीसरे पृष्ठ के कागज़ में बाँध दिया। ये सब करने के बाद वह दीवार पर तंगी बॉलीवुड अभिनेत्री की तस्वीर की और आँखे घुमाने लगा, जिसने हरे रंग की लिपिस्टिक लगा रखी थी। तीन दफा खाँसने के बाद भी उसकी पीठ श्रद्धांजली की तरफ थी, फिर उससे पूछा किसी और चीज़ की ज़रूरत तो नहीं।

"आशा करती हूँ कि आज आपके पास प्लास्टिक की थैली है," श्रद्धांजलि कहती है।

"नहीं।" मुन्नू पीछे मुड़ता है। "पर्यावरण। याद है?"

"उफ! आपका प्रकृति के प्रति चिंता, हमारे लिए मुसीबत बन गई है। इससे पहले की आप सारे प्लास्टिक के थैले हटा दें, कम-से-कम हमें कागज़ के थैले मुहैया करा देने चाहिए थे।"

“सही कहा, बईनी, दूसरे ग्राहक भी यही शिकायत कर रहे थे। लीजूम की माँ ने तो मुझे धमकी भी दी है कि अगर मैंने चुपके से उसे प्लास्टिक की थैली नहीं दी तो वह पड़ोस वाले मुन्नू की दुकान पर ख़रीददारी करने चली जाएगी। पर मैं क्या कर सकता हूँ? मैंने खुद से और डॉ. ग्राहम हॉम्स के उन छात्रों से वादा किया है।”

उसके पड़ोस के दुकान मालिक को मुन्नू कहकर संबोधित करने पर श्रद्धांजली खुश हो जाती है।

“आप भी उसे मुन्नू कहते हैं?” वह हँसी और अपना सामान इकट्ठा करने लगी। “हम उसे चुन्नू कहकर बुलाते हैं। वैसे उसका असली नाम क्या है?”

मुन्नू को भी उसके पड़ोसी का नाम पता नहीं था।

“मुन्नू टू,” उसने कहा।

दोनों ही हँस पड़े। वे एक-दूसरे को बहुत समय से जानते थे, पर आज भी वे हिचकिचाते हैं। उनके बीच का अंतर खाड़ी के समान था- एक चाँदी की चम्मच मुँह में लेकर जन्मी थी, तो दूसरे तेज़ उन्नति कर रहा था, फिर भी एक मामूली दुकानदार था।

“ठीक है, अभी मुझे इन्हें पकाना है,” श्रद्धांजली ने कहा। “मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता, जब मुझे काम करना पड़ता है।”

मुन्नू को यकीन था, श्रद्धांजली कुछ और नखरा करेगी। वह ऐसा तब करती है, जब कीमत से ज़्यादा दुकान से सामान ले जाती है। पर जैसे ही मकान मालिकन यानि डॉ. प्रधान सामने आई, श्रद्धांजली ने बातें करना बंद कर दिया।

“श्रद्धांजली, मेरी नानी[53]! अब छोटी नहीं रही, हैं न?” डॉ. प्रधान ने कहा। श्रद्धांजलि ने हाथ जोड़कर नमस्ते किया। “आह! अब तुम्हारा बढ़ना रुक जाएगा। जब तुम दिल्ली विश्वविद्यालय जाओगी, तब तुम ये सारे सुन्दर कपड़े खरीद सकती हो। ज़रूर तुम बहुत खुश हो।”

“जी आंटी, बहुत खुश हूँ, पर उससे पहले मुझे अपने परीक्षा के लिए पढ़ना है,” श्रद्धांजली ने कहा। “और अगर मुझे दिल्ली विश्वविद्यालय में दाखिला नहीं मिला तो?”

“तुम्हें मिल जाएगा, चिंता मत करो,” श्रीमती प्रधान ने कहा। “तुम्हारी माँ कैसी है?”

“वह अच्छी है, आंटी। पर मुझे अभी जाना है। नौकर बाहर गया है और आमा भी घर पर नहीं है।”

---

[53] नेपाली भाषा में प्यार सेबच्चों को कहते हैं।

श्रद्धांजली ने फिर हाथ जोड़कर नमस्ते किया और चली गई। आजकल के कई नौजवान ऐसा नहीं करते।

"यह कितनी बड़ी हो गई है, मुन्नू भईया," डॉ. प्रधान ने कहा, ये पक्का करने के बाद कि श्रद्धांजली दूर जा चूकी है, ताकि उसके कानों तक यह बात न पहुँचे, वह बड़बड़ाते हुए आगे कहती है, "इसने इस्त्री किया हुआ स्कर्ट, बेल्ट या जो भी है, कितनी अच्छी तरह पहना है।"

"वह दिखती सुस्वभाव की है, पर वह है नहीं, मेमसाहब," मुन्नू ने शिकायत की।

"क्या वह दोबारा करने लगी है?" डॉ. प्रधान ने पूछा।

"वह हर दिन यहाँ आती है - कभी एक चॉकलेट, कभी दो चॉकलेट ले जाती है, आज दो ले गई है।"

"जल्दी ही घाटे पर काम करने लगोगे, मुन्नू भईया।"

"पर मैं क्या कर सकता हूँ, वह बड़े आदमी की बेटी है। मैं उस पर किसी भी चीज़ का इलज़ाम नहीं लगा सकता।"

"कोई काम करने वाला रख लो, मुन्नू।"

"कामकरने वाला रखने की हैसीयत नहीं, मेमसाहब," मुन्नू ने कहा।

"शायद तुम्हें उसके माँ-बाप से सीधे बात करनी चाहिए।"

"जी, पर वह अठारह साल की है। माँ-बाप के साथ आठ साल के बच्चे की बुरी आदतों के बारे में बात करना जायज़ है, पर हम यहाँ एक बड़ी हाथी के बारे में बात कर रहे हैं।"

"इस तरह से मेरी दोस्त की बेटी के बारे में बात मत करो, मुन्नू भईया," श्रीमती प्रधान ने कहा।

"बिल्कुल, वही मैं कहना चाहता हूँ, मेमसाहब," मकान मालिक की चेतावनी की गंभीरता को न समझते हुए कहता है। "अगर मैं इस बात को किसी और को बताऊँगा तो कौन मेरा विश्वास करेगा? कहाँ मैं एक बिहारी मुसलमान पानवाला हूँ और कहाँ वह कालिमपोंग के सबसे बड़े वकील की बेटी।"

"यह एक बीमारी है, मैं भूल गई इसका अंग्रेज़ी में एक नाम है," डॉ प्रधान ने कहा। "तुम्हारी बीवी और बच्ची कैसी है? मैं थोड़ी देर बाद उन्हें देखने जाऊँगी।"

मुन्नू का जन्म कालिमपोंग में हुआ था। वह बिना माँ के ही कालिमपोंग में पला-बड़ा था। उसके पिता की अच्छी-खासी एक पान की दुकान थी, अपने नन्हें बच्चे को भी उसने दुकान में खींच लिया था और

लोगों को यह बहाने बताता कि घर पर उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। मुन्नू उसके पिता की दुकान में ही बड़ा हुआ। पड़ोसी और ग्राहक प्रायः उससे पूछते कि वह क्यों अपने बेटे को औपचारिक शिक्षा नहीं देता, जिस पर वह रूखा आदमी जवाब देता कि दुकान से अच्छा कोई स्कूल नहीं। और शायद वे सही भी था। मुन्नू ने पहला अक्षर दुकान में ही पहचाना था, उसने जोड़ना भी दुकान में ही सीखा था। लोग उसे कैसे पसंद करें, उसकी भी तरकीब उसने खोज निकाली थी। मुन्नू हँसमुख प्रकृति का आदमी था, दूसरों की जिंदगी के बारे में जानने और ध्यान से उनकी बातों को सुनता था। जिसके बिल्कुल उल्टा उसका पिता लोकप्रिय नहीं था और वह साहूकार का काम भी करता था, जिसके कारण सभी उसके निर्दयी स्वाभाव को जानते थे।

अधिकतर मध्यवर्गीय ग्राहकों के मुकाबले मुन्नू काफी पैसे वाला था, अपने परिवार की सच्चाई को वह सामने नहीं लाना चाहता था। यह भी जानता था कि वह पूरी तरह इस जगह का नहीं हो पाएगा और उसे हमेशा एक बाहरी का दर्जा मिलेगा। उनके बीच घुलमिल कर रहने का एक आसान रास्ता यही था कि वह अपने ग्राहकों की समस्या को बिना अपनी श्रेष्ठता दिखाए उनकी बातों को सुने। वह इस हद तक कालिंपोगवासी बन गया था कि वह सोचता भी नेपाली भाषा में था, न कि भोजपुरी या उर्दू। इन सबके बावजूद, आत्मसात की कुछ सीमाएँ होती हैं और मुन्नू को इस बात का बुरा नहीं लगता था। आखिर वह एक ऐसी जगह में रह रहा था, जहाँ के लोग अपनी बात को सामने रखने से कतराते नहीं थे। जातीयता और अपनी पहचान के आधार पर वे एक अलग राज्य की माँग कर रहे थे, जिसके लिए वे कभी-कभार हिंसक भी हो जाते थे। यह स्वाभाविक था कि वहाँ पर बसने वाले अल्पसंख्यक या दूसरे समुदायों के प्रति इतनी सहिष्णुता रखेंगे।

मात्र दो वर्ष पहले ही मुन्नू के पिता ने उसके लिए दुकान खोल दी थी और अपनी खुद की दुकान किसी दूसरे मुसलमान व्यापारी को भाड़े पर दे दी। फिर खुद अपने बेटे मुन्नू के लिए दुल्हन ढूँढ़ने निकल पड़ा था। कालिंपोग में एक सभ्य लड़की खोजने का इस बूढ़े आदमी का प्रयास नाकाम हो गया। पहली बात शहर में मुसलमानों की जनसंख्या न के बराबर थी। दूसरी बात लड़कियाँ या तो पढ़ी-लिखी थी, जिससे आने वाली मुसीबतों का मुन्नू और उसके पिता को एक आभास था या तो वे गरीब परिवार से थी, यानि कम दहेज।

जल्द ही बाप-बेटे ने अपनी खोज के क्षेत्र का विस्तार किया, जिसमें दार्जिलिंग, सिलिगुड़ी और कुरसिओंग को शामिल किया। पर वहाँ भी उन्हें नाकामयाबी हाथ लगी, फिर उन्होंने अपना इलाका और दूर तक फैलाया और आखिर में उन्होंने उत्तर प्रदेश के मेरठ में अपने पाँच पुश्त की बहन लगने वाली युवती के साथ विवाह तय किया। मुन्नू मन-ही-मन चाहता था कि उसे नेपाली बोलने वाली बीवी मिले पर पहले ही वह यह भी स्वीकार कर चुका था कि उसके पास बहुत ही सीमित विकल्प है। वैसे भी हुमेरा काफी गोरी थी – उसके दुकान की सबसे अच्छे आटे की तरह सफेद थी। एक रंगीन टीवी और साज-सज्जा का सामान दहेज में साथ आया था।

कालिंपोंग में एक बड़े कारण से हुमेरा आकर्षण का केंद्र बन गई थी। इस शहर का ध्यान आकर्षित करने में न उसके गोरे रंग का और न उसकी सुन्दरता की कोई भूमिका थी। असल में लोग, जिस चीज़ से वह अपनी खूबसूरती ढकती है, उस पर उनकी दिलचस्पी थी। शहर भर में वह ही एक महिला थी, जो बुर्का पहनती थी। कालिमपोंग में कुछ ही मुसलमान महिलाएँ पर्दा करती थी, जैसा कि माड़वाड़ी शादीशुदा महिलाएँ करती हैं। लेकिन कोई भी बुर्का नहीं पहनती थी। मुन्नू के अपनी ओर से किए हुए प्रयास के बाद भी उसकी बीवी ने अपना पसंदीदा श्रृंगार बुर्का नहीं छोड़ा। मुन्नू को खुशी होती अगर वह बुर्का के बजाय बस पर्दा करती। वह पुराने ख़्यालात की थी। वह इसे छोड़ने के लिए तैयार ही नहीं थी। मुन्नू को डर था कि कहीं शहर में लोगों को यह न लगे कि उसने ही अपनी बीवी को बुर्का पहनने के लिए मजबूर किया है।

हुमेरा ने हाल ही में एक बेटी को जन्म दिया था, जिससे उसका ससुर नाराज़ होकर मक्का की यात्रा को निकल पड़ा था। मुन्नू चाहता तो बेटा था, पर बेटी से भी नाखुश न था। उसने सोच भी लिया था कि वह अपनी बेटी को स्कूल भेजेगा और कम-से-कम तीसरी कक्षा तक पढ़ाएगा। उसका अपनी बीवी के लिए प्यार बढ़ने लगा था, हालाँकि उसके व्यक्तित्व के कई पहलुओं से वह चौंक भी जाता था। अगर मुन्नू नेपाली भाषा में बेटी के लिए लोरी गाता तो वह सहम जाती थी। वह बुर्का न छोड़ने के ज़िद पर अड़ी थी। मुन्नू अगर नमाज़ पढ़ना भूल जाता तो वह बार-बार उसे याद दिलाती थी। लड़की को जन्म देने के कारण कभी-कभार वह माफी माँगती थी। इन ख़ामियों के अलावा मुन्नू को अपनी बीवी में जो चाहिए था, उसमें सब कुछ था। वह गोरी और खूबसूरत थी (ऐसा नहीं कि वह दिखावा कर सके), उसकी ज़रूरतों को पूरा करती थी (ऐसा नहीं कि वह बेवजह माँग करता था) और अच्छी रसोईया भी थी (इसका यह मतलब नहीं वह एक भुक्खड़ था)। उसे यात्रा करना पसंद नहीं था, इस कारण शादी के बाद वह अपने मायके नहीं गई, मुन्नू को इससे कोई शिकायत नहीं थी।

हुमेरा की माँ इतनी बीमार थी कि उस हालत में कालिंपोंग की यात्रा करना नामुमकिन था, तो जब मुन्नू ने यह बात डॉ. प्रधान को बताई कि उसकी बीवी पेट से है, तब मकान मालकिन ने उसकी माँ की भूमिका निभाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

“जब से वह गर्भवती हुई है, तब से क्या वह डॉक्टर से नहीं मिली?” डॉ. प्रधान मुन्नू पर चिल्लाती है। “तुम मुसलमान कौन से युग में जी रहे हो?”

“उसे डॉक्टर के पास जाना अच्छा नहीं लगता।”

“तो किसे अच्छा लगता है? डॉक्टर के पास जाना है न कि दसईं और ईद मनाना है।”

“उसे ईद मनाना भी पसंद नहीं।”

“यह मज़ाक का वक्त नहीं, मुन्नू। अस्पताल में कल मेरे ड्यूटी के बाद, मैं उसे देखने आऊँगी। कृपया ध्यान रखना मैं जब आऊँगी, तुम्हारा घर साफ हो चाहिए।”

“पता नहीं वह राज़ी होगी भी या नहीं।” नज़रे झुकाकर मुन्नू ने कहा।

“ठीक है, फिर एक विकलांग बच्चे के साथ खुश रहना,” डॉ. प्रधान ने गुस्सा होने का ढोंग करते हुए कहती है।

घर पर उसने हुमेरा को डॉक्टर से मिलने के लिए तैयार होने को कहा। उसने हुमेरा को कभी इतना उदास नहीं देखा था।

“ज़रा सोचो,” उसने तर्क दिया। “अगर वह मुझसे खुश न हुई तो वह हमें इस बिल्डिंग से बाहर फेंक सकती है। अगर दुकान ही नहीं रहेगी, तो हमारा बच्चा क्या खाएगा? उन्होंने अपना बच्चा खो दिया है, वह सिर्फ इतना चाहती है कि हमारा बच्चा स्वस्थ रहे।”

आखिरकार हुमेरा मान गई, पर एक शर्त थी कि मकान मालिकन सिर्फ एक ही बार मिलने आएगी। डॉ. प्रधान ने मुन्नू को डाँटा कि उसने दाई रखने की सोची भी कैसे। जब उसने बताया कि यह विचार उसका नहीं बल्कि उसकी बीवी का है और मुन्नू खुद चाहता है कि डॉक्टर भी मौजूद रहे, उसे वह ज़्यादा आश्वस्त महसूस करेगा, यह सुनकर डॉ. प्रधान ने हुमेरा को डाँटा। डॉक्टर से अब वह कई बार मिले लगी थी। मुन्नू को अजीब लगता था कि एक मकान मालकिन की ओहदे की महिला कैसे उसकी गँवार, रूढ़िवादी बीवी से इतनी अच्छी तरह घुल-मिल सकती है। शायद इसका संबंध उनकी अपनी बेटी के गुज़र जाने से है, हुमेरा में उन्हें एक अच्छा श्रोता नज़र आता होगा, शायद उनकी बातें ध्यान से सुनती है। शुरूआत में, वह इससे काफी खुश था।

उसके बाद हालात बदलने लगी। धीरे-धीरे उसकी बीवी उसे उलटे जवाब देने लगी थी। वह चौक भी गया था कि उसकी बीवी इतनी आत्मविश्वासी हो गई है, पर जब उसका मुँह लड़ाना आए दिन सामान्य और अपमानजनक होने लगा, तब वह समझ गया कि उसे इस चीज़ को यहीं रोकना होगा। उसने अपनी बीवी को पीटने की धमकी दी। पर हुमेरा ने इसका भी विरोध किया। उलटे डॉ. प्रधान को बता देने की धमकी दी और कहा कि इससे उसका मकान मालिक के साथ संबंध बिगड़ सकता है।

हुमेरा ज़िद करने लगी कि वह डॉ. प्रधान के बाल चिकित्सालय में नौकरी करके खुद पैसे कमाना चाहती है और वहाँ केवल बच्चे और महिलाएँ होंगी। जिसके लिए मुन्नू कभी राज़ी नहीं हुआ। शुक्र है, वह अभी भी बुर्का पहनती थी। वह अफसोस करता है कि एक समय पर उसने ही अपनी बीवी को बुर्का छोड़ने के लिए सताया था।

डॉ. प्रधान, मुन्नू और उसकी बीवी दोनों के काफी करीब थे, पर उन्होंने दोनों को कभी एक-साथ नहीं देखा था। वह मुन्नू से केवल दुकान पर ही बातचीत करती थी और हुमेरा उनसे मुलाक़ात करने उनके घर चली जाती थी। मुन्नू सोचने लगा कि शायद हुमेरा, नए ज़माने की लड़की बनने के नुस्खे उनसे लेती होगी। मुन्नू के साथ वह व्यापार और दुकान की चर्चा करती और श्रद्धांजली के बारे में पूछती थी।

छह महीने पहले, जब दोनों डॉ. प्रधान और श्रद्धांजली मुन्नू की दुकान पर थे, तब डॉ. प्रधान ने श्रद्धांजली को काउंटर के पीछे से सिगरेट चुराते हुए देख लिया था। श्रद्धांजली को लग रहा था कि उसने बड़ी सावधानी से चोरी की है। उस दिन मकान मालकिन ने बड़े चश्मे लगा रखे थे, जिससे पता नहीं चल रहा था कि वह देख कहाँ रही थी। जैसे ही श्रद्धांजली दुकान से गई, डॉ प्रधान की आँखें मुन्नू की आँखों से मिली और उनके किराएदार मुन्नू भईया टूट गए और उनके आगे सब कुछ कह दिया।

उसने बताया कि यह चोरियाँ लगभग दस सालों से चल रही हैं, तब से, जब वह अपने पिता की दुकान पर काम करता था। जब वह बच्ची थी, तब वह कभी-कभार सस्ती टॉफियाँ चुराती थी। कभी-कभी वह एक रुपए में दो टॉफी खरीदती आरै थोड़ी ही देर में लौटकर दूसरी किस्म की टॉफी बदलने आ जाती थी। वह फिर उस डब्बे को खोलती जिस डब्बे की वह मिठाई है, उसमें पुरानी टॉफ़ी डालती और दूसरे डब्बे से अलग किस्म की मिठाई उठाकर ले जाती थी। मुन्नू को यह तब पता चला - जब जान-पहचान के एक टैक्सी स्टैंड के ग्राहक का दाँत टूट गया। जो टॉफी वह लौटाती थी, वह असल में उस टॉफी के छिलके के अंदर कंकड़ डालकर देती थी। शुरु-शुरू में मुन्नू को यह छोटी-मोटी चोरियाँ, नादानी लगती थी।

पर समय के साथ यह चोरियाँ बढ़ती जा रही थी। श्रद्धांजली अब पचास पैसे की मिठाइयाँ नहीं चुराती, अब वह सीधे सिगरेट का पूरा पैकेट और चॉकलेट बार चुराती थी, वह भी महँगी वाली, जो कि बीस रूपए से अधिक मूल्य वाली होती थी। वह लगभग हर दिन आती थी और हर दिन चोरियाँ करती थी।

डॉ. प्रधान, उसकी बातों को बड़ी चिंता और असंतोष जताते हुए सुनती थी। उसके बाद से मुन्नू, श्रद्धांजली की चोरियों के बारे में उनको सब कुछ बताता था। उनके बीच एक खास संबंध बन गया था, जो कि श्रद्धांजली के बढ़ते हरकतों के कारण गहराता जा रहा था। मुन्नू बताता था कि श्रद्धांजली ने उस दिन या उससे एक दिन पहले क्या चोरी की थी और डॉ. प्रधान उसके नुक्सान का हिसाब लगाती थी। एक दिन उसे बड़ा नुकसान हुआ, उस दिन डॉ. प्रधान ने मुन्नू पर ज़ोर दिया कि वह श्रद्धांजली के माँ-बाप से ज़रूर बात करे, पर यह पानवाला इस बात से सहमत नहीं था, उसके हिसाब से इससे किसी का कोई भला न होगा।

"मैं एक मुसलमान हूँ और यहाँ एक बहुत ही अच्छी ज़िन्दगी बिता रहा हूँ," उसने दुहराते हुए तर्क दिया। "मैं दूसरे दुकानदारों के मुकाबले ज़्यादा पैसे कमाता हूँ और मुझ पर सब विश्वास करते हैं। मैं

ऐसा कुछ भी नहीं सोच सकता, जिससे यह सब कुछ ख़त्म हो जाए। सोए कुत्ते को, सोए रहने देना चाहिए।"

"जल्द ही यहाँ अब वह सेंट चुराने लगेगी।" खुले हुए छोटे से ताक पर रहस्यमय तरीके से लिखे हुए केलविन क्लेन और डोल्चे गबाना के सेंट के बोतल की ओर उँगली दिखाते हुए डॉ. प्रधान ने कहा। मूल रास्ते के किसी भी दुकान में इतने व्यवस्थित तरीके से कोई भी सामान नहीं रखा था।

जल्द ही, वहीं हुआ। जब कभी उसके दोस्तों का जन्मदिन होता था, श्रद्धांजली दुकान पर आ पहुँचती। मुन्नू को नमस्ते करते हुए मैगी माँगती, फिर बड़ी जिज्ञासा से दुकान में आए नए सामान की खबर लेती और इस तरह वह छोटी-मोटी बातें करते हुए नए सामान को देखने का ढोंग कर, दराज़ के शीशे खोल लेती थी। जब तक मुन्नू मैगी के पेकेट की ओर बढ़ता था, तब तक वह सेंट की बोतल को अपने पर्स में डाल लेती थी। आजकल उसने पर्स लेना शुरू कर दिया था।

मुन्नू दुकान के सामानों की विस्तृत सूची नहीं रखता था। पर उसे इतना मालूम था कि कोलोन के बोतल कितने थे। सबसे ज़्यादा मुनाफा उसे कोलोन से ही होता है, लेकिन शुरूआत में इसके लिए काफी खर्च करना पड़ता है। दुकान से श्रद्धांजली के जाते ही बीस बोतले घटकर उन्नीस, कभी अठ्ठारह हो जाता था। इसका मूल्य पाँच चॉकलेट बार की कीमत को मिलाने से भी महँगा होगा, हर महीने का मुनाफा घटता चला जा रहा था।

"आज सेंट की तीन बोतलें गायब हो गई," एक शाम मुन्नू ने डॉ. प्रधान से कहा।

"हाँ, कल उसकी माँ का जन्मदिन है," डॉ. प्रधान ने कहा। "मुझे लगता है, वहीं तोफा होगा।"

"ओ! आप लोग इस उम्र में भी जन्मदिन मनाते हैं, मेम साहब?"

"इस उम्र में? पानवाले, तुम्हारा मतलब क्या है? बेशक, हम नहीं मनाते। हम सिर्फ दोपहर का भोजन करते हैं या बातचीत करते हैं।"

"लेकिन वही तो मनाना है, है न?" वह हँसता है।

"तुम्हारी बेटी जब एक साल की हो जाएगी, तब शायद तुम भी अपनी बेटी के लिए बड़ी धूमधाम से उसका जन्मदिन मनाओगे।"

"देखिए, हम मुसलमान हैं। हम लड़कियों का जन्मदिन नहीं मनाते।"

"अब तुम कालिंपोंग में रहते हो, मुन्नू, तुम्हें यहाँ के तौर-तरीके अपनाने होंगे। चाहे तुम बिहार से संबंध रखते हो या इस्लाम से, यह सभी भूल जाओ।"

“मैं सोच रहा हूँ, अब मुझे श्रद्धांजली की माँ से बात करनी चाहिए।” मुन्नू बातचीत के दौरान, विषय को बदलने में माहिर हो गया था। “अब बात हद से ज़्यादा बढ़ गई है।”

“मैं कह देती। सच में, अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो यह सब कह देती।”

“आप तो जानती हैं, मैं ऐसा नहीं कर सकता, मेमसाहब। उसके पिता बहुत ही प्रभावशाली व्यक्ति हैं। क्या पता वह अगर मुझे जेल में डाल दें?”

“अगर मेरी बेटी चोरी करती और तुम मेरे पास आकर मुझे बताते तो मुझे बहुत अच्छा लगता।” मकान मालकिन ने कहती है।

“पर यह जोखिम का काम है।”

“पानवाले! अगर कहने की हिम्मत नहीं तो, शिकायत भी मत लिया करो। वैसे भी तुम लाखों रूपए कमा रहे हो। अपने गाँव से किसी एक गरीब लड़के को काम पर रख लो।”

“नहीं मेमसाहब, बाजूवाला दुकानदार मेरे बहुत सारे ग्राहक चुरा रहा है। उसकी जगह को भी भाड़े में लेने के लिए मैं आपसे और साहब से बात करना चाहता था। पहले की तरह अब मुनाफा नहीं रहा। इसीलिए भी मैं काम पर किसी को नहीं रख सकता।”

“मुझसे शिकायत मत करो। साहब को अच्छा लगता है कि घर के दोनों ओर के दुकान के चलते बिल्डिंग की शोभा बढ़ती है। उनको लगता है कि वे आँखों को सुकुन देते है। काश मैं इसका मतलब समझ पाती। तुम्हारे पास कार्ड है या नहीं? जन्मदिन के कार्ड, सालगिरह के कार्ड? मिसेज़ गुरुंग को शायद उनके जन्मदिन पर मैं कार्ड ही दूँगी। यह एक अच्छा तोफा होगा।”

“हाँ, चोर की माँ को देने के लिए, बड़ा अच्छा तोफा होगा,” तीखे शब्दों में उसने कहा।

“मुन्नू, तुम इस तरीके से बात मत करो, मत भूलो कि वे लोग बहुत रईस और प्रभावी लोग हैं। तुम्हें पानवाला न मानकर, मैं तुमसे बात करती हूँ, तुम्हें हममें से एक मानती हूँ, इसका यह मतलब नहीं कि तुम मेरे दोस्तों के बारे में कुछ भी अनाब-शनाब बको। अपनी औकात मत भूलो। मैं उसके माँ-बाप से आराम से बात करूँगी। मैं यकीन के साथ कह सकती हूँ कि कोई भी माता-पिता जानना नहीं चाहेगा कि उसकी बेटी चोर है, लेकिन तुम इससे दूर रहो। बेचारी श्रीमती गुरूंग! उनकी बेटी की कहानियाँ न जाने तुमने कितने लोगों को सुनाया होगा। मुझे यकीन है, यह बात सुनने वाली अकेली मैं ही नहीं हूँ।”

“नहीं मेमसाहब, मैंने सिर्फ आपको बताया है,” मुन्नू ने कहा। “सच में, इसके बारे में किसी को पता नहीं है।”

“ओ बच्चु! तो क्या मुझे ख़ास महसूस करना चाहिए कि एक पानवाले ने अपने व्यापार के रहस्य मेरे सामने खोल दिए हैं।”

वह बड़े ही गंदे तरीके से ऊँची आवाज़ में ज़ोरों से हँसने लगी, सभी आने-जाने वाले उन्हें देखने लग गए और उन लोगों की आँखें एक साथ, एक मुसलमान पानवाले की मूर्खता पर अटक गई।

“मेमसाहब, अगर मैंने आपका अपमान किया है, तो मुझे माफ कर दीजिए,” मुन्नू ने कहा। “असल में, हम जैसे छोटे लोगों के साथ आप इतनी अच्छी तरह से बातें करती हैं। मुझे लगा मैं आपके साथ कुछ भी साझा कर सकता हूँ, यहाँ तक कि आपकी सहेली की बेटी के बारे में भी बातें कर सकता हूँ।”

“इसकी चिंता मत करो, मुन्नू।” डॉ. प्रधान ने दिलासा दिया। “शायद कल मैं श्रीमती गुरूंग को बस कुछ इशारे में कहूँगी। उन्हें बुरा तो लगेगा, मगर इस स्थिति को और लम्बा खींचना सही नहीं है। मैं कह दूँगी कि तुमने मुझसे कुछ नहीं कहा है, बल्कि ऐसा करते हुए मैंने खुद देखा है।”

यह एक बहुत ही उदार प्रस्ताव था। मुन्नू को इससे ज़्यादा और क्या चाहिए था। आखिरकार मुन्नू की पत्नी को आधुनिक महिला बनाने का ज़िम्मा भी उन्होंने ही लिया था। हुमेरा ने अब तक नौकरी करने के बारे में बकवास बंद नहीं की थी।

मुन्नु एक हाथ से अपने निचले पेट को खुजला रहा था और दूसरे हाथ से रेडियो का स्टेशन बदल रहा था, उसका हाथ धीरे से उसके गुप्तांग में जा ही रहा था कि परेशान श्रीमती गुरूंग उसके दुकान पर आकर धावा बोल देती है।

“कुत्ते कहीं के! तुमने मेरी बेटी को चोर कहा।” श्रीमती गुरूंग उस पर ज़ोर से उछल कर चढ़ने ही वाली थी। “तु देख, तेरे साथ अब क्या होगा।”

श्रीमती गुरुंग अभी भी मैक्सी पहने हुए थी। आज तक किसी ने उन्हें मैक्सी में बरामदे से आगे नहीं देखा था।

मुन्नू भईया घबरा हुआ था। उसने मुस्कुराने की कोशिश की मगर वह पान चबा रहा था - हरा, लाल और केसरी रंग की थूक मुँह में भरी थी, जिससे उसकी मुस्कान कुछ अजीब सी दिख रही थी।

“पान अभी थूक, मुसलमान कहीं के,” महिला चिल्लाने लगी, जिससे उसके लार की छिंटे उस शीशे की चार कोने वाले बक्से पर पड़ी, जहाँ से उसकी बेटी ने हज़ारों रूपए की मिठाई चुराई थी।

मुन्नू के आस-पास कचरे का डब्बा नहीं था, क्योंकि वह हमेशा पान का बचा-खुचा सब निगल जाता था। बिना सोचे एक पल में ही उसने पान को बाहर निकालकर अपने हथेली में रख लिया।

"बेवकूफ बंदर, देखो तुमने क्या किया। तुम लोग न कभी नहाते हो, टट्टी करने के बाद न हाथ धोते हो और अब तुमने पान को थूककर अपने हाथ में ही रख लिया। और मेरी बेटी को चोर कहते हो? मेरी बेटी ने क्या चुराया है, तेरा?"

तब तक बाहर भीड़ जमा हो गई थी। अधिकतर कुली थे, जो बस स्टैण्ड के आसपास रहते थे। ताश खेलकर, तम्बाकू चबाकर और बीड़ी पीकर वह अपनी धीमी गति से दिन बिताते थे। जहाँ उन्हें खलबली दिखती, वे झुंड में दौड़कर वहीं को लपक लेते थे।

"ओए, देखो, देखो, उस अच्छे मुसलमान की तो शामत आ गई," किसी ने कहा। "उसने वकील मेमसाहब की बेटी को रंडी कहा है।"

"क्या वह नहीं है?" हाथापाई के बीच किसी ने खिल्ली उड़ाई।

"अब देखो, सारे कुली यहीं आ गए," श्रीमती गुरूंग ने ऊँचे स्वर में कहा।

"तुम गधों को और कोई काम नहीं है क्या? इस असभ्य पानवाले की तरह ही तुम लोग भी मेरा अनादर करते हो। नेपाली होने के नाते तुम लोगों को कम-से-कम एक गोर्खा बहन की मदद करनी चाहिए। इस कुत्ते को कोई मारता क्यों नहीं? मैं ललकारती हूँ, इसे मारने की किसी में हिम्मत है। कलिंपोग की बेटी को एक मुसलमान बेइज्जत करता है और तुम सभी सिर्फ खड़े होकर तमाशा देखते रहो। तुम्हारी बेटी को एक बिहारी खुलेआम बेइज़्ज़त कर रहा है और कोई नेपाली की हिम्मत नहीं जो इसका बचाव करे। तुम सभी नेपाली कुलियों को वापस नेपाल भेज देना चाहिए।"

श्रीमती गुरूंग अब साँप की तरह फुँकार रही थी। मार पड़ने की संभावना से पहले तो मुन्नू गुस्से में आ गया था, पर जल्द ही वह रो पड़ा।

"अब तू रो, हिजड़े! गधे कहें के!," श्रीमती गुरूंग की गाली जारी ही थी कि उन्होंने थप्पड़ भी लगा दिया। "तेरे जैसे बुद्धू को यह थप्पड़ सिखा देगा कि बड़े लोगों के बारे में बातें करना चाहिए या नहीं।"

अपने मैक्सी को ढ़कने के लिए उसने शॉल को ऊपर खींचा और फिर आँधी की तरह बाहर चली गई।

शर्म और भय के कारण मुन्नू ने दुकान जल्द ही बंद कर दी और हुमेरा को पूरी बात सुनाई। उसने थप्पड़ पड़ने वाली बात केवल छुपा दी। यह उसके मर्दानगी पर चोट थी, लेकिन यह बात आज या कल सुन ही लेती, डॉ. प्रधान तो ज़रूर उसे बता देते।

“मुझे डर है कि कहीं दूसरे ग्राहकों को ऐसा न लगे कि मैं उनके बारे में भी अफवाहें फैलाता हूँ,” सोने से पहले उसने कहा। उसे डर था कि उसके ग्राहक नए दुकान में कहीं चले न जाए, जो कि सपने में भी वह सोच नहीं सकता था।

उसे रातभर नींद नहीं आई। वह चाहता था कि उसकी बेटी रो पड़े, ताकि आज की घटना से उसका ध्यान हट जाए। उसने कलर टीवी चालू की और रिमोट से बेसुध सा चैनल बदलने लगा।

आखिरकार सुबह उसकी बीवी जगी, उसने मुन्नू को बताया कि उसके डॉ. प्रधान के यहाँ नौकरी करने की अनुमति न देने के कारण, अब किसी और को नौकरी में रख लिया है। इस कारण अब वह दिनभर किसी भी प्रकार की नौकरी के लिए इधर-उधर पूछ रही है।

“कोई भी नौकरी?” मुन्नू ने पूछा।

उसने सर हिलाया।

तभी मुन्नू के दिमाग में एक बात आई।

उत्साहित होकर उसने फटाफट कपड़े पहने और सीढ़ियों से दौड़कर श्रीमती गुरूंग के घर गया। उसने दोनों श्रीमान एवं श्रीमती गुरूंग से माफी माँगी और कहा कि शायद यह चोरियाँ उसकी बीवी कर रही थी।

“अपनी बीवी पर इलजाम मत लगाओ,” कल की गुस्सेदार श्रीमती गुरूंग आज शांति से कहने लगी। “अपने ही दुकान से सामान लेना चोरी नहीं कहलाती।”

“डॉ. प्रधान को छोड़कर और किसी से मैंने इस बारे में बात नहीं की है,” मुन्नू सच कह रहा था।

वह एक बातूनी औरत है, मुन्नू,” श्रीमती गुरूंग ने कहा। “अपनी बेटी के गुज़र जाने के बाद वह अपने जीवन में कुछ प्रयोजन की तलाश में रहती है। उसे नौटंकी बहुत पसंद है। इसलिए शायद मैं, तुम्हारे साथ इतनी बुरी तरह पेश आई।”

“आशा करता हूँ, श्रद्धांजली को पता न चले कि मैंने उस पर झूठा इल्ज़ाम लगाया था।”

“नहीं, मुन्नू वह नहीं जानती।”

खुशी के साथ, वह दौड़कर दुकान चला गया। अगले दिन, श्रद्धांजली अपने साथ एक छोटा-सा टेडी बीयर लेकर उसके दुकान आई। आज कल किशोरी लड़कियाँ इस तरह के टेडी बीयर अपने टी.शर्ट के बाजू में लगाती हैं।

“आज आपकी बेटी का जन्मदिन है, न?” नमस्ते करते हुए उसने मुन्नू से पूछा। “यह छुई-मुई, मैं उसके लिए लाई हूँ।”

“नमस्ते बईनी! आज से एक हफ्ते बाद उसका जन्मदिन है,” उसने कहा।

“उसके लिए मेरे पास एक छोटा सा तोफा है। वह कहाँ है? ओह, और क्यों न मैं एक वाई-वाई और एक मैगी ले लूँ? आपको पता है आज फिर से घर पर नौकर नहीं है। एक थैले में सब डाल दीजिए। सभी को लगता है, मैं बहुत खा रही हूँ। मैं नहीं चाहती कि मेरे बारे में लोग ज़्यादा बातें करें।”

उसकी नज़रें चारों ओर घूम रही थी, उसे इसका मतलब पता था, पर आज वह पूरी तरह तैयार था।

“तुम्हें अलबेली के लिए जन्मदिन का तोफा खरीदने की ज़रूरत नहीं है।” वह मुस्कुराया।

उसकी मुस्कान आँखों तक खींचती चली गई और आँखों के पास छोटी-छोटी झुर्रियाँ बन गई। उसकी आँखों में हल्की-सी चमक भी थी।

अपने प्रशिक्षण के दूसरे दिन के लिए उसकी बीवी किसी भी समय अब दुकान पर आने ही वाली थी। जिसने जीवन में कभी कैलकुलेटर इस्तेमाल नहीं किया था, उसने काफी जल्दी इसमें महारत हासिल कर ली थी। दो लोग दुकान में होने के कारण, अब पहले की तरह बहुत मेहनत करना नहीं पड़ता और काउन्टर में अब कोई-न-कोई ज़रूर रहता था। उसने आख़िरी बार हुमेरा को बुर्का छोड़ने के लिए मनाने का प्रयास किया, पर वह किसी भी कीमत पर उसे छोड़ना नहीं चाहती। वैसे, इसका यह मतलब नहीं है कि बुर्के के अंदर से दुनिया दिखती नहीं।

*****

एक पिता की अनुभूति

आलस्य भाव से सोफे पर अपने छोटे-छोटे पाँव फैलाए, सुप्रिया अपने पिता प्रबीन की गोद में बैठी थी। उसके हाथ में नोटबुक थी। वह नेपाली शब्दों को कागज़ की लकीरों के साथ सजाने में लगी थी। वह टीवी और तख़्त पर अपनी माँ द्वारा शोर गुल से बेफिक्र रहती है। वह माँ खुशबू के पढ़ने के आदेश पर कोई ध्यान नहीं देती है। सुप्रिया बीच-बीच में अपने पैरों को हिलाना बंद कर, टीवी की ओर देखते हुए प्रबीन से पूछती है कि वह जो देख रहे हैं वह मज़ेदार है क्या?

रात के खाने के बाद सुप्रिया और प्रबीन छत पर चले गए। वह दोनों संकीर्ण सीढ़ियों से गुज़रते हुए एक कमरे पर पहुँचे जो कौवे के घोंसले की तरह अस्थायी था, जिसे वे कौवे का घोंसला कहते थे। फ्रांसीसी अंदाज़ में बनी खिड़कियों वाला आधा-अधूरा कमरा, जिसकी फर्श अभी तक कच्ची ही थी और वहाँ बाँस की दो कुर्सियाँ भी रखी हुई थीं। वे अंधेरा छाने से पहले आधा घंटा गंगटोक की खूबसूरती का आनंद उठाते हैं।

प्रबीन ने भीड़ में चुपचाप चल रहे एक आलसी, भारी शरीर वाले व्यक्ति की ओर इशारा किया और कहा, “पंडित जी के पेट को जरा देखो। यह और भी बड़ा होता जा रहा हैं।”

पंडित जी ने सभी के अभिवादन का उत्तर दिया और थोड़ी देर हालचाल पूछने के लिए रुके।

हँसते हुए सुप्रिया ने कहा, “हाँ, वह काफ़ी मोटे हैं। वह ज़रूर बहुत सारे लड्डू खाते होंगे।”

“वह तो खाते हैं। कौन भला लड्डू से दूर रह सकता है? मैं खुद एक ही बार में पाँच लड्डू खा जाता हूँ।”

सुप्रिया ने कहा, “फिर तो आपको एक पंडित बन जाना चाहिए,” और फिर गंभीर होकर प्रबीन से पूछती है कि, “स्कूल से आते वक्त रास्ते में एक भिखारी मिलता है, वह पंडित क्यों नहीं बन जाता है? फिर उसे खाने के लिए भीख भी नहीं माँगनी पड़ेगी।”

“वास्तव में एक पंडित बनने के लिए हमारी तरह एक ब्राह्मण होना चाहिए। हर कोई पंडित नहीं बन सकता। वहाँ उस बूढ़े आदमी को देखो, वह एक ब्राह्मण है। देखो ज़रा, तीन मिनट से अपने पिछवाड़े को खुजला रहा है,” प्रबीन कहता है।

सुप्रिया अपने पिता के विचार को मुस्कुराते हुए स्वीकार तो कर लेती है, लेकिन बात को घुमाते हुए, वह पूछती है, “इसका मतलब है कि वह कंजूस है?”

प्रबीन प्रश्न करता है, "तुम्हारा मतलब क्या है?"

"क्या सभी ब्राह्मण कंजूस नहीं होते है?"

"तुम्हें क्या लगता है, हम लोग भी कंजूस हैं?"

"नहीं, मुझे नहीं लगता कि हम हैं, पर मेरी कक्षा में एक ब्राह्मण है और मेरे दोस्त कहते हैं कि वह कंजूस ब्राह्मण है। उसे वे 'लोभी बाहुन'[54] कहकर बुलाते हैं।"

"तुम्हारे सहपाठी केवल छह साल के हैं। इस तरह से बातें करना उन्हें शोभा नहीं देता।"

"लेकिन पूजा कंजूस है। पिछले हफ्ते ही मिस लामू ने उसे डाँटा था, क्योंकि उसने डेंका को थोड़ी देर के लिए भी इरेज़र इस्तेमाल करने नहीं दिया था।"

प्रबीन जानबूझकर तीखी आवाज़ में कहता है, "सभी लड़कियाँ बेवकूफ होती हैं, सुप्रिया।"

वह प्रतिरोध में जवाब देती है, "मैं बेवकूफ नहीं हूँ और न ही मिस लामू। मुआ हो सकती है, पर मेरे दोस्त नहीं और हम सभी लड़कियाँ हैं।"

"अब समझी, सभी लड़कियाँ मूर्ख नहीं होतीं। सभी लड़के ताकतवर नहीं होते। सभी ब्राह्मण कंजूस नहीं होते।"

"लेकिन मैं रमेश से ताकतवर हूँ, हालाँकि वह सात साल का है।"

"हर बूढ़ा आदमी सुस्त नहीं होता। सभी बंगाली बुद्धिमान नहीं होते और सभी ब्राह्मण कंजूस नहीं होते।"

सुप्रिया पूरी तरह आश्वस्त नहीं होती। "मेरे दोस्तों में से ब्राह्मण कौन है, बुआ[55]?"

"अवस्ति का उपनाम क्या है?"

"प्रधान। अविस्त प्रधान।"

"नहीं, वह ब्राह्मण नहीं है। वह राघव नेउपाने की बेटी है न, उसका नाम क्या है, वह ब्राह्मण है।"

"रिचा। लेकिन रिचा तो ईसाई है। वह तो गिरिजाघर जाती है। क्या ईसाई भी ब्राह्मण हो सकते हैं?"

---

54 नेपाली में ब्राह्मण के लिए बाहुन शब्द का प्रयोग होता है।

55 पिता

“जन्म तो उसका भी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। लेकिन उनके परिवार ने बीच में धर्म परिवर्तन कर लिया था।”

“ओह! अच्छा अगर मैं चाहूँ तो, मैं भी ईसाई धर्म अपना सकती हूँ?”

“हाँ, तुम कोई भी धर्म अपना सकती हो- ईसाई या मुसलमान भी, लेकिन तुम ऐसा क्यों करोगी? कोई भी ब्राह्मण नहीं बन सकता, जब तक वह ब्राह्मण के घर जन्म नहीं लेता।”

“क्या हम औरों के मुकाबले सबसे श्रेष्ठ हैं?”

“हाँ, हम सर्वश्रेष्ठ हैं। तुम्हें गर्व होना चाहिए कि तुम एक ब्राह्मण बनकर पैदा हुई हो।”

“कैसे कोई ब्राह्मण बनकर जन्म लेता है?”

“तुम्हारे माता-पिता ब्राह्मण होने चाहिए, उनके माता-पिता भी ब्राह्मण होने चाहिए और उनके दादा-दादी भी ब्राह्मण होने चाहिए और उनके परदादा-परदादी भी ब्राह्मण होने चाहिए।”

सुप्रिया ने ज़ोर से स्वेटर को अपने चारों ओर लपेट लिया। सालों से इस तरह की कड़ाके की ठंड अक्टूबर महीने में नहीं पड़ी थी।

“अगर अविस्त और मैं शादी करेंगे, तो क्या हमारे बच्चे ब्राह्मण हो जाएंगे?”

प्रबीन एक उपयुक्त जवाब सोचे, उससे पहले ही खुशबू ने नीचे से आवाज़ लगाई। सुप्रिया के सोने का वक्त हो गया था।

अगली सुबह, उठते ही सुप्रिया सीधे प्रबीन के कमरे की ओर गई और कुछ मिनटों के लिए अपने पिता से जाकर लिपट गई। ऐसा वह रोज़ स्कूल जाने के दिन करती है। किसी के उठने से पहले ही खुशबू अपने सुबह के लेक्चर्स के लिए निकल गई।

प्रबीन ने सुप्रिया से पूछा, “अच्छा, तो तुमने क्या सपना देखा?”

“मुझे नहीं पता,” सुप्रिया ने नींद भरी आवाज़ में अपनी मुस्कान को रोकने की कोशिश करते हुए कहा।

“भूतों का सपना देखा।”

“डरावने वाले या साड़ी पहनने वाले।”

“यह थोड़ी अलग थी। वह साड़ी पहनी हुई थी, पर उसका चेहरा डरावना था।”

“इसका मतलब वह एक मसख़री वाली थी, भूत नहीं या वह दोनों के मिश्रण वाली भूत थी।”

“उस भूत ने कहा कि वह आपको खा जाएगी।”

“तुमने उससे क्या कहा?”

“मैंने उससे कहा कि आप बूढ़े और अस्वस्थ हैं। मुआ[56] ज़्यादा रसदार है। वह उन्हें खा सकती है।”

“बदमाश। रुको, मैं तुम्हारी मुआ को बता दूँगा। अब उठ जाओ। तुम्हारे ब्रश करने का वक्त हो गया है।”

“आपकी तरह मुझे क्यों बिस्तर पर चाय नहीं मिलती?”

“क्योंकि सिर्फ बड़े लोग ही चाय पीते हैं।”

“लेकिन डोलमा के घर पर, जब उसने कहा कि वह शराब पीना चाहती है, तो उसके पिता ने कहा कि उसकी शराब पीने की उम्र नहीं हुई है, इसलिए उसे चाय ही पीना चाहिए।”

“शायद जल्द ही डोलमा की मूँछे निकल आएगी, जैसे कि तुम्हारे दोस्त...,” उसका नाम सोचने लग गया।

“रेशा। आपकी याददाश्त तो मुआ से भी बदतर है। हमारे परिवार में सबसे होशियार मैं ही हूँ।”

“हाँ, वहीं नाम है। क्या हम अब ब्रश करें?”

“मुझे लगता है कि रेशा एक लड़का है। उसके माता-पिता ज़रूर एक लड़की चाहते थे, तभी वे उसे लड़की की तरह कपड़े पहनाते हैं।”

“पर तुम्हें ऐसा क्यों लगा कि एक छह साल के लड़के के पास मूँछे है?” प्रबीन खड़ा हो गया और अपनी बेटी के कम्बल को ठीक करने लगा।

सुप्रिया ने कहा, “हाँ, मुझे कैसे पता चलेगा?” प्रबीन के पीछे-पीछे बाथरूम जाते हुए जहाँ उसने पहले ही सुप्रिया के ब्रश पर टूथपेस्ट निकालकर लगा रखा था।

“रमेश के सिवाय मैं किसी और लड़के के साथ नहीं खेलती और रमेश एक लड़की की तरह है। मैंने चुंगी[57] में उसे दो बार हराया है।”

दोनों बाप-बेटी हाथों-में-हाथ थामें एक किलोमीटर ऊपर की ओर ताशी नामग्याल एकेडेमी की तरफ चलने लगे। गहरी बातचीत में दोनों तल्लीन और आसपास की दुनिया से बेखबर होकर चल

---

[56] माँ

[57] रबड़ से बनी एक गेंद, जिसे पैरों से खेलते हैं ।

रहे थे। उनकी ओर देखकर राहगीर भी मुस्कुराने को मजबूर हो जाते और अपने संबंधों की कमियों को मन में विचारने लगते। प्रबीन अपने को संतुलित करते हुए, न चाहते हुए भी किसी के अभिवादन का उत्तर देता है। अभिवादन करने वाले को भी यह स्पष्ट हो जाता कि वह कुछ गंभीर वार्तालाप में बाधा डाल रहा है। पिता की ओर ऊपर देखकर सुप्रिया मुस्कुराते हुए बातें कर रही थी। साथ ही, अपने पिता की बात मग्न हो कर सुन रही थी। प्रबीन के कुछ कहने पर वह हँसने लगती। सुप्रिया के चुटकुलों पर वह और ज़ोर से हँसता। यह बहुत ही खूबसूरत दृश्य था। शहर के लोग उनके बातचीत के एक टुकड़े को सुनने के लिए शायद पैसे देने तक को तैयार हो जाते। प्रबीन लम्बा, गोरा, तोते जैसी नाक थी और सुप्रिया और भी ज़्यादा गोरी, हँसमुख थी। उसका दिव्य चेहरा ऐसा लगता था, मानो सीधे किसी बच्चों की तस्वीरों वाली किताब की सबसे उत्तम वाली तस्वीर हो।

सुप्रिया ने कहा, “लेकिन कल जो मिस लामू ने कुर्ता पहना था, वह गुलाबी रंग का था” हाल ही में उसके आगे के दाँत टूटे थे। “मैंने आपसे कहा था, वह हर गुरुवार गुलाबी रंग के कपड़े पहनती है।”

“लेकिन कल उनका जन्मदिन था, न?” प्रबीन बैग के भार को बाएँ से दाएँ कंधे की ओर खिसकाते हुए कहता है। “मुझे लगा कि वह अपने जन्मदिन वाला कुर्ता पहनेंगी।”

“हाँ, क्योंकि बड़े लोग अपने जन्मदिन पर नए कपड़े खरीदते हैं। जैसा कि आप और मुआ हमेशा करते है।” सुप्रिया हँसती है। “आप हमेशा नए कपड़े खरीदते हैं।”

“शायद हमें अब नए कपड़े खरीदने पड़ेंगे, मेरे पतलून को देखो। क्या तुम्हें एक छेद दिख रहा है?”

“क्या हम गरीब होते जा रहे हैं, बुआ?” वह गंभीर हो जाती है। “क्या इसीलिए आप नए कपड़े नहीं खरीदते?”

“नहीं, नहीं, तुम्हें याद नहीं, तुम्हें मैंने हमारे कई जायदाद के बारे में बताया था? किताब की दुकान, मुआ की नौकरी और नीचे रहने वाले कैयास[58] से मिलने वाला किराया। हम गरीब नहीं हैं।”

“आपने उन्हें कैयास कहा।” वह हँसती है। “गंदी बात, गंदी बात। ऐसा तो अनपढ़ लोग कहते हैं।”

“ओह, माफ करना, मुझे ऐसा कहना नहीं चाहिए था।”

“तो क्या हम अरबपति है?”

“नहीं, हम अरबपति नहीं हैं।”

---

[58] मारवाड़ी समुदाय के लिए अपमानजनक शब्द

“करोड़पति?”

“ज़रूरी नहीं।”

“लखपति? करोड़पति?”

“शायद।”

“हज़ारपति?” अब उसे बुरा लगने लगा था।

“मुमकिन है।”

“हाहा, हज़ारपति तो मैं भी हूँ। मेरे पास बैंक में आठ हजार नौ सौ रूपए हैं। जो कि लगभग दस हज़ार के करीब है। अगर मेरे पास दस हज़ार भी हो, तो फिर भी मैं लखपति नहीं हूँ?”

“नहीं, एक लाख के लिए तुम्हें और दस बारी दस हज़ार रुपए चाहिए।”

“दस? अच्छा। जो गणित स्कूल में सिखाते हैं, वे काफी आसान है। मेरे दोस्तों को पाँच, छह और सात अंकों का पहाड़ा भी नहीं आती।”

“और तुम्हें सब कुछ आता है, है न?”

“बिल्कुल, मैं दूसरों से ज़्यादा होशियार हूँ। मैं तो मुआ से भी ज़्यादा होशियार हूँ।”

“मुआ को कितना बुरा लगेगा, जब उन्हें पता चलेगा कि हम उनके बारे में बातें करते हैं?” प्रबीन ने गंभीरता से कहता है।

“लेकिन उन्हें दुःख नहीं होगा। जब तक मैं उन्हें उस दिन के बारे में बता न दूँ, जिस दिन मैं आपसे नाराज़ हुई थी।”

“क्यों तुम मुझ पर गुस्सा करोगी? मैंने ऐसा क्या कर दिया जिससे तुम्हें गुस्सा आया?”

“ओह, आप क्या जानो,” चिढ़ने का ढोंग करते हुए, सुप्रिया ने कहा।

जब वे ताशी नामग्याल एकेडेमी के गेट पर पहुँचे, वहाँ सुप्रिया की दो सहेलियाँ उसका इंतजार कर रही थी, सुप्रिया ने अपने पिता से बैग लिया और पिता के पैरों से चिपक गई। इस तरह के प्यार भरे नाटक दोनों को बहुत पसंद था। फिर सुप्रिया ने प्रबीन से पूछा कि क्या वह स्कूल खत्म होने के बाद उसे लेने आएँगे, प्रबीन का हमेशा एक सा जवाब होता था – मैं नहीं आऊँगा, लेकिन मुआ आएगी। उसके सहेलियों के पास जाने से पहले उसका चेहरे का रंग पीला पड़ जाता है। यह रोज़ का सामान्य दृश्य था।

उनके घर के पास ही एम. जी. मार्ग पर उनकी किताब की किराए की दुकान थी, जिससे काफी मुनाफा होता था। हालाँकि उसके पास दो योग्य और ईमानदार कर्मचारी थे, फिर भी उसे सुबह-सुबह काम पर आना अच्छा लगता था। दोपहर के खाने के समय, उसका एक नौकर उसके खाने के डब्बे और सुप्रिया के साथ दुकान पहुँच जाता है। पहले ही खुशबू ने बेटी को स्कूल से घर लाकर, खाना खिलाकर और झालर वाले कपड़े पहनाकर, नौकर के साथ दुकान भेज देती है। बाप-बेटी किताबें पढ़कर, तस्वीरों को देखकर और बातें करके अपना समय बिताते हैं। सुप्रिया एक मोटे विश्वकोश के ढ़ेर के ऊपर बैठकर अपने राजसभा में दुकान के दो सहायक या कोई भी ग्राहक जो दुकान में आते है, उनके साथ बातें करने लग जाती। अगर हिसाब-किताब में बहुत अधिक गणित की ज़रूरत नहीं पड़ती, तो प्रबीन ग्राहक को पैसे लौटाने का काम सुप्रिया को सौंप देता। और ग्राहक हमेशा सुप्रिया की मुस्कुराकर तारीफ़ करते थे। आज प्रबीन व्यस्त होने के कारण हेंस क्रिस्चियन एण्डरसन की कहानी पढ़कर सुना नहीं पाता, इसलिए सुप्रिया उस किताब को लेकर ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगती है, बीच-बीच में कभी अटककर, कभी रूककर पढ़ती और फिर अपने साहस के बलबूते पर ग्राहकों से बात करती है, जिसमें वह दिन-ब-दिन में बेहतर होती जा रही थी।

*

आखिरकार खुशबू बैठक वाले कमरे में आती है। प्रबीन को ऐसा लगा मानो सुप्रिया के कमरे से बाहर आने में खुशबू ने घंटे लगा दिए हों। प्रबीन उससे पूछता है, “वह अभी कैसी है?”

“सो रही है।” खुशबू थकी हुई दिख रही थी।

“मैंने सोचा भी न था कि वह इतनी जल्दी बड़ी हो जाएगी।” अपने आपको संभालना उसके लिए मुश्किल हो रहा था।

“वह एक लड़की है। ऐसा हर लड़की के साथ होता है।”

“पर कल ही तो वह मेरे साथ गले में हाथ डाले बैठी थी। वह कितनी छोटी-सी थी।”

“अब वह एक युवती हो गई है। हम दोनों को अब इसकी आदत डाल लेनी चाहिए।”

“क्या तुम्हें लगा था कि यह इतनी जल्दी हो जाएगा?” उसकी आँखें भर आई।

“जी, अब वह बारह साल की हो गई है। मैं थोड़ा परेशान थी कि उसका अभी तक नहीं हुआ। क्या आपकी माँ की शादी चौदह वर्ष की उम्र में नहीं हो गई थी?”

“तुम्हें, मुझे आगाह करना चाहिए था।” हर शब्द वह रूक-रूककर बोल रहा था।

“मैंने सोचा कि आपको पहले से पता है। आपने ही मुझे बताया कि सुबह-सुबह आपके बिस्तर पर उसने आना बंद कर दिया है और टीवी देखते समय आप ही जितना हो सके उससे दूर बैठते हैं। मुझे लगा आपको पता है।”

लेकिन प्रबीन को भनक तक नहीं थी। अगर उसे इस बारे में ज्ञान होता तो वह किसी भी तरीके से इस परिस्थिति के लिए तैयार रहता। उसने अपनी बेटी की बढ़ती उम्र की ओर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया था, उसे ऐसी उम्मीद नहीं थी कि यह बात उस पर इस तरह से असर करेगा। उसे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था कि एक बिल्कुल सामान्य जैविक प्रक्रिया को उसने इस तरह से अपने पर कैसे हावी होने दिया।

सुप्रिया सुबह उठते ही सीधे अपने पिता के बिस्तर पर उछलकर उसके पास लेट जाती थी, यह सामान्य दिनचर्या एक साल पहले ही रूक गया था और अब उनके रिश्ते की एक नई पहलू की घोषणा कर रही थी। गले मिलना, चुम्बन और जो आसानी से होने वाले शारीरिक हाव-भाव थे, वह अब *हाई-फाइव, थम्ब्सअप* और थपकी देने तक सीमित हो गया था और प्रबीन ने इस बदलाव पर ध्यान तक नहीं दिया था।

अपने मन को सांत्वना देने के लिए वह घर के छत पर चला जाता है और मिट्टी के गमलों में रखे फूलों को निहारने लगाता है। ओर्किड और अज़ेलिया अप्रैल महीने के चलते पूरी तरह खिला हुआ था और कौवे के घांसले की तरह दिखने वाले कमरे में हाल ही मार्बल और गलीचा लगाया था। आज से पहले उसे यह कमरा कभी नखलिस्तान न लगा था। चौथे मंजिल से उसने नीचे देखा, नीचे के तीन मंजिल रास्ते के स्तर पर था, अपनी तरक्की के बारे में सोचकर उसके मन को थोड़ी शांति मिली। सुप्रिया के नामकरण में ली गई तस्वीर जब उसने देखा तब वह एक पल की खुशी में खो गया और साथ ही तभी वास्तविकता का भी ज्ञान भी हो गया। उसे अहसास हुआ कि पिछले कुछ हफ्तों से उसने अपनी बेटी से एक शब्द तक नहीं कहा था।

कुछ दिनों के बाद सुप्रिया ने अपनी माँ से अवस्ति के घर पर एक रात के लिए रुकने की अनुमति लेती है। देर रात खुशबू ने यह जानकारी प्रबीन को दी, तब तक प्रबीन को इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उसने अपनी व्याकुलता और दुःख को व्यक्त किया कि इस बात के लिए सुप्रिया ने उससे अनुमति क्यों नहीं ली। खुशबू ने समझाया कि शायद इसलिए उससे पूछा क्योंकि माँ-बेटी एक ही समय पर घर पहुँचे थे, जबकि प्रबीन दुकान पर था। तर्क को सुनकर प्रबीन को थोड़ा दिलासा मिला।

अगली सुबह, प्रबीन ने देखा सुप्रिया खाने की टेबल पर फेमिना पत्रिका में आँखें गड़ाए पढ़ने में व्यस्त थी। इन दिनों सुबह-सुबह वे एक-दूसरे से बड़ी मुश्किल से मिलते थे। सुप्रिया बहुत देर से उठती, चाहे जितनी भी ठंड क्यों न हो, नहाती ज़रूर थी और बिना नाश्ते किए निकल जाती थी। दोनों ने एक-

साथ स्कूल जाना बंद कर दिया था। वह जितना उसे याद करता, उतना ही वह सुप्रिया की बढ़ती उम्र को दोष देता। हालाँकि यह परिवर्तन की शुरूआत थी, बाद में तो कई परिवर्तन आए।

"स्लीपऑवर?"[59] उसने पूछा।

"हाँ।" सुप्रिया ने ऊपर देखने तक का कष्ट नहीं किया।

"तुमने मुझसे क्यों नहीं पूछा?"

"मुझे देर हो जाएगी।" सुप्रिया ने अपना बैग उठाया और उसकी तरफ देखकर भी अनदेखा किया।

"हमें बात करने की ज़रूरत है।"

"मुझे देर हो गई है।" वह दरवाज़े की ओर बढ़ी।

"इन दिनों हम बिल्कुल भी बातें नहीं करते है। मैंने ही तुम्हारी माँ को तुम्हारी स्विमिंग को जारी रखने के लिए राज़ी किया था। उसके लिए तुमने, मुझे एक बार भी धन्यवाद तक नहीं कहा।"

"मैं आपके लिए एक कार्ड और एक केक बनाऊँगी और पड़ोसियों को यह बताऊँगी कि आप दुनिया के सबसे अच्छे पिता हैं।"

"तुम्हारी आवाज़ ऊँची होती जा रही है। नीचे के किराएदारों को भी सुनाई पड़ रही होगी।"

सुप्रिया ने गुस्से में कहा, "मैं फुसफुसाकर बातें नहीं कर सकती। जब आप मुझे स्कूल जाने में देर करवा रहे हो।"

"इसके बारे में हम बाद में बातें करेंगे," प्रबीन ने कहा, उसकी आवाज़ अचानक नरम हो गई। "मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा। तुम्हारे स्कूल से लौटने से पहले ही, मैं दुकान से लौट आउँगा।"

सुप्रिया ने कोई भावुकता नहीं दिखाई। एक ही पल में वह निकल गई।

उस दिन प्रबीन किताब की दुकान नहीं गया। सुप्रिया के लौटने पर वह घर पर ही होना चाहता था। खुशबू कॉलेज से लौट आई और महसूस किया कि प्रबीन की मनोदशा अच्छी नहीं है, उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ बाज़ार जाना चाहते हैं? प्रबीन ने जवाब दिया कि,"वह अकेले रहना चाहता है।"

सुप्रिया के इंतज़ार में जितना सोचा था, उससे कई ज़्यादा समय लगा। आखिरकार चार बजे के करीब वह घर पहुँची, उसका शर्ट अस्त-व्यस्त था और मोज़े लुढ़के हुए थे।

---

[59] रात को किसी दोस्त के घर ठहरना।

“तुम देर से आई हो,” जैसे ही वह अंदर आई, प्रबीन ने कहा।

सुप्रिया मुस्कुराने का नाटक करती है।

“मैंने तुमसे कहा था, मैं इंतजार करूँगा।”

“वाह! इतना सम्मान। घर के मुखिया मेरे आने का इंतज़ार कर रहे थे।”

“तुमने इस लिहाज़ में बातें करना कहाँ से सीखा, बेटा?” प्रबीन को अपनी ऊँची आवाज़ का ज्ञान हो गया था। उसे सुधारने के लिए और अधिक विनम्रता से कहता है।

“जब आप दुकान में होते थे,” सुप्रिया ने कहा। और आगे कंपन स्वर में कहती है, “आप जानते हैं, जब मुझे आपकी ज़रूरत थी, आप नहीं थे। आप एक ढोंगी है।”

प्रबीन ख़ामोश था। वह जानना चाहता था कि आखिर समस्या क्या है?

“मैंने क्या किया है, सुप्रिया?” प्रबीन विनम्र भरे दुःखी आँखों से उसकी आँखों की ओर देखकर पूछता है। “हम दोनों यहाँ अजनबी बन गए हैं। मैंने कई दिनों से तुमसे बात तक नहीं की है। तुम्हारे स्कूल, गोपनीय रहस्य और तुम्हारी ज़िन्दगी के बारे में हम कितनी बातें करते थे, उसका क्या हुआ? तुम इन दिनों मुझे कुछ नहीं बताती।”

“और आप मुझे क्या बताते हैं, बुआ? आजकल तो आप मेरे साथ एक सोफे पर भी नहीं बैठते।”

प्रबीन को समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे वह इन आरोपों का सामना करे। कुछ कहने के लिए उसने सोचा, पर उसकी बेटी ने उसे कहने का मौका नहीं दिया।

“जब से मुझे मासिक हुआ है, आप एक पूरी तरह अलग इंसान बन गए हैं। आप लोगों ने मुझे एक कमरे में सात दिन तक बंद रखा। मुआ ने मुझसे कहा कि मैं सूरज नहीं देख सकती, न ही किसी मर्द का चेहरा। वहाँ मैं उन दिनों रोती रही। मैं रोई क्योंकि मैं अपने आपको दोषी समझती थी, क्योंकि मुझे लगा, मैंने कोई पाप किया है। अपने आप को आईने में देखकर, आपने आप से नफरत करने लगी थी। मैंने सच में सोचा कि मैं एक शैतान हूँ या मैंने कुछ बुरा किया है। जितना मेरे शरीर में दर्द था, उतना ही मेरे मन में भी दर्द था। जब मैंने चुपचाप जाकर अपनी मिस को इस बारे में बताया, उन्होंने कहा कि मैं शायद उदास हूँ। सात दिन एक ही कमरे में, बुआ।”

यह उसकी बारह साल की लड़की नहीं बोल रही थी। यह उसकी आवाज़ नहीं थी। उसकी छोटी लड़की, अब एक सयानी महिला की तरह बातें करने लगी थी, जिसका अपना दृष्टिकोण है और उसे यह एहसास हो गया है कि महिला का स्थान इस समाज में दूसरे दर्जे का है। लेकिन प्रबीन ने उसे

ऐसे वातावरण में बड़ा नहीं किया था। मर्द हो या औरत, लड़की हो या लड़का, वे सभी समान हैं और यही सीख उसने सुप्रिया को दी थी। वह धीरे से उससे कहने ही वाला था कि मुआ तो उसके साथ थी ही, लेकिन सुप्रिया का चिल्लाना अब सिसकियों में बदल गया था और सुप्रिया ने उसे बोलने का कोई अवसर नहीं दिया।

"मुआ ने मुझे इसके बारे में सबकुछ बताया है - मासिक से संबंधित सब कुछ।" वह शोर लौट आया। "मैं इसके बारे में जानती थी। मुझे पहले से ही इसके बारे में पता था। मेरे उम्र के बच्चों में से मैं सबसे होशियार हूँ। पूजा ने छह महीने तक अपने माता-पिता से छुपाए रखा था। मुझे भी आप लोगों से छुपाए रखना चाहिए था। अगर मुझे पता होता कि मुझे अपने ही कमरे में बंदी बनाकर रख दिया जाएगा, तो मुआ को कभी नहीं बताती। मुझे लगा कम-से-कम आप तो मुझे समझेंगे। मैंने सोचा आप मेरी मदद करेंगे। लेकिन आपने तो मुँह ही फेर लिया। आपमें और दूसरे लोगों में कोई अंतर नहीं है। मैं कितनी बेवकूफ थी, मैं आशा करती रही कि एक दिन आप मेरे पास आऐंगे और मुझसे कहेंगे कि मैं हमेशा आपकी छोटी-सी गुड़िया ही रहूँगी।"

"मासिक धर्म होना कोई गलत बात नहीं है, सुप्रिया। सभी महिला को इससे गुज़रना ही पड़ता है।"

"मैं जानती हूँ, बुद्धू," सुप्रिया ज़ोर से चिल्लाते हुए, सिसकियाँ भरते हुए कहती है। "मुझे पता है, यह सभी को होता है। लेकिन आपको कम-से-कम मुझसे बातें करने के लिए एक बार मेरे कमरे में आना चाहिए था। आपने अभी जो कहा वह आप मुझसे तब भी कह सकते थे। आप इस पर हँस सकते थे। ऐसा कहकर आप मेरा मन शांत कर सकते थे। मैं वहाँ सोच रही थी, यही संसार का अंत है और आपको तो इन सब की परवाह ही नहीं थी। आपने मेरे कमरे में नमस्ते तक कहने के लिए सिर तक डाला नहीं और पूरे वक्त मैं यही सोचती रही कि आप मुझसे कहेंगे कि मुआ मूर्ख है, फिर हम छत पर जाते और इस पर हम खुल कर हँसते। जब आपने भी मुझसे जानवर-सा व्यवहार किया - नहीं, जानवर से भी बदतर व्यवहार किया, तब मैंने सचमुच सोच लिया कि मैंने ज़रूर कोई गलती की है। मैं अपने आप से नफरत करने लगी थी, आप से भी नफरत करने लगी थी और ज़िन्दगी से भी नफरत करने लगी थी। मेरे पेट में इतना दर्द होता था, पता भी न चलता कि यह दर्द आता कहाँ से है? एक ही पल में मुझे चक्कर आते थे और दूसरे ही पल में जकड़न महसूस होती थी। मैं आपसे नफरत करती हूँ।

सुप्रिया बहुत देर तक रोती रही। एक पल के लिए चुप हो जाती, फिर शायद एक हफ्ते तक बंद रहने का किस्सा याद आ जाता और रोना शुरू कर देती। प्रबीन उसके पास जाना चाहता था, उसे बाँहों में उठाना चाहता था और उसके बालों में हाथ फेरना चाहता था, लेकिन वह नहीं कर सका। वह भी रोना चाहता था, मगर वह जानता था कि उसे अपनी बेटी के ख़ातिर नहीं रोना चाहिए।

“मुझे माफ कर दो, सुप्रिया। काश मुझे पता होता कि तुम किस तकलीफ़ से गुज़र रही थी। देखो, आखिरकार मैं मर्द हूँ। मुझे इसके बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है। पर हाँ, मैं यह जानता हूँ कि ऐसा कोई बहाना नहीं चलेगा। सच में, मैं एक बेवकूफ था, जो यह समझ बैठा कि सात दिन उस कमरे में तुम ठीक रहोगी। मुझे सचमुच लगता है कि यह एक बकवास परम्परा है, पर मुआ सोचती है कि यह बहुत ज़रूरी है। अगर मुझे पता होता कि तुम्हें इतनी तकलीफ होगी तो मैं उन्हें कभी यह करने की इजाज़त नहीं देता। मुझे माफ कर दो, सुप्रिया मुझे बहुत दुख है, कृपया मुझे समझने की कोशिश करो।”

“बुआ।” वह सिसकियाँ भरती हुई अपने कमरे की ओर जाने लगी।

“हाँ?” उसने आशावादी होकर पूछा। वह उसकी ओर बढ़ा, चाहे कुछ भी हो जाए, वह अपनी बेटी को गले लगाकर रहेगा। गले लगाए हुए काफी लम्बा समय हो गया था।

“इसके लिए मैं आपको कभी माफ नहीं करूँगी,” कंपन भारी आवाज़ में कहकर उसने दरवाज़ा बंद कर दिया।

*

खुशबू को यह फैसला अच्छा नहीं लगा और उसने इसे छिपाने की कोशिश भी नहीं की।

“सौंदर्य प्रतियोगिता?” खुशबू ने आगे कहा। “लोग क्या कहेंगे? उससे बात करने की मैंने पूरी कोशिश की, पर मेरी सुने तो। शायद स्वीमिंग कॉस्ट्यूम राउंड भी होगा। यह तो बस एक क्षेत्रीय प्रतियोगिता है। क्षेत्रीय प्रतियोगिताएँ बहुत ही घटिया होती हैं। यह तो मिस इंण्डिया जैसे प्रतिष्ठित प्रतियोगिता के आसपास की भी नहीं हैं।”

“हमारी बेटी तो सुंदरी है, सुंदरी,” सौलीटेयर गेम के स्क्रीन से बिना नज़र हटाए प्रबीन ने कहा।

कुछ महीने पहले ही, कौवे के घोंसले जैसे दिखने वाले कमरे में कम्प्यूटर और इंटरनेट लगवाया था, खुशबू के बार-बार आग्रह करने के बावजूद भी कि इस कमरे को रीडिंग रूम बनाना बेहतर विकल्प है। इस पर प्रबीन ने तर्क दिया कि कम्प्यूटर पर काम करना और साथ ही इतनी ऊँचाई से शहर को देख पाना, ज़्यादा प्रेरणा देती है। जब खुशबू को लगा कि वह और किसी भी तरीके से मानने वाले नहीं हैं, तब उसने खुद को ही मना लिया। सुप्रिया की इस पर कोई राय नहीं थी क्योंकि वह कॉलेज के लिए पहले ही बाहर चली गई थी और उसके पास अपना लेपटॉप था।

“प्रतियोगिता में हिस्सा लेकर यह साबित करने की ज़रूरत नहीं।” खुशबू ने प्रतिवाद किया। “मेरे माता-पिता अनपढ़ हैं और तुम्हारी माँ भी। सोचो, वे लोग क्या कहेंगे, जब उनको पता लगेगा कि हमारी सुप्रिया आधी नंगी, स्विमसुट पहने इधर-उधर प्रदर्शन कर रही है।”

"हमें अभी पता भी नहीं है कि स्वीमिंग राउंड होगी भी या नहीं, खुशबू। और अगर होगी भी तो क्या हुआ? तुम्हें समय के साथ बदलना चाहिए। उसे करने दो जो करना है। शायद उसके लिए यही अच्छा हो। सोचो उसे इससे कितना बढ़ावा मिलेगा।"

"ज़ाहिर सी बात है, उसने आपको मना लिया है। आपको लगता है कि वह जो भी करती है, सब ठीक है। किसी दिन वह भाग जाएगी और तब भी आपको लगेगा वह भी ठीक है।"

"क्यों नहीं? अगर वह किसी से शादी करना चाहती है, तो हमें बता सकती है। वह भागेगी क्यों? तुम जानती हो, हम राई[60] नहीं हैं।"

"और अगर उसने किसी राई से शादी कर ली तो?"

"करने दो। समय बदल गया है, खुशबू। जिसे चाहती है, उसी से शादी करने दो।"

"मेरे परिवार में सभी ने ब्राह्मण से शादी की है, सिवाय एक के जिसने 'जईसी' से शादी की है। और हम अपनी बेटी को ब्राह्मण छोड़, किसी और से शादी करने नहीं दे सकते। तुम्हारी यह जाति समानता की सारी दिखावटी योजनाएँ हमारी बेटी पर लागू मत करो। यह कोई अनपढ़ औरत नहीं कह रही है। मैं कॉलेज में अंतरजातीय-विवाह के कारण पैदा होने वाली समस्याओं के बारे में पढ़ाती हूँ। मैंने यह समस्याएँ अपनी आँखों से देखी हैं। मतवाली[61] जात अपने अंगूठे को शराब में डालकर, अपने नए जन्में बच्चे के मुँह में रखकर उसे चूसने देते हैं। सोचो ज़रा, अगर यही आपके पोते के साथ हो तो।"

"भयानक," प्रबीन ने कहा। अपनी बीवी की बकबक से बचने के लिए उसे बस सोलिटेयर के लिए थोड़ा-सा ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत थी।

"आप कभी-भी मेरी बात गंभीरता से नहीं सुनते हैं। वह अठारह की हो गई है। हमारे परिवार में ज़्यादातर लड़कियों की शादी तेइस वर्ष के आसपास हो जाती है। हमें सुनिश्चित करना चाहिए कहीं वह किसी के प्यार के चक्कर में तो नहीं पड़ गई है।"

"अच्छा तो वह किसी लड़के के साथ संबध नहीं रख सकती, पर सिर्फ घूमफिर सकती है? क्या तुम यही कहना चाहती हो?"

"चुप कीजिए। आपने तो जनाई[62] का सम्मान करना छोड़ दिया है। इसका आप मज़ाक उड़ाते है, मानो यह पवित्र धागा ही न हो। क्या आपने ड्राइवर से नहीं कहा था कि आपने अब जनाई पहनना

---

[60] नेपाली आदिवासी समुदाय

[61] ब्राह्मणों द्वारा नेपाली आदिवासी समुदाय को कहते हैं।

[62] जनेऊ

छोड़ दिया है? कम-से-कम दूसरों के सामने प्रचार मत कीजिए। यह शर्म की बात है। अगर ब्राह्मणों ने पहनना बंद कर दिया तो छेत्री[63] भी बंद कर देंगे।"

"ठीक है, मैं कल जनाई पहन लूगाँ। और हाँ मुझे बुरा नहीं लगेगा अगर मेरी बेटी ब्राह्मण को छोड़ राई, तामाड़, लिम्बू, तिब्बती किसी से भी शादी करे, मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।"

"अच्छा! अपने नातियों के सूवर जैसे नाक देखने की आपकी इच्छा है।"

"कम-से-कम उनकी नाक तुम्हारी बाज़ की नाक की तरह सिर के ऊपर से लेकर तो शुरू नहीं होगी।"

आखिरकार जब खुशबू ने उसे अकेला छोड़ दिया, तब प्रबीन ने यह मन-ही-मन स्वीकार किया कि यह सच है कि उसे कोई परवाह नहीं, उसका होने वाला दामाद कौन-सी जाति से संबंध रखता है। उसे पता नहीं था कि कैसे उसके दोस्तों और भाईयों की शादी सफल हुई, लेकिन उसे यह भी पता था कि उसकी खुद की शादी असफल थी। वह अपनी पत्नी से न नफरत करता था और न ही प्यार। वह उस पीढ़ी से नाता रखता था, जहाँ प्यार और रोमांस के विषय पर खुलमखुल्ला बातें नहीं करते, हालाँकि उसे यकीन था कि सभी इसके बारे में सोचते ज़रूर होंगे। वह और उसकी पत्नी एक-दूसरे के बस आदि थे। जैसे कि कौवे के घोंसले वाले कमरे में रखी हुई बाँस की कुर्सी, जिस पर वह बैठा है, जो कि इस घर का एक हिस्सा है। वैसे ही उसकी पत्नी भी इस घर का एक हिस्सा है और उसकी पत्नी प्रबीन का एक अंग है। जब खुशबू को पीठ दर्द की समस्या होती है, तब प्रबीन संवेदनशील हो जाता है, लेकिन जब उनका बूढ़ा नौकर रात भर खाँसता है, तब उसके लिए भी वह संवेदनशील हो जाता है।

खुशबू और प्रबीन एक साथ नहीं सोते थे। खुशबू अपने पीठ के दर्द को कम करने के लिए फर्श पर गद्दा बिछाकर सोती थी और आत्मीयता उनके लिए अब एक अजीब विषय बन गया था। कभी-कभी प्रबीन सोचता कि अगर उसकी पत्नी का देहाँत हो जाए या उससे भी बुरा अगर उसने उसे छोड़ दिया तो उस पर क्या असर पड़ेगा और फिर निष्कर्ष निकलता - चाहें कुछ भी हो जाए, उसके जीवन में कोई ख़ास बदलाव नहीं आएगा। उसके सुबह उठने से पहले ही खुशबू कॉलेज के लिए निकल जाती थी और उसके लौटने तक प्रबीन दुकान पर दस घंटे का काम करके आता था। दोनों एक साथ समय ही नहीं बिताते थे। और यह उसे अच्छा लगता था, उसे यकीन था कि खुशबू को भी यह अच्छा लगता है। दोनों एक-साथ घर पर केवल रविवार और छुट्टियों में ही मिलते थे। जितना हो सके वे कम बातचीत करते थे और जितनी बातचीत होती थी, वह अपनी बेटी के विषय पर ही होती थी।

नीरस, जकड़ा हुआ और जिसमें घुटन महसूस होती हो, अगर यही अरेंज मैरिज है, तो वह अपनी बेटी के लिए कभी ऐसा नहीं चाहता। वह चाहता है कि जो जिंदगी वह खुद नहीं जी पाया, वह

---

[63] क्षत्रिय समुदाय

उसकी बेटी जिए, उसे ऐसा जीवनसाथी मिले, जो उसके तरह ही जीवन में नए अनुभव प्राप्त करने के लिए भूखा हो, जिसके साथ वह घूमे, दुनिया देखे और एक-दूसरे से भरपूर प्यार करे।

उसकी कल्पनाओं को फोन की घंटी ने बाधित कर दिया, वह सुप्रिया का फोन था।

“उन्होंने क्या कहा?” सुप्रिया ने पूछा।

“बहुत खुश नहीं थी।” उसने गुनगुनाते हुए कहा। “बहुत खुश नहीं थी।”

“मुझे पता था। लेकिन कहा क्या?”

“परिवार, स्वीमिंग कॉस्ट्यूम और लोग क्या कहेंगे।”

“स्वीमिंग कॉस्ट्यमू राउण्ड नहीं भी हो सकता है। उन्हें थोड़ी नौटंकी, तो करनी ही होती है। वह अभी कहाँ हैं?”

“पता नहीं। मैं ऊपरी मंजिल में हूँ।”

“क्या आप उन्हें आने के लिए राज़ी कर पाऐंगे?”

“तुम्हें उकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं।”

“और आप, क्या आप इन सबसे सहमत हैं?” उसकी आवाज़ बदल गई।

सुप्रिया के मन में चल रही आशंका को समझ कर, प्रबीन ने कहा। “बिल्कुल।”

“अच्छा! आपका जवाब कुछ ज़्यादा ही जल्दी आ गया। क्या आप इससे सच में सहमत हैं?”

“हाँ। यकीन करो, मैं सच में सहमत हूँ।”

“स्वीमवीयर लगाने पर भी?”

“मैं तो चाहता हूँ कि स्वीमवीयर न हो, मगर मुझे नहीं लगता यह कोई बड़ी समस्या है।”

“मुझे प्रतियोगिता में हिस्सा लेते हुए देखने आऐंगे?”

“मैं किसी भी कीमत पर देखने आऊँगा।”

“अगर मुआ न आए फिर भी आप आऐंगे?”

“चिंता मत करो, वह आ जाएगी।”

“सच कहूँ, अगर आप में से कोई भी एक यहाँ आ जाए, तो मुझे बहुत खुशी होगी। अगर दोनों आऐंगे तो फिर सोने पे सुहागा हो जाएगा।”

“वहाँ हम दोनों आऐंगे।”

“ठीक है, फिर जल्द ही मिलते हैं। अगर वह कुछ मज़ेदार या बुरी बात कहे तो मुझे एसएमएस कर दीजिए।”

“वह कहती है कि अगर मैं यूँ ही तुम्हारी इच्छानुसार अनुमति देता रहा, तो तुम किसी दिन भाग जाओगी।”

“मैं भला क्यों भागूँगी? जिसके साथ शादी करूँगी, उसे गर्व के साथ पूरे गंगटोक बाज़ार के सामने मार्च करवाते हुए, खुशी से घर लाऊँगी।”

“हू-ब-हू मैंने तुम्हारी माँ से यही कहा था। तुम उसे लाल बाज़ार से मार्च करवाती लाओगी?”

“साथ ही बत्तीस माईल भी। अच्छा तो मैं चलती हूँ, समय कम है। मैंने उनके बारे में जो भी पूछा, उनको मत बताना।”

“गुड नाईट।”

मुस्कुराते हुए उसने फोन रखा।

दो दिन बाद सुप्रिया का फोन आया, यह कहने के लिए कि आखिरकार वह प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं ले रही है। उसने कहा कि उसे इनमें से एक चुनना पड़ा - प्रतियोगिता के लिए अभ्यास करना या शैक्षणिक भ्रमण के लिए यूरोप जाना और उसने यूरोप जाना चुना, क्योंकि बचपन से ही यूरोप जाने का उसका सपना था। अपनी पत्नी की घूरती हुई नजरों पर ज़्यादा ध्यान न देते हुए, प्रबीन ने सुप्रिया से कहा कि वह यूरोप किसी और समय चली जाती, लेकिन सुप्रिया ने कहा वह और इंतजार नहीं कर सकती, लेकिन वह अगले साल या कभी भी प्रतियोगिता में हिस्सा ले सकती है।

“मुआ से कहना मैंने प्रतियोगिता में इसलिए हिस्सा नहीं लिया क्योंकि इसमें स्वीमवीयर पहनना ज़रूरी था,” सुप्रिया ने कहा। “आप जानते हैं, मैं अपने परिवार के साथ ऐसा कैसे कर सकती हूँ? परिवार की इज्ज़त मिट्टी में मिल जाएगी।”

“मैं बता दूँगा। वह यहीं है, बात करो।”

उसने फोन खुशबू को दे दिया।

"अच्छा, अच्छा, अच्छा," विजयी होने के भाव में खुशबू फ़ोन पर बातें करने लगी। "बहुत, बहुत धन्यवाद। अच्छा हुआ। हाँ, मुझे पता है। कोई अब तुम्हारे बारे में बातें नहीं कर सकता। अब मोटापे की चिंता किए बिना तुम जितना चाहे खा सकती हो। यूरोप? खर्चा कितना होगा? अच्छा, अच्छा, अच्छा, तुम्हारे जमा किए हुए पैसे? नहीं, नहीं, एक बार में बुआ से पूछती हूँ, हम तुम्हारा खर्चा उठा सकेंगे या नहीं। तुम्हें वह पैसे छूने की ज़रूरत नहीं, जिसे तुमने चार साल की उम्र से जमा किया है। ठीक है। बाय।"

खुशबू ने फोन का रिसीवर वापस रख दिया।

"शायद उसका प्रतियोगिता में चुनाव हुआ ही नहीं।" वह शरारत से मुस्कुराई। "उसे लगता है कि मैं बेवकूफ हूँ - मानों उसके कहने से मैं मान जाऊँगी कि उसने मेरे लिए हिस्सा नहीं लिया। यात्रा का कितना अच्छा बहाना है। इसके बारे में किसी ने उससे एक सवाल तक नहीं किया।"

"लेकिन उसने कहा कि इसके लिए वह खुद पैसे देगी।" प्रबीन ने अपनी बेटी के बचाव में कहा।

"क्या आप उसे ऐसा करने देते?" खिड़की के पर्दों पर मक्खी इधर-उधर मंडरा रही थी, उसे पकड़ने की पूरी कोशिश करते हुए, खुशबू ने कहा।

"नहीं, बिल्कुल नहीं," प्रबीन ने चिढ़कर कहा। "जैसा कि तुमने कहा है, वह चार साल की उम्र से ही पैसा जमा कर रही है।"

"उसे पता था कि हम यही कहेंगे।" उसने प्रबीन को संदेह भरी नज़र से देखते हुए कहा। फिर उठकर उसने मक्खी पकड़ी और सीधे बालकनी में जाकर उसे उड़ा दिया।

न चाहते हुए भी उसकी पत्नी और खिड़की में जो मक्खी थी, उनकी समानताओं पर उसका ध्यान गया। जिस तरह मक्खी बाहर आना-जाना कर रही थी, बिल्कुल उसी तरह उसकी पत्नी भी आना-जाना कर रही थी और दोनों पर ही उसने ध्यान नहीं दिया था। कई बार ऐसा भी हुआ, जब वह मक्खी से इतना चिढ़ जाता कि उसे वह कुचलने को ललचा जाता था। वैसे ही इस वक्त वह अपनी पत्नी का गला घोंटना चाहता है। अभी-अभी जो उसने मनगढ़ंत प्रतिमा बनाई थी, वह इस परिस्थिति के साथ मेल नहीं खा रहा था। क्योंकि, उसकी पत्नी ने मक्खी को चोट तक नहीं पहुँचाई थी और उसे अपनी पत्नी को चोट पहुँचाने का कोई तुक नहीं बनता। वह सोचती थी कि उसकी बेटी किसी चीज़ में अच्छी नहीं है। वह बेटी के लिए नकारात्मक सोच रखती थी। अगर यही उसकी ज़िदगी का लक्ष्य है, तो रहने दो, प्रबीन यह सोचते हुए दुकान की ओर चला जाता है।

*

चौबीस साल की उम्र में सुप्रिया ने पहली बार अपने प्रेमी को घर पर आमंत्रित किया। तीन साल से वे एक साथ थे, मगर सुप्रिया ने प्रबीन से पहले कह दिया था कि इस रिश्ते का कोई भविष्य नहीं है। इस वास्तविकता ने उसकी माँ के तनाव को दूर कर दिया।

“आबुई![64] वह एक प्रधान है,” सुप्रिया के फोन रखने के बाद खुशबू ने प्रबीन से कहा। “भगवान का शुक्र है, शादी का कोई इरादा नहीं है। पर उसे घर लाने की ज़रूरत क्या है? हम सभी से यही कहेंगे कि वह उसका राखी भाई है।”

प्रबीन विचार करता है कि अन्वेष प्रधान इतना बुरा लड़का नहीं था। वह बात अच्छी कर लेता था, दिखता भी खानदानी था, सुप्रिया से भी अच्छी तालीम हासील की थी। (सेंट पोल्स, दार्जिलिंग; बिशोप कॉटन, बंगलौर; सेंट स्टीफन, दिल्ली; जे.एन.यू., दिल्ली) और कुल मिलाकर वह एक प्रिय व्यक्तित्व वाला लड़का था। एक पल के लिए वह सोच में पड़ गया कि उसकी बेटी ने अन्वेष को शादी के योग्य क्यों नहीं समझा। यह जानने की इच्छा होते हुए भी यह सवाल वह नहीं कर पाया, अन्वेष से कुछ और ही सवाल कर बैठा।

“राजनीतिक विज्ञान में उपाधि लेकर आगे क्या करने का इरादा है, आशीष?” प्रबीन ने पूछा। खुशबू बहुत कम बोल रही थी। उसने कोई खास पकवान भी नहीं बनाए।

“नाम अन्वेष है, बुआ,” सुप्रिया ने नाम सही करते हुए उसके सर पर हल्के से थपथपाया और पुरानी यादों के बारे में बातें करने लग गए, बुआ की नाम भूलने की आदतें, उनसे जुड़ी छोटी-छोटी किस्सों पर बातें करने लग गए।

“राजनीति, अंकल,” बिना घबराए अन्वेष ने कहा। “मैं पहले से ही जी.जे.एम.[65] का सदस्य हूँ। मुझे बिमल गरुड़ का नेतृत्व अच्छा लगता है, आशा करता हूँ कि मैं एक दिन अगला बिमल गरुड़ बनूँ। सुभाष घिसींग ने दार्जिलिंग जिले के लिए कुछ नहीं किया। इतने सालों के बाद भी आज तक हमें एक राज्य की मान्यता प्राप्त नहीं हुई है। मैंने जसवंत सिंह के चुनाव अभियान में उनके साथ काम किया था और अब मैं समझ गया हूँ कि ज़मीनी स्तर पर काम कैसे होता है। मेरे विचार से वही एक ऐसा आदमी है, जो हमें इस नाजुक हालात से आज़ादी दिलाएगा।”

“लेकिन जसवंत सिंह को तो उसके ही पार्टी ने निष्कासित कर दिया था,” प्रबीन ने बीच में कहा। “उसे खुद नहीं मालूम कल क्या होने वाला है।”

---

[64] नेपाली विस्मयादी बोधक शब्द

[65] गोर्खा जनमुक्ति मोर्चा

"अंकल, वह कांग्रेस में शामिल होंगे और कांग्रेस आसानी से गोर्खालैंड को आज़ादी दिलाएगा। अब ज़्यादा देर नहीं, हमें कोलकाता की तानाशाही के नीचे रहने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। आप बस देखते जाईए।"

सभी ने रात का खाना साथ खाया और खुशबू के बिना ही कौवे के घोंसले वाले कमरे में चले गए। एक हफ्ते पहले ही, प्रबीन ने एक छोटा-सा बार[66] एक कोने में बनाया था। अपने लिए उसने एक स्थानीय ब्रांड की शराब डाली। अन्वेष और सुप्रिया को खुद लेने को कहा। अन्वेष ने अपने लिए एक गिलास में थोड़ी विस्की डाली और पानी से भर दिया। सुप्रिया ने लेने से मना कर दिया।

"अच्छा, तो तुम किस तरह की नौकरी करना चाहते हो, अन्वेष?" इस बार प्रबीन ने सही नाम लिया।

"राजनीति ही करना चाहता हूँ, अंकल। दार्जिलिंग गोर्खा हिल काउंसिल, एक दिन आज़ाद ज़रूर होगा, इस पर मैं खुद कार्यरत रहूँगा और मैं किसी राजनीतिक पद पर बैठकर इसकी सेवा जारी रखूँगा।"

"कहने का मतलब है, डी.जी.एच.सी.[67] को अगर किसी दिन एक राज्य का दर्ज़ा मिल जाएगा, तो तुम अपने आप को एक मंत्री के रूप में देखते हो, अन्वेष?" वह जानबूझकर उसे बेटा कहने से बच रहा था।

"जी अंकल। एक दिन मैं यहाँ का प्रधानमंत्री बनूँगा। हालाँकि आपकी बेटी को यह नामुमकिन लगता है। उसका मानना है कि मैं अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ।"

"क्या तुम्हें ऐसा लगता है, सुप्रिया?" किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु को बिना देखे प्रबीन ने पूछा।

"हाँ," सुप्रिया ने कहा। "और इसी कारण मैं तुमसे शादी नहीं करना चाहती, अन्वेष?"

"मुझे पाँच साल की समय दो, सुप्रिया। सिर्फ पाँच साल चाहिए।"

"नहीं, अन्वेष, मैंने तुम्हें दो साल पहले ही दिए थे और तुम्हारे पास न नौकरी है और न खुद का पैसा। तुम अभी-भी पैसे के लिए अपने माँ-बाप पर निर्भर हो। इस पर हम पहले भी बात कर चुके हैं।"

प्रबीन अपनी कुर्सी पर बेचैन हो रहा था, शराब के गिलास को इस हाथ से उस हाथ में फेर-बदल करने लगा। उसने पूछा अगर वह वहाँ से चला जाए?

---

[66] जहाँ शराब राखी जाती है।

[67] दार्जीलिंग गोर्खा हिल काउंसिल

“नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं बुआ, हम बस सामान्य बातों पर चर्चा कर रहे हैं,” सुप्रिया ने कहा। “हमें देखिए, हम अब भी मुस्कुरा रहे हैं।”

वह मुस्कुरा रही थी, लेकिन अन्वेष नहीं।

“मैं ऐसे आदमी से कभी शादी नहीं करूँगी, जो मुझसे कम पैसे कमाता हो,” सुप्रिया ने कहा।

“तुम मेरा अपमान कर रही हो, सुप्रिया।” आवारा कुत्तों के एक झुण्ड की आवाज़ ने अन्वेष की आवाज़ दबा दी। “मैं तुमसे कहता आया हूँ कि मुझे सिर्फ पाँच साल का समय दे दो, मैं अपने आप को साबित करके दिखाऊँगा।”

“अपने आप को साबित करने के लिए तुम्हें पाँच साल की ज़रूरत नहीं। अगर तुम्हारे पास एक नौकरी होती तो मुझे तुम्हारी राजनीतिक गुंडागिरी से कोई आपत्ति नहीं होती। जबकि तुम किसी कॉलेज में पढ़ा सकते हो और साथ ही युवाओं को जागरूक भी कर सकते हो। तुम्हें अगर कहीं नौकरी मिल जाती, तो कम-से-कम अपनी शिक्षा का तुम उपयोग तो कर सकते हो।”

प्रबीन नीचे जाने के लिए खड़ा हुआ ही था, साथ ही अन्वेष भी खड़ा हो गया।

“इसका मतलब है, मुझे यहाँ से जाना चाहिए?” अन्वेष ने पूछा।

“शायद,” सुप्रिया ने कहा। “गुडलक।”

“अंकल, डीनर के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद,” अन्वेष ने कहा। “नमस्ते।”

“गुडनाईट, अन्वेष।” प्रबीन ने कहा।

“मैं तुम्हें दरवाज़े तक छोड़ देती हूँ।” सुप्रिया रास्ता दिखाते हुए आगे गई।

प्रबीन को लगा कि वे कुछ देर नीचे बातें करेंगे, पर उसे अजीब लगा जब उसने सुप्रिया को तुरंत लौटते देखा।

“वाह,” प्रबीन ने टिप्पणी की।

“मुझे पता है,” उसने कहा। “अगर मैंने उसकी बेइज्जती न की होती, तो वह मुझे अकेला नहीं छोड़ता।”

प्रबीन मुस्कुराया। “अच्छा, तो तुमने इसीलिए उसे यहाँ बुलाया था?”

“हाँ, ऐसा कह सकते हैं। उसे पता था कि आप मेरे लिए क्या मायने रखते हैं और आपको प्रभावित करना ही, उसका लक्ष्य था। डी.जी.एच.सी. जैसे वाहियात बातों से तो आपको प्रभावित ज़रूर कर रहा था। पर यह सब पानी में मिल गया, जब मैंने पैसे और निर्भरता का मुद्दा छेड़ दिया।”

"वाह," प्रबीन ने कहा। "तुमसे क्या कहूँ, समझ नहीं आता।"

"मुझे पता है। आपके पास ज़्यादा कुछ कहने को है, नहीं।"

"तुम्हें लगता है, तुम्हारी उससे कभी भेंट होगी?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"वह काफी हिल गया था।"

"ज़रूर शराब के कारण। आपने देखा था, उसने कितना थोड़ा पानी मिलाया था।"

दार्जिलिंग के लोगों के बोलने का अंदाज़ मुझे बहुत अच्छा लगता है।" प्रबीन ने अनुमान लगाया कि परिवेश को हल्का बनाने की सुप्रिया कोशिश कर रही थी। "

"मुझे पता है। लोगों का कहना है कि सेंट पॉल में पढ़े हुए बच्चे दूसरों के साथ घुलमिल नहीं सकते और यह बात सोलह आने सच है।"

"वह तो काफी मिलनसार दिखा।"

"आज के इस भेंट के लिए उसने हज़ार बार अभ्यास किया था। आपको क्या लगता है, एक सफल व्यापार चलाने के लिए किताब और मुआ के लिए फूलों का गुलदस्ता लाने की तरकीब कहाँ से आई?"

"उसने मुआ को जब गुलदस्ता दिया, तब उनका चेहरा देखा था?" वह सामान्य बातचीत में लौट आए थे।

"मेरी हँसी रोके नहीं रुक रही थी। सच कहूँ, तो मैंने थोड़ा अपमानित महसूस किया क्योंकि उसने मुझे व्यापार संचालन की किताब दी। शायद तुमने ही उससे कहा होगा कि मैं किताब की दुकान अच्छी तरह संभाल नहीं पाता।"

"हाँ। उसने कोशिश की। लेकिन, मेरा मानना है कि शहर के सबसे सफल किताब की दुकान के मालिक को ऐसा तोहफा देना मूर्खता है।"

"तुम्हे पता है, सभी कहते हैं कि गुड बुक्स से हमारी दुकान ज़्यादा सफल है," प्रबीन ने डींगे हाँकी। "हमें बस अब रचना बुक्स को पीछे छोड़ना बाकी है।"

"क्या आप हमेशा से दूसरों के मुकाबले सफल नहीं थे?" सुप्रिया ने चिढ़ाया। "किसके पास ज़्यादा पैसा है, कौन बड़ा है और कौन सबसे शक्तिशाली है, क्या वह सब झूठ था? मेरे बचपन के सवालों को सांत्वना दिलाने के लिए था?"

“मुझे ईमानदारी से बताओ, सुप्रिया। तुमने उसे सिर्फ इसलिए तो अस्वीकार नहीं किया होगा क्योंकि तुम्हें उसके राजनीति में सक्रीयता का विचार पसंद नहीं। ऐसा कुछ तो है अन्वेष में, जो किसी को भी यकीन दिला देगा कि वह आगे चलकर काफी बड़े काम करने वाला है। मैं लिखकर दूंगा कि वह एक बड़ा आदमी बनेगा। राजनीति में भागीदारी के साथ, उसमें कुछ और भी बात है।”

“हाँ, है ना,” सीधे देखते हुए सुप्रिया ने जवाब दिया।

“कोई और लड़का भी है?”

“नहीं, बिल्कुल भी नहीं।”

“तो फिर क्यों?”

“वह ब्राह्मण नहीं है, बुआ। एक ब्राह्मण बनने के लिए, आपके दोनों माता-पिता ब्राह्मण होने चाहिए, याद है? मैं चाहती हूँ, मेरे बच्चे ब्राह्मण हों।”

*

“हाँ, चुलहाई निम्तो[68] - बिल्कुल, सभी आमंत्रित है,” खुशबू ने फोन पर कहा। “हाँ, बच्चों को भी ले आईए। इन दिनों कहाँ *अरेंज मैरिज* में दावते खाने को मिलती हैं? बच्चों को जानना चाहिए कि उन्हें अपनी बिरादरी में शादी करनी चाहिए। यह उनके लिए एक अच्छा उदाहरण होगा। क्या? ऐह[69], नहीं, नहीं, यह पूरी तरह *अरेंज मैरिज* नहीं है। भला आज के ज़माने में कौन पूरी तरह *अरेंज मैरिज* करता है? लेकिन, हाँ वह उच्च कोटि का ब्राह्मण है और दोनों की कुंडलियाँ सौ प्रतिशत मिलती हैं। ज्योतिषी ने कहा है कि दस में से दस ग्रह मिलते हैं। यह तीस की है और वह इकतीस का। अति उत्तम। धन्यवाद, धन्यवाद। ठीक है, फिर मंगनी के दिन मुलाकात होगी। कपड़े कुछ ऐसा पहनेंगे, जो कि सादा भी हो और शिष्ट भी। हमें उन्हें दिखाना चाहिए कि लड़की वाले पढ़े-लिखे और उत्तम दर्जे के हैं। नमस्ते।”

सुप्रिया और प्रबीन निमंत्रण-पत्र पर अतिथियों के नाम लिख रहे थे। प्रबीन नेपाली में और सुप्रिया अंग्रेज़ी में। खुशबू जब दूल्हे के बारे में बखान करने लगी कि वह एक ब्राह्मण है और जन्मपत्री मिलती है। तब बाप-बेटी ने अविश्वास में सिर हिलाते हुए आँखें घुमाई। सुप्रिया ने अपनी जन्म-पत्री पंडित को पढ़ने की अनुमति नहीं दी थी, पर खुशबू को इसके बिना ही संतुष्ट होना पड़ा क्योंकि सुप्रिया ने उस पर सबसे बड़ा एहसान किया था, वह एक ब्राह्मण से शादी कर रही थी। इतने वर्षों में, प्रबीन ने अपनी पत्नी से कभी खुलासा नहीं किया कि उनकी बेटी की इच्छा ब्राह्मण लड़के से शादी करने की है। छह साल पहले कौवे के घोंसले वाले कमरे में अन्वेष को अस्वीकार करने के बाद प्रबीन को जो बात पता चली थी, प्रबीन ने खुशबू को वह बात कई बार बताने की कोशिश की, मगर कोई चीज़ उसे बताने

---

68 निमंत्रण

69 अच्छा

से रोक रही थी। वह अपने को छोटा महसूस कर रहा था, क्योंकि उसने ऐसी बात छुपाई जिससे छह साल की बेचैन भरी नींद से उसकी पत्नी को राहत मिल सकती थी, फिर भी उसने मुँह नहीं खोला। यह उसका एक छोटा-सा राज़ था और वह राज़ क्यों था, वह भी जानता था।

वह नहीं चाहता था कि उसकी पत्नी आराम से सोए, जबकि वह रातभर करवटें बदलता रहे। अगर यह बता देता कि सुप्रिया ब्राह्मण को छोड़, किसी और से विवाह नहीं करेगी, तो खुशबू की सभी परेशानियों का अंत हो जाता। लेकिन, उसकी परेशानियों का अंत नहीं होता। क्या होगा अगर सुप्रिया का सदाचार ब्राह्मण पति उसके साथ वैसा ही व्यवहार करे, जैसा प्रबीन अपनी पत्नी के साथ करता है? क्या होगा अगर उसकी तरह सुप्रिया के वैवाहिक जीवन में प्रेम शून्य हो? हाँ, उसने अपनी पत्नी को धोखा नहीं दिया और उसे यकीन है कि उसकी पत्नी ने भी उसे धोखा नहीं दिया होगा, लेकिन किसी ने भी एक-दूसरे को वह खुशी नहीं दी, जो एक जीवनसाथी दूसरे से उम्मीद रखता है। बिना एक-दूसरे से बातें किए हुए, कई दिन निकल जाते थे। वैवाहिक जीवन की पूरी खुशी उनकी बेटी में केंद्रित थी। और वह ऐसी ज़िन्दगी अपनी बेटी के लिए नहीं चाहता था। भगवान जानता है, वह नाकाम पति था, वह नहीं चाहता था कि सुप्रिया का शतप्रतिशत ब्राह्मण पति भी नाकाम हो। वह जानता था कि सुप्रिया के इच्छा को छुपाने में उसका कितना स्वार्थ छुपा है। हालाँकि यह अमानवीय है, लेकिन वह अकेले भुगतने की कल्पना भी नहीं कर सकता था।

"सारे नेपाली निमंत्रण पत्र तैयार हैं?" खुशबू ने पूछा।

"हाँ, तैयार हैं," प्रबीन ने कहा। "मैं अभी तक समझ नहीं पा रहा हूँ, आखिर इतने सारे लोगों को आमंत्रित करने की क्या ज़रूरत है।"

"मैंने पहले ही कहा था, मैं कोर्ट में शादी करना चाहती हूँ," सुप्रिया ने कहा। "शादी में खर्च होने वाले पैसे आप मुझे घर खरीदने के लिए दे सकती थी।"

"कैसी ऊटपटाँग बातें कर रही हो," खुशबू ने चिल्लाना शुरू किया। "हमारा जो कुछ भी है, वह सब कुछ तुम्हारा ही तो है। जब हम मरेंगे तो क्या सारे पैसे अपने साथ ले कर जाएगे? तुम्हारा पति कोई गरीब आदमी नहीं है। वह एक सरकारी उप-सचिव है। तुम्हें जल्द ही सरकारी नौकरी मिल जाएगी। तुम बहुत ही भाग्यशाली हो।"

"उसे सरकारी नौकरी नहीं चाहिए, खुशबू," सुप्रिया से चिकोटी खाते हुए प्रबीन ने कहा। वह महाभारत शुरू करने के इंतज़ार में था।

"अच्छा! आचार्य," खुशबू ने कहा। "सुप्रिया आचार्य।"

"वह अपना उपनाम बदलना नहीं चाहती," प्रबीन ने ताना कसा, ताकि वह भड़क जाए और झगड़े की उम्मीद में उसने फिर से उकसाया।

सुप्रिया की फोन की घंटी बजी, वह उसके मंगेतर साहिल का फोन था और फिर वह अपने कमरे में चली गई।

कुछ समय पहले ही सुप्रिया ने साहिल के बारे में प्रबीन को जानकारी दी थी।

एक दिन सुप्रिया ने अपने पिता को फोन किया और कहा कि वह अकेले में उसके साथ कुछ बात करना चाहती है।

"उसका नाम साहिल है और वह एक बाऊन है।"

"अच्छा है, बेशक मुझे इससे ज़्यादा जानने की ज़रूरत नहीं है," प्रबीन ने मज़ाक किया।

"अच्छा परिवार है। अच्छी नौकरी है। आकर्षक व्यक्तित्व है। चरित्र भी अच्छा है।"

"ठीक है।" उसने उसे बातें जारी रखने का इशारा किया।

"इकलोता बेटा है।" वह हँस पड़ी। "बहन यू.एस. में रहती है। नटखट नखरेबाज़ देवर की चिंता की कोई बात नहीं।"

"वह हर तरफ से अच्छा लग रहा है। उसके बारे में कुछ तो नकारात्मक बात होगी।"

"मुझे ऐसी कोई बात याद नहीं।"

"चलो, कुछ तो ऐसी बात होगी।"

"नहीं। कुछ भी नहीं है।"

"ठीक है, बुरी न सही, पर ऐसी कोई बात है, जो तुम्हें उसके बारे में अच्छी नहीं लगती।"

"वह आँखों में कॉन्टेक्ट्स लगाता है और हर बार खो देता है।"

"बस यही?"

"रूकिए।"

"ज़रूर।"

"मुझे सोचने दीजिए।" उसने सोचा।

"अच्छा, अगर हम खामियाँ ढूंढ ही रहे हैं, तो वह थोड़ा-बहुत पीता है और जल्द ही उसे नशा भी चढ़ जाता है।"

"तुम्हें क्या लगता है, यह चिंता की बात है?"

“वैसे, उसे मैंने कई बार बताया है कि मैं हर वक्त उससे प्यार करती हूँ, लेकिन जब वह शराब पीता है, तब मुझे वह बिलकुल अच्छा नहीं लगता।”

“जब वह पीता है, तब तुम्हारा क्या करने को मन करता है?”

“उसे मारने का मन करता है,” उसने कहा। “पर इसकी मैं ज़्यादा चिंता नहीं करती। वह हर रात बाहर पीने नहीं जाता।”

“कहीं वह बीवी को पीटने वालों में से तो नहीं?”

“नहीं। इसका मुझे यकीन है।”

“शराबी?”

“शराबीपन की वास्तविकता हमारे लिए अलग और आपके लिए अलग है, बुआ। सभी नौजवान पीते हैं।”

“वह तो मैं भी पीता हूँ।”

“हाँ, और मुआ सोचती है कि आप एक शराबी हैं। मेरी बात समझे?”

“मैं समझ गया।”

पहली बार जब वे साहिल से मिले, दोनों पति-पत्नी उस पर फिदा हो गए। वह सुशील, लम्बा, दिखने में खूबसूरत, शिष्टाचारी और बोलचाल में सौम्य था। कई सालों के बाद पहली बार उस रात सोने से पहले प्रबीन और खुशबू ने थोड़ी देर बातचीत की। साहिल एक सच्चे अर्थों में मनमोहक था, दोनों इस बात से सहमत थे। और वह उनकी बेटी से प्यार भी करता था। फोन पर साहिल ने कुछ कहा होगा, सुप्रिया हँसती हुई कमरे में लौटी।

“वह आपके जन्मदिन पर आ रहा है,” सुप्रिया ने कहा। “वैसे तो बिना बताए आने वाला था, पर आपको पता ही है, अप्रत्याशित आना, कभी अप्रत्याशित नहीं रहता, इसलिए मैं आपको बता रही हूँ। ऐसा दिखाना मानों आप चौंक गए हो।”

“ठीक है, तो फिर वहाँ केक काटना होगा?” प्रबीन ने पूछा।

“और नए कपड़े पहनने होंगे। उन पतलूनों में छेद है।”

“शायद हम अमीर बन रहे, सुप्रिया।”

“मुझे पता है। नीचे रहने वाले कईया से तो कम-से-कम अमीर हैं।”

अगले दिन शेम्पेन की बोतल लिए साहिल पहुँचा और अपने साथ प्रबीन के लिए एक केक और एक तोहफा लाता है। तीन हफ्ते बाद शादी थी, वहाँ घूमने के लिए आने की ज़रूरत नहीं थी। सिर्फ उसके जन्मदिन के लिए वह आया था, यह बात प्रबीन के दिल को छू गई। उसकी सबसे प्रिय जगह यानी छत के कौवे के घोंसले वाले कमरे में प्रबीन, उनके एक दर्जन दोस्त और रिश्तेदार थे। वे लोग साठ साल के जन्मदिवस के अवसर पर प्रबीन की लम्बी उम्र की, सुखी जीवन की कामना की और बेटी की शादी की शुभकामनाएँ दी। जल्द ही सभी शेम्पेन पीने लग जाते हैं। खुशबू के हाथों से बने लज़ीज़ पकौड़ें और कोफ्ते की तारीफ़ करते हुए, सभी उसका आनन्द उठा रहे थे। खुशबू सभी को निहार रही थी, साथ ही खाली प्लेटों को दुबारा भर रही थी। इन दिनों खुशबू के खुशी का कोई ठिकाना नहीं था।

छत पर लोग भर गए थे। छत के चारों कोनों में कोयले, थाली में जलाकर लटका दिए थे, जिससे दिसम्बर की ठंड में उन्हें गरमाहट मिले। खुशबू की बहन नाचना चाहती थी और स्टीरिओ में बॉलीवुड के गाने बजने से, सभी के पैर थिरकने लगे थे। प्रबीन ने संतुष्टि से चारों ओर देखा। और मन में विचारा किया, उसके साठ साल कितने खूबसूरत थे।

सुप्रिया ने मानो प्रबीन की मन की बात पढ़ ली हो, वह नाचना छोड़कर प्रबीन के पास जाती है।

"इतनी बुरी भी इनिंग नहीं थी?" सुप्रिया ने क्रिकट का एक शब्द इस्तेमाल करते हुए कहा।

"बिल्कुल भी नहीं।" 2009 के बॉलीवुड के लोकप्रिय गाने बजने लगे।

"आपको नाचना नहीं है?"

"मैं इस मामले में क्या महसूस करता हूँ, तुम्हें अच्छी तरह मालूम है।" गाने चल रहे थे और लोगों के कोलाहल की आवाज़ भी दुगनी होती जा रही थी।

"कम-से-कम वहाँ खड़े होकर, ताली बजाने का क्या ख्याल है?"

"पता नहीं। मैं बेवकूफ की तरह दिखूँगा।"

"ये आपका जन्मदिन है। कोई कुछ नहीं कहेगा।"

"तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है?" प्रबीन ने पूछा।

"जब वह शराब पीता है, मैं उससे नफरत करती हूँ। देखो उसे, अपने आप का कैसा मज़ाक बना रहा है।"

"लेकिन तुम्हें इसके बारे में पहले से मालूम था?"

“हाँ, पर वह भविष्य में इन लोगों का होने वाला दामाद है। उनको देखिए, वे कैसे उस पर हँस रहे हैं।”

“आह, छोड़ो भी, वे उसके साथ हँस रहे हैं।”

“नहीं, बुआ, वे लोग नाटक कर रहे हैं। शायद, घर लौटकर ये आपके शराबी दामाद के बारे में बातें करेंगे।”

“क्या वह वैसा है?”

“कैसा?”

“एक शराबी। क्या वह एक शराबी है?”

“वह पीता है, बुआ। हर समय पीता है।”

“फिर लोग उसके बारे में क्या समझेंगे, उससे तुम क्यों डरती हो? लोगों के बारे में तुमने कब से ध्यान देना शुरू कर दिया है?”

“यह अलग बात है, बुआ।”

प्रबीन ने साहिल को स्टीरियो चलाते हुए देखा। तभी औरतों की हँसी, चुप्पी में बदल गई। हवा में शकीरा के गाने बजने लगे।

“छिय्या,[70] अंग्रेज़ी,” किसी ने चिल्लाया।

“हाँ, अंग्रेज़ी - वह भी अश्लील,” दूसरे ने आगे जोड़ते हुए कहा। सभी हँसने लगे।

“हमारा दामाद हम औरतों को चरित्रहीन बना रहा है,” खुशबू की बहन ने कहा।

“कैसे अब अलग बात है, सुप्रिया?” प्रबीन ने पूछा।

साहिल एक औरत से दूसरी औरत के पास जाने लगा। जो लोग नहीं नाच रहे थे, जैसे खुशबू, अपनी होने वाली सास को वह उठाकर नाचने वाली जगह पर लाने की कोशिश कर रहा था। उसके पास खड़े लोग, उसे और बढ़ावा देते हुए शोर मचाने लगे, तालियाँ बजाने लगे, उसी समय उसने अपना संतुलन खो दिया और नीचे गिर पड़ा। उसकी होने वाली सास के साथ उसके हाथ और पैर उलझ गए। आधे दर्शक आनंद उठा रहे थे और आधे अपमानित महसूस कर रहे थे। खुशबू ने हड़बड़ी से अपने आप को संभाला, जबकि नशे में चूर साहिल हँसते हुए ज़मीन पर पड़ा रहा। उसे मज़ा आ रहा था।

[70] छी, घृणाभाव

“मुझे नहीं पता, बुआ, लेकिन उसे देखिए।” सुप्रिया ने साहिल की तरफ देखा तक नहीं। बात साहिल की हो रही थी, पर कम्प्यूटर की ओर इशारा कर रही थी। यह उपाय प्रबीन ने अपने अनुभव के आधार पर उसे इस तरह बात करने की तरकीब सिखाई थी कि कैसे लोगों को बिना अहसास कराए, उनके बारे में बातें कर सकते हैं।

“कुछ ही हफ्ते में तुम्हारी शादी हो रही है। तुम खुश नहीं दिख रही, सुप्रिया।”

“मैं सच में खुश हूँ, बुआ। बस जब वह ऐसा करता है, तब मैं उससे नफरत करती हूँ।”

साहिल अब उठ चुका था और पच्चीस साल पुरानी सुप्रिया की पानी की बोतल जाने कहाँ से उसे मिल गई थी। उसे गले में लटकाए, वह छत के चक्कर लगा रहा था। हर चक्कर में उसकी तेज़ी बढ़ती जा रही थी। जो मेहमान पहले आनंद ले रहे थे, वे भी अभी ख़ामोश थे। प्रबीन ने देखा कि लोग एक-दूसरे से आँखों-ही-आँखों में इशारे से बाते कर रहे थे और फुसफुसा रहे थे।

“क्या तुम्हें कभी अन्वेष की याद आती है?”

“मेरे साथ ऐसा मत कीजिए, बुआ।”

“मेरी बस जिज्ञासा है। अगर तुम जवाब देना नहीं चाहती, तो मत दो।”

“वह इतना नहीं पीता था।”

छत पर लोगों ने बुफे के आसपास झुण्ड लगाना शुरू कर दिया था।

“जिसका जन्मदिन है, वह कहाँ है?” किसी ने कहा। “उसे तो खाना ही चाहिए।”

प्रबीन ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया।

“तुम्हें नहीं लगता, तुम्हें उसके साथ एक बार बात करनी चाहिए, सुप्रिया?”

“आपको कोई अंदाजा नहीं, कितनी बार मैंने उससे बातें की हैं।”

एक प्लेट नीचे ज़मीन पर गिरकर टूट गया। वह साहिल का किया धरा था।

“माज़ेल तोव[71],” उसने चीखा।

किसी को समझ नहीं आया आखिर करना क्या है।

“और भी शायद तोड़ने के लिए बचा हो।” प्रबीन ने कहा।

---

[71] यहूदी भाषा में चियर्स के लिए यह शब्द है। यहुदु लोग अपनी ख़ुशी व्यक्त करने के लिए इस शब्द का प्रयोग करते हैं।

“क्या आपको वह पसंद नहीं है, बुआ?”

“मैंने यह तो नहीं कहा, सुप्रिया।”

“आपको कहने की ज़रूरत भी नहीं है।” अब वह रोने लग गई थी। ”आपकी आवाज़ सब कह रही है। आपके शरीर के हाव-भाव सब कह रहे हैं।”

“वह अच्छा लड़का है।”

“आपको पहले ही कह देना चाहिए था, आपको हमारी जोड़ी अच्छी नहीं लगती।” वह फिर से रोने लग गई।

“सुप्रिया, मैंने कभी नहीं कहा कि वह तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है,” प्रबीन ने कहा। ”मैं सोचता हूँ कि तुम अपने लिए उपयुक्त जीवनसाथी चुनने के लायक हो।”

प्रबीन का ध्यान साहिल की ओर गया, जो अलग-बगल की थाली से चिकन ड्रमस्टिक उठा रहा था। ड्रमस्टिक के छह टुकड़े इकट्ठा करने के बाद, उसने कुछ बुदबुदाकर सभी को एक खेल खेलने के लिए आमंत्रित किया। फिर, हवा में उन टुकड़ों को उछाला और किसी के न पकड़ने पर लोगों पर चिल्लाने लगा। यह सब देखकर खुशबू बेहोश होने वाली थी।

“अन्वेष कभी ऐसा नहीं करता,” सुप्रिया ने आँसू पोंछते हुए कहा। किसी की ओर देखकर ज़बरदस्ती मुस्कुराई और खाने की ओर बढ़ी।

प्रबीन जानता था कि उसे अपने आप को कहने से रोकना चाहिए, लेकिन वह खुद को रोक न पाया। “इसे भी तुमने ही चुना है।”

सुप्रिया ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। प्रबीन को पता था कि सुप्रिया की आँखें फिर भर आई हैं।

खाना खाने के बाद आधी रात का संकेत घड़ी ने भी दे दिया था। सिवाय साहिल के, सभी ने पीना बंद कर दिया था। प्रबीन ने चुपके से अपनी कड़क ब्रेन्डी कम्पयूटर के नीचे छिपा दी थी, लेकिन देखा कि साहिल ने उसे ढूंढ निकाला है। खुशबू थकी हुई थी, इसके वह बावजूद केक पर साठ मोमबत्ती लगाकर ले आती है। उसके केक काटने के बाद, साहिल, प्रबीन के मुँह पर केक लगाने की ज़िद्द करने लगता है। अगर साहिल अपनी बातों को पिरोने की स्थिति में होता, तो यह प्रस्ताव हास्यास्पद न होता, लेकिन वह उस अवस्था में नहीं था। प्रबीन ने चुपचाप खुशबू को उसे थोड़ा पानी देने को कहा।

"थोड़ी देर आराम कीजिए, जवाई[72] साहब," प्रबीन ने कहा।

"पहले केक, पहले केक," साहिल ने बुदबुदाया और उसका हाथ केक की ओर लपका।

मुट्ठी भर हाथ में केक लेने के बाद, वह सुप्रिया की ओर मुड़ा। उसके कमीज़ के बटन नाभि तक खुले थे। उसने सुप्रिया की छाती पर पूरा लगा दिया, फिर सुप्रिया ने उसके कान में धीरे से कुछ कहा। यह वह कठोर आवाज़ नहीं है, जो उसने अन्वेष के लिए इस्तेमाल की थी। साहिल से बात करते वक्त उसकी आवाज़ शांत और नर्म थी, मानो वह एक बच्चे को सुला रही हो।

"बस," प्रबीन ने कहा। "अब बस करो, जवाई साहब।"

साहिल हँसता जा रहा था, उसे मज़ा आ रहा था।

"बस करो," प्रबीन ने चिल्लाया। "अब मैं नहीं देखूँगा कि तुम मेरे होने वाले दामाद हो, तुम्हें अब जाना चाहिए?"

साहिल ने केक वाले हाथ झटकाए। उसकी आँखें लाल थीं। रिश्तेदार और दोस्त सभी डरे, सहमे और घबरा कर आसपास खड़े सोच रहे थे कि अब उन्हें करना क्या है।

"अगर एक दामाद, भगवान के बराबर भी हो, तो भी मुझे परवाह नहीं।" प्रबीन ने चारों तरफ देखा। "अगर इसके मूर्ख चेहरे को थप्पड़ मारना पड़े, तो मार दूँगा।"

उसकी पत्नी के चेहरे में अविश्वास दिख रहा था और वह पीली पड़ गई थी। पूरी रात नियंत्रण के बाहर चली गई थी और उनका होने वाला दामाद पागल सा हो गया था। इस कोलाहल से दूर होने के लिए, वह नीचे बाथरूम चला जाता है। कौवे के घोंसले वाली प्यारी जगह में अब टूटे काँच के टुकड़े, खाया हुआ आधा केक और फटे पर्दों से गंद मची हुई थी।

बहुत लम्बे समय तक वह बाथरूम में ही रहा। जब तक वह लौटा सारा घर शांत पड़ा था। सभी या तो अपने घर चले गए थे या सोने चले गये थे। नुकसान का जायज़ा लेने प्रबीन ऊपर जाता है। उसे लगा इससे उसका मन हल्का हो जाएगा। उसे समझ नहीं आया कि उस रात की घटना को किस रूप में लें।

केक हर जगह लगी हुई थी, कम्प्यूटर टेबल, कालिन और एक बाँस की कुर्सी पर भी, भगवान जाने दूसरी कुर्सी कहाँ गायब थी। टूटे हुए काँच के टुकड़े कहीं पैरों में न चुभ जाए, इसलिए वह सावधानी से पैरों की उँगलियों के बल पर चलकर कचरे का डब्बा उठाता है। छत की बत्तियाँ पहले ही जली हुई थी। कचरे के डब्बे के बिल्कुल बगल में जो बाँस की कुर्सी गायब थी, उस पर साहिल बैठा

---

[72] दामाद

हुआ था। आँखें सूझी हुई थी और छोटी उँगली में लगी केक के हर टुकड़े तक को वह सावधानी से चाट रहा था। छोटी उँगली चाटकर खत्म होने के बाद वह अँगूठा चाटने लग गया। अँगूठे को चाटकर साफ करने के बाद, वह बीच की उँगली चाटने लग गया। केक का एक छोटा टुकड़ा भी न बचे, इस तरह से चाट कर उसने सब कुछ साफ कर दिया। वह इस बात से भी अनजान न था कि प्रबीन दरवाज़े के पास खड़ा है। अब उसकी केवल अँगूठी वाली उँगली बची थी। उसने मुँह के अंदर से अंगूठी थूककर बाहर निकाली, फिर उसमें लगी केक को चाटकर अँगूठी तक को सूखा दिया। फिर प्रबीन की ओर देखकर बुदबुदाया, “केक, केक” और वहीं बेहोश हो गया।

सुप्रिया अंधेरे में छुपकर बैठी थी।

“जैसा भी है, वह ब्राह्मण है, बुआ,” वह रोती है।

“क्या वह कंजूस है?”

“सभी ब्राह्मण कंजूस नहीं होते। सभी औरतें कमज़ोर नहीं होतीं। सभी बंगाली बुद्धिमान नहीं होते।”

“हालाँकि श्रद्धा कंजूस है और एक ब्राह्मण भी है।”

“उसका नाम पूजा है, बुआ।” आँखों में आँसू होते हुए भी वह मुस्कुराती है।

*****

खोया हुआ आशीर्वाद

राजीव के कमरे में चार बिस्तर थे। दीवार पर हाल ही में गुज़रे परिवार के सदस्यों की तस्वीरें टंगी थी। उसकी माँ का देहांत ब्लड कैंसर से, पिता का लिवर के ख़राब हो जाने से, चाचा और चाची की गाड़ी दुर्घटना में मौत हो गई थी और दादा वृद्धावस्था के कारण चल बसे थे। समय के साथ हर एक तस्वीरों के फ्रेम पर लगाया गया खादा[73], जो अब हल्का भूरे रंग का हो गया था। फ्रेम पर धूल की इतनी मोटी परत जम गई थी कि खिड़कियों से आती सुबह की धूप भी धोखा खा जाती थी। बगल वाले बिस्तर पर उसका भाई दुबारा सोने की कोशिश कर रहा था। राजीव सोचने लगा कि शायद किसी दिन उसका भाई इन तस्वीरों को साफ़ करेगा।

"हाँ, बहुत समय से इन तस्वीरों को नज़रंदाज़ कर रखा है," उसके भाई संदीप ने कहा, जो दसई[74] की छुट्टियों में बोर्डिंग स्कूल से घर आया था।

राजीव ने सोचा, ऐसा हो ही नहीं सकता कि इन तस्वीरों को नज़रंदाज़ किया गया हो। मैं दिन की शुरुवात इन तस्वीरों को देखकर और उन तस्वीरों के लोगों के बारे में सोचकर करता हूँ।

अपने भाई की झपकियों को घूरते हुए देखा और उसका भी मन किया कि काश वह भी उसकी तरह सो सकता। उसकी दादी अपने बिस्तर पर नहीं थी, शायद वह पहले से ही रसोईघर में चली गई थी। जोड़ों में दर्द के बावजूद वह संदीप और उसके लिए चाय तैयार करने लगी। दर्द के चलते वह पानी के छोटे से बर्तन भी बड़ी मुश्किल से उठा पाती थी। उसके ग्यारह साल का दूर का भाई ही शायद एक ऐसा परिवार का सदस्य था, जो राजीव के परिवार से भी ज़्यादा गरीब था, वह भी अपने बिस्तर पर नहीं था। राजीव को फर्श पर बर्तनों की बजने की आवाज़ सुनाई नहीं पड़ी, उसने अनुमान लगा लिया कि रसोईघर का ज़्यादा काम टीकम कर रहा है और दादी संचालन कर रही है। उस कमरे में सबसे छोटा बिस्तर टीकम का था, उसने पहले ही रज़ाई के चार कोनों को अच्छी तरह से मोड़कर, दीवार के पास रख दिया था।

ईसाई धर्म प्रचारक अभी घर पहुँचने ही वाले हैं। पिछले तीन हफ्तों से अमेरिका के एक मध्य आयु के जोड़े, राजीव के यहाँ हर सुबह ठीक छह बजे पहुँच जाते हैं। लगभग एक साल से वे दार्जिलिंग में गरीब लोगों को यीशु का दर्शन कराने में लगे थे। राजीव को स्कट्स के विचारों पर यकीन करने में मुश्किल हो रही थी। उनके कई बार कहने पर भी कि उन्हें माईकल और क्रीस्टा के नाम से संबोधित

---

[73] पूज्य लामा एवं अतिथि का सत्कार करने और अनुय शुभ अवसरों पर भेंट पूर्वक दिया जाने वाला महीन पारंपरिक कपड़ा।

[74] दशहरा

करें, लेकिन वह उन्हें मिस्टर और मिसेज स्कॉट कहकर बुलाता था। कहने को तो उनको सिर्फ एक साल हुआ था, क्योंकि वे आसानी से नेपाली बोल लेते थे, उन्हें इस अनजान माहौल में घुलमिलकर रहने में आपत्ति नहीं हुई। वे हमेशा फर्श पर पलथी मारकर बैठते थे और गर्म पानी पीते थे। वे दूसरे विदेशियों की तरह नहीं थे, जो बिना सील वाली चीज़ों को हाथ तक नहीं लगाते और न ही वे हर तीन सेकंड में दार्जिलिंग के सूर्योदय की तारीफ़ करते थे।

ये पहले धर्म प्रचारक हैं, जिन्हें राजीव इतने करीब से जानता है और वह उनको बहुत पसंद करता था। विशेष रूप से वह माईकल को पसंद करता था, जो ज़्यादा बात नहीं करता था, बिल्कुल राजीव के पिता की तरह। क्रीस्टा हमेशा खुश रहती थी और एक अच्छे, सभ्य तर्क के लिए हमेशा तैयार रहती थी। न अपनी आवाज़ उठाती और न गुस्से में आकर गलत शब्दों का प्रयोग करती थी। राजीव के पिता ईसाई धर्म प्रचारकों को झूठा प्रवचन देने वाले कहते थे। स्कॉट्स कभी मीठी-मीठी बातें नहीं करते थे, वे हिन्दुओं की आस्था पर कभी सवाल खड़ा नहीं करते थे और शायद ही कभी उन्होंने यीशु की प्रसंशा की होगी। कभी-कभी उसे ऐसा महसूस होता कि इस संसारिक चक्रव्यू से मुक्ति पाने का सार्थक माध्यम वे ही है। वे हर चीज़ सकारात्मक रूप में लेते थे, जिससे वह बहुत प्रेरित था और जिसके कारण यह घंटे भर का सत्र, बिस्तर से बाहर निकालने की प्रेरणा के लिए काफी था। माईकल के साथ समय बिताकर उसे हमेशा शांति की महसूस होती थी, उनकी खुशी मानों उसमें भी आ जाती थी। जैसे ही राजीव ने दरवाज़े पर खटखटाने की आवाज़ के साथ टीकम के स्वागत की आवाज़ सुनाई दी, तो वह तेज़ी से दौड़कर छोटी सी छत पर चला गया, जहाँ मौसम अच्छा होने पर वह स्कॉट्स के साथ बैठता है।

लेकिन दरवाज़े पर स्कॉट्स नहीं थे। राजीव को अच्छी तरह पता होना चाहिए था कि आज रविवार था और रविवार को वे उसके घर कभी नहीं आते। इस दिन उन्हें गिरजाघर में इतना काम होता है कि उनका सुबह आना, नामुमकिन है। दरवाज़ा खोलते ही राजीव का मामा हड़बड़ाकर अंदर आता है।

"तुम अभी तक सो रहे थे," अपने टकले सर के ऊपर से चश्मा नीचे लाते हुए, उसके मामा ने कहा। "तुम्हारी माँ के भाई-बहन अपने-अपने परिवार के साथ दसई मनाने शुक्रवार को दार्जिलिंग आ रहे हैं। ज़्यादातर लोग मेरे घर पर ठहरेंगे, पर तुम्हें मंजू छेमा[75] और उनकी बेटी को अपने यहाँ रखना होगा। तुम्हारे मौसा जी घर पर ही रुक गए हैं, ताकि वहाँ वे सभी को टिका[76] लगा सके। ज़ाहिर सी बात है, वह घर का सबसे बड़ा भाई है, उसका आना नामुमकिन है।

"कुल मिलाकर यहाँ कितने लोग आएँगे?"

"छेमा और उनकी बेटी। उसके देवर की बेटी भी आएगी। ये शिलोंग के लोगों को दार्जिलिंग से बहुत प्यार है।"

"अच्छा तो तीन लोग।"

---

[75] मौसी

[76] दशहरा के समय घर के बड़े लोग आशीर्वाद के रूप में चावल से बने टिके छोटे सदस्यों को लगते हैं।

राजीव अपनी छेमा की बेटी की चचेरी बहन को अच्छी तरह जानता था। उसका नाम निवीता था। बचपन में वे एक बार मिल चुके थे। राजीव ने उसके खरगोश वाले खिलोने को छुआ था, तब निवीता ने उसे काट लिया था और उसे टिटेनस इंजेक्शन लगवाना पड़ा था। बचपन की यह बहुत ही दर्दनाक यादें थीं। अब वह अतीत के उसी व्यक्ति से मिलने वाला था और बचपन की अपनी मूर्खता सोचकर वह मन-ही-मन मुस्कुराने लगा। वह सोचने लगा कि निवीता बड़ी होकर कैसी दिखती होगी और उसे याद भी होगा या नहीं कि उसने राजीव के साथ क्या किया था।

"हाँ, और वे कल वहाँ से निकल रहे हैं। मंजू नाना[77] कल वापस शिलोंग लौट रही है, वह अपने बेकामे[78] पति के पास घर अकेला नहीं छोड़ सकती और लड़कियाँ दिल्ली अपने कॉलेज लौट रही हैं। मुझे समझ नहीं आता भला कौन अपनी बेटियों को दसई की छुट्टियों में घर आने की अनुमति देता है।"

"आपको पता है यहाँ जगह नहीं है," राजीव ने कहा। "एक भी बिस्तर खाली नहीं है।"

"कुछ जुगाड़ करो। ये त्यौहार का समय है और तुम्हें ऐसे समय पर बाँहें खोल सभी का स्वागत करना चाहिए, उदार होना चाहिए। अगर दसई के समय रिश्तेदार एक दूसरे से नहीं मिलेंगे तो फिर कब मिलेंगे?"

"क्या आपको पता है कितने लोग होंगे? आप जानते ही है, हमारा कमरा कितना छोटा है। अगर उन्हें रसोईघर में गद्दे पर सोने में कोई दिक्कत नहीं, तो मैं कुछ बंदोबस्त कर सकता हूँ।"

"वे मेहमान हैं। तुम्हें उनका स्वागत-सत्कार करना चाहिए। तुम, तुम्हारा भाई और यह लड़का रसोईघर में सो सकते हो। इस तरह तीन मेहमानों के लिए जगह निकल जाएगी और कुछ लोग बैठक वाले कमरे में भी सो सकेंगे।"

"बैठक का कोई कमरा नहीं है," राजीव ने कहा।

उसके मामा ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया।

"इस जगह को थोड़ा साफ कर लेना, हमेशा गंदा रहता है।"

उसका मामा घर से निकलने वाला ही था। राजीव ने उनसे चाय के लिए पूछा।

"तुम्हारा यह दूर का भाई बहुत ही गंदा चाय बनाता है," बूढ़े मामा ने कहा। "मैं बेवकूफ नहीं जो उसकी चाय पीकर अपने दिन की शुरुआत करूँ।"

और इतना कहने के बाद वह झट से उठकर, एड़ियों पर चलकर बाहर निकल गए।

---

[77] तमांग भाषा में दीदी को कहते हैं

[78] बेकार

राजीव चुपचाप खड़ा रहा। उसी तरह जिस तरह उसका मामा बिना बताए सुबह-सुबह यह खबर देने पहुँच गए। वह अपने मामा को अपनी दादी की सेहत और उनकी व्याकुलता के दौहरे के बारे में बताना चाहता था और बताना चाहता था जब वह फुसफुसाहट की आवाज़ सुनता है, तो उसे रात में नींद नहीं आती। वह मामा से पूछना चाहता था, मेहमानों के लिए खाना कौन पकाएगा? टीकाराम बहुत छोटा था और दादी इतनी कमज़ोर थी कि अपने छोटे से परिवार तक के लिए खाना पकाने में असुविधा होती थी और मेहमान के चलते घर में सदस्य के बढ़ जाने से घर का आर्थिक संतुलन बिगड़ने वाला था। वैसे तो राजीव खुद अच्छा खाना पका लेता था, लेकिन वह बस कुछ ही पकवान बना सकता था। शायद उनके घर में उतनी थाली भी नहीं कि और तीन लोगों को परोस सके। राजीव को स्कॉट्स से और बर्तन मांगने में हिचकिचाहट हो रही थी। वे बेशक परिस्तिथि को समझेंगे लेकिन बात यह थी कि उनसे और सामान उधार लेने से जो उसका मानभंग होगा, उसे वह सहन नहीं कर पाएगा। उन्होंने पहले ही उसे कुर्सियों का पुराना एक सेट दिया था, यह कहकर कि उन्हें इसकी ज़रूरत नहीं है। उसमें अहं इतना था कि वह अपने दोस्तों से कुछ मांगे, सवाल ही नहीं उठता। उसने फैसला किया कि वह इस अजीब स्थिति के बारे में अपनी दादी को बताएगा, हालाँकि वह इसका कोई हल नहीं दे सकेगी पर उसका मन हल्का हो जाएगा।

उसकी दादी दाई कान से बेहरी थी, इस कारण उसे दादी की बाई कान के पास जाकर बैठना पड़ा।

“मामाजी कह रहे थे, शायद तीन दिन के लिए हमारे यहाँ छः लोग रहने आएँगे,” उसने समझाया।

“और हम उन्हें कहाँ रखेंगे?” बिना दाँत वाली बूढी ने पूछा। “छत पर? जैसा मैदानी इलाके में करते हैं?”

“यह दार्जिलिंग है, बागडोगरा नहीं। छत पर वे ठण्ड में जमकर मर जाएँगे।”

“वे सभी क्यों तुम्हारे मामा के यहाँ नहीं ठहरते? कम-से-कम वहाँ जगह तो है। तुम जानते हो जब मैं सो नहीं पाती तो क्या होता है।”

“मैं जानता हूँ, लेकिन हमें ठहराना ही पड़ेगा। ये वही लोग हैं, जिन्होंने मुझपर काफी पैसे खर्च हैं ताकि मैं इंजिनियर बन सकूँ।”

“अच्छा जैसे उस डिग्री से नौकरी मिल गई। तुम अब भी उस बेअकल ईसाइयों के साथ गप्पे हाँकते दिन निकलते हो।”

सालों के अनुभव से उसने सीख लिया था कि दादी के बातों पर कैसी प्रतिक्रिया करनी चाहिए। उसे पाता था कि दादी उसके भले के लिए कह रही है। अस्सी साल की बूढी को दार्जिलिंग की बेरोजगारी की समस्या के बारे में समझाना मूर्खता है। यह समस्या कई हद तक एक अलग राज्य की

मांग से जुड़ा था। राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित करने के लिए विभिन्न राजनितिक दल आए दिन हड़ताल करते हैं। अर्थ व्यवस्था विकलांग हो गई थी, नौकरी के सुनहरे अवसर न के बराबर हो गई थी। वह दादी को बताना नहीं चाहता था कि वह आई.टी. नौकरी करने दार्जिलिंग को छोड़कर दिल्ली या बैंगलोर, केवल उसी की खातिर नहीं गया था। उसका भाई मिरिक के बोर्डिंग स्कूल में पढ़ रहा था और उसकी शैक्षिक रिकॉर्ड निराशजनक होती चली जा रही थी, इस कारण भी वह कुछ और साल यहाँ रहना चाहता था। अगर राजीव नौकरी करने चल गया होता तो उसकी दादी अकेली पड़ जाती। आई.आई.टी में पढ़ने के दौरान वह कई बार सिक्किम के माझीटार से अपनी दादी की देखभाल के लिए आता था। उसे तभी एहसास हो गया था कि बहुत दूर जाना या रहना नामुमकिन था। दार्जिलिंग से माझीटार टैक्सी से जा सकते हैं, लेकिन बैंगलोर उतना करीब नहीं था। उसकी दादी को बड़े शहर में जाने की इच्छा नहीं थी। वह दार्जिलिंग की पहाड़ियों की गोद में और अपने लोगों के बीच आखरी साँस लेना चाहती थी।

राजीव ने कहा, “कॉलेज खत्म होने के तीन महीने बाद ही नौकरी मिलना आसन नहीं है, मुकाबला बहुत ज़्यादा है।”

“क्या तुम वही बच्चे हो, जो क्लास में अव्वल आया करता था? अगर वे तुम्हें नौकरी नहीं देंगे तो फिर किसे देंगे?”

“यह दसई का समय है। अभी सारे ऑफिस बंद है। रोज़गारी के बारे में बातें करके कोई फ़ायदा नहीं। हम इन लोगों को घर में कैसे रखें इसका तरकीब सोचना है।”

संदीप बालों को कंघी करते हुए रसोईघर में आता है।

“कौन से लोग?” उसने कहा।

दादी ने उसे सारी बात बताई।

“वही तुम्हारे मामा और तुम्हारी माँ के परिवारजन। वे दूसरों के बारे में बिल्कुल नहीं सोचते।” दादी ने कहा।

“मैं सोनम के घर पर सो सकता हूँ,” संदीप ने सुझाव दिया। “इससे घर में एक आदमी कम हो जाएगा। मैं टीकम को भी अपने साथ को ले जा सकता हूँ।”

“घर के छोटे-मोटे काम के लिए टीकम की यहाँ ज़रूरत है,” राजीव ने उसकी बात का विरोध किया। “और तुम्हें जब वे घर में नहीं देखेंगे तो वे ज़रूर कुछ-न-कुछ कहेंगे। तुम जानते हो वे किस तरह के लोग हैं। हमारा घर उनके लिए कभी साफ नहीं होता, खाना कभी अच्छा नहीं होता और हमारी मेहमान नवाज़ी उनके लिए काफी नहीं होती।”

“फिर उन्हें यहाँ रहना ही क्यों हैं?” दादी ने पूछा। “वे मुझसे टिका तक नहीं लगवाते। मैं उनके लायक नहीं हूँ। एक बुज़ुर्ग महिला का आशीर्वाद उनके लिए कोई मायने नहीं रखता।”

“आपका उनसे कोई सम्बन्ध ही नहीं है, दादी। क्यों आप उनको टिका लगाएँगी? उन्हें शायद अजीब लगता हो कि आप आशीर्वाद के साथ पैसे भी दोगे। वे आप पर कोई बोझ बनना नहीं चाहते। किसी से हमारी हालत छुपी नहीं है।” राजीव कहता है।

“तुम बिल्कुल अपने माँ पर गए हो, नाती[79]। तुम्हें अपने परिवार की गलती कभी नज़र नहीं आएगी। अगर वे हमारी तकलीफों को समझते तो पूरे तीन दिन के लिए मेहमान बनकर हमारे घर नहीं आते। अगर वे समझदार होते तो, एक अस्सी साल की बूढ़ी का घर नहीं चुनते। वे अच्छी तरह जानते हैं कि मेरी उम्र हो गई है और मैं बीमार हूँ। उन्हें तो बस अपनी परवाह है।”

संदीप ने गिलास के नीचे से चाय की आखरी कुछ बूंदों को निकाला और उसे रसोईघर के उँचे बर्तन धोने वाली जगह में रख दिया।

“मैं बाहर जा रहा हूँ?” उसने कहा। “किसी को कुछ चाहिए।”

“तुम अपने खाए हुए बर्तन कभी नहीं धोते हो, बिलकुल अपने बाप पर गए हो,” दादी ने शिकायत करते हुए कहा। “वे ईसाई जोड़े भी बेशर्मों की तरह यहाँ हर रोज़ आ जाते हैं, लेकिन कम-से-कम वे अपना बर्तन खुद धोकर जाते हैं।”

“वापस आकर धो दूँगा,” संदीप ने कहा।

“तुम्हारे पिता भी बिल्कुल यही कहते थे। तू अपने बाप का ही बेटा है। अपने बड़े भाई की तरह नहीं। पंखाबरी का एक सच्चा राइ[80] है।”

पिछली बार जब माँ के रिश्तेदार मिलने आए थे, तब टीकम ने शिकायत की थी कि एक दूर की बहन ने बाथरूम में उलटी कर दी थी। उसने फिर विस्तार पूर्वक सभी को अपनी उलटी आने की परिस्थिति बताई थी। वहाँ चावल के दाने, बालों के गुच्छे में फँसा हुआ दिखा जो खुले नाले में तैर रहा था। राजीव ने ठान लिया कि घर की सफाई के बारे में कम-से-कम निवीता से सुनना न पड़े। इसलिए उसने सफाई अभ्यान शुरू कर दिया। उसने रसोईघर के चारों ओर देखा और गंदगी को देख, उसने एक लम्बी साँस भरी।

---

[79] पोता

[80] नेपाली जनजाति

चूल्हे के ऊपर टंगे बिजली के तार में धुएं के कारण परत जमकर काली हो गई थी। रसोईघर का अकेला मंद पड़ा बिजली का बल्ब सालों से बिना बदले धूल के साथ धुँधला सा लटक रहा था। पहले सोचा उसे बदल दे, लेकिन बाद में चाकू लेकर उस चिपचिपे परत को कुरेदना शुरू कर दिया। इसकी सफाई में काफी समय लग गया, लेकिन जब उसे धोकर और सुखाकर बल्ब को दुबारा लगाया, तब प्रकाश इतनी तीव्रता से फैली कि उसे अपनी आँखे बंद करनी पड़ी। टिन की छत पर हर जगह मकड़े का जाला लटक रहा था, जैसे ही उसने जाले को हटाया एक बड़ा सा मकड़ा उसके हाथ में रेंगने लगा। टीकम ने सुबह जो बर्तन धोए थे, उससे राजीव संतुष्ट नहीं हुआ था, फिर उसने दुबारा सारे बर्तन धो डाले। उसे मरते दम तक काम करते देख, जब उसकी दादी ने चिंता जताई, तभी उसने काम रोका।

सफलता का आनंद उठाने ही वाला जब उसकी नज़र सोने वाले कमरे की ओर गई। सालों से फर्श की दरारों और गढ़ों को नज़रअंदाज़ करने के कारण चिकनाई इस तरह से चिपका था, जिसे कोहनी घिसकर साफ करने पर भी साफ न होता। उसे नौकरी मिलने के बाद ही मरम्मत का काम शुरू हो सकता था। एक कपड़ों से भरा बक्सा लुढ़क कर गिरने की अवस्था में था। राजीव ने बिस्तर में पड़े चादर और गद्दे से शुरुआत की और उसके नीचे बेमेल मोज़े पड़े थे। जैसे ही, उसने चादर उधेड़ा दो कीड़े अपनी हिफाज़त के लिए भागे। उसने चादर से महीनों से जमे थूक, पसीना और धूल को घिसकर साफ किया।

उसे अच्छा लगता अगर काम में कोई उसका हाथ बाटा देता लेकिन उसकी दादी से अपेक्षा रखना मूर्खता थी। दादी से जितना हो सका उन्होंने किया, राजीव ने बक्से से कीटाणु मुक्त करने के लिए जो कपड़े निकले थे, उसे वह धूप में डाल रही थी। उसका भाई जो सुबह निकला था, तब से उसने एक बार भी अपनी शकल नहीं दिखाई थी। आँगन में टीकम मुर्गों का पीछा करने में व्यस्त था, जिस कारण राजीव ने अकेले ही प्रयास जारी रखा। लेकिन बिस्तर के नीचे जैसे ही उसने देखा कि चाँदी जैसे चमकीले रंग के कीड़ों ने किताबों को पीला बनाकर बर्बाद कर दिया था और कपड़े की गठरी के ढ़ेर से चूहें के टट्टी की बदबू आ रही थी। फिर उसने हाथ खड़े कर लिए। काम खत्म न कर पाने के कारण वह हारा हुआ महसूस कर रहा था और अपनी थकन से उबरने के लिए छत पर सुखाए गद्दों में से एक में जाकर लेट गया।

जब वह उठा तब तक अँधेरा हो गया था। संदीप बाथरूम से नहाकर, पुराने हिंदी गाने की धुन में सीटी बजाते हुए बाहर निकला। राजीव के सर में दर्द था, उसने संदीप से पानी लाने को कहा। संदीप ने टीकम को आवाज़ लगाई पर कोई जवाब नहीं आया।

"उसकी जब ज़रूरत होती है, वह कभी नहीं मिलता," उसका भाई बड़बड़ाते हुए रसोईघर में जाता है। "मुझे ही सारा काम करना पड़ता है।"

राजीव को उसने ठंडा पानी दिया। दिनभर की सारे गुस्से को वह एक घूंट में गटक गया।

"तुझे पता है, मैं ठंडा पानी नहीं पीता हूँ।"

संदीप ने अनसुना का ढ़ोंग किया। राजीव ने पहले गिलास को देखा फिर संदीप को, जो साफ उसकी नज़रे चुरा रहा था।

उसे यकीन था उसके भाई से उसे कोई जवाब मिलने वाला नहीं, राजीव बाथरूम चला जाता है। कपड़े उतारकर, उसने बाल्टी के ऊपर तक पानी भरा। जब उसने अपना हाथ लाईफबॉय साबुन की ओर बढ़ाया, उसने देखा कि उसमें बाल ही बाल थे। उसी के दूसरी ओर अलग-अलग आकर के कई किस्म के बाल थे। उसने बालों को अपनी उँगलियों से निकलने की कोशिश की, लेकिन वे ज़िद्दी की तरह चिपके रहे। उसके नाखून, साबुन में गड़ने से गुलाबी रंग के हो गए। स्कॉट्स के साथ स्वच्छता के विषय पर बातचीत से प्रेरित होकर, उसने दो हफ्ते बाद ही घर में सभी को बता दिया था कि वह अपना अलग एक साबुन इस्तेमाल करेगा। और उसके साबुन को कोई हाथ न लगाए।

फिर उसे अचानक गुस्सा आ गया। उसकी सभी भावनाएँ एक के बाद एक आ रही थी और एक दूसरे दबाना चाह रही थी, मगर गुस्सा सँभालने के बजाय और बढ़ता चला जा रहा था। दिनभर में घटी बातें, उसे दुबारा याद आ गई। उसके मामा का अचानक आ धमकना, दादी से नौकरी के लिए ताने सुनना और उसके भाई की लापरवाही, यह सब सोचकर उसका शक यकीन में बदल गया कि परिवार के लिए इतना कुछ करने पर भी, उसकी कोई कदर नहीं करता। उसके सारे बलिदान को वे सामान्य कर्तव्य के सिवाय और कुछ नहीं मानते। यहाँ तक कि टीकम जिसके सारे काम में वह हाथ बटा देता है, ताकि वह पढ़ाई पर ध्यान दे सके, उसने भी दिनभर में उससे प्यार के एक शब्द तक नहीं कहे थे।

बर्फ के समान ठंडा पानी डालने पर भी, उसका मन हल्का नहीं हुआ। उसके पूरे शरीर की हर एक हड्डी दर्द कर रही थी। तभी बाथरूम के दरवाज़े पर ज़ोर से खटखटाने की आवाज़ आई। टीकम उसका नाम लेकर चिल्लाते हुए, दरवाज़ा पीट रहा था। अभी कुछ महीने पहले ही बहुत सावधानी से बजट बनाने के बाद और कई चीजों त्यागने के बाद राजीव ने मजदूरों को काम पर लगाकर पाखाना और बाथरूम की बीच की दीवार तुड़वाई और अपनी दादी की सहूलियत के लिए भारतीय कोमोड हटाकर विदेशी कोमोड लगवाया था। नवीकरण का काम अच्छी तरह गया था, दादी भी खुश थी, उन्हें अब पाखाने में उकड़ूं बनकर बैठने की ज़रूरत नहीं थी। चूकि सभी के उठने का समय अलग था, तो उनके बाथरूम के इस्तेमाल करने का समय भी अलग-अलग था। लेकिन अब उसने निष्कर्ष निकला कि दोनों कमरों को तोड़कर एक बनाना कोई समझदारी का काम नहीं था। उसने अपने आपको कोसा कि पश्चिमी की नकल करना सबसे बड़ी भूल थी।

उसने सोचा, इस घर में उसे एक पल की भी शांति नसीब नहीं होती। उसने धीरे-धीरे कपड़े पहनना शुरू किया और दरवाज़े पर खटखटाहट लगातार और बढ़ती जा रही थी।

"ये लगभग मेरे पैंट में पहुँचने वाला है," टीकम पहले हँसते हुए कह रहा था और फिर गंभीर होकर चिल्लाने लगा।

राजीव ने बालों में तेल लगाकर कंघी की। अपने आप को आईने में देखकर नाखुश था, फिर उसने दुबारा बाल बनाए। इस बार उसने अपने बालों के बीच से मांग किया। उसने अपने कांख में कोलोन छिड़का।

“बाहर आईये न दादा,” टीकम रोने लगा।

राजीव ने देखा, उसने अपना टी-शर्ट उल्टा पहन रखा है, उसे सीधा करके दुबारा पहना। जब तक उसने दरवाज़ा खोला, टीकम जा चुका था। राजीव को पता था कि टीकम घर के पीछे किसी कोने में पाखाना कर रहा होगा है। टीकम हल्का होकर तो लौटा, लेकिन अपने साथ वह बदबू लाया, जिससे उसके अभी-अभी किए गए कांड का पता चल रहा था, राजीव ने उसे अपने पास बुलाया।

“जब मैं अंदर था, तूने दरवाज़ा क्यों खटखटाया?” उसने पूछा।

“दादा, वह पतलून में निकलने ही वाला था,” टीकम ने कहा। “एक और सेकण्ड रूकने पर नीचे फर्श पर गिर जाता।”

“पर तुझे पता था, मैं अंदर हूँ।”

“और मेरे कितने बार खटखटाने पर भी आपने दरवाज़ा नहीं खोला। मैंने करीब सौ बार दरवाज़ा खटखटाया।”

“तुझे ऐसा क्यों लगा कि मैं जो भी कर रहा हूँ, तेरे लिए सब छोड़ दूँगा?”

“लेकिन मैं फर्श गंदा कर सकता था, दादा और आपने दरवाज़ा नहीं खोला।”

“यह मेरा घर है, और मैं जितना समय चाहे उतना लगा सकता हूँ, समझ गए तुम?” राजीव की आवाज़ ऊँची हो गई। “अगर आज के बाद जब मैं बाथरूम में रहूँ, उस वक्त अगर तूने दरवाज़ा खटखटाया तो मैं तुम्हारा स्कूल जाना बंद कर दूँगा और घर के काम बढ़ा दूँगा।”

राजीव, टीकम के कान पर घूसा मारता है। उसके बाल खींचता है और फिर थप्पड़ मारने लगता है। टीकम की रोने की आवाज़ और बढ़ जाती है, जब घूसा लातों में बदल जाता है। टीकम अब घुटनों के बल नीचे गिर गया था। राजीव उसकी पसलियों, पेट और सिर पर निशाना लगा कर लाते जमा रहा था। राजीव का मारना-पीटना जब तक बंद हुआ, ज़ाकीर हुसैन रोड के सभी पड़ोसी रास्ते पर निकल आए थे। एनडी गेस्ट हाउस में ठहरे जिज्ञासु पर्यटक भी उस भयानक दृश्य को झाँक रहे थे। उसके अंदर के जानवर को बाहर लाकर, वह आज़ाद महसूस कर रहा था।

“हम रिश्तेदार हैं, इसका यह मतलब नहीं कि तुम मेरा फायदा उठाओ, टीकम,” उसने थूकते हुए कहा। “जब मैं बाथरूम में रहूँ, तुम दुबारा कभी-भी मत खटखटाना।”

उसे खुद नहीं पता था कि वह किस वजह से शांत हो गया था, टीकम को धक्का देते हुए वह चला जाता है।

अगली सुबह नियमित समय में स्कॉट्स पहुँच गए। दोनों के हाथों *न्यू टेस्टामेंट*[81] एक कॉपी थी।

"और सुनाओ रविवार कैसा गुज़रा?" क्रीसटा ने पूछा।

राजीव ने अपने मामा के आने से लेकर, अपनी दादी के अपमान भरी बातें, कमरतोड़ सफाई अभियान और टीकम की धुलाई तक का पूरा ब्यौरा उन्हें सुनाया।

“क्या तुम्हें इसका पछतावा है?” माईकल ने पूछा।

“किस चीज़ का पछतावा?”

“टीकम को बिना कारण मारने का पछतावा।”

“नहीं,” राजीव ने कहा। “मुझे अच्छा लगा।”

“राजीव, क्या तुम हमें खुलकर बताओगे?” माईकल ने पूछा। राजीव के बर्ताव कि वह निंदा कर रहे थे या नहीं, यह उनके बातों से बिल्कुल भी पता नहीं चल रहा था।

“पता नहीं, मिस्टर स्कॉट। वह बहुत ही लम्बा दिन था और जब उसको पीट रहा था, तब अपने आप को मैं कम पीड़ित महसूस किया। उसकी चीख जितनी बढ़ रही थी, मेरा दर्द उतना ही कम हो रहा था।”

“तुम्हें क्या लगता है, यह कोई प्रतियोगिता है?” माईकल ने पूछा।

“प्रतियोगिता?” राजीव को समझ नहीं आया।

“हाँ, प्रतियोगिता, मतलब उसका दर्द तुमसे ज़्यादा होना चाहिए।”

“मैंने उस नज़रिए से नहीं देखा है,” राजीव विश्वास दिलाता है।

टीकम तीन ग्लास चाय लेकर आता है। रोने के कारण उसकी आँखे अभी भी सूझी हुई थी। शरीर में चोट के निशान नहीं दिख रहे थे, लेकिन माईकेल के अभिवादन करने पर भी, उसने अपना सिर तक नहीं उठाया।

“उसे देखकर, तुम्हारा दिल नहीं दुखता?” टीकम के मुड़ते ही माईकल ने राजीव से पूछा।

---

[81] बाईबल

“मुझे मालूम नहीं।” राजीव चाय का एक घूंट पीता है और चाय की कड़वाहट के कारण मुँह बनाता है। “नहीं, मुझे नहीं लगता मैंने कुछ गलत किया है। यह बात थोड़ा पेचीदा है, पर मैं कह ही देता हूँ - मुझे लगता है कि वह इस सज़ा के लायक था।”

“हम यहाँ प्रचार करने नहीं आए हैं, पर हिंसा किसी भी समस्या का हल नहीं है, राजीव,” क्रीसटा ने कहा।

“क्या न्यू टेस्टामेन्ट में यही कहा गया है?”

“नहीं, यह सिर्फ बाईबल में नहीं लिखा है। हर धर्म यही सिखाता है।” क्रीस्टा जवाब देती है।

आज वह धीरे बोल रही थी और हर शब्द पर ज़ोर देकर कह रही थी। माईकल से ज़्यादा क्रीस्टा की बातें साफ़ थी, उसने अपनी असहमति को नहीं छुपाया।

“आप हर धर्म के बारे में नहीं जानते,” राजीव सीधे अपनी बात सामने रखता है। खुद वह चौंक गया था, वह स्कॉट्स दम्पति के साथ इस लहज़े से बाते कर रहा था। “आज ही यू.ए.ई. के एक कचहरी में यह फैसला सुनाया गया कि जो आदमी अपनी पत्नी और बच्चों को मारता-पीटता है, इससे वह इस्लाम-विरोधी नहीं बन जाता।”

“ पर इससे गलत, सही नहीं हो जाएगा, राजीव,” क्रीसटा ने कहा। वह चाय पीते-पीते रूक गई।

“मैं नहीं कहता ये सही है, मिस स्कॉट।” राजीव ने प्याले के हत्थे को छोड़, अब पूरे कप को हथेली में पकड़ लिया था। “हर धर्म को जानने का जो आप दावा करती हैं, वह मुझे थोड़ा अजीब लगता है।”

“यह बिल्कुल भी धर्म के विषय से जुड़ा नहीं है,” क्रीस्टा ने कहा। “मुझे डर है कि... ।”

उसकी बात खत्म होने से पहले ही, माईकल ने कहा, “क्या तुम्हें अपनी गरीबी से शर्म आती है, राजीव?”

“किसने कहा मैं गरीब हूँ, मिस्टर स्कॉट?”

“नहीं, किसी ने नहीं कहा है। पर मुझे लगता है कि तुम अपने मेहमान के आने की बात को सोचकर परेशान हो। यह त्यौहार का समय है, तुम्हें उसका आनन्द उठाने की कोशिश करो। उनकी ज़रूरतों पर ज़्यादा ध्यान देने के कारण तुम्हारी छुट्टियाँ बर्बाद हो रही हैं। तुम हमेशा याद रखो कि अब भी तुम्हारे पास खाने को चावल है और सिर के ऊपर एक छत है। इस देश में कई लोगों को इतना भी नसीब नहीं होता।”

"पर आपको समझना चाहिए कि मेरे यहाँ बहुत सारे लोग आ रहे हैं," राजीव ने कहा। "और वे लोग संदीप या मुझे देखने नहीं आ रहे हैं, बल्कि खुद अच्छा महसूस करने आ रहे हैं। हमारी स्थिति को दिखाकर वे अपने बच्चों को उनकी खुशनसीबी का एहसास दिलाना चाहते हैं। मैं जानता हूँ, वे हमारे एक बेडरूम वाले घर के बारे में शिलोंग के पूरे रास्ते बात करते रहेंगे। अगर वे अच्छे इरादे से यहाँ आते, तो शायद मैं उनके आने की राह देखता।"

"उनकी छोटी सोच पर ध्यान क्यों देते हो?" माईकल पूछता है। "तुम बार-बार वे क्या सोचेंगे, इसकी चिंता क्यों कर रहे हो? क्यों तुम उन्हें अपने पर हावी होने दे रहे हो? उनके विचार क्यों तुम्हारे लिए इतने ज़रूरी हैं?"

"आपके लिए यह कहना आसान है, मिस्टर स्कॉट, लेकिन इन्हीं लोगों ने मुझे इंजीनियर की डिग्री दिलाने में सहायता की है। मेरी माँ के चारों भाईयों और बहनों ने मिलकर मेरे कॉलेज के चार साल की फीस भरी थी। हालांकि करसिओंग में हमारे पुर्खों की ज़मीन, होटल बनाने वालों को बेच कर जो पैसे मिले थे, उससे मैंने पहले ही उनके पूरे पैसे वापस कर दिए हैं, पर वे चाहते हैं कि मैं उनके प्रति हमेशा आभारी रहूँ। मैं उन्हें थोड़े पैसे ब्याज के साथ देना चाहता था, ताकि मैं जीवनभर उनके क़र्ज़ में न डूबा रहूँ। लेकिन नज़दीकी रिश्तेदारों के साथ ऐसा करना मुश्किल है।"

"उन्होंने मुसीबत के समय तुम्हारी मदद की थी, राजीव।" क्रीस्टा की नाराज़गी ग़ायब हो चुकी थी। "तुम्हें आभारी होना चाहिए।"

"अगर धन्यवाद से काम चल जाता, तो कोई बात न थी। लेकिन उनका जो हक जमाने वाला रवैया है, मैं सह नहीं सकता। उनके बच्चों को भी पता है कि अगर उनके माँ-बाप न होते तो मैं कभी इंजीनियरिंग कॉलेज नहीं जा पाता। मेरे और संदीप के साथ उनके व्यवहार से सब पता चल जाता है।"

"साल में सिर्फ एक ही बार तो मिलना है, राजीव," माईकल ने कहा।

"सबसे बदतर तो मेरे मामा हैं, मिस्टर स्कॉट और वे दार्जिलिंग में रहते हैं।"

"पर उनसे तो तुम कभी-कभार ही मिलते हो," क्रीस्टा ने दुबारा कहा। "तुम इन लोगों के बारे में सोच-सोचकर अपना सारा गुस्सा दूसरों पर निकाल रहे हो। कल टीकम की बारी थी, आज मेरी। अगर साल में उनसे तुम्हें एक या दो बार ही मिलना है, तो यह कोई बड़ी बात नहीं।"

"और मैं जब उनसे मिलूँ तो यह ध्यान रखूँगा कि टीकम मुझसे दूर रहे, ताकि मैं अपना सारा गुस्सा उस पर न निकाल दूँ," राजीव ने कहा।

जाने से पहले, क्रीस्टा ने राजीव को न्यू टेस्टामेन्ट की एक कॉपी दी और उसे पढ़ने को कहा। उसने बताया कि इसाई धर्म को जानने का यह सबसे अच्छा तरीका है। फिर कहा, वे उसका धर्म

परिवर्तन करना नहीं चाहते हैं। जिस आदमी का सभी चीज़ों से विश्वास उठ गया हो, उसे किसी भी भगवान में दुबारा आस्था जगाना ही बड़ी बात है। बाईबल के बारे में कुछ भी जिज्ञासा हो, उस पर चर्चा के लिए वे हमेशा मौजूद रहेंगे। एक उसके भाई के लिए भी था, लेकिन माईकल ने सलाह दी कि पहले संदीप से पूछ लेना बेहतर होगा। वह बाईबल या काई भी किताब पढ़ना चाहता भी है या नहीं।

क्रीस्टा के साथ बुरे बर्ताव करने के कारण वह अंदर से दोषी महसूस करते हुए दोबारा सफाई करने लग गया। संदीप अभी भी सो रहा था, राजीव ने उसे नहीं उठाया। उसकी दादी ए.आई.आर. कर्सिओंग सुनने के लिए रेडियो का मीटर घुमा रही थी। उसने टीकम को सुबह चाय लाने के बाद से अभी तक नहीं देखा था। राजीव ने बिस्तर के नीचे से एक बलाउस निकाली, शायद वह उसकी माँ की थी और फिर उससे खिड़कियाँ और तस्वीरों की फ्रेम साफ करने लगा। जैसे ही तस्वीरों को दीवार से हटाया, तस्वीरों के पीछे से दुबारा वही चमकीले कीड़े भागने लगे। उसने एक या दो कीड़े मारे, बाकियों को छोड़ दिया। तस्वीरों में जमी धूल के कारण उसने खाँसना शुरू कर दिया था। उसने एक और अपनी माँ की बलाउज से अपने नाक और मुँह को ढंक लिए। जब उसकी खांसी बंद नहीं हो रही थी, तो वह सीधे छत पर चला गया। उसकी दादी ने उसे सलाह दी कि जैसे ही खांसी आए, वह आसमान की ओर देखे, चमत्कार की तरह नुस्खा काम कर गया।

उसकी दादी लोक कथाएँ धीरे-धीरे सुनाने लगी और राजीव तस्वीर पर लगे खादा को धोने लग गया। चाहे तो वह उस खादा को फेंक कर नया खादा लग सकता था, लेकिन बिना खादा के तस्वीर अधूरी लगती है। बिना खादा के तस्वीर में लोग जीवित दिखते हैं। राजीव के विचार से यह गलत बात थी। अपने पिता की तस्वीर को एकटक देखते हुए, उसे एक अजीब-सा अपनापन महसूस हुआ। वह बिल्कुल अपने पिता की तरह दिखता था। वह अपनी माँ की तस्वीकर को देखकर वैसा ही महसूस करना चाहता था, पर वह नाकाम हो गया। अपने दादा की तस्वीर को सबसे लम्बे समय तक वह देखता रहा। फ्रेम को दुबारा पोछकर, तस्वीरें जहाँ थीं, वहीं वापस रख दी। उसने ध्यान रखा कि खादा बिल्कुल नया दिखे।

शाम को वह बिस्तर के नीचे की गंदगी साफ करने में लग गया। कमरे को थोड़ा सजाने के लिए, उसने बिस्तर के नीचे से किताबें उठाकर, खिड़की के पास मिलाकर रख दी। बचपन में उसके शैक्षिक प्रतिभा से प्रभावित होकर, उससे बिना फीस लिए ही उसे सेन्ट पॉल्स स्कूल में दाखिला मिल गया था। हर साल फरवरी के अंत में और प्रत्येक शैक्षिक सत्र की शुरूआत में उनके पिता राजीव और संदीप की किताबों के उपर भूरे रंग की जिल्द लगा देते थे और कभी-कभी उनके उपर पारदर्शी प्लास्टिक भी चढ़ा देते थे।

बचपन से ही राजीव को किताबों के ऊपर असमान छोटे-बड़े अक्षरों में अपना नाम लिखना अच्छा लगता था। संदीप का पढ़ाई में ज़्यादा झुकाव नहीं था, बल्कि वह छोटे-छोटे हवाई जहाज़ बनाने के लिए अपने माता-पिता से बचे हुए कागज माँगता रहता था। बाद में उसकी कागज़ फाड़ने की गति

खतरनाक बढ़ती गई थी। दीमक खाए हुए किताबों को पलटने से वह अपने आप को रोक नहीं पाया। राजीव की किताबें सावधानीपूर्वक रेखांकित कर रखी थी और किनारे में पूरी टिप्पणियाँ लिखी हुई थी। दूसरी ओर संदीप की किताबें बिल्कुल साफ और शायद ही उसने कभी इन किताबों को खोला होगा। वह बीते हुए अच्छे समय की यादों में खो गया था। उस समय उसके रिश्तेदारों द्वारा किए गए दुर्व्यवहार उसे याद तक नहीं। तब उस पर कोई भी ज़िम्मेदारी नहीं थी। डाँट भी कभी-कभार मिलती थी, जैसे निवीता के काटने पर उसने उसे एक लात मारी थी। उन्होंने उसे एक खुशहाल बचपन दिया था, इसलिए बचपन में बहुत बिगड़ा हुआ था। काटने वाली घटना दुबारा याद आने पर वह मुस्कुराने लगा। उसने सोचा, निवीता को यह घटना याद दिलाकर बड़ा मज़ा आएगा।

हैरानी की बात है, अगले दिन स्कॉट दंपत्ति उसके घर नहीं आए। उन पुराने किताबों को देखकर उसे जो सकारात्मक उर्जा मिली है, यह बताने के लिए वह उतावला हो रहा था। टिका जैसे नेपाली के पवित्र दिन में अलग धर्म के लोगों की अनावश्यक उपस्थिति से दादी को कहीं बुरा न लग जाए, शायद यह सोचकर वे नहीं आए। दसई, दस दिन का नेपालियों का सबसे मुख्य त्यौहार होता है। इस दिन पड़ोस के हिन्दू नेपाली लोग चावल और दही के मिश्रण से बनी गुलाबी रंग का टिका, उसकी दादी से लगवाने आते हैं। आज संदीप ने भी नए कपड़े पहने हैं। राजीव ने बट्टन वाली कमीज़ पहनी, उसे यकीन था कि सभी इसे नया समझेंगे। दादी ने सादी साड़ी पहनी। टीकम कुछ दिनों की छुट्टी लेकर, अपने परिवार से मिलने टिस्टा चला गया। जाने से पहले उसने राजीव को अपने हावभाव से बता दिया था कि वह लौटने वाला नहीं है।

राजीव ने दादी को माथे पर लाल रंग की छोटी सी बिंदी लगाने को कहा। यह सुनकर दादी हैरान भी थी, लेकिन मन-ही-मन खुश हो गई।

“लोग क्या कहेंगे?” मुस्कुराकर दादी कहने लगी।

“आप क्यों इसकी परवाह करते हैं?” राजीव ने पूछा। “आजकल तो सभी लगाती हैं।”

“पर वे मेरी तरह विधवाएँ नहीं हैं।”

“विधवाएँ भी ऐसा लगाती हैं, दादी।”

“मैं लगभग अस्सी साल की हूँ और पूरी तरह सफेद साड़ी पहनना भी छोड़ दिया है। शायद लोग मेरे बारे में बातें करेंगे।”

"मैंने आपकी उम्र की विधवाओं को गुलाबी रंग की साड़ी पहनते हुए देखा है। आपके हरे रंग की साड़ी तो काफी सभ्य है। मैं यकीन दिलाता हूँ कि कोई आपके लाल बिन्दी के बारे में एक शब्द नहीं कहेगा।"

"तुम नहीं जानते औरतें किस तरह की बातें करते हैं।" उसने राजीव को चुप करा दिया। उसने दादी पर ज़्यादा ज़ोर नहीं डाला। वह अपनी दादी को महसूस कराना चाहता था कि वह उनकी इच्छाओं को भली-भाँति समझता है और दादी उस बात को समझ गई। उसे तो बस दादी की खुशी चाहिए थी।

दादी ने अपने पोतों के माथे पर चावल से बनाया गया टिका लगाया। जैसे-जैसे दिन बढ़ता गया, उन्होंने पड़ोसियों को भी उतने ही उत्साह और खुशी से आशीर्वाद देने लगी। टिका के दौरान जो मंत्र पढ़े जाते हैं, दादी वह नहीं जानती थी। लेकिन राजीव ने अपने फोन पर दो मंत्र रिकार्ड कर रखे थे । एक मंत्र पुरुष के लिए और एक महिला के लिए, जिसे सुनकर दादी काफी खुश हो गई थी। राजीव के परिवार के अधिकतर सदस्य गुज़र चुके थे। आज के दिन पड़ोसियों ने दादी को बड़े के रूप में जो सम्मान दिया है, उसके लिए राजीव उनका तहे दिल से आभारी था। लगभग सभी पड़ोसी ने प्लास्टिक के झोले में भर-भरकर फल और मिठाई के डब्बे दिए। कईयों ने तो पैसे भी दिए तोफे के रूप में दादी को दिए, जिसे शर्माते हुए उन्होंने स्वीकार किया। दादी ने अपनी चोली से पांच-पांच रूपए के नोट निकालकर छोटे-छोटे बच्चों को तोफे खरीदने के लिए दिए। उनका चेहरा खिल गया जब उनसे छोटों ने आशीर्वाद के लिए पैर छूने लगे।

दसई, भोज का भी त्यौहार है। उनके पड़ोसी तमांग काका, हर साल एक जिंदा बकरा खरीदते हैं, बलि में उस बकरे का सिर अपने घर के अलतार में चढ़ा देते। फिर उसी बकरे के बचे हुए मांस को अलग-अलग तरीके से पकाते हैं - पानी में उबालकर, आग में जलाकर और तल कर बनाते हैं। उनके सभी लड़के भारतीय सेना में थे, इस दसई वे घर नहीं आ पाए। जिसके चलते राजीव, संदीप और दादी को तामांग काका के यहाँ और ज़्यादा माँस खाने को मिला, इतना वे पूरे सालभर में भी नहीं खाते। दसई के समय भी घर पर उन्होंने कुछ हटकर पकवान नहीं बनाए थे। राजीव को अच्छा लगा, पड़ोसियों ने इस पर कुछ नहीं कहा, क्योंकि वे जानते थे कि इनके घर पर इस तरह के भोज देने के योग्य कोई नहीं था। हालांकि जब तक उनके पड़ोसी राजीव के घर पहुँचे तब तक माँस खा-खा कर उनका पेट भरा हुआ था। कुछ तो नशे में भी थे।

इस साल उनके यहाँ टिका ग्रहण करने वाले परिवार कम हो गए थे। कुछ ही हफ्ते पहले, उनके पड़ोस के सुब्बा काका ने ईसाई धर्म अपना लिया था। उनके परिवार के पाँचों सदस्यों ने धर्म परिवर्तन कर लिया था और अब उन्होंने अपने पुराने नामों को छोड़कर, अंग्रेज़ी नाम अपना लिए थे - जसराज सुब्बा अब जोसेफ सुब्बा बन गया है और उनकी पत्नी जमुना, जेमिना। जसराज ने पूरी तरह शराब छोड़ दी थी और जमुना जो कि एक जुवारी थी, अब ताश और ताश खेलने वालों से भी दूर रहती थी। जाहिर सी बात है, अब वे पड़ोसियों के उपहास के पात्र बन गए हैं। हालही में धर्म-परिवर्तित करने वाले सदस्य

गिरिजाघर जाने में काफी सक्रिय रहते हैं और उनकी जवान बेटियाँ रविवार स्कूल की टीचर बनने की अभी से तैयारी कर रहीं हैं।

राजीव को पूरा शक था कि इस धर्म परिवर्तन के पीछे कहीं-न-कहीं स्कॉट दम्पत्ति का हाथ है। अगले दिन यह बात वह उनसे पूछने के बारे में सोचता है। अचानक उसे क्रीस्टा पर चिल्लाने की बात याद आ जाती है और मन-ही-मन वह अपने आपको कोसने लगता है। स्कॉट्स दम्पत्ति का रवैया उसके प्रति बहुत अच्छा था और उन्होंने उसे दुनिया को दूसरे नज़रिए से देखना सिखाया था। इतना कुछ होने के बावजूद क्रीस्टा विनम्र थी। वह जानता था, चाहे जो हो जाए वह न्यू टेस्टामेन्ट पढ़ने वाला नहीं। ऐसा नहीं कि वह कट्टर हिन्दू है, पर जिस धर्म में उसका जन्म हुआ है, उसे छोड़कर किसी दूसरे धर्म को अपनाने की बात उसे रास नहीं आती।

धीरे-धीरे शाम होने लगी और मौज-मस्ती करने वाले आखरी टोली को विदा करने के बाद, राजीव का डर लौट आया। सुबह उठकर उसे दुबारा घर के कोनों की सफाई करनी थी। उसकी दादी के खर्राटे शुरू हो चुके थे और संदीप अपने दोस्तों के साथ अब भी बाहर घूम रहा था। राजीव जानते हुए भी अपने मामा के घर टिका लगाने नहीं गया। उसके मामा का जैसा मिजाज़ है, उसे यकीन था कि किसी-न-किसी तरीके से वे उसका अच्छा खासा दिन बिगाड़ देते। वह सोचने लगा कि क्या उसे अपने मामा का गुस्सा कल झेलना पड़ेगा या शायद ऐसा भी हो सकता है कि उसके अमीर मामा ने अपने गरीब भांजे के गैरहाज़िरी पर ध्यान ही न दिया हो।

अगले दिन मामा के फोन ने उसे जगा दिया।

"अभी तक सो रहे हो?" उसके मामा ने पूछा। "मैं सही था। क्या तुम रात भर शराब पी रहे थे?"

"मैं शराब नहीं पीता, मामा जी," राजीव ने जवाब दिया।

"तेरा कोई भरोसा नहीं।"

"क्या आपको पता है, मनजू छेमा यहाँ कब तक पहुँचेगी?"

"मैंने उनका ठेका नहीं ले रखा है। बस, तुम दिन में अपने अड्डे में मत चले जाना। यह ध्यान रखना कि जब वे पहुँचें तब तुम्हें घर पर होना चाहिए। उन्हें में फ़ोन से संपर्क नहीं कर पा रहा हूँ। वे कभी-भी पहुँच सकते हैं।"

"क्या आप मुझे उनका नम्बर दे सकते हैं?" राजीव ने पूछा। उसने सोचा कि वह उनसे संपर्क करने की कोशिश करता रहेगा। वह जानना चाहता था कि वे कब तक पहुँचेंगे।

बात पूरी भी नहीं हुई थी कि उसके मामा ने फोन रख दिया था। इस बात से राजीव को बुरा नहीं लगा, उसे इसकी आदत थी। बिना बताए अचानक फोन रख देने का चलन, उसके माँ के नाते-रिश्तेदारों में सामान्य सी बात है। कॉलेज की फीस से संबंधित कुछ बात होती, तब भी वे हर बार ऐसा ही करते थे।

उसने अपनी दादी को आवाज़ लगाई। पर उन्हें सुनाई नहीं दिया। उसके भाई का बिस्तर खाली पड़ा था। शायद पिछली रात वह लौटा ही नहीं।

सुबह स्कॉट दंपत्ति के आने पर, राजीव ने चाय बनाई। वह सोचने लगा कि तोफे में मिले हुए फल और मिठाई दे या नहीं। राजीव जानता था, दार्जिलिंग में आमतौर पर ईसाई लोग हिन्दू भगवानों को चढ़ाए गई कुछ भी चीज़ नहीं खाते।

"आप कुछ अमरूद और बर्फी लेना पसंद करोगे?" राजीव ने पूछा।

"वाह! अमरूद अच्छा रहेगा," क्रीस्टा ने कहा और माईकल ने भी सिर हिलाकर अपनी सहमति दी।

"असल में यह प्रसाद है। कोई तकलीफ तो नहीं?"

"बिल्कुल नहीं," क्रीस्टा ने कहा।

राजीव को लगा शायद उन्हें प्रसाद का मतलब नहीं पता है। समझते हुए उसने कहा।

"प्रसाद हिन्दू देवताओं को चढ़ाया जाता है।"

"हम क्यों नहीं खा सकते?" माईकल को हैरानी हुई।

राजीव समझाते हुए कहता है, "बात यह है कि दार्जिलिंग के ईसाई लोग प्रसाद नहीं खाते हैं।"

"मैं और मेरे अमरूद के बीच कोई नहीं आ सकता," पके हुए अमरूद को खाते हुए क्रीस्टा ने कहा। "ये बहुत स्वादिष्ट है और हाँ, हम अलग तरह के ईसाई हैं।"

"वे कितने बजे आ रहे हैं?" महमानों के बारे में पूछते हुए माईकल ने पूछा।

"आज ही, किसी भी समय।"

"सभी भाई-बहन हैं?" क्रीस्टा ने पूछताछ की।

"नहीं, एक मौसी, एक बहन और उसकी दूर की बहन है।"

"अच्छा, वह दूर की बहन है, तुम उससे संबंधित नहीं हो, है न?" क्रीस्टा ने दुबारा पूछा।

"नहीं," राजीव ने हिचकिचाते हुए कहा।

"क्या तुम उससे पहले कभी मिले हो?" क्रीस्टा ने पूछा।

"जी, एक बार।"

राजीव ने उन्हें काटने वाला किस्सा सुनाया और सभी हँसने लग गए।

"ये दूर की बहन तो काफ़ी अजीब है," क्रीस्टा चिढ़ाते हुए कहने लगी। "काटना-वाटना।"

"अजीब तो तमांग परिवार है," राजीव ने कहा।

“क्यों?” क्रीस्टा और माईकल ने एक साथ कहा।

“क्या उन्होंने धर्म परिवर्तन नहीं किया?”

“अच्छा, हाँ, उन्होंने यीशु को अपने रक्षक के रूप में अपना लिया है,” क्रीस्टा ने कहा। उसकी आंखें चमक आ गई थी।

“कहीं इसके ज़िम्मेदार आप तो नहीं?” राजीव ने पूछा।

“हमने उन्हें बस यीशु को अपनाने का रास्ता दिखाया है,” क्रीस्टा ने कहा। “उनके धर्म परिवर्तन के ज़िम्मेदार हम नहीं है। हमने तो बस रास्ता दिखाने में माध्यम का काम किया है।”

इस उम्मीद में राजीव, माईकल की ओर देखता रहा ताकि माईकल भी कुछ कहे। पर माईकल चुपचाप बैठा रहा।

“आपने ऐसा क्यों किया?” राजीव ने पूछा।

“क्या किया?” आखिरकार माईकल ने कहा।

“वही लोगों का धर्म परिवर्तन करना।”

“क्या कभी हमने तुम्हारा धर्म परिवर्तन करने की कोशिश की है?” क्रीस्टा ने पूछा।

“किया तो नहीं है, पर आपने मुझे बाईबल पढ़ने को कहा था।”

“लेकिन बाईबल पढ़ने से पहले ही यह साफ कर दी थी कि यह धर्म परिवर्तन के इरादे से हम नहीं दे रहे हैं,” क्रीस्टा ने कहा।

“ठीक है,” राजीव ने कहा। “पर आप लोगों का धर्म परिवर्तन क्यों करते हैं? इससे आपको मिलता क्या है?”

“तुम ऐसे बातें कर रहे हो, जैसे हम लोगों को मारते हैं,” गुस्से में आकर क्रीस्टा ने कहा।

माईकल शांत था। राजीव जानता था कि माईकल कभी गुस्सा नहीं करता।

“लेकिन आप लोग एक आदमी जिस धर्म में पैदा होता है, उस धर्म में उसकी आस्था को मार डालते हैं।

“व्यक्ति जब जन्म लेता है, उसका कोई धर्म नहीं होता।” क्रीस्टा ने बात घुमाने की कोशिश करते हुए कहती है।

“पर आपने अभी भी नहीं बताया, क्यों आप ऐसा करते हैं?”

“तुम्हारा मनपसंद फिल्म कौन-सा है?” क्रीस्टा ने पूछा।

“है एक बॉलीवुड की फिल्म।”

“ठीक है, क्या तुम अपने दोस्तों को उस फिल्म को देखने के लिए ज़ोर नहीं देते?” वह कहती गई।

“जी।”

“तुम्हारी मनपसंदीदा किताब?”

“मुझे द *अलकैमिस्ट* पसंद है।”

“क्या तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे सारे दोस्त इस किताब का अनुभव करे?”

“जी।”

माईकल ने आगे सम्भाला। “ईसाई धर्म हमें खुशी देती है। हम चाहते हैं कि हमारे दोस्त और हमारे जानने वाले, हमने जो अनुभव किया है, वे भी वही अनुभव करें। यह उसी तरह है, जैसे तुम किसी फिल्म को देखकर खुश होते हो और चाहते हो कि वह खुशी तुम्हारे दोस्त भी महसूस करें।”

यह पहली बार था, जब माईकल ने खुलकर ईसाई धर्म के बारे में बात की थी। वह काफी संतुष्ट दिख रहा था।

“यह तो बेहूदा तर्क है।” राजीव ताना कसते हुए हँसने लगता है। “आपको क्या मैं इतना सीधा लगता हूँ।”

“तुम हमारा अनादर कर रहे हो, राजीव,” क्रीस्टा ने कहा। “मेहमानों के आने की खबर सुनकर, तुम बिल्कुल बदल गए हो।”

“हाँ और शायद बाईबल पढ़ने से मुझे शांति मिलेगी, है न क्रीस्टा?” राजीव ने पहली बार क्रीस्टा को नाम से बुलाया था।

“मेहमानों का गुस्सा हम पर, परिवार का गुस्सा धर्म पर निकालना, परिवार के गुस्से को धर्म पर निकालना बहुत आसान है, राजीव,” क्रीस्टा भरी आँखों से माईकल का समर्थन के लिए माईकल की ओर देखती है। “मेरे ख्याल से जब तुम्हारे होश ठिकाने आ जाएँगे, तब हमें बात करना चाहिए।”

“यह ठीक रहेगा,” राजीव उनका मज़ाक बनाते हुए कहता है। “मुझसे ज़्यादा मेरे पड़ोस के राजू का धर्म परिवर्तन करनाआसान रहेगा और कृप्या करके प्रसाद लीजिए। आखिर आप लोग दूसरे ईसाईयों से अलग हैं।”

स्कॉट दम्पत्ति बर्फी नीचे रखकर बाहर चले जाते हैं। राजीव के मामा की तरह माईकल ने भी उसे साफ नफ़रत की नज़र से देखा।

लेकिन राजीव के पास इन सब बातों के बारे में सोचने की फुर्सत नहीं थी। निवीता और उनकी पार्टी पहुँचने वाली थी। उसने राशन-पानी खरीद लिया। फटाफट फर्श को दुबारा जांचा कहीं वह चिपचिपा, तो नहीं। दराज़ में किताबों को अलग-अलग तरीके से सजा कर रखता है। जिस किसी बिस्तर पर जाकर दादी लेटती, वहाँ जाकर वह बिखरे चादर को बार-बार ठीक करता रहता है। बीच-बीच में वह स्कॉट दम्पत्ति के साथ हुए वाद-विवाद के बारे में सोचने लगता कि भविष्य में अब उनसे कभी मुलाकात होगी भी या नहीं। लेकिन किसी भी हालत में उनसे माफी माँगने वाला नहीं था। उसका पिता इनके बारे में सही कहते थे। उनके बारे में सोचकर राजीव परेशान होना नहीं चाहता है। शुक्र है, निवीता के मौजूदगी के चलते उसके दिमाग से कुछ देर के लिए ही सही स्कॉट दंपत्ति का ख्याल नहीं आएगा।

निवीता और उसकी मौसी की बेटी सोना दिखने में बिल्कुल एक जैसी थी। दोनों ही इक्कीस के थी। वे दूध की तरह सफेद थी, दाहिने गाल में तीन तिल था और उनकी बड़ी-बड़ी आँखें थी। राई समाज की लड़कियों से दिखने में बिल्कुल अलग थी। निवीता, सोना की तुलना में थोड़ी लम्बी थी, लेकिन कद को छोड़ दें तो, दोनों एक दूसरों के हमशकल थे। राजीव को यकीन था कि लोग उन्हें जुड़वा समझने की भूल कर बैठते होंगे। वह खुद भी हैरान था, उनकी समानता देखकर। वह अपने आपको उन्हें बार-बार घूरने से रोक नहीं सका, निवीता ने उसे घूरते हुए देख लिया था।

वे वहीं बैठक के कमरे के बारे में कहीं न पूछ ले, यह सोचते हुए राजीव उनके पहिए वाली अटेची को घसीटते हुए बेडरूम की ओर ले गया। एक बार गलती से उसकी एक मौसी ने उनके बैठक के कमरे के बारे में पूछ लिया था, उस समय राजीव को समझ नहीं आया कि वह उसका जवाब क्या दे। राजीव की खामोशी वह समझ गई और बात को आगे नहीं बढ़ाया, पर राजीव को यह सवाल आज तक खटकता है। लेकिन राजीव को यकीन था कि वे इस तरह के शर्मनाक सवाल नहीं करेंगे। शायद मौसी ने उन्हें पहले ही घर की स्थिति बता दी होगी।

“दादी के साथ, आप तीनों एक-एक बिस्तर पर सो सकती हैं, मैं बगल वाले कमरें में सोऊँगा।” उसने कहा।

राजीव आशा कर रहा था कि वे यह न पूछ ले कि दूसरा कमरा कौन सा है?

“क्या दूसरे कमरे में मैं सो सकती हूँ?” निवीता ने पूछती है। “असल में मुझे अकेले सोने की आदत है।”

“पर तुम्हें फर्श पर सोना पड़ेगा।” जूता साफ़ करते हुए राजीव ने कहता है।

“जब तक कमरे में मैं अकेलू हूँ, मुझे फर्श पर सोने में कोई दिक्कत नहीं,” निवीता ने कहा।

इस उम्मीद में कि मौसी शायद उसका साथ दे, राजीव उनकी ओर मुड़ता है। पर उसकी मौसी छत और दराज़ में रखी किताब को ध्यान से देखने में व्यस्त थी।

“यहाँ फर्श पर कॉकरोच चलते हैं,” उसने कहा।

“मैं बड़ा उनसे डरती हूँ,” निवीता कहती है।

उसे जब यकीन हो गया कि उसके पास और कोई रास्ता नहीं, फिर उसने आखिरकार कह दिया, “दूसरा कमरा रसोईघर है।”

अविश्वास में तीन जोड़े आँखें उसे घूरने लग गए।

“आप आराम कीजिए, मैं आप लोगों के लिए चाय लेकर आता हूँ,” खुद को पतली गली से निकालते हुए बहाना करते हुए राजीव ने कहा।

राजीव को तीन गिलास चाय को लेकर लौटते देख, अचानक तीनों ने बातचीत बंद कर देती है।

“चाय बहुत बढ़िया है,” निवीता ने कहा।

“सच में,” मौसी ने भी दोहराया।

इससे राजीव को बहुत राहत मिली। संयोग से, उस वक्त दादी किसी पड़ोस के यहाँ गई हुई थी।

“निवीता रसोईघर में अकेले नहीं सो सकती, इसलिए हमने तय किया है कि पास के *एण्डी गेस्ट हाउस* में एक कमरा लेंगे,” मौसी बेपरवाह हो कर कहती है। “यहाँ से वह जगह पास भी होगी और तुम्हारी दादी की नींद भी खराब नहीं होगी।”

“ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है,” राजीव हड़बड़ाते हुए कहता है। “मैं दादी के बिस्तर को रसोईघर में ले जाउंगा।”

“नहीं, आप चिंता मत कीजिए,” सोना ने कहा। “हम *एण्डी गेस्ट हाउस* में रह लेंगे। वहाँ हर सुबह हर आदमी के लिए एक बाल्टी गर्म पानी देते हैं। पिछले साल स्कूल के ट्रिप में हम यहीं ठहरे थे।”

वह शहर में थी, यह बताने के लिए उसने एक बार भी मुझे फोन तक नहीं किया, राजीव मन-ही-मन सोच रहा था। इस गधी को एहसास भी नहीं होगा, इसको जो नहीं कहना था, इसने सब बक दिया है।

“वह एक स्कूल ग्रुप में थी और किसी भी संबंधी को संपर्क करने की उन्हें अनुमति नहीं थी,” उसकी माँ ने झट से कहा।

वह सफेद झूठ कह रही थी।

“क्या पहले हमें गेस्ट हाउस में एक बार फोन नहीं करना चाहिए?” सोना ने पूछा।

उसने फोन किया और पता लगा कि सिर्फ एक ही कमरा खाली है।

स्पेन से आए कुछ लड़कियों ने बुकिंग रद्द कर दी। उनमें से एक लड़की के इतनी बीमार थी कि आज वे दिल्ली से निकल नहीं पाए," सोना ने हँसते हुए कहती है।

"तो फिर चलें," निवीता ने कहा।

"रात के खाने के लिए आप लोग वापस आएँगे?"

राजीव ने दिन में ही पनीर और किनेमा[82] खरीद रखा था, यहाँ तक कि खाना पकाने में मदद के लिए संदीप को भी घर जल्दी आने ले लिए कह रखा था।

"अभी तो हमें मामा जी के यहाँ टिका भी लगाने जाना है," सोना ने कहा। "हम शायद वहीं खाएँगे। वहीं पर सभी लोग हैं।"

बड़ी मेहनत से उसने अटेचियों को छत से घसीटते हुए सीढ़ियों से नीचे ले गया, फिर अटेचियों के पहियों की मदद से सारा रास्ता खींचकर ले गया और फिर *एण्डी गेस्ट हाउस* के ऊपर वाले कमरे तक पहुँचा आया। किसी ने उसकी मदद नहीं की। *एण्डी गेस्ट हाउस* के मालिक के साथ राजीव की अच्छी जान-पहचान के चलते उन्हें सौ रूपए की छूट भी मिल गई। पर किसी ने एक बार भी धन्यवाद तक नहीं कहा।

उसकी मौसी ने तीनों के लिए बस एक कमरा लिया था, जिससे यह साफ़ हो गया था कि निवीता के अकेले सोने वाली बात झूठी थी। उस कमरे की तारीफ़ करते हुए निवीता एक बिस्तर पर जा बैठ गई। राजीव ने झट से एक बार उसकी ओर देखा। राजीव को घूरते हुए निवीता ने देखकर फटाफट अपने हाथ कमर के दाएँ-बाएँ फेरने लगी, देख रही थी कहीं कुछ दिख तो नहीं रहा। उसने अपनी टी-शर्ट को नीचे खींची, पेंट को थोड़ा ऊपर किया और किसी को पता न चल जाए इस कारण हाथ से बालों को फेरने लग गई।

राजीव उनसे विदा लेने ही वाला था। जब उसकी मौसी ने उसे दसई के लिए पांच सौ रूपए देने की बहुत जिद्द की, लेकिन राजीव ने पैसे नहीं लिए।

जब वह घर लौटा, तब दादी भी धीरे-धीरे सीढ़ियों से चढ़ रही थी। वह मेहमानों को ढूँढ रही थी।

"वे गुवाहाटी में फँस गए हैं, वे शायद वहाँ से घर लौट जाएँगे।" राजीव ने दादी से कहा।

---

82 फलिया के एक प्रकार को सिर्का कर रखा जाता है, जिसे किनेमा कहते हैं।

“मूर्ख लोग - तुम्हारी माँ के परिवार वाले ऐसे ही हैं,” दादी ने कहा।

“आज मैं थोड़ा जल्दी सो जाऊँगा,” राजीव कहता है।

“अच्छा, आज टीकम ने फोन किया था,” दादी ने कहा। “वह वापस नहीं आ रहा। कहता है, वह अब घर पर रहकर खेती का काम सीखेगा।”

“मैं सोने जा रहा हूँ। खाने के लिए संदीप ने आपके लिए कुछ बनाया है?”

“लगता है, वह घर नहीं लौटेगा,” अपने कमरे में जाते हुए कहती है। “हाय मेरी किस्मत, टिका के दूसरे दिन ही मुझे भूखा मरना पड़ेगा।”

बत्ती बुझाकर लेटते हुए वह टीकम के खाली बिस्तर को देखने लगा। मामा के घर पर आज रात क्या-क्या चल रहा होगा, उसके मन में अनेक ख्याल आने लगे। कहीं वे निवीता के रसोईघर में सोने के विचार से डर तो नहीं जाएँगे? वह अनुमान लगाने लगा, अगर स्कॉट दम्पत्ति होते तो क्या कहते? इस परिस्थिति में उसके पिता क्या करते? दिन के आखिर में माँ क्या कहती? अंधेरे में वह दीवार पर लगी अपने माता-पिता की तस्वीर की ओर देखता है। आँखें मूंदकर वह मन की आँखों से उनकी तस्वीर देखता है और फिर मन-ही-मन एक ही प्रार्थना बार-बार दोहराता है। यह प्रार्थना कोई और नहीं बल्कि एक ईसाई प्रार्थना था, जो उसने सेन्ट पॉल्स में पढ़ते समय सिखा था।

*****

न घर का, न घाट का

हर पचास मीटर की दूरी पर अनामिका छेत्री रास्तों से घर के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा करती जा रही थी। उसके पैरों में कुछ लताएँ बार-बार उलझ रही थीं, जिन्हें वह झटककर फेंकते हुए आगे बढ़ रही थी। रिफ्यूजी कैंप में मिट्टी का तेल भी अब आधा बचा था और राशन में मिले कोयले को जलाने से उसके बूढ़े पिता की खांसी बढ़ जाती थी। खुन्दुनाबारी में उसके कैंप के बाहर की लकड़ियाँ ही इनका सबसे अच्छा विकल्प था। उसके पड़ोसियों ने सलाह दी कि शायद उसके पिता को क्षय रोग है और उन्हें जल्द-से-जल्द कैंप के एक डॉक्टर को दिखने की ज़रूरत है। उसने उन सुझावों को नज़रंदाज़ कर दिया क्योंकि उसके पास चिंता करने को और भी कई चीजें थीं। वैसे भी, क्षय रोग की परीक्षा करने पर न जाने और क्या-क्या मुसीबतें आ जाए।

अनामिका ने पतले कपड़े को लपेटकर, अपने सर पर गद्दे की तरह रख लिया और उस पर लकड़ियों के भारी गठरी रख दी। नीचे उतरते वक्त वह इतनी ध्यान से पैर रख रही थी, जैसे रस्सी पर कर्तब दिखाने वाले करते हैं।

कॉलज के लड़के समोसे की दुकान पर रोज़ एक ही जगह पर बैठते थे। उनको देखकर अनामिका फटाफट चलने लग जाती है। वह मन-ही-मन भगवान का नाम लेते हुए, अपने आप को संभालते हुए, दिमाग में मुहतोड़ जवाब देना का अभ्यास करने लगती है। पहले की तरह अब उसकी ज़ुबान लड़खड़ाती नहीं है। उन मर्दों को अब वह उल्टा जवाब देना सीख गई है।

उन चारों में से एक ने कहा,“वाह! उसकी चाल तो देखो कैसे मटक कर चल रही है।”

“उसकी कमर बिल्कुल घड़ी के पैण्डुलम की तरह मटक रही है।” पिछले महीने जिसे अनामिका ने चौराहे पर थप्पड़ मारा था, यह वही लम्बे बालों वाला बदमाश लड़का था।

“क्या इसलिए तुम उन्हें घूरते रहते हो?” बिना पीछे मुड़े ही अनामिका ने कहा। “समय जानना है तुझे? या तूझे घड़ी देखना नहीं आता, गंवार कहीं के?”

“जा, अपने देश लौट जा।” उनमें से किसी ने तीखी आवाज़ में कहा, जिस पर उसके दोस्तों ने तालियाँ बजाई और शोर मचाना शुरू कर दिया। “जा भूटान चली जा। कोई नहीं चाहता कि तू नेपाल में रहे।”

“रूको, मैं चाहता हूँ कि ये यहाँ रहे। पूरी तरह मेरी बनकर।”

“हाँ अपना पिछवाड़ा हिलाती हुई भूटान वापस चली जा। तेरी घायल करने वाली नज़रें हमें नहीं चाहिए।”

“मुझे परेशान करना बंद करो, हरामी कुत्तों।” एक लकड़ी उसकी गठरी से नीचे गिर गई। “अपनी माँ या बीवी के पास क्यों नहीं चले जाते। लेकिन शायद वे माओवादियों के साथ नाचने में मस्त होंगे, है न?”

“अरे, इसने तेरी बीवी को रंडी कहा है,” थप्पड़ खाने वाले लड़के ने चिल्लाया। “वह मेरी बीवी हो ही नहीं सकती। मेरी कोई बीवी ही नहीं है।

“देखो ज़रा, एक वेश्या, एक चरित्रवान औरत को वेश्या कह रही है।” सभी हँसने लगे।

“खुद पैंतीस की हो गई है, लेकिन जुबान पंद्रह साल की कमीनी लड़की की तरह कैंची जैसी चलती है। कौन कहेगा कि एक माँ की ज़ुबान इतनी गंदी हो सकती है? इसकी बड़ी बेटी ने अब तक सभी अच्छे शब्द सीख लिए होंगे। वह बिल्कुल इसकी तरह दिखती है।”

“हाँ, वह बिल्कुल मेरी तरह है। तुम लोगों की तरह छक्का नहीं, मर्द की तरह साहसी है।” पिछले हफ्ते से आज इसके गलियाँ बेहतर हो गई थी।

“ये कितनी जवान है, इसके बच्चे कैसे हो सकते हैं?”

“दिखा दूँ कैसे?” पीछे से आंहे भरने की आवाज़ आ रही थी, पर अनामिका ने अपने चेहरे के भाव को शून्य रखने की कोशिश की।

“दो बच्चे हैं।”

“नहीं तीन।”

“नहीं, नहीं - पाँच।”

“ये तो बच्चे बनाने का कारखाना है।” सभी ज़ोर से हँसने लगे।

“लेकिन बच्चे बनाने में उसे कच्चा माल बदलना अच्छा लगता है। अलग-अलग बाप के अलग-अलग बच्चे।”

“ये मैंने तेरी माँ से सीखा है, कुत्ते,” वह चिल्लाई।

बिना आक्रोश में आए वह कुछ सहने की आदि हो गई थी। सब किस्सा अब खत्म होने वाला था। वह पहले मोड़ पर मुड़ कर, आँखों से ओझल हो चुकी थी।

अनामिका घर की ओर दौड़ने लगी और अपनी झोपड़ी में ये जाकर ही रुकी तभी रूकी। फिर लकड़ी की गठरी को एक कोने में फेंक दिया। उसका पिता सो रहा था। उनके पैरों के पास बैठकर, अनामिका की बेटियाँ ग्लोट पर ज़ोंखा अक्षर लिख रहे थे। हाल ही में कैंप स्कूल में ज़ोंखा[83] की पढ़ाई शुरू हुई थी। इस उम्मीद से कि भूटान में जब वापसी का मौका मिलेगा, तब कही भाषा के कारण बच्चों को तकलीफ न हो। अनामिका और उनके पड़ोसी का एक ही आंगन था। वे आज रसोईघर के पीछे बैठकर कच्चे आमों को काटकर, बोतलों में भर रही थी। आसमान घिर रहा था और बारिश आने में पहले उसे कपड़ों को अंदर भी लाना था।

अनामिका खुबदुनावारी रिफ्यूजी कैंप को अपना घर संसार मानती थी। भूटान जाने की आशा रखने वालों में से एक वह नहीं थी। उसका सामान्य सा सिद्धान्त था। इतने सालों के बाद भी भूटान को वह अपना देश कहती थी। अगर उसका देश उन्हें वापस नहीं चाहता तो वह उसे भी उस देश से वास्ता नहीं चाहेगी। वह किसी भी चीज़ की आशा नहीं रखती- चाहे वह फुन्छोलिंग में अपने परिवार की आठ बीघा ज़मीन, जिसे उसके नाते भाईयों ने भूटान की नागरिकता परीक्षा में पास करने के बाद लौटकर हड़प कर ली थी। जिसकी उसे वापस मिलने की उम्मीद भी नहीं थी। उसके महान पति के चलते वह नागरिकता परीक्षा में असफल हो गई। जब से उसे अन्य 106,000 नेपाली मूल के भूटानी के रिफूजियों के साथ भूटान में बहिष्कृत कर दिया गया था, तब से एक किस्म की पनीर और मिर्च से बनाए जाने वाले आहार को वह आज तक हू-ब-हू नहीं बना पाई है।

खुन्दुनाबारी से बहुत फुन्छोलिंग से बहुत अलग नहीं था। बोलने के लिहाज़ में अपेक्षित भिन्नता के बावजूद, सभी नेपाली बोलते थे। धर्म और संस्कृति भी एक सी थी। कैम्प में रहने वाली भूटानी शरणार्थी दावा करते हैं कि नेपाल के नेपालियों से भी ज़्यादा, उन्होंने नेपाली संस्कृति को संरक्षित कर रखी है। इतना सामान्य वातावरण के बावजूद अनामिका को छोड़, अधिकतर शरणार्थी वापस लौटने की आशा में थे। उसकी बेटियों के ज़ोंखा अक्षरों के दोहराने पर भी उसकी कोई पुरानी यादें नहीं लौटीं, उसे लगा उसकी बेटियाँ अंग्रेज़ी बाल कविता को तोते की तरह रटता लगा रहे हों। अनामिका के मन में कोई उत्तेजना नहीं थी, उसके कैम्प के लोग दावा करते थे कि अनामिका के मन में भूटान जो कभी उसका देश हुआ करता था, उसके प्रति कोई सहानुभूति नहीं है।

"स्कूल में आज तुम लोगों ने क्या नया सीखा?" उसने दोनों से पूछा।

अनामिका ने आठवी कक्षा तक फुन्छोलिंग में पढ़ाई की थी।

"आपको नहीं समझ में आएगा, आमा?" उसकी दस साल की बेटी शामभावी फुसफुसाई। वैसे तो वह ज़ोर से बोल सकती थी, क्योंकि उसके नाना जी किसी भी परिस्थिति में सो सकते हैं। यहाँ तक भूटान के आंदोलन के दौरान भी सो ही रहे थे।

---

[83] भूटान की ज़ोंगखा लिपि

“हमारे पड़ोसियों की तरह मैं अनपढ़ नहीं हूँ, शामभावी और इस तरीके से मुझसे ज़बान चलाई तो एक चाटा मिलेगा।”

“हमें किसी दूसरे मुल्क में बसाने के बारे में स्कूल में बातें की जा रही थी।”

“मतलब?”

“आपको पता नहीं हैं?” बारह साल की दिक्की ने कहा, छत से टपकते पानी से बचाव करते हुए, अपने बैठने की जगह बदल रही थी।

जहाँ से पानी चूकर एक छोटा सा गड्ढा बन गया था, अनामिका ने उसे मिट्टी के फर्श पर बालटी रखने को कहा। पानी की कुछ बूँदें उस सोते हुए बूढ़े आदमी के पैरों पर जा गिरी। लड़कियाँ हँसने लगीं।

“और रही अमेरिका वाली बात? जब हम यहाँ पहली बार आए थे, तब से यह बात चली आ रही है। इस उम्र में तुम्हें किसी पर विश्वास करना नहीं चाहिए, दिक्की।

“पर इस बार वे कह रहे हैं कि वाकई में यह सच है,” दिक्की ने कहा। “इस बार कई लोगों को अमेरिका ले जाएँगे।”

“अगर यह सच भी है तो वे कैसे तय करेंगे कि कौन जाएगा और कौन नहीं?” बात कोई ख़ारिज करने के इशारा कर हाथ हिलेट हुए अनामिका ने कहा। “और जो पीछे रह जाएँगे, उनका क्या होगा।”

“उन्होंने क्लास में बताया कि अमरीकी तंदरूस्त लोगों को, जो बहुत बूढ़े नहीं हैं और अंग्रेज़ी बोलने वालों को लेकर जाएँगे,” दिक्की ने कहा।”

“अंग्रेज़ी बोलने वालों को?” अनामिका ने कहा। “इसका मतलब है हममें से कोई नहीं जा सकता।”

“लेकिन हमारी टीचर ने कहा कि हमें इस पर ज़्यादा बात नहीं करनी चाहिए,” दिक्की ने आगे कहा। “हममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिन्हें अमेरिका जाने की बात अच्छी नहीं लगती। उन्हें लगता है कि इससे भूटान खुश हो जाएगा और भूटान की खुशी वे देखना नहीं चाहते।

“मेरे आने से सत्रह साल पहले से वे इस बारे में बात कर रहे हैं,” जले हुए बर्तन के पीछे के हिस्से को अपने हाथ में राख लेकर घिसने लगी और उस पर पानी डालते हुए अनामिका कह रही लगी। “एक दफा लंदन था, एक बार ऑस्ट्रेलिया। मैंने अब इन सब बातों पर विश्वास करना छोड़ दिया है।”

“अमेरिका में हमें राशन मिलेगा, आमा?” शामभावी ने पूछा।

“शायद।”

“और अगर हमें जाने को मिलेगा, तो क्या बाजे[84] हमारे साथ आएँगे? न तो वे जवान हैं, न तंदरूस्त और उपर से उन्हें अंग्रेजी का एक शब्द तक नहीं आता।”

“अगर मेरे पास हर चीज़ का जवाब होता तो क्या मैं भगवान नहीं बन जाती? अब वापस पढ़ने लौट जाओ। समय को ज़ाया करने का तुम कोई मौका नहीं छोड़ती।”

“अनामिका उस कैम्प में अपनी जिंदगी के बारह साल बर्बाद कर चुकी थी। भूटान में कम-से-कम वह नौकरी तो कर रही थी, घर चलाने में उसका भी योगदान था। शादी के बाद भी वह लगातार थोड़े ही सही कुछ पैसे अपने पिता के बैंक ऑफ भूटान के खाते में जमा करती रहती थी। उसके पति ने शायद इस पर कभी गौर नहीं किया होगा, क्योंकि वे तो अपने संपर्क में रहने वाले प्रत्येक नेपाली भाषियों को संघर्ष के लिए संगठित करने में व्यस्त था। पहली बार उनके आंदोलन को भूटान सरकार ने सफलतापूर्वक रोक दिया था। ठीक इसी के बाद ही उसके पति ने वहाँ बसे हुए नेपाली जाति के कल्याण के लिए अपना तन-मन लगा दिया था। बहुत कम समय में वह काफी बदल गया था। उसकी पत्नी के लिए उसका व्यवहार वही प्यार भरा था, लेकिन आस-पास के लोगों से बातचीत करने का लिहाज़ बदल गया था। वह लगातार सभा का आयोजन करता रहता था। धीरे-धीरे वह नेपाली न बोलने वाले भूटानी लोगों से अपना नाता छुड़ाता गया और धीरे-धीरे उसने उनके साथ मिलकर काम करना भी छोड़ दिया।

जयगाँव में बसने वाली एक मारवाड़ी व्यापारी के साथ मिलकर अपना दुकान शुरू करने का उन्होंने सपना देखा था। भूटान में मारवाड़ी लोग विदेशी होने के कारण उन्हें व्यापर करने का *लाईसेंस* नहीं मिलता और जिसके चलते तकनीकी रूप से वे ही उस हार्डवेयर की दुकान के असली मालिक होते। मारवाड़ी दुकान को चलाते और उससे हुए मुनाफे को वे आधा-आधा बाँटते और व्यापार सही तरह से जानने के बाद में हम अपनी अलग दुकान खोलने की योजना भी कर रहे थे। कुछ ही हफ्तों में अनामिका अपनी सरकारी नौकरी छोड़ने वाली थी। सब कुछ तय था।

लेकिन व्यापार की वह योजना बीच में ही अटक गई और उसके पति ने फुन्छोलिंग की अदालत में टाइपिस्ट का काम भी छोड़ दिया। अगर वह काम पर चला भी जाता, तो यह अच्छा समय नहीं था। अब वह भूटान के नेपाली-भाषियों का नायक था। वह राजतंत्र-विरोधी प्रचार-प्रसार करता था। भूटान सरकार के सख्त आदेश के बावजूद कि दफ्तरों में बस भूटानी पारम्परिक पोशाक ही पहनन अनिवार्य है। फिर भी वह बिल्कुल विपरीत नेपाली पारम्परिक पुरुषों की पोशाक दाऊरा-सुरुवाल पहनता था और अपनी कमर पर नेपाली चाकू ‘खुंखरी’ रखता था। खुखरी का उसर वाला हिस्सा काठ का होता है, जिस पर हमेशा वह अपना हाथ रखता था। उस की तरह पोशाक पहने छः-सात आदमी हमेशा अनामिका के पति के आगे-पीछे रहते थे।

---

[84] नाना जी

पूर्व योजना के अनुसार अनामिका को अगले हफ्ते नौकरी छोड़नी थी। इस पर चर्चा करने के लिए वह एक दिन काम से घर जल्दी लौट आई। नौकरी और पैसा यह चीज़ें उसके पति के लिए भी पहले ज़रूरी थी। पर स्थिति अब बदल गई थी। उसके पति के नौकरी छोड़ देने के कारण, वह निश्चित करना चाहती थी कि कहीं वह हड़बड़ी में कुछ गलत कदम तो नहीं ले रही है।

"क्यों छोड़ना चाहती हो?" कैलेंडर के पीछे वह कुछ लिखते था, बिना ऊपर देखे, उसने बेसुध होकर पूछा। "यह हमारी भी सरकार है या तुमने यह मानना शुरू कर दिया है कि हम यहाँ के नहीं हैं? हम नेपाली जाति से संबंध रखते हैं, हैं, पर हैं हम भूटानी।"

"दुकान खोलने वाली बात का क्या हुआ? हमें उसके लिए भी समय निकालना है। मुझे उसके लिए काम भी सीखना पड़ेगा।"

"यह अच्छा है या नहीं, ज़रा बताना।" उसने बड़े ध्यान से तैयार किया हुआ नारा अपनी पत्नी को सुनाया। "हम मनुष्य हैं, जानवर नहीं। हमें अपनी भाषा बोलने का अधिकार है।"

"उसने दोहराया पर उसे कुछ कमी महसूस हुई।"

"नहीं यह अच्छा नहीं लग रहा। यह सुनो : '*वन पीपल, वन कंट्री।*" यह भी मेल नहीं खा रहा, जहाँ हमें परायों जैसा महसूस करवा रहे हैं।"

"आखिरकार अब ट्रक से लोगों को सीमा पर फैंकना बंद हो गया है।" अनामिका को उसकी किताब फाड़ने का मन कर रहा था। "आप लोगों की धारणा प्रदर्शन के चलते शायद वे दुबारा शुरू कर देंगे। जानबूझ कर इस तरह का जोखिम लेना क्या सही है?"

"महाराजा को हटाना पड़ेगा। हम भी भूटानी हैं। क्या हुआ अगर हम बहुसंख्यक नहीं हैं?"

"अरे, दुकान का क्या होगा?" अनामिका ने कहा। उसे पता था कि वह व्यापार के बारे में उसी लय में पूछ रही है, जिस लय में उसका पति नारे लगा रहा था।

"*द किंग, द किंग आउट वित द किंग।*" वह गाने लग गया। "*ए डेमोक्रेसी इज़ वाट वीनीड।*"

संतुष्ट होकर वह इन नारों को लिखता है।

"सुनो - यह और भी अच्छा है। द *किंग, द किंग, आउट वित द किंग। ए डेमोक्रेसी इज़ द नीड ऑफ़ द ऑवर।*"

"आपको खाने के लिए कुछ चाहिए?" वह पूरी तरह थक चुकी थी।

“जातीयता, जातीयता,” उसने चिल्लाया। “जातीयता को छोड़ हमें बाहर निकालने का उनके पास और कोई कारण नहीं है।”

“क्या मैं आपको खाना परोस दूँ?”

उसने कुछ नहीं पकाया था और न ही उसके पति ने।

“1958 को ही यह समस्या रद्द कर देना चाहिए था। हममें से कई लोग कागज पत्र दिखा सकते हैं, लेकिन सभी नहीं।” वह 1958 में वितरण किए गए नागरिकता के पत्र के बारे में कह रहा था। उस समय भूटान सरकार ने देश में बसने वाले सभी नेपाली भाषियों को नागरिक होने का प्रमाण बनाने का आदेश दिया था। “हमारे पास 1957 के कागज़ात हैं। 1959 के कागज़ात हैं। लेकिन तुझे ओ, निर्दयी राजा, चाहिए केवल 1958 के कागज़ात। थू, थू, थू। धिक्कार है,” गुस्से से वह तीन बार थूकता है।

अनामिका को जल्द ही पता लग गया कि दिक्की की दुबारे बसने वाली बात पूरी तरह गलत नहीं है। इस मामले में हाल ही में हुई उपलब्धि से कैम्प के सारे लोग उत्सुक थे। सभी को इस बारे में बस थोड़ा-बहुत मालूम था, किसी के पास पूरी जानकारी नहीं थी।

हाँ, अमेरिका साठ हज़ार लोगों को बसाने वाला था। इसके लिए सिपाहियों की ज़रूरत नहीं पड़ी। हाँ, सभी किसी-न-किसी को जानते हैं, जो किसी अमरीका में रहने वाले को जानता है, जिसने दामक में *इंटरनेशनल इमीग्रेशन आर्गेनाइज़ेशन* के कार्यालय में इंटरव्यू दिया हो। किसी ने कहा कि हर परिवार का अपना अलग बाथरूम होगा। शायद दो भी हा सकते हैं और कोई भी भूखा नहीं रहेगा। अमरीका उन्हें नौकरी भी देगी और अंग्रेज़ी भी सिखाएगी। बुज़ुर्गों को पढ़ाना थोड़ा मुश्किल होगा इसलिए अमीरीकी उन्हें ज़्यादा पसंद नहीं करते। पड़ोस के किसी ने बताया कि शायद अमेरिकी, यहाँ के युवाओं को ले जाकर मुसलमानों के साथ लड़ने भेजेंगे। धन्य है, अमेरिकी लोग मुसलमानों को पसंद नहीं करते, पर हिन्दू और बौद्ध धर्म को बहुत पसंद करते हैं।

इंटरव्यू उसी लाल रंग वाले भवन में होगी, जहाँ पर रक्त परीक्षण भी होगा। किसी ने कहा, अमेरिका में महिलाएँ सिर्फ और सिर्फ पतलून पहनती हैं और मर्दो को महिलाओं पर हाथ उठाना मना है। फिर भी वे पत्नी को छुपकर मारते हैं, पर औरतें कभी-कभी पुलिस के पास जाकर रपट लिखा सकती हैं। ‘नहीं, नहीं, नहीं’ सर्वज्ञाता बनने वाली कहती है। सर, मैडम कहकर चमचागिरि करने की मत सोचना। उन्हें मसखा लगाने की तो कोशिश भी मत करना, तुम लोगों को देखते ही उन्हें पता लग जाएगा। क्योंकि स्कूल में वे यही तो पढ़ते हैं। शायद वे इंगलैंड में भी कुछ लोगों ले जाएँगे, कुछ लोगों को ऑस्ट्रेलिया और नॉर्वे में भी ले जाएँगे।

बारिश वाले एक दिन जब अनामिका ने कैम्प के बाहर एक बस देखी तब उसे जाकर यकीन हुआ कि इतने सालों से जो वादे और आश्वासन मिल रहा था, वह सच होने वाला है। यह वह खट्टारा गाड़ी नहीं, जो वह खुनदुनाबारी के आस-पास देखती थी। सभी एकदम नई गाड़ियाँ थीं। कैम्प के बाहर खड़े लोगों के बीच एक विषय पर गर्मागर्म चर्चा हो रही थी। कैम्प के बाहर के नेपाली लोगों के जुट के बीच वह समोसा दुकान में ऊँचे स्वर में बोलने वाला लड़का भी था, जिसकी कहानी कैम्प में चल रही चर्चा से बिल्कुल उल्टा थी।

“अमेरिका क्या अनाथ आश्रम है, जहाँ वे सभी को अंदर ले रहे हैं।” समोसे की दुकान की भीड़ में एक आदमी की आवाज़ निकली।

“हाँ, ले जाएँगे,” अनामिका ने कहा। “तुम जैसे जानवरों के अत्याचार के साथ हम कैसे जी रहे हैं, यह सब उन्होंने देख लिया है।”

“देखो तो ज़रा,” उसने कहा। “हमने इन्हें छत दिया, लेकिन आभारी होने के बदले हमें गाली सुनने को मिल रहा है।”

“तुम तो इससे भी बदतर के लायक हो,” कैम्प में रहने वाली पड़ोसी की एक बूढ़ी महिला ने कहा, जो जमीन पर बैठकर बीड़ी पी रही थी।

“अब तो इस बूढ़ी के पास भी ज़बान आ गई है।” महिलाओं से भी ज़्यादा तीखी आवाज़ में उस आदमी ने कहा। “ये अनामिका ही सबको ज़बान चलाना सिखा रही है। औरतें, मर्दों की तरह बात करती है और मर्द औरतों से डरते हैं। दुनिया क्या से क्या बनता जा रहा है।”

“अपनी ज़बान सम्भालो वरना तुम्हारे दोस्त की तरह तुम्हें भी थप्पड़ मारूँगी।”

“अगर तुम्हें अमेरिका जाने को मिल जाए तो क्या तुममें से कोई हमसे शादी करेंगा?” उसका चेहरा थोड़ा शांत हो गया।

“तुम जैसे बेकार गधों से शादी करने से अच्छा है कि हम आस-पास के कुत्तों से शादी कर लें।” अनामिका ने संभोग कर रहे कुत्तों के जोड़े पर छोटी सी पत्थर मारी। साथ-ही-साथ दोनों अलग हो गए, लेकिन दोनों की काम वासना की आग जल रही थी, जिसके कारण वे पास के दूसरे झुंड में जाकर मिल गए।

“ये नाइंसाफी है, तुम लोगों को जाने मिल रहा है और हमें नहीं।” वह उदास होकर कहता है।

“तुम एक शादीशुदा आदमी हो।” पहली बार अनामिका उससे गंभीर होकर बात कर रही थी। “हममें से किसी एक से शादी करने की कैसी बकवास बात कर रहे हो? तुम्हारी मोटी बीवी को तुम्हें हर दिन कमरे में बंद करके रखना चाहिए।”

“तुम मुझसे शादी कर सकती हो, अनामिका।” वह अभी भी गंभीर हो कर कह रहा था।

“तुमने पहले भी दो शादियाँ की हैं, तो तीसरी शादी करने से क्या फर्क पड़ेगा?”

“करने को तो मैं सात लोगों से शादी करने की सोच रही हूँ, पर वे सच्चे मर्द होंगे, तुम्हारी तरह नामर्द नहीं। कभी अपनी आवाज़ भी सुनी है? ऐसा लगता है कि बचपन में तुम्हारी माँ ने जबरदस्ती तुम्हारे गले में बिल्ली का दूध डाल दिया हो।”

अनामिका को उकसाते हुए, बूढ़ी महिला ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगती है।

“तुम्हें अच्छी तरह पता है कि इनसे कैसा बर्ताव करना चाहिए,” बूढ़ी महिला ने कहा। “इस जैसे लोगों को धरती पर भेजने का शायद स्वयं भगवान ब्रह्मा को भी अफसोस होता होगा।”

“मुझे यकीन है, इन्हें पैदा करने वाली इनकी माँ को भी अफसोस होता होगा,” अनामिका ने कहा। गुस्से में आकर कही हाथापाई न कर बैठे इसलिए वह अपने गुस्से को शांत करने के लिए उसी वृद्ध महिला के पास जाकर बैठ जाती है और आगे कहती है, “ये बसें हमारे लोगों को कहाँ ले जा रही हैं?”

“*इंटरव्यू* के लिए जा रहे हैं,” बूढ़ी महिला ने कहा।

“*इंटरव्यू*? फिर तो हमें भी जाना चाहिए?”

पहली वाली बस के इंजीन को शुरू करते ही लोग खुशी से शोर मचाने लग गए।

“नहीं, वे कुछ ही लोगों को चुनते हैं। मेरे पति का कहना है कि यह बहुत ही लम्बी प्रक्रिया है। पहले ही इसने राम वनवास से भी ज़्यादा समय लग गया है।

“हमारी तरह बाकी बचे लोगों का क्या होगा?”

“हम में से कई लोगों को वे नहीं लेंगे।”

“इसके लिए मापदण्ड क्या है?”

दूसरी गाड़ी का हॉर्न बजते ही, सवारियों ने चिल्लाया, “अमेरिका, अमेरिका।” ड्राइवर जब बस से थोड़ी देर के लिए उतरता है तब सवारियाँ हँसते हुए मजाक में कहते हैं - *“नो अमेरिका, नो अमेरिका।”*

“वे लोग कह रहे हैं कि अमेरिका के युद्ध में लड़ने के लिए सिपाहियों की ज़रूरत है। इसलिए वे गर्म खून वाले नौजवान लड़कों को पहले अवसर देंगे। मैं जानती हूँ भगवान मेरा ख्याल रखेंगे, क्योंकि मेरे पास बेटे हैं। कैम्प में माँस-मच्छी की कमी के बावजूद वे तगड़े हैं।”

“फिर तो मुझे शायद जाने को न मिले।”

“हाँ, कैम्प ने सभी के चरित्र का लेखा-जोखा रखा है। सभी को तुम्हारी दूसरी शादी के बारे में मालूम है।”

बस मोड़कर रास्ते की ओर जाते हुए उसकी नली में से काला धुआं निकलकर सीधे अनामिका के मुँह पड़ा। सभी सवारियाँ पिकनिक में जाने वाले मौजियों की तरह हिन्दी गीत गाने लगे थे।

अनामिका जानती थी कि वह बूढ़ी महिला उसका बुरा नहीं चाहती थी। और ऐसा भी नहीं है कि उस औरत ने कुछ झूठ कहा हो। कभी-कभी अनामिका खुद भी सोचती थी कि उसका चरित्र ठीक नहीं है। चाहे वह अपने आप को कितना भी सही साबित करने की कोशिश कर ले, पर अंदर से उसे लगता था कि उसने गलत काम किया है, और एक-न-एक दिन उसे सज़ा ज़रूर मिलेगी। इन सब चीज़ों पर महिलाएँ ही बातें करते हैं। देखा जाए तो उसकी चाल-चलन का लेखा-जोखा रखना कैम्प के लोगों का कामधंधा बन गया था।

“आप तो ऐसे बात कर रही हैं जैसे दुनिया में केवल मैं ही ऐसी एक औरत हूँ, जिसने दूसरी शादी की है,” उठकर जाते हुए अनामिका ने कहा।

“लेकिन तुमने तो दोनों को छोड़ दिया,” बूढ़ी भी अपनी बात पर अड़ी रही।

“और उइन सबके बावजूद, मैं तुमसे शादी करने के लिए तैयार हूँ।” समोसे की दुकान वाला आदमी बोला। “अमेरिका, अमेरिका।”

बूढ़ी महिला मुँह दबाकर हँसने लगी, जिससे उस आदमी को हौसला मिल गया।

“शायद मैं तुम्हारी बड़ी बेटी से शादी कर लूँ। उसकी उम्र क्या है? तेरह? उसकी भी उम्र होने वाली है।” वह जितना उत्तेजित होता गया, उसकी आवाज़ उतनी ही तीखी होती गई।

लगभग तेरह वर्ष पहले की बात है, अनामिका के भूटान वाले घर में सिपाहियों का एक समूह जबरदस्ती घुस आए था। उसकी गर्भवती पेट की ओर देखकर वे जानना चाहते थे कि उसका पति कहाँ है। उस साल बहुत सारे उनके पड़ोसी भाग गए थे। उनमे अधिकतर लोग को भारत के राज्य असम की ओर गए। उसके घर से तीन घर छोड़ जिस परिवार का घर है, सुनने में आया है कि वे 1958 की नागरिकता वाले काग़जात दिखाने में कामयाब हुए और वे यहीं पर रहेंगे। जिन बच्चों को पहले अनामिका मुट्ठि-भर का ग्लूकोस का पाउडर देती थी, अब वे बच्चे उसके घर के आस-पास भी नहीं भटकते। सुबह पड़ोसियों के साथ अभिवादन में अब वह आत्मीयता नहीं थी। रास्ते में मिलने वाले युवा बच्चे भी

अनामिका को देखकर एक दो शब्द कहकर पतली गली से निकल लेते थे। अनामिका ने अपने आप को सांत्वना दिया कि अब वे बड़े हो गए हैं, इस कारण उन्हें ग्लूकोस पाउडर अच्छा नहीं भाता।

अनामिका के पिता के पास सारे कागज़ात थे, पर उसकी जांच के लिए कोई नहीं आया। उसने सिपाहियों द्वारा किए गए बलात्कार और हत्याओं जैसी पाश्विक घटनाओं के बारे में कई कहानियाँ सुनी थीं। कई लोगों का मानना है कि सिपाहियों के करतूत के बारे में भूटान सरकार को जानकारी है। जिसके चलते उन्हें सख्त हिदायत दी गई थी कि नेपाली भाषियों को घर से या देश से बाहर ले जाते वक्त हिँसा का प्रयोग न करें। और अब जब सिपाही उसके शरीर की तलाशी ले रहे थे, तब वह सबसे ज़्यादा डरी हुई थी।

“यह किसका बच्चा ह?” एक सिपाही ने ज़ोखा भाषा में पूछा।

“मेरे पति का।”

“बच्चे का जन्म कब होगा?” अब वह थोड़ी नरमी से बात कर रहा था।

“एक महीने बाद।”

“अच्छा तो तुमने अपने पति को आठ महीने पहले देखा था?”

“जी।”

“तभी तुमने उसे आखरी बार देखा था?”

“जी।”

“तुम्हारे कागज़ात कहाँ हैं?”

अनामिका अलमारी की ओर गई और वहाँ से अपने पिता की नागरिकता पत्र लेकर आई।

“और तुम्हारे पति का?”

अनामिका को इसी सवाल का डर था।

“खो हो गए हैं।”

“बड़ी आसानी से कह दिया।”

“पर देखिए, मेरे पिता तो यहीं के हैं। यहाँ तक कि इनके पास सम्पत्ति के कागज़ात भी हैं।”

सिपाही पास आते जा रहे थे।

अनामिका के घर पर सिपाही की आने वाली बात एक पड़ोसी ने जैसी ही उसके पिता को बताया, वह दौड़कर वहाँ पहुँच गया।

“तुमने कागज़ात दिखाए?” उन्होंने अनामिका से पूछा।

“हाँ, लेकिन हमें इसके पति के कागज़ात चाहिए।”

“आप जानते हैं, मेरे पास वे कागज पत्र नहीं हैं,” आत्मसमर्पण करते हुए अनामिका ने कहा। “वे सब शायद मेरे पति के पास ही होंगे।”

“पर यह काफ़ी नहीं है।” सिपाही लोग अपना धैर्य खो रहे थे। दरवाज़े में खड़ा उसका साथी खिसियाते हुए हँस रहा था।

“फिर अब क्या?” अनामिका के गुस्से का पाला चढ़ गया था। “गाय भैंस की तरह क्या तुम मुझे, अब देश से बाहर निकाल दोगे?”

“देश के कानून का पालन करने वालों को ही इस देश में रहने का हक है,” उसने ज़ोंखा में कहा।

“यह वाक्य तुम्हें अच्छी तरह याद है - क्या इसलिए क्योंकि तुम और तुम्हारे साथी यह बात एक लाख बार दोहरा चुके हो?”

“देश के कानून का पालन करने वालों को ही इस देश में रहने का हक है,” उसने दोहराया।

“यह मेरा घर है, मेरा देश है।” उसे थोड़ा सतर्क भी रहना था, क्योंकि सिपाही कुछ भी कर सकते थे। “मैं कहीं नहीं जाऊँगी।”

“तुम बिल्कुल सही हो, पर तुम्हारा पति यहाँ का नहीं है। वह एक अपराधी है।”

“शादी से पहला क्या मुझे यह सब बातें मालूम थीं?” अनामिका गुस्से में थर-थर कांपते हुए रोने लग गई। “मैंने अगर तुम्हारा आदेश न माना तो क्या कर लोगे? बलात्कार? कर लो बलात्कार?”

उसका पिता चुपचाप खड़ा था। थोड़ी देर के लिए किसी ने कुछ नहीं कहा।

“घर पर कोई नहीं है।”

“देखो बहन,” आखिरकार एक सिपाही ने नेपाली में बोला। “हम दोनों को पता है कि तुम्हारा पति क्या कर रहा है। इस हालात में हम तुम्हें बेकार में तनाव नहीं देना चाहते, पर यही अच्छा होगा अगर तुम अपनी ज़रूरतों का सामान बांध लो। अभी हम मान लेंगे कि हम तुम्हारे पिता से नहीं मिले।

उनके पास कागज़ात हैं, पर बदकिस्मती से तुम्हारे पास नहीं हैं। तुम्हें जाना होगा। बसें वहाँ पर खड़ी होंगी।"

अनामिका के पिता अपनी गर्भवती बेटी को कभी अकेले यात्रा करने नहीं देता। उसके पास सारे कागज़ात थे, अगर वे चाहे तो कभी भी लौट आ सकते थे। दिक्की नेपाल के कैम्प में पैदा हुई। लेकिन, एक बार नेपाल आने के बाद, अनामिका के पिता को भूटान कभी भूटान में दुबारा घुसने नहीं दिया गया। उसका दामाद देशद्रोही था। देशद्रोही से संबंध होने के कारण वह भी देशद्रोही बन गया।

अनामिका कपड़े बदल रही थी, जब उसने काला चश्मा पहने एक आदमी को उसकी घर की ओर आते देखा। उसे देखकर ही लग रहा था कि वह कोई विशेष आदमी है। उसका पिता घर के मुखिया होने के कारण राशन उन्हें मिलता था। इस कारण अधिकतर लोग उन्हें ही ढूंढ़कर आते थे। जिसकी वह अभ्यस्त हो गई थी। साड़ी लगाने में ज़्यादा समय लग जाता, इसलिए उसने फटाफट दोबारा कुर्ता डाल दिया और बाहर आए अजनबी का अभिवादन करने निकल आई।

"वह बाहर चले गए हैं", उसने कहा।

"मुझे उनसे बात करना है। बहुत ज़रूरी है। मैं दामक से आया हूँ।"

"मेरी बेटियाँ घर पर नहीं है। वरना मैं उन्हें पिताजी को ढूंढ़ने अभी भेज देती।"

"क्या आप नहीं जा सकती?" उसने पूछा।

"घर पर कोई नहीं है।"

वह दरवाज़े से ऐसे झांक रहा था, मनो कोई चोर किसी घर में चोरी करने से पहले झांकता है। "मैं बाद में भी आ सकता हूँ, पर इससे तुम्हारे परिवार का नुकसान होगा। मैं कार्यकर्ता हूँ।"

"क्या आप मुझे नहीं बता सकते?"

"नहीं, हमें परिवार के मुखिया से ही बात करनी है।"

उसका मतलब था कि वह परिवार के किसी मर्द से बात करना चाहता है।

"आप थोडा इंतजार कीजिए। मैं उन्हें बुलाती हूँ।" बड़े प्यार से वह पुकारती है, "बाबा, बाबा।"

जब कोई जवाब नहीं आता तो वह दोनों हाथों को मुँह में रखकर और ज़ोर से चिखती है। उस आदमी की बेचैनी को समझकर, वह उससे चाय के लिए पूछती है। उसने दुबारा अंदर देखा। दरवाज़े से अंदर का निरीक्षण करने लगा और मुँह फुलाकर बैठ गया।

"मैं आपके लिए चाय बनाती हूँ," अनामिका ने दोहराया। "आप बैठिए।"

वह नीचे जूट की दरी पर बैठ गया और अनामिका एक काली रंग की नली से आग में हवा फूंकी।

बीच-बीच में वह "बाबा-बाबा" भी चीख रही थी।

अजनबी ने चाय पीना शुरू ही किया था कि उसका पिता राशन की भारी बोरी लेकर धम्म से पहुँच गए।

"धत्, पिछली बार भी उन्होंने कुम्हड़ा दिया था। इन्हें मैंने बोरी के ऊपर रखा था। रास्ते भर यह मुझे चुभ रहा था।" उसने कहा।

"घर के मुखिया क्या आप हैं?" अजनबी ने पूछा।

"हाँ, मैं हूँ।" वह घबराया हुआ दिखा।

"आज से एक हफ्ते बाद आपको अपने पूरे परिवार के साथ इंटरव्यू के लिए बुलाया है। कृपया करके सुबह आठ बजे बाहर खड़ी तीन में से किसी भी एक बस में आ जाएँ। देर मत कीजिएगा। यहाँ नेपाल का समय नहीं चलेगा। अमरीकी लोग समय के मामले में बहुत पाबंद होते हैं।"

"यह हमें अमरीका ले जाने के लिए है?"

"यह तो बस पहला इंटरव्यू है। दिनभर बातें करने के लिए मेरे पास फुर्सत नहीं है। कुल मिलाकर आप लोग चार सदस्य हैं, है न?"

किसी ने जवाब नहीं दिया।

"और इनका पति?" वह उसकी माँग की सिंदूर को जांचता है।

"क्या वह जिंदा है?"

"जी हाँ।"

"कहाँ है?"

"यहीं आस-पास," उसके पिता ने कहा।

वह आदमी अनामिका को परखने लगता है।

"क्या हम सभी को आना पड़ेगा?" अनामिका ने पूछा।

“क्या मैंने अभी नहीं बताया?”

“हमें क्या पहनना चाहिए?” उसके पिता ने पूछा।

“साफ कपड़े।”

“वे भला मुझ जैसे बूढ़े आदमी से क्या सवाल पूछेंगे?”

“ज़्यादा कुछ नहीं, पर झूठ मत बोलना।”

“हम झूठ नहीं बोल सकते?” अनामिका ने कहा।

“हाँ, झूठ पकड़ने में अमरीकी लोग माहिर हैं।” उनकी आंखों में कई तरह के सवाल थे। “क्यों? क्या कोई छुपाने वाली बात है?”

“नहीं, नहीं, मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि वे झूठ पकड़ लेते हैं।”

“वे अमरीकी हैं।”

“क्या वे मुझसे अंग्रेज़ी में बात करेंगे?” उसके पिता ने पूछा।

कार्यकर्ता पिता को देखता है और हताश भरी नज़र से अनामिका को देखता है। चाय की आखिरी बूंद गटकते ही, बाहर बारिश हो जाती है। उसने उनसे पूछा अगर उनके पास कोई दूसरा छाता है। अपने ही सवाल पर मुस्कुराते हुए चला जाता है।

“हम शायद सफल नहीं होंगे।” उसके पिता ने तम्बाकू के पत्ते को अपने कांपते हाथों से तोड़ते हुए कहा। “तुम्हारी शादियों और मेरे स्वास्थ्य के चलते, हम नाकाम हो जाएँगे।”

जल्दी से उसने तम्बाकू के पत्ते के साथ चूना मिलाकर, एक चुटकी अपने मुँह में डाली, फिर अपने मसूड़े और नीचले होंठ के बीच में सुरक्षित तरीके से रख दिया। जिसके खाने का बाद उनका जहाँ मन करे वहीं थूक फेंकते थे, जिससे अनामिका को बहुत गुस्सा आता है।

“क्यों तुम बार-बार शादी करती रहती हो? तुम्हें उस काम-न-काज के ब्राह्मण से शादी करनी ही नहीं चाहिए थी। उसके आंदोलनकारी कारनामों के चलते हमें यहाँ आना पड़ा, वह हरामी हमारे दुःख को बांटने के समय हमारे साथ ही नहीं है।

वह अपने चूने के डिब्बे को ढूंढ़ने लगा।

“आपको क्या लगता है, अगर मुझे पता होता तो क्या मैं उससे शादी करती?”

अपने भौंहें और माथे से वह पसीना पोंछता है।

“अच्छा, लेकिन दूसरी बार शादी क्यों की? उसके लिए तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं है। शुरू से ही हमने बताया था कि वह कारकी धोखेबाज़ है।”

वह खाँसने लगता है।

“अगर उन्होंने तुम्हारी शादियों के बारे में पूछा तो मैं क्या कहूँगा? क्या नसीब है मेरा, एक बेटी के कारण मुझे क्या कुछ नहीं सहना पड़ रहा है?”

“हाँ, अगर वे मेरी शादियों के बारे में पूछेंगे तो?” अनामिका दोहराई। “हमें उस कार्यकर्ता से पूछना चाहिए था, जो कि हमने पूछा नहीं। तो अब चुप बैठो और मुझे सोचने दो।”

उस कार्यकर्ता ने कहा था कि अमरीकी लोग झूठ पकड़ने में माहिर होते हैं। अब अनामिका को तय करना था कि किन बातों को वह बताए और किन्हें हटाएँ। उसे पता था कि उसे झूठ बोलना पड़ेगा। यह असंभव था कि अमरीकी उसकी जैसी महिला को उनके मुल्क में घुसने का मौका देंगे।

जब वह नेपाल पहुँची थी, तब वह खूबसूरत, जवान और अल्हड़ स्वभाव की थी। उसकी एक बेटी थी, जिसके पिता का कोई ठिकाना नहीं था। परिवार में केवल एक मात्र मर्द उसका पिता था। उनकी भी आँखें कमज़ोर हो चुकी थीं और कान से भी कम सुनाई देता था। कैम्प में दूसरी महिलाओं के मुकाबले अनामिका की ओर लोग ज़्यादा आकर्षित होते थे। शुरूवात में उसे यह सब उसे अच्छा लगता था। इसका वह मज़ा लेती थी। इससे वह अपने आप को शक्तिशाली महसूस करती थी। पर जल्द ही उसे अहसास हो गया कि अब तक वह गलत चीज़ पर गर्व कर रही है। लोग उसके लाचारी पर आकर्षित हो रहे थे, न कि उसकी सुन्दरता पर।

मर्द उसे पसंद नहीं करते थे, क्योंकि वह उनकी पत्नी नहीं थी। लेकिन औरतें उसे तुच्छ समझती थीं, क्योंकि वह उनके पतियों के लिए प्रलोभन की वस्तु थी। एक माया जाल थी। नदी में जब वह एक बार नहा रही थी, तब उसने एक आदमी को झांकते हुए पकड़ लिया था। पर कैम्प के लोगों ने अनामिका को ही कसूरवार ठहराया। उन्होंने कहा कि वह उस आदमी और दूसरेपतियों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करती है। जब अनामिका ने उस चूतिया से बात करनी चाही, तब उसकी पत्नी और कैम्प की दूसरी औरतें उस आदमी के बचाव के लिए उसके सामने आ गई। वे अनामिका को बुरा-भला कहने लगीं और उसके अनुपस्थित पति के बारे में सवाल करने लगीं। उसे अहसास हुआ कि उसकी रक्षा करने वाला कोई नहीं है। उसे एक आदमी चाहिए था, जो उसकी रक्षा कर सके। और वह आदमी, उसका पिता नहीं हो सकता।

कैम्प के बाहर के एक ब्राह्मण ने अनामिका की शादी बिरातमोड के एक नेपाली व्यक्ति रवि कारकी से करवा दिया। वह रवि की दूसरी पत्नी थी। उसकी पहली पत्नी भी उसकी शादी में उपस्थित

थी। अनामिका से कहा गया कि वह उसकी सौतन को बहन कहकर पुकारे। उसकी पहली पत्नी ने एक के बाद एक बेटी को जन्म दिया। लगातार चार बेटियों के बाद यह स्पष्ट हो गया था कि अब वह दूसरा विवाह करने वाला है। कैम्प के बाहर एक मंदिर में उनका विवाह संपन्न हुआ। कैम्प से किसी को भी निमंत्रित नहीं किया गया था। शादी के बाद दिक्की अपने नानाजी के साथ रहने वाली थी।

अनामिका की दूसरी शादी, पहली शादी से बहुत अलग थी। वैसे तो उसने आठवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी और इस परिवार में सबसे ज़्यादा पढ़ी-लिखी थी, लेकिन घर पर किसी भी मामले में उसे अपनी धारणा रखने का कोई अधिकार नहीं था। उसे मौन रहना सीखना पड़ा। रवि का वचन ही अंतिम होता था। अनामिका कभी उसे उसके जवाब नहीं देती थी। उसने रवि को उसकी छोटी-छोटी बेटियों और उनकी माँ को बिना किसी कारण बेरहमी से मारते हुए देखा था। रवि जब बेटियों को मारता था, अनामिका उससे बात करने से पहले उसके गुस्से को ठंडा होने तक का इंतजार करने की अभ्यस्त हो गई थी।

अनामिका रवि के मारपीट से बची हुई थी। अगर रवि उस पर गुस्सा करता भी तो वह उस पर केवल चिल्लाता, मारने की धमकी देता, उसे वेश्या कहता, बस यहीं तक सीमित था। अनामिका ने उसकी बहन के साथ मित्रता करने की कोशिश की, उसे विश्वास में लेने की कोशिश की, लेकिन पहली पत्नी से कभी भी नजदीक नहीं ही पाई, मानो रवि ने सख्त हिदायत दी हो कि वह अनामिका से दूर रहे। उसकी सौतेली बेटियां, दिक्की की याद दिलाते थे, इस कारण वह उनके साथ कभी-कभार खेलती थी, ताकि वह दिल को बहला सके। रवि ने जब उन्हें झोपड़ी के बाहर उछलते-कूदते देखा, उसने अपनी कई नवेली पत्नी से कहा कि उसके पास और कोई काम नहीं, उसके बाद से वह खेलना भी बंद हो गया।

अनामिका ने पहली बार मार तब खाई थी, जब उसने रवि से एक विनती करने का साहस किया था। अगर एक बेटी को किसी दिन कम मार पड़ती थी तो इसका मतलब था कि उसकी मिजाज़ अच्छा है।

“मैं दिक्की को हमारे साथ यहाँ रखने की सोच रही थी,” अनामिका ने धीरे से कहा।

“कौन दिक्की?” कुछ समय के लिए, रवि को कोई विचार नहीं आया कि आखिर वह किसकी बात कर रही है।

“मेरी बेटी।”

“मुझसे तो कोई बच्चा नहीं है, तुम्हारा।”

बात आगे नहीं बढ़ती अगर वह चुप हो जाती।

“पहले ही हमारे घर में चार बेटियाँ हैं। और एक खाने वाले मुँह बढ़ जाने से क्या फर्क पड़ेगा? अगर उसे खिलाने के लिए मुझे काम भी करना पड़े तो भी मैं करूँगी।”

अनामिका के लिए यह कोई अमर्यादित अनुरोध नहीं था। शादी के पाँच महीने बाद भी उसने अपनी बेटी को बस एक बार देखा था।

“मैं किसी दूसरे आदमी की बेटी को अपने घर के आस-पास भी रहने नहीं दूँगा,” रवि ने कहा और फिर मानो बिजली की तरह अचानक ज़ोर से उसने अनामिका को घूसा मारा।

“सुन लिया तूने?” उसने फिर ज़ोर से उसे थप्पड़ मारा। और बालों का एक गुच्छा नोचकर निकाल दिया। “ इस रंडी ने पहले ही मुझे चार बेटियाँ दी हैं, जिनका खाना-कपड़ा मुझे देना पड़ रहा है और अब तुम किसी दूसरे की बेटी को इस घर में लाना चाहती हो। जब तुम्हें सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, मेंने तुम्हें एक घर दिया। सभी तेरे चरित्र पर सवाल खड़े करते हैं, फिर भी मैंने तुमसे शादी की और तुम इसका यह सीला दे रही हो?”

उठते हुए वह अनामिका के पेट पर ज़ोर से लात मारते हुए घोषणा करता है, “खबरदार, आज से तुम अपनी बेटी और पिता से कभी नहीं मिलेगी। और अगर तुम उनसे मिलने गई, तो तुम्हारी बेटी शादी के लायक होते ही मैं उसे अपनी तीसरी बीवी बना लूँगा।”

उसके बाद उसने अपनी चारों बेटियों को एक-एक थप्पड़ लगाया। “एक दिन तुम सभी औरतें मिलकर मुझे खत्म कर दोगी।” वह चिल्लाते हुए चला जाता है।

अगली सुबह, वह काफी शांत और शर्मिंदा था। वह ही आखरी बार था, जब अनामिका ने उससे कुछ माँगा था। उस दिन पहली पत्नी ने अनामिका को सांत्वना तक नहीं दिया। वह अपनी चोट पर खुद मालिश कर रही थी। छोटी-छोटी लड़कियाँ उससे नज़रें चुराकर उसे देख रही थीं। हमेशा के लिए कैम्प लौट जाने के बारे में सोचना भी असहनीय था। उसने भाग जाने का विचार भी दिमाग से निकाल दिया था, अगर वह भाग भी जाए ,तो जाए कहाँ? इससे तो उसका पिता मर ही जाता। फिर से वह बिना मर्द की अकेली रह जाएगी और वह इस परिस्थिति में जीना नहीं चाहती थी। कैम्प के मर्दों और औरतों की लगातार प्रताड़ना सुनने से तो अच्छा है कि घर के एक ही व्यक्ति से डर कर रहे।

जब शामभवी पैदा हुई, तब रवि ने अनामिका को अपना सामान बांधने को कहा।

“मैंने तुमसे शादी की, ताकि तुम मुझे एक बेटा दे सको,” उसने काफी नरमी से कहा। “मैं तुम सभी को नहीं पाल सकता। तूने और उस रंडी ने मुझे नपुंसक बना दिया है। पूरे पड़ोस में, मैं मज़ाक बनकर रह गया हूँ। मैंने बहुत मेहनत की है, कभी शराब को हाथ तक नहीं लगाया, तुम्हारा अच्छी तरह ख्याल रखा, कभी भी तूझे मारा-पीटा तक नहीं और उसके बदले तूने मुझे क्या दिया? एक और बोझ।”

भरी दोपहरी में पड़ोसियों के धक्के और फुसफसाहटों को नज़रअंदाज करते हुए, अनामिका हाथ में बच्ची को थामे और पीठ पर एक गठरी लादे, कैम्प लौट गई। पिता ने उससे नज़रें मिलाने से इंकार कर दिया। दिक्की ने उसे पहचाना तक नहीं। साल में रवि एक या दो बार दिख जाता और बड़ी सभ्यता से उसके पिता से कुछ पैसे माँगता और चला जाता। न उसने कभी अनामिका को देखा और न उसकी बेटी को।

सभी ने कहा कि *इंटरनेशनल इमीग्रेशन* कार्यालय में *इंटरव्यू* काफी मुश्किल होता है। कल ही एक परिवार हताश होकर लौटा था। उस परिवार का मुखिया दुखड़ा सुना रहा था कि वे *इंटरव्यू* में असफल इसलिए हुए क्योंकि अमरीकी ने उनके झूठ को पकड़ लिया था। उन्होंने भूटान अपनी सहमति से छोड़ा। शायद यह झूठ भी कह रहा था, पर अनामिका घबराई हुई थी।

विदेशी महिला उसके विषय में पूरी जानकारी चाहती थी। अनामिका को इस विगत की घड़ियों के बारे में सोचने से बहुत तकलीफ होती थी। उन यादों को उसने अपने दिमाग के किसी कोने में बंद कर रखा था और चाहती थी कि उस ताले की चाबी खो जाए। रवि ऐसे मजबूर और उदास बैठा था, मानों उसने ही वह दुःखद घटना का अनुभव किया हो। दो दिन पहले ही वह सामने आया था। उसकी पत्नी के उज्ज्वल भविष्य की खबर सुनते ही, वह झट से वहाँ पहुँच गया।

“मैं अपनी बेटी को देखने आया हूँ, अनामिका के पिता को नमस्ते करते हुए कहता है।”

“उसके पैदा होने के दस साल बाद?” वह बिना डरे कहती है। “दस साल में तो तुमने कभी इसके बारे में पूछा तक नहीं।” वह बहुत गुस्से में थी। एक पल के लिए वह भूल गयी थी कि यह वही आदमी है, जिससे वह कितना डरती थी - दुनिया में बस इसी आदमी से वह डरती थी।

“जब चाहे मैं अपनी बेटी को देख सकता हूँ।”

“वह अभी स्कूल में है। उसे तो पता भी नहीं कि तुम ज़िन्दा हो।”

“जल्द ही वह जान जाएगी।” वह आश्वस्त दिखता है।

“मुझे बहुत सारे काम करने हैं।”

“तेरा काम मुझे पता है। उस समोसे की दुकान पर जाकर उन लोगों के सामने अपने बदन का नज़ारा दिखाना है। मुझे हमेशा ही पता होना चाहिए था कि तुम एक वेश्या हो।”

“अच्छा, तो तुझे उस बिल्ली जैसी आवाज़ वाले बजिया ने बताया है? क्या तुम मुझे बताने आए हो कि मैं एक वेश्या हूँ?”

“नहीं, मैं यह पूछने आया हूँ कि इंटरव्यू कल है?”

“मुझे इसकी तैयारी करनी पड़ेगी।”

“तुम एक शरणार्थी नहीं हो। तुमने ऐसे सोच भी कैसे लिया कि हम तुम्हें वहाँ अपने साथ ले जाएँगे?”

“इसमें सोचने वाली क्या बात है। मैं तुम्हारा पति हूँ और मैं अमरीका जाऊँगा। मैं एक बार फिर तुमसे एक बेटे के लिए कोशिश करना चाहता हूँ।”

“तीसरी बीवी से भी यह काम नहीं हो पाया, है न?”

“ज़रूर तूने ही श्राप होगा।”

“शायद सारी समस्या की जड़ तुम्हारी ....।” अनामिका उसके चेहरे को देखती है और अपनी बात आधे में ही टाल देती है।

“अगर मुझे इंटरव्यू में जाने नहीं दोगी, तो मैं उस कार्यालय के लोगों को तुम्हारे चाल-चलन के बारे में बता दूँगा। तुम्हारे बुरे चरित्र के बारे में। इतने खोट के बावजूद भी कम-से-कम मैंने तो तुझसे शादी की। जिसके चलते मुझे भी जाने का अधिकार है। वरना, मैं उन्हें बता दूँगा कि तुम मेरी बेटियों के साथ कितना बुरा बर्ताव करती हो। मैंने सुना है कि अमरीकी लोग बच्चों के प्रति हिंसा को बड़ी गंभीरता से लेते हैं। किसी भी चीज़ का समाधान हिंसा नहीं है। पर शायद भटकी महिला को अनुशासित करने के लिए ज़रूरत पड़े।”

“क्या तुम मुझे धमकी दे रहे हो?”

“नहीं, मैं धमकी नहीं दे रहा। मैंने एक भूटानी शरणार्थी से शादी की है, जिसे अमरीका जाने को मिल रहा है। पति होने के नाते, मैं भी जाऊँगा। वरणा वे सब जान जाएँगे। मैं उन्हें सब बता दूँगा।”

“तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?”

“सीधी बात है। मैं अपने परिवार के साथ बैठना चाहता हूँ।” वह हँस पड़ा। “अमेरिका जाने से शायद मुझे एक बेटा भी मिल जाए, जो मेरे वंश का नाम आगे बढ़ा सके।”

अनामिका अपने पिता को देखती है और रवि, अनामिका को देखता है। वह रवि को इंटरव्यू का समय बता देती है।

आईएमओ के दफ्तर में, उसके पिता को ज़्यादा उकसाने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

“हम मूल नेपाली लोग मूर्ख थे, महामूर्ख,” उसने सब बक दिया।

गोरी महिला ने नीचे कुछ फटाफट लिखा। किसी विदेशी अखबार की अफ्रीकी नस्ल की अमरीकी पत्रकार भी थी। वह भी कुछ लिखे जा रही थी। अगर कुछ समझने में मुश्किल होती तो वह उस गोरी महिला को अनुवाद करने को कहती। कल ही *डाक्यूमेंट्री* फिल्म निर्माता ने अनामिका का *इंटरव्यू* लेने की कोशिश की थी। ऐसा लग रहा है, मानो सारा संसार अचानक उसके जीवन में रूचि ले रहा है। आखिरकार, शायद वह, इस महिला को अपने अतीत के बारे में बता सके।"

"हम नेपाली लोग नाराज़ थे, क्योंकि हमें घो और किरा[85] पहनना था। खैनी के कारण उसके पिता के दांत में धब्बे ही धब्बे थे। "मुझे देखिए, इससे क्यों यह किसी को समस्या हो सकती है? भारत में लोग पश्चिमी पोशाक पहनते हैं। क्या इससे किसी को कोई समस्या हुई? हम भूटान में रहते थे और दाऊरा-सरूवाल[86] उनका राष्ट्रीय पोशक नहीं है। हमें थोड़ा समझौता करना चाहिए था।"

"अच्छा, तो तुम्हें लगता है कि यह विद्रोह कई कारणों से मूल नेपाली लोगों की गलती का नतीजा है?" गोरी महिला सहज नेपाली में पूछती है।

"बिल्कुल।" वह अपनी खैनी को थूकने के लिए इधर-उधर देखने लगता है। "मुझे देखो - मेंने छठी कक्षा के बाद पढ़ना छोड़ दिया था। भूटान सरकार ने मुझे दो-दो बार तालिम लेने जापान भेजा। पदोन्नति भी मेरा समय पर हो गया। उस दफ्तर के मेरे साहब आज भी मेरा ध्यान रखते हैं।"

"हाँ, हाँ, हमें किसी चीज़ की आवश्यकता तो नहीं, वे हमसे पूछते हैं," रवि ने कहा।

गोरी महिला ने अनामिका की ओर देखा। अनामिका ने सहमति में सिर हिलाया। पदोन्नति के बारे में उसका पिता सच कह रहा था, लेकिन उसे पता नहीं था कि इसके पिता के साहब अब भी संपर्क में हैं।

उसके पिता ने आगे कहा, "वे चाहते थे कि हम ज़ोखा सीखे। इसमें दिक्कत क्या थी? अगर डुकपा लोग, नेपाल में बसते, तो उन्हें भी नेपाली सीखनी पड़ती। हम लोग मूर्ख हैं। हमें हर बात पर खुकुरी निकालकर चढ़ जाना अच्छा लगता है। अगर हमने अपना दिमाग लगाया होता, तो ऐसी नौबत ही न आती।

महिला पहले अनामिका को देखती और फिर रवि को देखती है। रवि की गोद में शामभवी बेचैन हो रही थी। "दुख ही दुख" रवि ने कहा।

रवि कुछ अनाब-शनाब न कह दे, यह सोच कर अनामिका परेशान हो गई। "मुझे भूटान वापस नहीं लौटना," अनामिका ने कहा। "न ही सौ वर्षों में, न ही मेरे जीते जी। उस देश ने हमारे साथ जानवरों से भी बद्तर व्यवहार किया है। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि किसी विदेश में पुनर्वास करते समय कई

---

[85] भूटान का पारंपरिक पोशाक

[86] नेपाली पुरुषों का पारंपरिक पोशाक

समस्याएँ आती हैं, पर जो भी हो जाए मैं सब कुछ सीख लूँगी।" वह सोचने लगी, क्या वह अपने चरित्र की कहानी बता दे? उन्हें बाद में पता चलने पर क्या होगा? अमेरिका जाने के लिए चुने गए शरणार्थियों की सूची से ही कहीं उसका नाम तो नहीं हटा देंगे?

"इसी लिए तो हम यह इंटरव्यू लेते हैं।"

"मैं अपनी बेटियों को ऐसे देश में बड़ा करना चाहती हूँ, जहाँ उन्हें आश्वासन हो कि दुबारा उन्हें देश से निकाल खदेड़ा नहीं जाएगा।"

रवि ने बीच में बात काट दी। "क्या अमेरिका भी हमें, भूटान की तरह जाने को कह सकता है?" यह पूछते वक्त, उसने अनामिका की ओर देखा।

"नहीं, पुनर्वास के लिए कम-से-कम तुम्हें छः महीने लग जाएँगे और एक साल के अंदर तुम्हें स्थायी निवास का ग्रीन कार्ड मिल जाएगा। उसके पाँच साल बाद तुम नागरिकता के लिए आवेदन दे सकते हो।"

"क्या हम जब चाहे देश छोड़कर-वापस लौट सकते हैं?" यह उसके पिता ने पूछा।

"जी, आप लोग किसी भी अन्य अमरीकी की तरह स्वतंत्र हो जाएँगे," वह हँसती है। "लेकिन रखना कि हवाई जहाज की टिकट बहुत महँगी है।"

"क्या हम भूटान जा सकते हैं?" रवि ने पूछा।

अनामिका ने अपनी पैर की बूढ़ी उंगली को ज़मीन पर घिसना शुरू कर दिया। यह आदमी बनता काम बिगाड़ने वाला था

"अगर भूटान दूतावास तुम्हें विज़ा दे तो जा सकते हो।

उसका पिता यह सुनते ही बेहोश होने वाला था। "दुनिया में यह क्या हो रहा है? अपने ही देश में जाने के लिए अनुमति चाहिए।"

"ऐसी स्थिति से तो वहीं अच्छा है," रवि ने कहा। "विज़ा हो या न हो, अभी तो हमें जाने नहीं दिया जाता।"

उसकी बात को सुनकर उसके ससुर को थोड़ी शांति मिली। "फिर भूटान में हमारी ज़मीन-जायदाद का क्या होगा?" रवि ने पूछा।

"उस पर हमारा कोई बस नहीं," गोरी महिला ने कहा। "अंतर्राष्ट्रीय समुदाय भूटान पर जोर डालता रहेगा, जब तक वे स्वदेश-वापसी का एक समाधान न निकाल लें। आखिरकार सबकुछ भूटान पर निर्भर करता है।"

"अमेरिका में हम जहाँ बसने वाले हैं, उस शहर में दूसरे भूटानी लोग भी होंगे?" उसे डर था कि अगर शहर के किसी भूटानी ने अमेरिकी पुलिस को उसके अतीत के बारे में बता दिया तो क्या होगा?

"हाँ, होंगे। अगर तुम अपने रिश्तेदारों के साथ एक ही शहर में रहना चाहती हो, तो शायद हम उसका भी इंतज़ाम कर सकते हैं।"

"नहीं, नहीं शहर में अकेली भूटानी होने पर भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" इस तरह उसकी कहानी अमेरीकी प्रशासन से सुरक्षित रहेगी।

"शुरूआत में स्वयंसेवी संगठन तुम लोगों को ज़रूरतों का ख़्याल रखेंगे। वही संगठन, आपके लिए उपयुक्त नौकरी भी ढूंढ़ने में मदद करेंगे।"

अनामिका को यह विचार बहुत अच्छा लगा कि वह दुबारा परिवार के लिए एक उपयोगी सदस्य बनेगी। गोरी महिला ने कहा था कि कुछ महीने बाद उसे किसी पर भी रोजी-रोटी के लिए निर्भर होना नहीं पड़ेगा। अब अपने अंदर दबाकर रखी बात को बाहर निकालने का सही समय था। और जो करना है उसे अभी करना था।

"अगर हममें से किसी का चाल-चलन सही न होने पर कोई समस्या होगी?" हिचकिचाते हुए अनामिका ने पूछा।

"मैं समझी नहीं," गोरी महिला ने कहा।

"मैं उसका दूसरा पति हूँ," रवि ने झट से जवाब दिया।

रवि आगे कुछ और भी कहना चाहता था, मगर अनामिका ने टेबल के नीचे से एक घूसा मारा। उसने भी अनामिका के हाथ पर थप्पड़ लगाकर दूर हटा दिया। गोरी महिला का इस पर ध्यान ज़रूर गया होगा।

"अनामिका, तुम्हारे कितने पति हैं, उससे हमें कोई सरोकार नहीं है," गोरी महिला ने कहा। "तुम्हारे व्यक्तिगत जीवन में तुम क्या करती हो, इससे हमें कोई मतलब नहीं।"

रवि खड़ा हो गया। अनामिका ने अपनी बाईं हाथ के नाखून को दाएँ हथेली में गढ़ दिया। "यह वहाँ क्या पहनेगी?" उसने पूछा। "अमेरिका जाने के बाद क्या इसे भी पैंट पहनना पड़ेगा?"

"वह जो चाहे पहन सकती है। अमेरिका एक स्वतंत्र देश है।"

“मैं चाहता हूँ, कि वह ऐसे कपड़े पहने,” इसे स्पष्ट करते हुए कहा।

रवि जब बात को आखिकार समाप्त करता है, तब अनामिका एक लम्बी साँस भरती है।

उस पत्रकार ने रवि के साथ उसके परिवार की तस्वीर खिंचने की अनुमति माँगी। “बस आप चारों की। माता-पिता और बच्चियाँ,” पत्रकार ने हाथ ऊपर कर चार उंगलियाँ दिखाई। अंगूठा को नीचे करते हुए कहा।

उसने दिक्की और शाम्भवी को काठ के बेंच पर बैठने का इशारा किया। रवि और अनामिका को उनके पीछे खड़ा कर दिया।

“क्या मेरे लिए आप सभी एक बार मुस्कुरा देंगे?” उसने किसी को समझ में न आने वाली भाषा में कहा।

“हँसने को कह रही है,” गोरी महिला ने अनुवाद किया।

“कितना खूबसूरत परिवार है और कितनी सुंदर तस्वी,” पत्रकार ने नेपाली में कहा। “धन्यवाद अनामिका अनामिका।”

*****

गोर्खा की छोरी

गीता और मैंने अपने इकट्ठा हुए रसोईघर के खिलौनों के बारे में, अगले दिन से ही स्कूल में दूसरी लड़कियों के सामने यह कहकर डींगें हांकना शुरू कर दिया था कि काठमांडू में किसी भी नौ साल की लड़की के पास हमारे से बड़ा भाड़ा-कुटी[87] का सामान नहीं था। हमारे पास स्टील और प्लास्टिक के बर्तन, गिलास का एक सेट और सोने का रंग चढ़ाया हुआ बर्तन भी था, जिसमें हमने गुरूँग बड़ा[88] और आपा[89] के हाँगकाँग से भेजे हुए बर्तनों को तो जोड़ा भी नहीं था। इसके अलाव आमा[90] ने खुशी-खुशी अपने रसोईघर से कुछ असली थालियाँ भी लाकर दे दी थीं। इनमें से काँच वाला सेट हम अपने खास काल्पनिक मेहमानों के लिए इस्तेमाल करते थे।

उस दिन, वह खास मेहमान हमारे गोर्खा पिता थे। जिसमें बाप-बेटी की भूमिका हम ही निभा रहे थे। इस भूमिका के लिए गीता ने नाटक सिखाने वाले गुरूजी के दराज़ से दो नकली मूँछे भी चुरा ली थी।

अभिनय में समाने के लिए हमने वह मूँछें लगा ली थी और गीता ने तो एक काली टोपी भी पहन ली थी। वैसे तो गुरूँग बड़ा कभी टोपी पहनते नहीं थे, पर गीता ने अपनी इच्छानुसार वेशभूषा में थोड़ा फेर बदल कर लिया था। उसके होंठों के बीच रखी हुई बच्चों की मीठी फैंटम नामक सिगरेट का हमारे पिताओं से कोई लेना-देना नहीं था, क्योंकि दोनों में से कोई सिगरेट नहीं पीता था। पर फिर भी मुझे बुरा नहीं लगा, क्योंकि उसने मुझे भी एक फैंटम मिठाई दे दी थी, जिसे मैंने कान के ऊपर अटका लिया था।

“बुड़ी[91], मुझे थोड़ी शराब दो।” अपने पिता की भूमिका निभाते हुए गीता पीछे मुड़ती है। फिर खुद का नाम लेकर कहती है, “और गीता, उस टेप रिकॉर्डर को बंद कर दे। यहाँ तुम्हारे आपा और बड़ा बातें कर रहे हैं।”

“ठीक है, आपा,” गीता अपनी मूँछे निकालते हुए विनम्र आवाज़ में कहती है।

“हम उनके लिए मारने वाली मशीनों के सिवाय और कुछ नहीं हैं,” गीता दुबारा मूँछे लगाकर गुस्से में कहती है। “वे अभी-भी हमारे साथ कुत्तों जैसा व्यवहार ही करते हैं।”

---

[87] रसोईघर का खिलौना

[88] ताऊ

[89] पिता

[90] माँ

[91] पत्नी

"नम्बरी[92], गुस्सा मत करो।" बोलने के लिए कुछ न समझ आते हुए, मैंने कहा।

"इतने साल तक उनकी नौकरी की है, पर क्या भविष्य में वह हमारा ख्याल रखेंगे?" गीता ने गुस्से में कहा, "नहीं, बल्कि पुराने जूते और मौज़े की तरह हमें फेक देंगे। जो पेंशन मिलेगी, वह भी किसी काम की नहीं होगी। ऐसा कैसे है कि बाकी सारे ब्रिटिश आर्मी के रेजिमेंट्स को अच्छा-खासा पेंशन मिलता है? बस हम ही 'वीर गोर्खा' हैं, जिनको दूसरों के मुकाबले पांच गुना कम पेंशन मिलता है। वाह क्या बहादुरी है! इसे बहादुरी नहीं, बेवकूफी कहते हैं।"

"अरे! नम्बरी। अपने आपको भाग्यशाली समझ," मैंने गिरती हुई मूँछों को अंगूठे से संभालते हुए कहा, "अगर यहाँ भर्ती न होते तो, तो पुलिस में जाना पड़ता, जिसमें और कुछ नहीं मिलता। इस देश में करने को और रखा ही क्या है? हम नसीबवाले थे, जो समय रहते वहाँ से निकल गए।"

"और वह मेकफेरन चूतिया", छोटी गिलास से घट-घट पानी पीकर ज़ोर से गिलास को जमीन पर पटकते हुए गीता बोली। "उसने मुझे शराब कम पीने के लिए कहा है, जैसे कि मैं उसके बाप की शराब पी रहा हूँ। और वह बेवकूफ टोमी एटकीन्स हमको अपने से नीचे समझता है। मैंने कभी कोई तमाशा खड़ा नहीं किया, किया है क्या? मैंने कभी किसी के साथ लड़ाई भी नहीं की। मैं शांति से पीने वाला आदमी हूँ। लेकिन उस गोरे हरामखोर को ऐसा नहीं लगता। और मैं इस चीज़ से परेशान हो चुका हूँ।"

"जरा सोच, नम्बरी!" मैं अच्छा अभिनय नहीं कर रही थी और मेरी भूमिका भी काफ़ी कम थी, यह जानते हुए भी मैंने कहा, "हमारी बेटियाँ अच्छी अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ रही हैं। हमारी बीवियाँ ठाठ-बाठ से जी रही हैं।"

"मुझे लगता है मैं पहला गोर्खा हूँ, जिसका कोर्ट मार्शल होगा, क्योंकि मेकफेरन को मेरी शराब पीने की आदत नहीं पसंद।" गीता अब अपनी फैंटम वाली सिगरेट चबा रही थी। "साला अंग्रेज़ कही का।"

"कहता है, वह आइरिश है।"

"अंग्रेज़ हो, आइरिश हो, स्कोटिश हो – जो भी हो इसकी किसको परवाह है?" अपनी खयाली शराब पीते हुए वह बोली। "मेरे लिए तो ये सभी बराबर है। सभी को नियमित पेंशन मिलता है, जो हमसे पाँच गुना है। बस हम ही हैं, जो उनसे छोटे हैं। हम बहादुर गोर्खा।"

"आमा, मुझे भूख लगी है," मूँछे निकालते हुए मैंने कहा।

---

92 फ़ौज में मित्र एक-दूसरे के लिए नम्बरी शब्द का प्रयोग करते हैं।

"हाँ, बुड़ी, भूख तो मुझे भी लगी है," गीता बोली, उसकी मूँछे अभी तक उसकी मुँह पर चपकी हुई थी। "हाँ गोर्खा, हमें खाना खिला, हम बहादुर लोगों और उनके परिवारों को, क्योंकि जिस हिसाब से हमें पेंशन मिलेगी, उसमें तो हम कुछ सालों में भुखमरी से मर ही रहे होंगे।"

"आयो बीर गोर्खाली[93]," हू-ब-हू गुरूड़ बड़ा की आवाज़ में गीता ने गाना शुरू किया। यह ऐसा गीत था, जिसे हम दोनों के पिता ने हमें सिखाया था। कभी-कभी तो हमारी माएँ भी लोरी के रूप में इसे गया करती थी। मैं भी गीता के संग गाने लगी, जो मूँछें लगाकर अपने पिता की आवाज़ में गाती थी और मूँछें निकालकर अपनी। मैंने भी उसी की तरह गाने की कोशिश की, पर मेरी दोनों आवाज़ एक सी लग रही थी।

गीता के सिगरेट का अब बस नीचला गुलाबी हिस्सा ही बचा था।

"ये लो," मेरी मिठाई को आधा करते हुए मैंने कहा। "थोड़ा मेरे से खा सकती हो।"

उसने आधे को और आधा काटा।

"बहुत स्वादिष्ट है," उसने कहा।

"पता है," मूँछे लगाकर अपनी भूमिका में लौटते हुए मैंने कहा, "चलो सभी मिलकर साथ खाना खाते हैं, घर के खाने की बात ही कुछ और है। नम्बरी, हम दोनों के परिवार काफ़ी समय के बाद साथ में एक छत के नीचे हैं।"

"हाँ," नीरसता से गीता कहती है।

उसकी रूचि बरक़रार रखने के लिए मुझे कोई नए किरदार के बारे में सोचना पड़ेगा ।

"चलो नुकीले नाक वाले ज्योतिषी को बुलाओ," मैंने कहा। "बुलाओ ताकि हम सभी उसके कान को ढकते हुए सफ़ेद बालो को देख सके।"

गीता कहीं से ऊन के दो टुकड़े निकल लाई। उन पर थूक लगाकर उसने अपने दोनों कान के पास एक-एक चिपका लिया। मुझे परसों नुकीली नाक वाले ज्योतिषी के द्वारा कहे गए शब्दों को दोहराने की कोशिश करनी थी। पर उनमें से कुछ चीज़ें हैं, जिसके लिए आमा-आपा ने मुझे सख्त चेतावनी दी थी, जिसे मैं गीता को भी नहीं बता सकती थी, खासकर गीता को।

नुकीले नाक वाले ज्योतिषी ने पहले मेरी ओर देखा, फिर दुबारा मेरी जन्म कुण्डली को देखने के बाद, उसकी आँखें छत को घूरने लगी। छत के किनारों में से लोहे के छड़ियाँ बाहर की ओर निकली हुई थी।

---

[93] वीर गोर्खा के लिए यह वाक्य कहा जाता है

आपा का सपना है कि ब्रिटिश फौज से निवृत्ति लेने से पहले वह हमारे एक मंजिल वाले घर को बहुमंजिला बना ले।

"नानी[94], ये लो अमरूद खाओ और खेलने जाओ," ज्योतिषी ने मुझसे कहा था।

मैंने छोटी, हरी और सख्त वाली अमरूद ले ली और चुपचाप बैठ गई। उनके आदेश की कोई एहमियत नहीं थी। उनका आदेश भी उनकी आवाज़ की तरह कमज़ोर था, जैसे की जल्द ही मुझे मेरी जन्मकुंडली के बारे में भी पता लगने वाला था।

"अच्छा नहीं है," उन्होंने आपा से कहा। "इसकी कुण्डली में एक दोष है। एक प्रकार का कालसर्प दोष। आने वाले कुछ वर्षों तक वह आपके लिए दुर्भाग्य मात्र लाएगी।"

आपा ने गुस्से से अपनी भौंहें उस तरह से सिकोड़ी, जैसा मेरे यह पूछने पर सिकोड़ते थे कि जब भी वे काठमांडू आते हैं, तो रात को आमा के बिस्तर में क्यों सोते हैं और खासकर माँ के बगल में क्यों सो जाते हैं? हांगकांग से छुट्टियों के लिए आपा जब से लौटे हैं, उनको ज्योतिषयों ने यह पुष्टि कर दी थी कि मेरी जन्मकुण्डली में साफ-साफ लिखा है कि मैं बदकिस्मत हूँ। जब तक, मैं पंद्रह साल की न हो जाऊँ, हमारा घर का निर्माण पूरा नहीं होगा। यह भी कहा कि मेरा दुर्घटना योग है और माँगलिक दोष भी अर्थात् मेरे लिए वर ढूँढ़ना भी मुश्किल होगा।

"दुभाग्य?" आपा ने कहा। "क्या दुर्भाग्य? इसके जन्म के बाद ही मैं यह ज़मीन का एक टुकड़ा खरीद पाया हूँ, इसके जन्म के बाद ही, यह घर बनाना शुरू हुआ। इसके जन्म के बाद ही वह हरामी ब्रिटिश कप्तान मेरे साथ इंसानों की तरह व्यवहार करने लगा।"

"यह सभी बातें सच हो सकती हैं, परन्तु आने वाले कुछ साल कठिन होंगे।" पुजारी जी ने भौंहें सिकोड़ते हुए कहा। जिस कारण उनके माथे पर छः समानांतर रेखाएँ बन गई। "देखिए, अभी तो यह बस नौ साल की है। दोष समाप्त होने के बावजूद अगले पाँच- छः सालों तक चीज़ें ऐसी ही रहेंगी। देखिए, मैं दूसरे ज्योतिषियों की तरह आपको पूजा-अर्चना करने वाला सुझाव दे सकता हूँ, पर मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

आमा अपने बैंगनी साड़ी के आँचल के साथ खेलने लगी, जिससे वह घर में विशेष समारोह पर पहनती थी। जब वह बाहर जाती तो वह चमकीली और खूबसूरत रेशम की साड़ी पहनती है, लेकिन घर पर अधिकतर यही बैंगनी रंग की साड़ी और बंगनी रंग की चोली ही पहनती थी। ऊपर से नीचे तक बैंगनी रंग पहनने से, चोली में छोटी सी फटी हुई जगह छुप जाती थी या कम-से-कम उस पर लोगों का ध्यान नहीं जाता था।

---

[94] गुड़िया

"तो इसका उपाय क्या है, पंडित जी?" आमा ने पूछा। "मैं मनकामना से लकर पशुपतिनाथ जा चुकी हूँ। आप मुझे और मंदिरों के बारे में बताएँगे, तो मैं वहाँ भी चली जाऊँगी।"

मैंने अपने अमरूद का एक टुकड़ा काटा जिसमें कुछ खास स्वाद नहीं था। मुझे उसे फैकने का विचार आया, पर मैंने घर में धार्मिक माहौल के कारण अपने आप को ऐसा करने से रोक लिया। पंडित ने मेरी कुंडली खोलने से पहले कपड़ा बिछाकर उसके ऊपर चावल बिखेर दिए थे, जिससे मुझे अमरुद के पावन होने का सबूत मिल गया था। फल को मुट्ठी में दबोचते हुए, मैं नुकीली नाक वाले ज्योतिषी के कान से बाहर निकल रहे सफेद बालों पर अपना ध्यान केन्द्रित करने लगी।

"मैं भगवान की तुष्टि के लिए पूजा-पाठ में विश्वास नहीं करता," ज्योतिष ने बात को खारिज करते हुए कहा, "हम इसके दुर्भाग्य को किसी दूसरे के पल्ले डाल सकते हैं, विशेषतः उसके उम्र की लड़की पर। क्या आपकी नज़र में कोई है, जिसके साथ आप इसका मेतिरी अनुष्ठान कर सकें? इस अनुष्ठान के करने से थोड़ा-बहुत बदलाव आ सकता है। पर ऐसे दोष को दूर करने के लिए हम ज़्यादा कुछ नहीं कर सकते। मैं उन ज्योतिषयों में से नहीं हूँ, जो यह मानते हैं कि एक इंसान की किस्मत धार्मिक क्रियाओं के करने से बदला जा सकता है, परंतु हम इस अनुष्ठान को कर सकते हैं। पहले भी मैंने यह अनुष्ठान एकाध बार किया है और अधिकतर सफल ही हुए हैं।"

आपा अब भी नाराज़ थे, उन्होंने आमा से ज्योतिषि के लिए पहले तैयार रखा गया, लाल रंग का लिफाफा मंगवाया। लिफाफे के अंदर और एक नया कड़क पचास रुपए का नोट डाल दिया और नुकीली नाक वाले ज्योतिषी से कहा कि जल्द ही वह उनसे इस बारे में मिलेंगे।

"हांगकांग लौटने से पहले ही, मैं इस समस्या को हल करना चाहता हूँ।" उन्होंने कहा - गल्फ युद्ध के बाद से अब तक मैं किसी भी खतरे में नहीं पड़ा हूँ। लेकिन भगवान जाने वे मुझे किसी भी युद्ध में दुबारा भेज दें। आखिरकार वे अंग्रेज़ हैं। अब तो शायद मैं काठमांडू बहुत अरसे के बाद ही आ पाऊँगा। धन्यवाद पंडित जी। वैसे तो हमने दावत रखा है, लेकिन हम ठहरे मगर[95] हमारे द्वारा तैयार किया गया खाना, आप नहीं खा पाएँगे।"

"मैं नए ज़माने का पंडित हूँ।" ज्योतिष गर्व से मुस्कुराता है। "मैं अपने साथी पंडितों की तरह जाति के आधार पर भेदभाव नहीं करता। जब तक माँस-मच्छी न पकाए, मैं सब कुछ खा लेता हूँ।"

आपा और आमा ने उन्हें इतनी बड़ी मुस्कान दी कि मुझे आपा की मसूड़े दिख गई और आमा की सोने की दाँत तक दिख गई।

"ठीक है, फिर मैं नीचे जाकर जल्दी से बंदोबस्त करती हूँ," आमा ने कहा। "घर पर जब हम पंडित को आमंत्रित करते हैं, तब माँस नहीं पकाते।"

---

[95] जनजाति

"ठीक है, चलो तब तक मुझे घर जितना भी बना है, वह दिखाओ," ज्योतिष ने कहा। "आओ छोटी बदकिस्मत लड़की। तुम्हारे जीवन को बदलने के उपाय सोचने से पहले थोड़ी पेटपूजा कर लें।"

मैं उठ खड़ी हुई, मेरी मुट्ठी में अभी भी अमरूद था और मैं इंतजार करने लगी कि कब आपा और ज्योतिषी जी नीचे जाएँ। अपनी पूरी ताकत से मैंने अमरूद को सड़क पर उसी तरह फेका जैसे मैंने टीवी पर क्रिकेटर को करते हुए देखा था। सड़क बिल्कुल हमारे छत के बराबर थी, जिसके चलते एक साईकिल सवार एक आदमी को अमरुद जा लगा। उसने गुस्से से मेरी ओर अपना हाथ उठाया। मैंने भी उसकी ओर हाथ हिलाया और हँसने लगी। इस किस्से को सुनकर गीता ज़रूर हँस पड़ेगी। शायद वह सुझाव देगी कि हमारे अपूर्ण घर के आंगन में झरे-गिरे हुए सारे अमरूद इकट्ठा कर, रास्ते से गुज़रने वाले हर इंसानों पर निशाना साधेगी। यह हमारा एक और गुप्त राज़ हो सकता है।

उस नुकीली नाक वाले ज्योतिष को अगर भविष्यवाणी करना आता है, तो मैं सोचती हूँ कि क्या उन्हें मेरे रहस्यों के बारे में भी जानकारी होगी। आमा से जुड़ा हुआ एक राज़ तो गीता, उसकी माँ और मेरी माँ को भी पता थी। और सबसे बड़ा राज़ सिर्फ गीता को पता था? इस बारे में पूछने पर कहीं पंडित को शक न हो जाए। शायद मुझे गीता से पहले सलाह ले लेनी चाहिए।

गीता का रंग गोरा था और वह साफ़-सुथरी भी थी। यहाँ तक कि रात को सोने से पहले दाँत साफ करने के बाद मैक्सी भी पहनती थी। और दौड़ने में भी हम सबसे तेज़ थी। वह लड़कों से भी अच्छा पीट्टू खेलती थी और ज्यादातर प्लास्टिक गेंद से छोटी-छोटी पत्थर की पटियों से बनी मीनार को दूर से ही गिरा देती थी, जिसके चलते हमेशा उसे लड़के अपनी टोली में रखना चाहते थे। गीता, गुरुड़ ताऊजी की बेटी थी। गुरुड़ बड़ा, फौज से ही आपा के करीबी दोस्त थे। गुरूड़ बड़ी और आमा दावा करते थे कि वे दोनों रिश्तेदार हैं, लेकिन आपा ने कई बार इस बात को नकारा था।

"ये दार्जिलिंग की औरतें किसी को भी अपना रिश्तेदार बनाने के लिए आतुर रहती हैं। यह नहीं देखती की कौन किस जाति है," उन्होंने कुछ ही दिन पहले कहा था। "कल तुम्हारी माँ मेरे साथ भी खून का रिश्ता ढूँढ़ने लगेगी। वह गीता जैसी शैतान लड़की के साथ कोई खून का रिश्ता निकालने का सोच भी कैसे सकती हैं?"

अपनी जिगरी दोस्त की शैतान वाली बात के बचाव में मैंने एक शब्द भी नहीं कहा। बल्कि एक दिन पहले मैंने और उसने मिलकर जो बदमाशी की थी उसी के बारे में सोचने लग गई थी। अब एक बहुत ही बड़ा रहस्य था। बहुत ही गोपनीय। आपा को जब यह राज़ पता चलेगा तो क्या वह गुस्सा करेंगे? आमा तो डर ही जाएगी। आमा ने मुझे अनगिनत बार चेतावनी दी थी कि दूसरे का झूठा न खाऊ, वरना पूरे चेहरे में फोड़ा निकल जाएगा। यह बात तो दुबारा तले हुए समोसे से भी गंदी थी। माँ मेरे दोंनो कान खींच लेंगी। और गीता की माँ को भी जाकर शिकायत कर देंगी। गुरूड़ बड़ी कभी-कभार अपनी खास एक बेत से गीता को मारती थी, जिसके निशान कई दिनों तक रह जाता था। लेकिन आमा

और गुरूड़ बड़ी को इस राज़ के बारे में भनक भी नहीं थी। यह हमारा एक बड़ा राज़ था और यह कोई नहीं जान पाएगा।

सर्दी की छुट्टियों के बाद स्कूल के पहले दिन यह घटना घटी थी। हमारे नापसंद स्कूल रिब्स से गीता और मैं एक साथ मेरे घर लौट रहे थे। हमारे आठ साल के होते ही हमारी माँ ने हमें स्कूल से अकेले आने-जाने की अनुमति दे दी थी। जब भी आपा देश लौटे थी, उस समय आमा का घर पर होने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। लौटे वक्त रास्ते के पास वाले दुकानदार से घर की चाबी ली और घर पर टेबल में रखे हुए ठंडे खाने की ओर लपके।

गीता ने टेबल पर कटोरी को देखने के बाद दरवाज़े में लगे हरे रंग को छूते हुए चिल्लाई, "मैं हरा रंग चुनती हूँ।"

अगर उसने पहले हरे रंग छुआ नहीं होता, तो मैं उसे अपनी हथेली दिखाती, जहाँ मैं रोज़ हरा रंग लगाया करती। ताकि कभी ऐसे हालत आ जाएँ, जहाँ वह रंग पहुँच के बाहर हो तो मैं पहला रंग हरा चिल्ला सकती थी। जीतने वाले को रा-रा दो हिस्सों में बाँटने का मौका मिलता था। गीता ने अभी तक हरा रंग पहनने की चाल या हथेली में हरा रंग लगाने की कला नहीं सीखी थी, फिर भी अब तक वह लगातार इस खेल में जीतती आई थी।

हार से निराश होकर मैंने स्टूल को ताक की ओर खींचा, जहाँ पर प्लास्टिक की कटौरियाँ और गिलास रखे हुए थे। मैंने एक कटोरी खंगाली और मैंने रा-रा का सूप, अपनी कटोरी से गीता की कटोरी में ध्यान से डाला। क्योंकि आमा बिल्कुल भी टेबल पर गंदगी बर्दाश्त नहीं करती। आमा ने कटोरी के पास चम्मच उल्टी रखी थी। फिर उस चम्मच पर घुमावदार नूडल्स चम्मच में रखें और दूसरे कटोरी में डालती गई। गीता मुझ पर कड़ी निगरानी रखती है, ताकि कहीं मैं चुपके से एक चम्मच नूडल्स उससे ज़्यादा न ले लूँ। मैं इसी तरह नूडल्स बाँटती रही, फिर एक कदम पीछे लेकर मैंने दोनों कटोरी को जाँचा।

आमा ने मेरे लिए जो कटोरी रखी थी, अब उसमें दूसरी कटोरी से कम नूडल दिख रही थी, इसलिए मैंने अपने अंगूठे और तर्जनी उंगली की मदद से कुछ नूडल प्लास्टिक की कटोरी से स्टील की कटोरी में डाली। दोनों कटोरी में जब बराबर नूडल्स होने का आश्वासन मिल गया, उसके बाद मैंने अपने अंगूठे को उठाकर गीता को काम हो जाने का इशारा किया।

गीता ने एक कटोरी दाएँ हाथ में रखी और बाएँ हाथ में दूसरी कटोरी रखकर, दोनों का वज़न तोलने लगी। उसने सीधे स्टील की कटोरी उठाई। वैसे तो आमा ने हिदायत दी थी कि स्टील की कटोरी मेहमानों के लिए नहीं है। चाहे वह बदतमीज गीता ही क्यों न हो। जबकि मैंने प्लास्टिक की कटोरी इस्तेमाल किया, जो सिर्फ मेहमानों के लिए थी।

पर ये भी हमारा कोई बड़ा राज़ नहीं था।

सूप को पीने और कटोरी को जीभ से जितना हो सके चाटने के बाद, गीता को एक विचार आया।

“क्या हम सबसे अच्छी सहेली हैं?” उसकी सुंदर नीली आँखें चमक उठीं।

“बिल्कुल हैं।”

“तो चलो, उसे साबित करने के लिए एक छोटा-सा कार्यक्रम करते हैं।”

“कैसा कार्यक्रम?” मैं उत्सुक थी। आखिर यह गीता की योजना थी।

“हम एक-दूसरे की कटोरी में तब तक थूकते रहेंगे, जब तक वह भर न जाए। जब कटोरी भर जाएगी, तब हम एक-दूसरे की कटोरी से थूक पी जाएँगे। ऐसा करने से हम एक-दूसरे के हो जाएँगे और वास्तव में गहरी सहेलियाँ बन जाएँगी।”

काम मुश्किल था, पर हमने ठान लिया था। पेट के अंदर से, फिर गले से होते हुए, मैंने जीभ के नीचे से थूक निकाली। मुश्किल होते हुए भी गीता ने पहले ही मुझसे ज़्यादा थूक जमा कर ली थी। मुझे मेरा जबड़ा अजीब सा लगना लगा था, मेरी जीभ मेरा साथ नहीं दे रही थी। जिस दिन स्कूल नहीं होता था, उस दिन बिना दाँत माँझे मुझे जैसा लगता था, उस वक्त मुझे वैसा लग रहा था। मैं खाँसने लगी थी और दम भी घुटने लगा था।

“मुझे लगता है, रा-रा मेरे पेट से बाहर आना चाहता है,” गीता कहीं मुझे कमजोर न समझ ले, इसलिए डरते हुए मैंने कहा।

“ठीक है, फिर इतना ही काफ़ी है।” कटोरी में थूक कितनी भरी है, यह जानने के लिए उसने अपनी छोटी ऊँगली थूक के समुंदर में डाली। “ये लो, तुम ये पीयो, मैं वह पीती हूँ।”

उसने एक घूंट में और मैंने दो घूँट में यानि तीन घूँट में अपनी मित्रता को पक्का करने का समरोह यहीं पूरा कर लिया।

अगर आमा को पता लग जाएगा तो शायद वह गुरूड़ बड़ी की बेत ले आएगी और मुझे मेरी ज़िन्दगी की सबसे बुरी मार पड़ेगी।

क्या हमारी कर्तूत के बारे में नुकीली नाक वाले ज्योतिषी को पता चल जाएगा?

इतनी तकलीफ कर हमें अपनी दोस्ती की प्रगाड़ता दर्शाने की ज़रुरत नहीं थी, वैसे भी कुछ ही दिनों में हमारे परिवार वाले ही हमें एक अलग ही संस्कार द्वारा इस बंधन में बांधने वाले थे।

मेरे बारे में भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिषी के चले जाने के बाद हम सभी गीता के घर पर खाने चले गए।

आपा ने कहा कि गुरूड़ बड़ा एक गोर्खा की तरह बिल्कुल भी नहीं है। वे एक शराबी है। कई बार उन्होंने आमा से गुरुंग बड़ा के बारे में शिकायत भी की थी। कई बार शराब पीकर बड़ा उधम मचाते थे और एक बार एक गोरे साहब को इस बात की भनक लग गई थी, जिस कारण कई बार उन्हें डांट भी सुननी पड़ी थी।

“वह बुद्धु जल्द ही अपना काल बुला रहा है,” हांगकांग से मेरे लिए जो झालर वाले कपड़े लाए थे, उसे पहनाने में आमा की मदद करते हुए आपा ने कहा। “एक-दो गिलास पीने तक तो ठीक है, पर नहीं, उसे लगता है, हम लाउरे[96] हैं। हम गोर्खा हैं और शराब पीना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। उसे लगता है कि वह कुछ भी कर सकता है, क्योंकि गोर्खा साहब उसे पसंद करते हैं। कई बार मेकफेरन ने उसे धमकी दी है कि वह उसकी शिकायत उच्च अधिकारियों से कर देंगे।”

आमा चुपचाप सुनते हुए, मेरी ओर देखती है। उनकी आँखें मानो नाच रही थी। उनकी अपनी राज़ की बात को सोचकर, माँ-बेटी ने एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराया। कई बार आमा और गुरूड़ बड़ी साथ में शराब पीती थीं। उनके अनुसार यह सही भी थी। *हीट बीयर* की हर घूंट को लेते हुए, वह टिप्पणी करते कि पति के घर के बाहर होते समय उन्हें भी थोड़ी-बहुत आज़ादी मिलनी चाहिए। और यह उचित भी था। उनके पति की अनुपस्थिति में उन्हें ही तो दोनों माँ-बाप की भूमिका निभानी पड़ती है।

जिस तरीके से वे पीते हैं, उससे कोई हानि तो नहीं दिखती। गुरूड़ बड़ी और गीता कुछ बोतल लेकर हमारे घर आ जाते थे और हम सब पुराने रिकार्डर में पुरानी बॉलीवूड के गाने सुनते थे। कुछ गिलास पीने के बाद गुरूड़ बड़ी नाचने लगती, जिसे देखकर आमा हँसने से खुद को रोक नहीं पाती थी। हिन्दी धुन पर नेपाली चाल में नाचती गुरूड़ बड़ी की भावभंगिमा मज़ेदार होती थी। गीता के सिखाने पर भी, बड़ी सही नहीं नाच पाती थी।

घर लौटते वक्त गुरूड़ बड़ी हमेशा लड़खड़ा कर दरवाज़े तक जाती, कभी फूलदानी गिरा देती, तो कभी एक जूता और आमा उनसे हमेशा रुक जाने को कहती थी। गीता और मैं साथ में सोते थे और आधी रात तक स्कूल के बारे में ही बातें करते रहते थे। बीच-बीच में हमें दूसरे कमरे से हँसने की आवाज़ आती, जिसे सुनकर हम भी हँसने लग जाते थे। शराब पीना वैसा तो विनाशकारी नहीं है, जैसा कि आपा बताते हैं।

---

[96] गोर्खा सिपाही

चाहे जो भी हो जाए, आपा को इस बात की भनक नहीं लगनी चाहिए। इसके लिए आपा कभी मंजूरी नहीं देंगे। अगर गुरूड़ बड़ा पुरुष होते हुए भी, उनके पीने पर ही वह इतना नाराज़ हो रहे हैं, तो फिर आमा की शराब पीने वाली बात जानकर, उन्हें तो मार ही डालेंगे। यह राज़ शायद गीता के साथ मेरे थूक की अदला-बदली के मुकाबले बड़ा राज़ नहीं था, पर मैंने इसकी रक्षा भी मेरे बड़ी राज़ की तरह ही कर रही थी। हर रात सोने से पहले मैं अपने आप से वादा करती थी कि यह राज़ किसी को पता चलने नहीं दूँगी और भगवान से प्रार्थना करती थी कि मेरे सारे दुर्भाग्य को दूर कर दे ताकि किसी को मेरे रहस्यों के बारे में पता न चल जाए।

आज रात आपा को शराब पीने का मन कर रहा था।

"हमें इस तरह अपने दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताने का मौका ही नहीं मिलता है," उन्होंने गुरूड़ बड़ा से कहा। "हम दोनों के परिवार यहाँ मौजूद हैं, नम्बरी, इसीलिए आज मैं तुम्हारे साथ पीयूँगा।"

आपा वैसे सामाजिक समारोह में भी बहुत कम पीते थे। इस कारण आमा के परिवार वाले आपा के उपस्थिति में ही उनका मज़ाक उड़ाते थे, क्योंकि वे मगर जाति से होते हुए भी शराब पीना पसंद नहीं था।

"हमारे ही पूर्वजों ने तोंग्बा[97] का आविष्कार किया होगा," वे चिढ़ाते थे। "और तुम यहाँ तोंग्बा न पीकर अपनी जाति और पहचान के साथ अन्याय कर रहे हो।"

आपा उनकी ओर देखकर विनम्रता से मुस्कुराते और अपनी शराब धीरे-धीरे पीते थे। वे दुबारा अपना गिलास कभी नहीं भरते थे। प्रायः वे अपनी शराब खत्म नहीं कर पाते थे, लेकिन आज यह उनका शराब का दूसरा गिलास था।

गीता ने गुरुंग बड़ा से पुछा की क्या उन्होंने जंग के मैदान में कभी किसी को मारा था। वह हमेशा उनसे यह पूछा करती थी।

इस बात पर गुरुंग बड़ा ने आपा की ओर देखा और हँस पड़े।

"मारना बूरी बात है," उन्होंने गंभीर होकर कहा और जोर से हँस पड़े।

"हाँ, घाले से पूछो," आपा ने कहा।

"या दिल्ले से पूछो।" गुरूड़ बड़ा और आपा ठहका लगाकर हँसने लगे।

यह सब सुनकर हमारी आमा मुस्कुरा रही थी।

---

[97] कोदो से बनाई गई शराब

“ये घाले और दिल्ले कौन है?” गीता ने पूछा।

“हाँ, घाले और दिल्ले। यह तो सुनने में एक कविता की तरह लगता है।” मैंने दोहराया।

“हाँ, कविता की तरह है,” गीता ने कहा।

“हमारी बेटियाँ कितनी तेज़ हैं,” एक बड़ा सा घूट पीकर, स्टील का गिलास, टेबल पर धड़ाम से रखते हुए गुरूड़ बड़ा बोले।

“हमसे कितने अलग हैं,” आपा ने कहा। इसके बाद दोनों बूढ़े आदमी की तरह हँसने लगे।

“हाँ उनके बूढ़े बाप भाई हैं। हम दोनों भाई हैं।”

“क्या तुम जानते हो, नम्बरी?” आपा ने टिप्पणी की। “हमें अब इस रिश्ते को मीतेरी[98] में बदल देना चाहिए।”

“हाँ, तुम और मैं मीत बन सकते हैं,” गुरूड़ बड़ा ने कहा। “और हम सभी एक ही परिवार का हिस्सा बन जाएँगे।”

“नहीं अब हम बूढ़े हो गए हैं। हमें अब मीतेरी जोड़ने की जरूरत नहीं। हम तो पहले से ही जुड़े हुए हैं। हमारी बेटियों के बारे में क्या ख्याल है? कैसा रहेगा अगर हमारी बेटियों का मीतेरी अनुष्ठान करा दिया जाए? यह बहुत ही बढ़िया रहेगा।”

आमा और गुरूड़ बड़ी दोनों खुशी से चमक उठे। गुरूड़ बड़ा को कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

“हाँ, हाँ,” उन्होंने कहा। “आपकी बेटी मेरी बेटी की मीतिनी बनेगी।”

आपा ने एक और बीयर माँगी। गीता और मैंने एक-दूसरे की ओर शर्माते हुए देखा। आमा ने अपनी नई चमकीली साड़ी का पल्लू को छोड़ा और गुरूड़ बड़ी को गले से लगा लिया।

आपा और गुरूड़ बड़ा के हांगकांग लौटने से एक हफ्ते पहले ही हमारा मीतेरी अनुष्ठान सम्पन्न कर दिया था। गीता और मैं अब एक कल्पित रिश्तेदारी में बंध चुके थे। एक ऐसा सूत्र जो हमारे परिवार को एक साथ बंधता था। मानो भगवान ने हमारी प्रार्थना सुन ली हो। कई बार स्कूल में हमने दोस्तों को झूठ बोला था कि हम दोनों चचेरी बहने हैं।

ज्योतिषी के अनुसार एक सादा सा अनुष्ठान काफी था, जबकि हमारी माँ चाहती थी कि कम-से-कम एक-दो पड़ोसियों और दूसरे गोर्खा परिवार को आमंत्रित किया जाए। गीता की माँ उनके घर पर

---

[98] घनिष्ठ मित्र

समारोह अनुष्ठान करना चाहती थी और मेरी माँ हमारे घर पर। आपा ने जब बताया कि हमारे छत पर हवन के लिए उपयुक्त, सुविधाजनक और बाहर खुली जगह है, यह सुनकर गुरूड़ बड़ी भी मान गई।

हमारी माँ हमें गुनीउ-छोलो[99] पहनाना चाहती थीं, लेकिन ज्योतिषी के अनुसार ऐसा करना मुर्खता थी।

"अभी तक ये यौवनावस्था में भी नहीं पहुँचे हैं," उन्होंने कहा। "इस अनुष्ठान के पश्चात ही वे गुनियो-चोलो सही अर्थों में पहन सकती हैं। अभी कोई भी अच्छा कपड़ा पहना दो।"

"लेकिन हमारे समुदाय में ऐसा नहीं होता है," गुरूड़ बड़ी ने कहा।

"इस अनुष्ठान का पुरोहित मैं हूँ और मुझे अपने हिसाब से चीज़े करने की आदत है," जयोतिष ने कहा। "मुझे मेरा काम पता है। आपके रीति-रिवाज़ यहाँ मत थोपिए।"

गुरूड़ बड़ी उन्हें गुस्से से देखने लगी। अंत में ज्योतिषी की ही जीत हुई।

अनुष्ठान के सुबह मैंने और गीता ने पीले रंग की पोषक पहनी, जिसमें तितलियाँ बनी हुई थी। इन्हें हमनें अपनी-अपनी माँ के साथ बिशाल बाजार सुपरमार्केट से खरीदा था। हमारी पोशाक बिल्कुल एक जैसी थी, फर्क था तो बस यह की मेरी आधी बाजू वाली और गीता ने बिना बाजू वाली पोशाक चुनी थी। अनुष्ठान के दौरान बुजुर्गों ने हमें चारों ओर से घेर लिया और बार-बार गले से लगाने लगे। हर कोई हमें गर्व से देख रहे थे और कहने लगे कि मीतेरी बनाने का यह अच्छा विचार उनमें से किसी एक को पहले क्यों नहीं सूझा। नुकीली नाक वाले ज्योतिषी दूसरी दिशा में बैठे हुए थे और मंत्रउच्चारण करते हुए चावल और घी अग्निमुख में डाल रहे थे। मेरी कमर से जाता हुआ एक पीला कपड़ा गीता की कमर में भी बांध दिया था। ज्योतिषी समय-समय पर हमें उनके पीछे-पीछे मंत्र दोहराने को कहते थे और उन्होंने हमारे सर को नए रुमाल से ढक दिया था। हमने अपनी हँसी दबाने की कोशिश की, क्योंकि संस्कृत के शब्द हमारे मुँह से धीरे-धीरे अटकते हुए अनिश्चित रूप से निकल रहे थे।

"यह तो शादी की तरह है," मैंने गीता से फुसफुसाकर कहा।

"हाँ पर मैं पत्नी हूँ, क्योंकि मैंने बिना बाजु की पोषक पहनी है।" गीता ने समझाया।

"अच्छा, चलो तुम ही दुल्हन हो," मैंने स्वीकार किया।

हाथ के इशारे से ज्योतिषी ने हमें चुप रहने को कहा और हमने अपनी हँसी दबा ली।

"गीता कृपया खड़े होकर अपनी मितिनी के लिए लाए उपहार उसे दे दो, उससे आशीर्वाद लो।" अपनी झुरिदार हथेली जोड़कर, उंगलियाँ सीधी कर माथे के ऊपर रखते हुए ज्योतिषी ने

---

[99] नेपाली जातिय पोषक

आशीर्वाद लेने का तरीका सिखाया। "हाँ, तो तुम्हें इस तरह से प्रणाम करना है। तुम बिना मुस्कुराए भी कर सकती हो। और तुम, नानी, क्या तुम बिना मुस्कुराए वैसा ही अपनी मीतेरी को कर पाओगी?"

फिर हमने ज्योतिषी को माध्यम बनाकर एक-दूसरे को पाँच रुपए का नोट पकड़ाया। मैंने गीता को उसी की तरह बिना बाजू वाली पोशाक पहनी एक गुड़िया उपहार में दी। गीता बिल्कुल उस गुड़िया की तरह गोरी और सुंदर लग रही थी। गीता ने मेरे लिए बड़ी और काली एक गुड़िया ले ली थी। उसने मुझे बताया कि उस गुड़िया का नाम सैंडी है। ज्योतिषी ने कहा कि आज से हम दोनों एक-दूसरे को नाम से नहीं, बल्कि मितिनी कहकर पुकारेंगे। पूरा कार्यक्रम काफी भव्य था। इंतजार है, तो इस बात का कि जब हम एक-दूसरे को स्कूल में मितिनी कहकर बुलाएँगे, तब दूसरी लड़कियों को कितनी ईर्ष्या होगी।

उस दिन के बाद, गुरूड़ बड़ी मेरी 'मीत आमा' बन जाएँगी। गुरूड़ बड़ा को मुझे 'मीत आपा' पुकारना पड़ेगा। गीता को भी मेरे माता-पिता को इसी तरह संबोधित करना पड़ेगा, जिसे उसने आसानी से कर लिया। गीता को भी यहीं नियम मानने थे।

मुझे ऐसा करने में थोड़ी हिचकिचाहट हुई। कैसे मैं अचानक उन्हें दूसरे नाम से पुकारती? हालांकि गीता को मितिनी बुलाना आसान था। उसके लिए यह शब्द उपयुक्त था, इसीलिए जीभ में भी यह सही लग रहा था।

एक बार हमने शाकाहारी खाना खाया था, जिसके बारे में गीता ने शिकायत भी की थी। हमें शरारत सूझी और हम अमरूद तोड़ने निकल पड़े। पर उससे पहले गीता को पेशाब करनी थी।

"जब मैं पेशाब करती हूँ, तब मुझे बैठना अच्छा नहीं लगता," बदमाशी के इरादे से उसने कहा। "मैं खड़ी होकर पेशाब करने की कोशिश करूँगी। तुझे भी मेरे साथ करना होगा।"

पहले भी मैंने खड़े होकर पेशाब करने की कोशिश की थी। दिखने में यह बैठकर करने से काफी आसान लगता है, पर पेशाब ने मेरे पैरों से गिरते हुए मेरी चड्डी को भी गीला कर दिया था। तब से मैं सामान्य तरीके से ही पेशाब करती हूँ।

"हाँ, चलो करते हैं," उत्साहित होते हुए कहने को तो कह दिया, लेकिन मुझे डर था कि कहीं इस नए तरीके से पेशाब करने पर मेरी नई पीली झालेदार वाला कपड़ा खराब न हो जाए। मुझे डर था कि आज से मेरा दुर्भाग्य जो गीता को मिल चुका था, उस कारण कहीं गीता, गुरूड़ बड़ी के साथ कोई मुसीबत में न पड़ जाएँ।

हम बाँस के झाड़ के पास गए जो हमारे नए पड़ोसियों के मकान के लिए साफ़ होने वाला था। आदत के चलते मैं सीधे दुबककर बैठ गई।

"नहीं, खड़े होकर," गीता ने आदेश दिया।

उसे अपनी बिना बाजू वाली और मैंने बाजू वाली पोशाक ऊपर उठाई और चड्डी नीचे कर दी।

“एक, दो, तीन, लो,” गीता ने कहा।

हमारा पेशाब अटकते-अटकते, धीरे-धीरे बहने लगा। कुछ ही ज़मीन तक पहुँच पाया था, पर ज़्यादातर हमारी जांघों और पैरों में ही गिर चुका था। हमारी चड्डी पूरी तरह भीग गई थी। शुक्र है, हमारे कपड़े हमने कमर तक उठा लिए थे, नहीं तो उनमें दाग लग जाता।

“लेकिन लड़के ये कैसे करते हैं?” अपनी चड्डी निकालकर अपने पैर पोंछती हुई गीता कहती है। “भगवान की कसम खा कि तू किसी से नहीं कहेगी?”

“भगवान की कसम।” दिल के सामने मैंने क्रोस का निशान बनाया।

उसने अपनी चड्डी दुबारा पहन ली। बिना बाजू वाली पोशाक उस पर कितनी अच्छी लग रही थी।

वह मेरी जिंदगी का सबसे खुशी का दिन था। ज्योतिषी सही था - मेरा दुर्भाग्य शायद अब जा रहा था।

दुनिया से छुपाने के लिए मेरे पास अब तीन राज़ हो गए थे और सोने से पहले मैं खुद से वादा करती थी कि यह राज़ मैं किसी के सामने नहीं लाऊँगी। यह तीसरा राज़ था। नहीं, यह दूसरा राज़ था, क्योंकि आमा का शराब पीना अब तीसरा राज़ था। मेरे दुर्भाग्य को दूर करने के लिए जो मैं भगवान से प्रार्थना करती थी, उसे भी अब बदलना होगा। भगवान से मुझे अब गीता के दुर्भाग्य को दूर करने की प्रार्थना करनी होगी।

खड़े होकर पेशाब करना ही नहीं, उसके बाद भी गीता के मन में एक के बाद एक शैतानी सूझने लगी थी। जिससे यह साफ हो गया था कि उसका भाग्य बद्तर होता जाता रहा था।

दो दिन बाद सुबह-सवेरे आपा और गुरूड़ बड़ा चले गए। कुछ देर के लिए गुरूड़ बड़ी आमा के साथ रोई, पर गीता और मुझे रोने का कारण समझ में नहीं आया, क्योंकि आमा हमें कमरे में घुसने नहीं दे रही थी। हम पहले ही स्कूल के लिए तैयार हो गए थे क्योंकि आपा स्कूल के कपड़ों में हमारी तस्वीर लेना चाहते थे।

“चलो आज स्वयंभूनाथ चलते हैं,” स्कूल की उलटी दिशा में मुझे खिंचते हुए गीता ने कहा।

“स्कूल के बाद?” मैंने उससे घबराते हुए पूछा, क्योंकि मुझे उसका जवाब पता था। मेरा दुर्भाग्य अब उसका दुर्भाग्य हो चुका था, उसे सचेत रखने के लिए, मुझे चौकन्ना रहना था। अगर गुरूड़ बड़ी को पता चल जाएगा तो क्या होगा?

“बाद में नहीं, अभी। मुझे उस बकवास स्कूल में नहीं जाना। मुझे गणित के मास्टर जी से नफरत है।”

“पर हम वहाँ कैसे पहुँचेंगे?”

“हम लोगों से पूछेंगे। उनसे हम कह देंगे कि हम वहीं आस-पास रहते हैं।”

“लेकिन हम अपने स्कूल के कपड़ों में रहेंगे। क्या उन्हें पता नहीं चलेगा कि हमें वक्त स्कूल में होना चाहिए?”

“ठीक कहा, चलो हम अपने स्वेटर उतार देते हैं,” वह अपनी उम्र के मुकाबले काफी चालाक थी। “हम नौकर की तरह दिखेंगे और कोई हम पर शक नहीं करेगा।”

हमने अपने स्वेटर उतारे और बस में चढ़ गए। कण्डक्टर जब टिकट के पैसे लेने हमारे पास पहुँचने वाला था, उससे पहले ही हमने उतरकर दूसरी बस पकड़ ली। दूसरी बस पर जैसे ही चढ़े, कंडक्टर ने पैसे माँगे और गीता ने आराम से दे दिया। मैं हैरान थी उसके पास पैसे कहाँ से आए?

“तु भगवान की कसम खा, किसी को नहीं बताएगी?” उसने कहा।

“ठीक है, भगवान की कसम।” मैंने मन-ही-मन इस राज़ की संख्या को याद करते हुए, उंगली से क्रॉस का इशारा किया। राज़ की गंभीरता पर निर्भर था कि वह राज़ रखने लायक है या नहीं।

“मैंने आमा के पर्स से लिए हैं।”

“अगर उन्हें पता चल गया तो?”

“नहीं चलेगा। उनके पास जितना है, उसके मुकाबले तो यह कुछ भी नहीं। उनके पास बहुत सारे पैसे हैं।”

“शायद, मैं भी आमा के पर्स से पैसे निकालूँगी।”

“मीत आमा ज़्यादा पैसे खर्च नहीं करती है। कई बार यह मैंने आमा को आपा से कहते सुना है। शायद उनके पर्स में मेरी आमा से भी ज़्यादा पैसे होंगे।”

हम स्वयंभूनाथ के पास उतर गए, जहाँ गीता ने मुझे स्तूपा के चक्कर लगवाए और भगवान से विनती की, कि हमारा स्कूल जल जाए ताकि हमें कभी स्कूल न जाना पड़े।

एक कोने में मुफ्त का खाना बांटा जा रहा था। हम भी उस पंक्ति में खड़े हो गए और पत्ते की थाली में दिए गए आलू के आचार और सेल रोटी[100] के मज़े लिए।

“चलो, वहाँ जाकर खाते हैं,” वहाँ के नज़ारे को देखने के लिए बनाई गई जगह की ओर इशारा करते हुए गीता ने कहा। स्वयंभूनाथ एक पहाड़ की चोटी में स्थित है, जहाँ से पूरे काठमांडू को अलग-अलग कोने से देख सकते हैं। गीता को दूरबीन से देखने की इच्छा थी, पर वहाँ पर बैठे एक लड़के ने हमें ऐसा नहीं करने दिया।

“लेकिन हमारे पास पैसा है,” सौ रुपए का नोट उसके आगे हिलाते हुए गीता ने कहा।

“पर तुम्हारे माँ-बाप कहाँ हैं?” लड़के ने पूछा।

“अंदर पूजा कर रहे हैं।” गीता ने कहा।

“मुझे तुम्हरी बात पर विश्वास नहीं है।”

गीता ने उसे जीभ दिखाई और उसे बन्दर कह कर हम भागने लगे। उस लड़के ने भी हमारा पीछा किया।

“अगर मैं बंदर हूँ, तो तुम गधी हो।” उसने चिल्लाया।

उसने एक ऐसा शब्द कह दिया था, जिसे मुझे और गीता को कहने की अनुमति नहीं थी।

गीता पीछे मुड़ी और उसके ऊपर कूद पड़ी। दोनों नीचे गिर पड़े, वह उस लड़के के ऊपर थी। फिर वह उस लड़के का चेहरा नोचने लगी और दो-चार थप्पड़ भी मार दिए।

श्रद्धालुओं की एक टोली हमारे आस-पास जमा हो गई। एक औरत ने लड़ाई कर रहे जोड़े को अलग करने की कोशिश की, पर उसे ही उस लड़के से एक लात खानी पड़ी। हाथ-पैर हर जगह से चल रहे थे, वैसे ही बालों के गुच्छे हर जगह फ़ैल रहे थे। नुकीले नाक वाले ज्योतिषी सही थे, गीता की किस्मत सच बद्तर होती जा रही थी। मुझे उनसे पूछना होगा, गीता के दुर्भाग्य के लिए उसे क्या करना चाहिए? हालांकि मुझे बुरा लगेगा अगर उन्होंने यह सुझाव दिया कि गीता को उसके दुर्भाग्य को बदलने के लिए दूसरी मितिनी बनाना होगा।

आखिरकार एक दरोगा सामने आया और जमीन पर लुढ़क रहे शरीरों को हल्के डण्डे से मारा।

“लड़की होकर क्या ऐसा बर्ताव करते हैं?” वह गीता को डांटने लगा।

“और तुम एक लड़की पर हाथ कैसे उठा सकते हो?” उन्होंने लड़के से पूछा।

[100] नेपाली के मुख्य पकवानों में से एक, यह चावल के आंटे से बनता है।

“यह लड़की एक गधी है,” जमीन से खड़ा होते हुए लड़के ने कहा। लड़के की टिप्पणी ने पुलिस वाले को थप्पड़ मारने को उकसा दिया।

“हमारे पैसे चोरी करने की कोशिश कर रहा था,” गीता ने सफाई देते हुए कहा।

“तुम लोगों के माँ-बाप कहाँ हैं?” पुलिस वाले ने पूछा।

“हम अपनी स्कूल की टोली के साथ यहाँ आए हैं,” गीता ने झूठ कहा। “हमारी टीचर हमारा मिउज़ियम में इंतजार कर रही है। कृपया आप मास्टर जी को मत बताईए कि मैं यहाँ मार-पीट कर रही थी। प्लीज़। हमें देरी हो रही है। हमें चलना चाहिए।”

पुलिसवाला कुछ कहे उससे पहले ही हम दोनों नीचे की ओर दौड़ने लग गए।

आखिरकार गीता जब मेरी ओर मुड़ी, मैंने कहा, “मैं जानती हूँ। नहीं बताऊँगी कसम से।” दुबारा क्रोस किया। एक ही दिन में यह दूसरा राज़ था।

साफा टेम्पो से घर लौटते वक्त, एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति का ध्यान हमारी ओर आकर्षित हो चुका था।

“बच्चों तुम कहाँ जा रहे हो?” उन्होंने पूछा।

“मेमसाहब ने हमें उनके बच्चों को स्कूल से लाने के लिए भेजा है,” गीता ने चतुराई से जवाब दिया। “उन्होंने यह भी कहा है कि अजनबियों से बात नहीं करना।”

वह व्यक्ति दूसरे सवारियों की ओर देखकर, सरक कर बैठ गया।

“ये लोग इतने छोटे बच्चों को उन्हीं के उम्र के बच्चों को लेने भेजते हैं,” किसी व्यक्ति विशेष को खासतौर पर नहीं कहा। “तभी तो इतने सारे अपहरण की घटनाएँ होती हैं।”

मुझे लगा घर पहुँचने पर आमा मुझसे कुछ-न-कुछ ज़रूर पूछेंगी। मैंने सोचा स्कूल के बारे में पूछने पर मार ज़रूर पड़ेगी। जब भी अम्मा स्कूल के बारे में पूछती थी, मेरे कान गरम हो जाते थे। पर अम्मा ने कुछ नहीं पूछा। मैंने खुद से वादा किया कि यह राज मैं अपने खुद तक ही सीमित रखूंगी। राज़ कम-से-कम पाँच हो गए थे, क्योंकि स्कूल से भागते समय ही गीता के झगड़े, दोनों घटना अब एक ही हो गए थे। इसके बाद मैंने सारे राज़ को अपने दिमाग में क्रमबद्ध किया। गीता के साथ थूक की अदला-बदली सबसे खास राज़ था। स्वयंभूनाथ वाला किस्सा दूसरा। तीसरे स्थान में गीता द्वारा की गई चोरी। इसके बाद गीता के साथ खड़े होकर पेशाब करने वाला किस्सा और आमा का शराब पीना अब पाँचवां नम्बर का राज़ था। नुकीली नाक वाले ज्योतिषी ने मितिनी बनाने के लिए जो कारण बताए थे, उसे राज़

रखने का जो आदेश दिया गया था, वह मेरे लिए उतना महत्वपूर्ण नहीं था, क्योंकि इसमें गीता शामिल नहीं थी।

अगले दिन स्कूल में हमारी अनुपस्थिति पर किसी ने सवाल खड़े नहीं किए, लेकिन गीता बेत से पड़ी मार के निशान लेकर लौटी। गुरूड़ बड़ी को पता चल गया कि उनकी बेटी चोरी करती है। शायद सच में मेरा दुर्भाग्य मितिनी को झेलना पड़ रहा है।

गीता से दस दिन पहले ही यानि 30 अप्रैल 1997 को मैं दस साल की हो गई थी। आमा ने कहा कि मेरा जन्म दिन मनाया नहीं जाएगा, क्योंकि इस वक्त आपा के जीवन में अनिश्चितता चल रही थी। उन्होंने बताया कि आपा और गुरूड़ बड़ा को हांगकांग से शायद किसी और देश जाना पड़ जाए। कोई नहीं जनता था कि उन्हें ब्रूनी या यूनाइटेड किंगडम में से कहाँ तबादला मिलेगा, लेकिन इन दिनों आमा कई बार पशुपतिनाथ मंदिर जाने लगी हैं। नुकीले कान वाले ज्योतिष पहले के मुकाबले आजकल कुछ ज़्यादा ही आने-जाने लगे हैं। वे मुझसे अक्सर पूछते कि क्या मेरे भाग्य में कुछ बदलाव आया है? जिसका जवाब मुझे खुद नहीं पता था। गीता को अपनी माँ से पहले के मुकाबले और ज़्यादा मार पड़ती है, तो शायद मेरा भाग्य सच में बदला हो। मैंने ज्योतिषी जी से पूछा, गीता के भाग्य को बदलने के लिए क्या करना होगा, जिस पर उन्होंने टिप्पणी की इसका कोई उपाय नहीं है। लेकिन वह अनुष्ठन किस कारण से किया गया था, उसे मुझे गीता से छुपाकर रखना है। चाहे कुछ भी हो जाए इसे मैं अपने रहस्यों की सूची में रखने वाली नहीं थी। मेरे रहस्य क्रम में पहले से ही गड़बड़ी हो गई थी, क्योंकि तीसरा रहस्य, गीता की चोरी वाली बात, उसकी माँ को पता चल चूकी था। यानि वह रहस्य अब रहस्य नहीं रह गया था।

घर पर कोई विशेष कार्य तो होने वाला था, जिसके कारण ज्योतिषी जी बार-बार घर आने लगे थे। अगर ऐसा नहीं होता तो आमा और गुरूड़ बड़ी की खुसर-पुसर के समय मुझे और गीता को कमरे से बाहर निकाला नहीं जाता। वह दोनों पिताजी के तबादले के बारे में बात करते और गुरुंग बड़ी के बढ़ते हुए पेट के बारे में भी। ज़्यादा जिज्ञासा होने के चलते मैं उस एक व्यक्ति के पास गई, जिसके पास हर चीज़ का जवाब मिल ही जाता है।

"तुझे पता नहीं?" गीता ने पूछा। "चीन, हांगकांग को वापस ले रहा है।"

"सच?" सब कुछ समझने का ढोंग करते हुए मैंने कहा।

"हाँ, और क्योंकि तुम्हारे आपा और मेरे आपा ब्रिटिश सरकार के अंदर कार्यरत हैं, उन्हें भी जाना ही पड़ेगा।"

"कहाँ जाना पड़ेगा?" मैंने पूछा। मेरे लिए यह और भी कठिन सवाल था है। मैं दंग रह जाती हूँ कि गीता सब कुछ कैसे जानती है।

"ब्रिटेन जाएँगे। यूके और ब्रिटेन एक ही देश है, मितिनी। या ब्रूनी भी जा सकते हैं। मेरे आपा लंडन जा रहे हैं, लेकिन तुम्हारे आपा का तबादला ब्रूनी में हुआ है।

"हाँ, मैं जानती हूँ," मैंने झूठ कहा। "मुझे यकीन नहीं था कि आपा ब्रूनी जाएँगे।"

"बिल्कुल जाएँगे और आमा कहती है कि हम भी जाएँगे। वह कहती है कि यू.के. में हमारी ज़िन्दगी हांगकांग से काफी बेहतर होगी। उनके लिए अब दो बच्चों को सम्भालना मुश्किल हो गया है, एक मैं और दूसरी मेरी बहन जो माँ के पेट में है। ऐसे वक्त में उन्हें अपने पति के सहारे की ज़रूरत है।"

अब मेरी समझ में सब आ रहा था, क्योंकि मैंने गुरूड़ बड़ी को आमा से कहते सुना था, वह गुरूड़ बड़ा को मार देना चाहती है।

"वह अपना काम करके चला जाता है, बेवकूफ," उन्होंने कहा था।

"उन्हें तो इस बात का अंदाज़ा तक नहीं है कि नौ महीने तक फिर उसके बाद हम क्या-क्या सहते हैं। हमारा जीवन तो विधवाओं से भी गया-गुज़रा है। मुझे यह दूसरा बच्चा चाहिए ही नहीं।

"पर हम हैं न? हम कुछ हद तक आपका ख्याल तो रख ही सकते हैं।" आमा ने सांत्वना देते हुए कहा।

"वह तो है, पर घर में गैरहाज़िर पति से अच्छा, पति का न होना है। एक बार यह बच्चा पैदा हो जाए, फिर मैं उनसे कह दूंगी कि हमें भी अपने साथ ले जाए। मुझे परवाह नहीं कि हम किस अवस्था में रहेंगे, लेकिन मैं वहीं जाकर रहूँगी। अगर मना किया तो मैं उनसे यह साफ कर दूँगी कि मैं मेरे बेटे को फौज में कभी भर्ती होने नहीं दूँगी।"

"आपको कैसे पता कि यह लड़का है?" बड़े लोगों की बातों को बीच में न बोलने के आमा की सीख को भुलाकर, मैंने अचानक पूछ लिया।

"अरे मुझे पता है। सिर्फ एक लड़का ही मुझे इतना तकलीफ दे सकता है। लात पर लात मारता जा रहा है। वह अपने बाप से भी मुझे ज़्यादा दुःख दे रहा है।"

आमा के कुछ कहने से पहले ही मैं चुपचाप खुद बाहर निकल आई। गीता को एक बहन मिल जाए इसकी मैंने प्रार्थना की, ताकि वह अपनी छोटी बहन के साथ खेल सके। अच्छे कपड़े पहना सके। मैं सोचती हूँ, क्या यह नुकीले नाक वाले ज्योतिषी जी को बच्चा लड़का होगा या लड़की इसकी जानकारी होगी।

"मुझे लगता है, वह तुम्हारी तरह ही खूबसूरत होगी," मैंने गीता से कहा।

“हाँ, और वह सिर्फ बिना बाजू वाले कपड़े ही पहनेगी और यू.के. में तो और भी प्यारे कपड़े मिलेंगे,” गीता ने कहा।

मैंने प्रार्थना की कि यू.के. में न सही, पर कम-से-कम हम ब्रूनी में तो आपा के साथ रह सके।

“यू.के. में बिल्कुल भी कीचड़ नहीं है। हर चीज़ साफ-सुथरी है। मैं तो वहाँ बहुत सारे बाजू कटे हुए कपड़े पहनुँगी।” गीता ने कहा।

गीता के दूर के भाई-बहन यू.के. में रहते हैं, और जो उसे समय-समय पर वहाँ से तस्वीरें भेजते रहते हैं। उसने उन तस्वीरों को इतना ध्यान से देखा है कि उनके वहाँ के पहनावे के बारे में उसे जानकारी है। छाती में उसके तिल को दिखाने के लिए उसने अपनी कमीज़ को पान के पत्ते के आकार में काट दिया था। और अपनी आमा से उसने नाक छेदने के लिए भी कहा था, पर गुरूड़ बड़ी ने साफ मना कर दिया।

“एक बार यू.के. पहुँच जाऊँ, फिर तो मैं नाक छेदवा कर रहूँगी,” गीता ने कसम खाई। “सभी गुरूड़ लड़कियों की नाक में छेद है। आमा कहती है कि मैं थोड़ी बड़ी हो जाऊ, लेकिन मुझे अभी ही नाक छिदवानी है। मैं दस साल की होने वाली हूँ। मैं इतनी बड़ी तो हो ही चुकी हूँ।”

मैंने उस बड़ी काली गुड़िया सैंडी के कपड़े, जो मुझे गीता ने दी थी, फिर उसे बार-बार पहनाए और उतारे। मुझे लगा नहीं कि ज्योतिषी जी ने जो अनुष्ठान कराया है, वह सफल नहीं हो पाया है।

“हम एक हवाई जहाज़ से जाएँगे और ऐवरेस्ट पर्वत की चोंटी पर चाय के लिए रुकेंगे,” गीता ने कल्पना की। “आमा यह भी कहती है कि मैं बीयर भी पी सकती हूँ।”

मैं सोचने लगी कि क्या गीता ने मेरे लिए सैंडी इसलिए चुनी क्योंकि वह मेरी तरह दिखती है, जैसा कि मैंने उसके लिए गोरी, सुन्दर गुड़िया चुनी क्योंकि वह गीता की तरह दिखती है।

“भगवान का शुक्र है, अब चावल से छुटकारा मिलेगा,” उसने कहा। “अब तो सिर्फ ब्रेड, बट्टर, केक खाँऊगी और मैं हमेशा चोप्सटिक से खाया करुँगी। रेणु दीदी ने मुझे बताया था कि वहाँ लोग चोप्सटिक का ही इस्तेमाल करते हैं।”

“चोप्सटिक क्या होती है?” मैंने पूछा।

“हर चीज़ खाने के लिए इस्तेमाल करने वाली डंडी। हांगकांग में इसी का प्रयोग होता है, और लंडन में भी इसी का इस्तेमाल करते हैं। शायद, मैं तेरे लिए वहाँ से तोहफे के तौर पर भेजूँगी।”

“हाँ, और यहाँ मैं उससे खाऊँगी, लेकिन मुझे सिखाएगा कौन?” मैंने उम्मीद के साथ पूछा।

"जब छुट्टियों तुम्हारे आपा घर आएँगे, तब उनसे सीख लेना। मैं वहाँ नई मितिनी बनाउँगी। तुझे भी यहाँ नई मितिनी बना लेनी चाहिए, क्योंकि अब हम लोग एक ही जगह तो रहेंगे नहीं।"

इतना सुनते ही मैं माँ के पास रोते हुए, दौड़ी चली गई। मैं अपनी सबसे अच्छी सहेली खोने वाली थी। उसी के पास मेरा दुर्भाग्य चला गया है और वही अब जादू की नगरी जाने वाली है।

आमा के अनुसार आपा का तबादला ब्रूनी में हुआ है, वहाँ के मुकाबले यहाँ बेहतर शिक्षा का वातावरण है, जिसके चलते हम यहीं रहेंगे।

"वहाँ हमारे साथ बुरा व्यवहार किया जाता है," आमा ने कहा, मानो वह पहले वहाँ जा चुकी है। "वहाँ सभी गोर्खा बच्चे कैम्प के स्कूल में जाते हैं और यहाँ तुम अच्छी-खासी अंग्रेज़ी माध्यम स्कूल में जाती हो।"

"ऐसा कैसे हो सकता है?" मैंने पूछा, "लेकिन गीता तो यू.के. जा रही है।"

"यू.के. में वे अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ सकते हैं, लेकिन ब्रूनी में नहीं।"

"तो फिर आपा यू.के. क्यों नहीं जा सकते?"

"क्योंकि उनका वहाँ तबादला नहीं हुआ है। घबराओ मत, गीता को ही वहाँ तकलीफ ही होगी। यू.के. में जिस तरह की अंग्रेज़ी बोली जाती है, गीता को कुछ भी समझ नहीं आएगी।"

अगर गीता बदकिस्मत है, तो फिर मुझे इतना दुख क्यों हो रहा है? नुकीले नाक वाले ज्योतिष जी ज़रूर मुझसे कहेंगे कि मैं इन सब चीज़ों के बारे में न सोचूँ, बल्कि अपने गणित पर ध्यान दूँ।

उसके बाद सब कुछ धुंधला हो गया। गीता के जाने के कुछ महीने बाद आपा घर आ गए या शायद कुछ हफ्ते बाद ही। उनके सिर के बाल सफेद हो गए थे और जहाँ तक मुझे याद है, पहले से कमज़ोर दिख रहे थे। उन्होंने फौज में पंद्रह साल पूरे कर लिए थे और आशा कर रहे थे कि नौकरी के कुछ साल और बढ़ जाए या यू.के. जाकर काम करने की अनुमति मिल जाए। लेकिन दोनों ही नहीं हो पाया, उनकी सारी योजना मिट्टी में मिल गई थी। आपा के अनुसार गुरूड़ बड़ा अभी सेवा निवृत्त होने वाले नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने अपने आप को गोर्खा साहब का सबसे पसंदीदा व्यक्ति बना लिया है। गोर्खा साहब को भी शराब उतनी ही पसंद है, जितना की गुरूड़ बड़ा को, जिसके चलते मेकफेरन की सारी शिकायत पर ध्यान तक नहीं दिया।

शुक्र है, गीता की याद दिलाने के लिए सैंडी के अलावा भी कुछ और चीज़ें थीं। वह अपने सारे रसोई वाले खिलौने पीछे छोड़ गई थी। गुरूड़ बड़ी ने गीता को उसके छोटे बर्तन नहीं ले जाने दिए थे,

क्योंकि वह सामान में बहुत सारी जगह ले लेते। आमा-आपा के बीच अब जो नया तनाव पैदा हो रहा था, उसमें रूकावट न डालने के लिए मैंने छत में अकेले बैठकर अलग-अलग किस्म की खिलौनों पर अपना ध्यान केंद्रित किया।

"मैं रिटायर हो गया हूँ," मूँछ लगाने के बाद स्टील की छोटी-सी कप में शराब पीने का नाटक करते हुए मैंने आपा की आवाज़ में कहा, "अब मुझे पेंशन मिलती है।"

"पेंशन, जो कि दस हज़ार रूपए से भी कम है।" मैंने मूँछे निकालकर आमा का अभिनय किया। "उतने में तो उसके स्कूल का खर्चा भी नहीं निकल पाएगा। आप बॉडीगार्ड या सेक्यूरिटी गार्ड की नौकरी ढूंढने की कोशिश कर सकते हैं।

मूँछे लगाकर - "मैं एक रिटायर्ड गोर्खा हूँ। मैं एक ऐसे रेजिमेंट से हूँ, जिन्होंने छत्तीस विक्टोरिया पदक हासिल किए हैं। तुम्हें क्या लगता है, ऐसा आदमी अब सेक्युरिटी गार्ड की नौकरी ढूंढता फिरे?"

मूँछे निकालकर - "फिर महीने का खर्चा कैसे निकलेगा? घर में मंजिले बढ़ाने का सपना अब देखना बंद कर दीजिए। आप अभी पैंतीस के भी नहीं हुए हैं। आगे हमारी पूरी ज़िन्दगी बाकी है।"

मूँछे लगाकर - "चिंता मत करो। हमें ब्रिटिश की नागरिकता मिल जाएगी। फिर हम सभी यू.के. जाकर काम कर सकते हैं।"

मूँछे निकालकर - "हमें और कितनी देर इंतजार करना होगा? तब तक हमारे जमा किए हुए सारे पैसे खत्म हो जाएँगे। इतने साल अपने परिवार से दूर रहकर नौकरी करने के बाद आपको क्या मिला?"

मूँछे लगाकर - "अब मैं अपने परिवार के साथ हूँ।"

मैं मूँछे उतारना भूल गई और आगे कहा - "तो फिर मैं आपकी गैरमौजूदगी में ही खुश थी। कम-से-कम हम क्या खाएँगे इसकी चिंता तो नहीं थी। इस अर्ध-निर्माण घर में, मैं रह कर तंग आ चुकी हूँ।"

मूँछे अभी-भी लगी हुई थी और अब होठों के बीच फैंटम सिगरेट दबी हुई थी।

"देखना यह जल्दी ही हो जाएगा। ब्रिटिश लोग दयालु हैं। हमने उनके लिए दो सौ साल तक लड़ाई की है। वे हमसे कभी मुँह नहीं मोड़ेंगे। यह बहुत जल्द होगा और हम जल्द ही वहाँ रहने लगेंगे।"

आपा ने बहुत इंतजार किया, पर उनका विश्वास अटूट और अडिग था। समय काटने के लिए उनके पास करने को कुछ नहीं था। वे दूसरे गोर्खा लोगों के साथ बैठक में जाते थे। बहुत सारे गोर्खा थे, तो बहुत सारी बैठके भी होती थीं। कभी-कभी यह बैठके हमारे घर पर भी होती थी। आशा और निराशा

के साथ नाच, गाना और शराब भी शामिल हो गया था। इन दिनों आपा बहुत अधिक मात्रा में पीने लग गए थे।

कई महीनों तक बेकार बैठने के बाद, आपा एक दिन घर पर खुश खबरी ले कर आए कि गोलचा नामक व्यापारी के यहाँ सेक्युरिटी गार्ड की नौकरी मिली है। लम्बे अरसे के बाद आमा के चेहरे पर मुस्कान दिखी। खुशी मनाने के लिए हमने रात में मुर्गी और बकरे का मांस खाया। हालांकि मैं खाने के बाद उनके साथ समय बिताना चाहती थी, पर कहीं-न-कहीं उन्हें वहीं छोड़कर रसोईघर में खिलौनों के साथ खेलने का मन कर रहा था। आपा से भी मुझे उसी तरह का इशारा मिल रहा था।

आज नाटक में कुछ सुधार करते हुए, मैंने फैंटम सिगरेट और मूँछ के बदले आज आपा कि खुकरी के सेट में से एक छोटी खुकरी का इस्तेमाल किया। दो दिन पहले ही उन्होंने मुझे खुकरी मेरे कमरे में सजाने के लिए दिए थे। उन्होंने मुझे सावधानी बरतने को कहा था, सजाने के अलावा इसका प्रयोग किसी और चीज़ में करने से सख्त मना किया था। मैं बहुत खुश थी क्योंकि आपा उनके खुकरी के सेट के पास किसी को आने नहीं देते थे, यहाँ तक कि आमा को भी नहीं, चाहे वह मियान के अंदर ही क्यों न हो। वे हमेशा कहते कि खुकरी उनकी वर्दी का एक हिस्सा है और उसे खुद साफ करने में जो गर्व महसूस होता है - वह और किसी चीज़ में नहीं होता। जब मैंने उनसे पूछा कि क्यों वह मुझे अपना पसंदीदा खिलौना दे रहे हैं, तो वह बोले की उन्हें अब इसकी ज़रूरत नहीं है।

"मैंने नौकरी ले लूँगा," खुकरी से हवा को चीरते हुए मैंने आपा की आवाज़ में कहा। "वह मुझे उसका निजी अंग रक्षक बनने के लिए बीस हज़ार रुपए दे रहा है।"

"यह तो बहुत खुशी की बात है," मैंने बड़ी सी मुस्कान दी। "आखिरकार हमारे घर में और एक मंजिल बन जाएगी।"

"हाँ, यह तो बहुत ही गर्व की बात है।" मैंने हवा में खुकरी चलाई। "वे कहते हैं कि यह अच्छी बात है कि मुझे गाड़ी भी चलना आता है।"

"शायद वे आपके लिए गाड़ी खरीदने की सोच रहे हैं।" मैं मुस्कुराई।

"मेरे ख्याल से मुझे उनको यहाँ-वहाँ घूमना पड़ेगा," खुकरी को मैंने दोनों हाथों से पकड़ते हुए काल्पनिक गाड़ी की तरह चलाने लग गई।

जब मैं आमा से झूठ बोलती तो जिस तरह आमा की आँखें गुस्से से बाहर हो जाती थी, उसी तरह अभी मैंने भी आँखें बड़ी कर ली।

"गोर्खा और गाड़ी चलाएगा?" मैंने कहा। "मुझे विश्वास नहीं होता। खैर, हम लोगों से गाड़ी चलाने वाली बात छुपाकर रख सकतें हैं।"

“हाँ, वे कभी नहीं जान पाएँगे।” मैंने खुकरी जमीन में गाड़ दी, फिर उंगलियों की गांठ को तोड़ने की कोशिश की, पर नाकामयाब रही।

यह खुकरी से खेलना मुझे अच्छा नहीं लगा। अब मुझे खेल बदलना पड़ेगा।

गीता के बर्तनों में रखा लाल टेलीफोन अब बजने लगा।

“ट्रिंग ट्रिंग,” मैं गाने लगी।

“हैलो मितिनी, लेकिन तुमने तो मुझे एक चिट्ठी तक नहीं भेजी।” मेरी खुद की आवाज़ लौट आई। “कोई बात नहीं, माफी माँगने की ज़रूरत नहीं। तुम मेरी मितिनी हूँ, तुम्हें माफी नहीं माँगनी चाहिए। आमा और आपा अभी मुस्कुरा रहे हैं, पर मुझे नहीं लगता आपा बहुत खुश हैं।”

कुछ देर मैंने बातें की और काफी हल्का महसूस करने लगी।

गीता के बाद स्कूल में सुनीता और मोनिका थी। वे अच्छी लड़कियाँ हैं, वे स्कूल से भागने का कभी नहीं सोचती और न ही रास्ते के लड़कों से लड़ती हैं। उनके बाद एक लड़का था,जिसके बारे में मैं सोचना भी नहीं चाहती, न ही उसे याद करना नहीं चाहती। उसने मुझे बहुत सताया है। यहाँ तक कि मेरे अजीब-अजीब भी नाम रखे हैं। गीता अगर होती तो ऐसा कभी नहीं करती ।

एक दिन स्कूल के बाद सुनीता और मोनिका को मेरे खिलौने देखने आई। सिलिण्डर का आकार और सुंदर गिलास के सेट को देखकर वे दंग रह गए थे। सुनीता को मैंने लाल रंग का फोन दे दिया और मोनीका को सोने के रंगवाला एक कप। उनके जाने के बाद मैंने बर्तन धोने वाली जगह के पास सूखने के लिए रखी गई एक बड़ी सी प्लास्टिक की कटोरी निकाली और अपनी पूरी ताकत से उसमें थूका। पिछली बार से आज ज़्यादा थूका।

सैंडी के बड़े, काले मुँह के सामने मैंने कटोरी रख दी और दस तक गिनने लग गई। मैंने उससे पूछा, वह एक ही घूँट में क्यों पी नहीं पाई। उसके बाद थूक भरी कटोरी को झाड़ी के पीछे फेंक दिया।

जब अगली बार नुकीली नाक वाले ज्योतिषी जी आएँगे, तब उनसे पूछना होगा कि मितिरी अनुष्ठान को छोड़, ऐसा कोई तरीका है, जिससे दोस्ती बाँधी जा सकते और जिससे लड़की के दुर्भाग्य को उसकी सबसे अच्छी दोस्त के ऊपर लदा जा सके। उनके पास कहने को कुछ अजीब ही होगा। मुझे इसके बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं थी। आपा ने जिस तरह अपनी खुकरी सेट को छोड़ दिया। वैसे ही मुझे भी अब सैंडी की कोई ज़रूरत नहीं है। शायद यह मैं सुनीता या मोनिका को दे दूँगी। जिसे भी दूँ, क्या फर्क पड़ता है या फिर गुड़िया के हाथ-पाँव अलग कर, जमीन में गाड़ दूँगी। मैं आपा की दी गई खुकरी, जो अब उनके लिए बेकार थी, उससे कभी-भी कब्र खोदने के लिए इस्तमाल कर सकती थी।

*****

क्षणिक स्वपनचित्र

आखिर उसका बेटा राकेश अमरीका चला ही गया। जिस रात उसके माँ-बाप उसे इंदिरा गांधी हवाई अड्डे पर छोड़ने गए तब दोनों ही रो पड़े थे। ऐसा उन्होंने पहले कभी नहीं किया था, यहाँ तक कि अपने बड़े बेटे सचिन को दिल्ली तक भी छोड़ने नहीं गए थे। सचिन नहीं चाहता था कि उसके माँ-बाप के आने से रोने-धोने का माहौल बन जाए और अमरीका में अपने नए जीवन की शुरूआत में वह भावुकता को आड़े लाने के लिए बिलकुल भी तैयार नहीं था। लता ने तो जाने से पहले केवल उन दोनों से हाथ भर मिलाया था। जब माँ ने उसे गले लगाना चाहा, तो वह पीछे हट गई थी और दोनों एक-दूसरे की ओर देखती ही रह गई, और मानों उनकी बाहें यह समझ न पा रही हों कि एक-दूसरे के गले लगे या नहीं। श्रीमती ने उस वक्त अपेक्षा की थी कि उसका पति कोई गंभीर बात कहे या फिर रो ही दे, तभी उनकी नज़र फूलों की माला पहने एक दूसरे यात्री युवक की ओर गई, शायद वह लता की तरह ही एक विद्यार्थी था और जो विलाप कर रहीं प्रौढ़ महिलाओं के बीच खड़ा था। माँ-बाप और बेटी, तीनों ही पास चुपचाप हँस रहे थे। मन-ही-मन तीनों शुक्र मना रहे थे कि उनके परिवार की विदाई उतनी भावुकता भरी नहीं है। उनकी विदाई में तनाव नहीं था।

लेकिन राकेश के जाने के वक्त उनके आंसू रोके न रूके। वे चंद घंटे उन्होंने बड़ी मुश्किल से गुज़ारे। राकेश की फ्लाइट आधी रात को थी, जो कि उनके रोज़मर्रा के हिसाब से काफी देर थी। खाते वक्त ख़ामोशी छाई हुई थी। वे सभी वहाँ की फीकी दाल, बातूनी वेटर, दिल्ली वालों के रूखेपन के बारे में बातें करने लग गए। किसी ने भी राकेश के जाने की बात नहीं छेड़ी, न ही किसी ने अमरीका के विषय में कुछ कहा। जब उसने अपनी माँ की एक सोने की अंगूठी माँगते हुए पूछा कि कोई बड़ी मुश्किल आने पर क्या वह उसे बेच सकता है? यह सुनकर सबसे पहले तो उसकी माँ ही रो पड़ी। उसके पति ने उसे चुप कराने की कोशिश करते हुए समझाया कि उनका बेटा कोई जंग लड़ने नहीं जा रहा। अपने बेटे को दिलासा देते हुए उसने कहा कि अमरीका में मन न लगे, तो वह कभी भी वापस आ सकता है। उसे यह सोचने की ज़रूरत नहीं है कि उसने बेकार पैसा और वक्त बर्बाद किया, लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे इसकी भी चिंता करने की भी ज़रूरत नहीं। पैसे की बिल्कुल भी चिंता न करे। हालांकि वे उसे विदेश इसलिए भेज रहे हैं, ताकि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके लेकिन अगर उसे पढ़ाई के खर्च के लिए दूसरे साल में भी पैसों की ज़रूरत पड़े और नौकरी न मिले तो वह अपने माँ-बाप को बेझिझक बता सकता है।

राकेश ने अपने माँ-बाप को बताया कि वे उस पर भरोसा रखें। चाहे जो भी हो जाए, वह उनसे किसी भी हालत में भी पैसे नहीं माँगेगा। आखिर उसके लिए उन्होंने पूरे एक साल की पढ़ाई के पैसे दिए हैं, जबकि उसके भाई-बहन के लिए सिर्फ छमाही के पैसे दिए थे। वह घबराया हुआ था, लेकिन कौन

नहीं घबराता। लता कितनी होशियार है, वह भी घबराई हुई थी। उसे पता है कि उसके माँ-बाप उसे आलसी और मूर्ख समझते हैं। यह सच है कि परीक्षा में वह बहुत अच्छे नंबर नहीं ला पाता। अपने दोस्तों में भी वह सबसे कमज़ोर था और उसे चीजें आसानी से समझ नहीं आती थी। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वह बेवकूफ है। वह पाठ सीखने में बहुत समय लगाता था, लेकिन आसानी से भूलता भी नहीं था। उसे आज भी अपनी चौथी कक्षा की कविताएँ याद थीं, जिन्हें वह घंटो रटा करता था – *डाउन इन ए ग्रीन एंड शेडी बेड, ए मॉडेस्ट वायलेट ग्रीऊ* - उसे और भी दर्जनों पाठ याद थे, जो उसके किसी काम की नहीं थी, जिन्हें वह कभी समझ भी नहीं पाया था।

यह लम्बा चौड़ा भाषण राकेश जैसा इंसान दे रहा था। उसकी बातों में कहीं भी अपने लिए दया का भाव नहीं था, न ही वह अपने माँ-बाप की परवरिश पर ऊँगली उठा रहा था। फिर भी उसकी माँ को लगा जैसे वह हार गई हो और वह चुपचाप रोने लगी। बेटे को बचपन से ही पता था कि उसको लेकर माँ-बाप के मन में अनेक शंकाएँ थीं। तीनों बच्चों में वह सबसे धीमा सही, लेकिन सबसे संवेदनशील भी था। उसने कहा कि उसका एक सपना कामयाब बनकर अपने माँ-बाप को हैरान करने का भी है, शायद लता से भी कामयाब। जब जवाब में माँ ने एक सिसकी भरी तो उसने कहा कि वे यह न समझे कि वे बुरे माँ-बाप हैं। वे सबसे अच्छे हैं। लेकिन वह उन्हें भरोसा नहीं दिला पाया कि वह अपना ध्यान रख सकता है। जब-जब वह यह कहने की कोशिश करता है तो उसके मुँह से कुछ अटपटा ही निकलता है। वह उत्तेजित हो जाता है और उसकी कही बातें कुछ ही प्रभाव छोड़ जाते हैं। उसने बार-बार अपने माँ-बाप से माफी माँगी। माँ के जहन में कई पुरानी बातें उमड़ आईं – पहाड़ा सीखते समय उसका चौदह बार से भी अधिक बार गलती करना, उसकी कही किसी बात पर कभी न खत्म होने वाले चुटकुले बनना। वे हँसी के फव्वारे जो उसकी सुनाई किसी घटना में छिपे व्यंग्य को ढूंढ़ते हुए छूटते थे। माँ के आंसू हवाई अड्डे पहुँचने तक भी नहीं रूके। राकेश ने माहौल को हल्का करने के इरादे से कहा कि उसे समझ नहीं आ रहा है, उसे हँसना चाहिए या रोना। उसकी इस बात में कोई छिपा हुआ व्यंग्य नहीं था और वह सच्चे मन से अपने माँ-बाप को खुश देखना चाहता था, उनको हँसता देखना चाहता था, जबकि हौसला देने का काम उस वक्त उसके माँ-बाप का था। पति से हल्का इशारा पाकर अपनी सिसकी को उसकी माँ ने दबाए रखा। दोनों ने फैसला किया कि राकेश के जाने तक दोनों अपने आँसूओं को रोक लेंगे। उसके चले जाने के दो सेकंड बाद उसकी माँ अपने आँसू रोक न पाई और वह फिर से रोने लगी। ऐसा उन लोगों के साथ कभी नहीं हुआ था।

“और यह तीसरा भी चला गया।” श्रीमती ने रोते हुए कहा।

“तुम्हें लगता था वह कभी नहीं जाएगा।”

“मैं चाहती थी कि वह कभी न जाए,” उसने आकाश में राकेश के हवाई जहाज को ढूंढ़ते हुए कहा।

“मुझे बहुत गर्व है कि वह चला गया। नई चीज़ें सीखेगा, दुनिया देखेगा। उसके लिए यह बहुत अच्छा होगा।”

“कुछ लोग बिना चोट और मार खाए भी सीख सकते हैं, जी सकते हैं।” श्रीमती की आवाज में विरोध था।

“तुम तो ऐसे बात कर रही हो जेसे मैंने उस पर जाने के लिए दबाव डाला हो। मैं तो यही समझता था कि विदेश जाने से उसकी ज़िन्दगी बन जाएगी।”

“उसने मुझसे एक बार कहा था कि वह यहीं भारत में किसी कॉलेज में पढ़कर भी खुश रहेगा।”

“वह यहाँ रह सकता था, लेकिन उसने खुद जाने का फैसला लिया।”

“जीवन के थपेड़ों का क्या भरोसा। कहीं पैसे-पैसे का मोहताज होकर वह बिखर न जाए।”

“तुम चाहती हो कि काश मैंने उसे रोक लिया होता। है न?”

“तुम हमेशा अपनी ही मर्जी करते हो।” उसे अब भी जहाज़ नज़र नहीं आ रही थी। वह आगे बोली, “मुझे लगा तुम शायद एक बार कोशिश तो कोरोगे। मैं जानती हूँ कि तुम्हें भी कहीं-न-कहीं यह शक है कि वह उस कठोर दुनिया में जी पाएगा भी या नहीं।”

“मैं पहले भी कह चुका हूँ। यह बहुत ही स्वार्थी वाली बात न होगी? हम उसके उन्नति के रास्ते रोक देंगे। पहले उसे जाकर मन बना लेने दो। वापसी का रास्ता तो उसके लिए खुला ही है।”

“मैं जानती हूँ कि उसका भाई अपनी पढ़ाई छोड़कर वापस आ सकता है, अगर उसे वहाँ अच्छा न लगा। उसकी बहन भी। लेकिन हम दोनों जानते हैं कि यह तब भी वापस नहीं लौटेगा, वह अपनी ज़िन्दगी से तंग भी आ जाए, फिर भी हमसे नहीं कहेगा। यह बहुत ही सीधा है।”

“सीधा, धीमा, मूर्ख - तुम हमेशा उसे यही सब समझती रही हो, और शायद मैं भी।” पति ने झुंझलाकर कहा। “उसके ऐसा होने की यही वजह है कि हमने उसे हमेशा संभालकर रखा है, दोष हमारा ही है। हमारी यह सोच कि वह बहुत सीधा है, बुद्धू है, अपने लिए वह लड़-भिड़ नहीं सकता, बाहर जाकर अपने जीवन के लक्ष्य को ढूंढ़ नहीं सकता, हमारा इस तरह सोचना सरासर गलत था, जिसका नुकसान आज हमारे सामने है। कम-से-कम अब तो उसे अकेला छोड़ दो। उसे गलतियाँ करने दो और उनसे सीखने का मौका दो। जिस तरह तुम उसके बारे में कहती हो, लगता है कि वह दिमागी तौर पर अपाहिज है। अब बस करो। वह ठीक-ठाक इंसान है। अपने बड़े भाई-बहनों से उसकी तुलना होती रही है, और कुछ नहीं। वह उनसे पढ़ाई में थोड़ा पीछे रहा है, लेकिन अपाहिज नहीं है।”

“गुस्सा मत करो। तुम सही कह रहे हो। मैं बिना वजह परेशान होती रहती हूँ।”

"तो चलो अब इस बारे में कोई बात नहीं होगी।"

"अच्छा," पत्नी ने धीमे से कहा। इतने में एक जहाज, शायद राकेश को साथ लिए, उड़ चला।

"कभी-कभी मुझे लगता है कि तुम किसके लिए ज़्यादा परेशान होती हो, राकेश के लिए या खुद के लिए। मैं समझ सकता हूँ कि एक-एक कर बच्चों के चले जाने से तुम भी खुद को लक्ष्यहीन महसूस करती हो। मेरा भी यही हाल है। ऐसा लगता है जैसे बच्चों को अब हमारी ज़रूरत ही नहीं रही। फिर भी मैं उन्हें उनके सपनों के पीछे जाने से नहीं रोकना चाहता।"

दोनों आकाश की ओर तब तक देखने लगे जब तक आग के एक छोटे से गोले की तरह जहाज़ आकाश में गायब नहीं हो गया।

राकेश के जाने के एक महीने बाद ही उसकी माँ सरकारी नौकरी से *रिटायर* हो गई। वह अपनी नौकरी एक साल और जारी रखना चाहती थी, लेकिन विपक्षी पार्टी की तरफ उसके राजनीतिक झुकाव के चलते यह मुमकिन नहीं हो सका। वह अक्सर अपने भाईयों और बाकी रिश्तेदारों से कहती रहती थी कि *रिटायर* होने के पहले सोमवार को वह दोपहर तक सोती रहेगी। बच्चों में से कोई अगर तब तक भारत में रह गया तो बच्चों और अपने पति के साथ नाश्ता करने और नहाने से पहले ताश खेलूंगी। उसने मज़ाक में यह भी कहा था कि अगर वह आदमी होती तो रिटायर होने पर दाढ़ी बढ़ा लेती और टाय कभी न बांधती, सिवाय अपने बच्चों की शादी में और वह उन सारी किताबों को पढ़ डालती जो सालों से उसके पास पड़ी थी, लेकिन जिन्हें पढ़ने का समय उसे मिल नहीं पाया था। वह अपने पति के विशाल लाइब्रेरी में बैठ जाएगी और टॉलस्टोय की वे सारी किताबें देखेगी जो उसने तब खरीदी थी जब वह महज़ बाईस साल की थी और शादी के बाद जिन्हें वह इस घर में लेकर आई थी। लेकिन, जिसकी उसने केवल कुछ ही पन्ने पढ़े थे। कम-से-कम छः महीने तक वह कहीं घूमने भी नहीं जाने वाली थी। उसके पति को सफर का शौक नहीं था। उसके पति को तंग जगहों में सामने की सीट के पीछे घुटने लगने पर तकलीफ होती थी, फिर चाहे बात अपने बच्चों से मिलने जाने की ही क्यों न हो, उसे बंद जगहों में घुटन सी महसूस होती थी। पत्नी ने कई बार बच्चों से मिलने अमरीका जाने की बात उठाई थी, लेकिन उसके पति ने उसे अकेले जाने का सुझाव दिया। उसके बाद से उसने यह विषय छेड़ना ही बंद कर दिया था।

रिटायरमेंट के बाद का पहला सोमवार कुछ अलग ही गुज़ारा। वह सुबह पाँच बजे उठकर सैर करने निकल गई, पच्चीस सालों में यह उसकी पहली सैर थी। टाइटेनिक पार्क के बिल्कुल पास, पुल पर चढ़ने से पहले, उसे अपने पड़ोसी भट्टाराई जी को देखा और उनसे बात करने के लिए रुकी। भट्टाराई जी ने मज़ाक करते हुए पूछा कि वह टहलने के बाद क्या करने वाली हैं? यह उसका रानी की तरह जीने का पहला दिन जो है। उसने बताया कि शायद वह वापस जाकर टी.वी. देखेगी। वैसे भी उसके पास करने को कोई काम नहीं था। जैकेट खोलकर अपने चेहरे पर हवा करते हुए भट्टाराई ने उससे आने वाली यात्रा

की योजना के बारे में जानना चाहा। उसने विस्तार से उन्हें बताया कि उसके पति हवाई यात्रा से घबराते हैं। एक बार दिल्ली से बागडोगरा जाते समय उसे बहुत शर्मिंदा होना पड़ा था, क्योंकि उसके पति सारे रास्ते गायत्री मंत्र का जाप कर रहे थे। बाकी यात्री भी चिढ़ गए थे। वह आराम से बातचीत कर रही थी। उसे किसी चीज़ की जल्दी भी नहीं थी। न तो उसे काम के लिए तैयार होना था, न ही राकेश के लिए घर लौटने की जल्दी थ। राकेश हर कम में बहुत धीमा था और हमेशा *स्टेट्समैन* अख़बार के खेल के पन्ने को पढ़ता रहता था, जिसके चलते उसका खाना ठंडा हो जाता था। वह सोचने लगी कि क्या भट्टाराई जी को पता है कि राकेश भी विदेश चला गया है। पर उन्हें पता था, इंग्लैंड गया है या ऑस्ट्रेलिया? उन्होंने जानना चाहा। बाकी बच्चों की ही तरह, वह अमरीका गया है। उन्हें हैरानी नही हुई कि कोई भारत में पढ़ना नहीं चाहता? लगभग हर घर से एक-न-एक बच्चा बाहर पढ़ने गया हुआ था। यह तो कुछ आपने ज़्यादा ही कह दिया, भट्टाराई जी ने मुस्कुराकर कहा। सबसे हैरानी की बात तो यह थी कि शहर में बने नए मेडिकल कॉलेज के बाद, हर एक घर से डॉक्टरों की संख्या बढ़ती जा रही थी। भट्टाराई जी ने कहा कि कोई भी एरा-गैरा डॉक्टर बन सकता है। वह भी इस बात से सहमत थी। हाँ, वह सही हैं, बच्चों का विदेश पढ़ने जाने का चलन अभी सिक्किम में इतना आम नहीं हुआ है जैसा कि भारत के और हिस्सों में है। लेकिन, जो विद्यार्थी मुश्किल से बारहवीं पास कर रहे थे, वे भी मेडिकल स्कूलों में दाखिला पा रहे हैं। भट्टाराई जी को बहुत अफ़सोस था कि उनकी बीमार पत्नी का इलाज कर रहे नौजवान डॉक्टर, डॉक्टर के लायक नहीं थे। उन पर उन्हें बिल्कुल भरोसा नहीं था। उनकी बीमार पत्नी के बारे में बात करना उसे ठीक नहीं लगा इसलिए अपने पति के नाश्ते का बहाना बनाकर वह वहाँ से चली गई।

दिन-ब-दिन वह बेचैन होती जा रही थी। घर पर उसके पास करने को कोई काम ही नहीं था। वह रसोईघर में अपने नौकर का हाथ बटाने जब गई, उसके नौकर को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। उसने मन-ही-मन मान लिया कि अब रसोईघर पर उनके नौकर का राज है। कुछ समय के लिए कम्प्यूटर पर सोलिटियर खेलने लगी। तीन महीने पहले ही उसने अपना कम्प्यूटर का शुरूआती कोर्स पूरा किया था। उसने अपना ई-मेल देखा। उसके किसी भी बच्चे ने उसके ई-मेल का जवाब नहीं दिया था। यह उनकी आदत थी। जवाब देने मैं भी क्या पैसे लगते हैं? फिर सोचा शायद लग भी सकता है, वैसे भी अमरीका काफ़ी महँगी जगह है। या क्या पता शायद वे बहुत व्यस्त हो। एक वाक्य में ही तो लिखना है, कौन-सा पहाड़ तोड़ना है। लता कभी-कभी अपनी माँ के विस्तार पूर्वक लिखे हुए ई-मेल, जिसमें वह अपने कुत्तों की शरारतों और पत्ते खेलते हुए पति की चालाकियों का जिक्र करती, तो उसके जवाब में बस 'हा हा' लिखकर देती थी। जब कभी कोई बड़ी ख़बर होती, जैसे एक बार उनके किसी रिश्तेदार की नौकरानी अचानक गर्भवती हो गई थी, ऐसे में सचिन उत्सुकता से जवाब भेजता। लेकिन राकेश जिसको गए हुए एक महीना ही हुआ था, उससे कोई जवाब पाना, सबसे मुश्किल था। कहता है कि वह कभी अपना हॉटमेल चेक नहीं करता। एक बार जब फ़ोन पर बात हुई थी, तब भी उसके पास कहने को ज़्यादा कुछ नहीं था, इसी के चलते उसकी माँ को बहुत चिंता होती रहती है कि वह ठीक भी है या नहीं।

पति उसके पीछे खड़ा हो गया और पूछने लगा, "किसी ने कुछ भेजा है?" उनका कुत्ता उसके पैरों के पास खेल रहा था।

"तुम्हें क्या लगता है?"

"लता ने भी नहीं भेजा?"

"नहीं।"

"सब व्यस्त होंगे।"

"हम इतना ही जानना चाहते हैं कि वे सही-सलामत हैं या नहीं।"

"अगर कोई बात होगी, तो फ़ोन कर लेंगे।"

"बड़े बच्चे तो बहुत पहले के गए हुए थे। मुझे तो बस राकेश की चिंता है।"

"अभी पिछले हफ्ते ही तो हमने उससे बात की थी, है न?"

"वह तो बिलकुल चुप था, बातें तो सिर्फ हम ही कर रहे थे।"

"जैसे हमें करना चाहिए।"

"हाँ, लगता है मैं बेकार परेशान हो रही हूँ।"

"तुम्हारे पास अब सोचने के लिए पहले से ज़्यादा वक्त है।"

"शायद मुझे पढ़ना फिर से शुरु कर करना चाहिए।"

"पहले एक दांव खेलते हैं," पति ने पत्ते फेंटते हुए कहता है।

अगली सुबह सैर करते वक्त दुबारा भट्टाराई जी दिखे, उन्हें देखते ही उसे नमस्ते करती है। आज अपने साथ वह कुत्ते भी लाई थी, लेकिन कुत्ते उसे उल्टी दिशाओं में खींच रहे थे। दो बड़े अलसेसियन कुत्ते जिद्द करते हुए रस्साकशी करने लग गए और वह उन्हें नियंत्रण में लाने की कोशिश करने लगी, यह नज़ारा काफ़ी मज़ेदार था। भट्टाराई दौड़कर उनके पास पहुँचकर, कुत्तों को तेज़ आवाज में बैठने का आदेश देते हैं। हैरानी की बात थी कि कुत्तों ने आदेश का पालन भी किया। फिर दोनों में बातचीत होने लगी। भट्टराई ने उनकी रिटायरमेंट के बारे में पूछा। इसके विषय में उसे चुप रहना चाहिए, जानते हुए भी उसने अपनी चुप्पी तोड़कर बता दिया कि रिटायरमेंट काफी निराशाजनक है। दिनभर करने को कुछ नहीं रहता है और उनके नौकर, जिसे परिवार में सभी *रोबोट* बुलाते हैं, जब भी श्रीमती रसोईघर में जाती हैं,

तो उसे बैचैनी होने लग जाती थी। पहले उसने सोचा था कि ढेर सारी किताबें पढ़ेगी, लेकिन जल्द ही उसे अहसास हो गया कि वह किताबी दुनिया से कितनी दूर हो चुकी है। वह एक के बाद एक पन्ना उलटती है, जिसके अक्षर बहुत ही आकर्षक लगते हैं, लेकिन समझ में उसके कुछ नहीं आता।

"आप कौन सी किताब पढ़ रही थी?"

"अच्छा, टॉलस्टॉय। पहले थोड़ी आसान किताबे पढ़ना शुरू कीजिए।" भट्टराई जी ने सुझाव दिया।

"मैं युवावस्था में बहुत पढ़ा करती थीं।"

"फिर से शुरू कर दीजिए। ऐसी किताब चुने जो आसान हो, जिसके वाक्यों को दोहराने की जरूरत न पड़े, एक ही बार में सबकुछ समझ आ जाए।"

"जैसे।"उसने भट्टराई जी से सुझाव माँगे।

भट्टाराई जी को किताबों के नाम याद ही नहीं आ रहे थे, पर कुछ-न-कुछ तो बताना था।

"मिल्स एण्ड बुन्य कैसा रहेगा?" यह सुनकर वह हँस पड़ी।

उसने भट्टाराई जी से जानना चाहा कि उन्हें रोमाँटिक उपन्यास के बारे में कितनी जानकारी है। उसने यह पढ़ना तब शुरू किया जब उनकी पत्नी मंजू अस्पताल में भर्ती थी। उसे पढ़ने के लिए कुछ हलकी किताबें चाहिए थे, जिसे पढ़ने में ज्यादा मेहनत भी न करना पड़े और जो मजेदार भी हो।। उन्होंने फिर सुझाव कि एक-दो बार पढ़ने के बाद जब वह पढ़ने की आदि हो जाएँगी, उसके बाद वह धीरे-धीरे गंभीर किताबें पढ़ सकती है।

वह विचार करने लगी कि वह उनकी पत्नी के विषय में बात छेड़े या नहीं? फिर सोचा शायद यह ही एक ऐसा समय है, जब उन्हें अपनी बीमार पत्नी के बारे में विचार करना नहीं पड़ता, उसने तय किया कि वह इस पर बात ही नहीं करेगी। भट्टाराई जी ने पूछा कि उनके पति दिन भर क्या करते हैं? उसने बताया कि वे ज़्यादातर ताश खेलकर ही समय बिताते हैं। कभी-कभी वे थोड़े पैसे दाव में लगाकर जुआ खेलते थे। हालांकि हारे या जीते, आख़िरकार पति के पैसे उसी के पैसे थे। लेकिन दोनों को हार पसंद नहीं था, इसलिए जब भी खेलते जीतने के लिए खेलते थे। पर कभी-कभी वे घर के काम को लेकर शर्त रखते थे। जबकि घर के सारे काम, खाने से लेकर सफाई करने तक के लिए पंद्रह साल से रोबोट तो था ही। फिर भी उन्हीं कामों में से कुछ काम अपने लिए छाँट लेते और उसी पर शर्त लगाकर जुआ खेलते थे। इससे उनका समय भी कट जाता था, साथ ही यह महसूस कराता था कि वे अपनी ज़िन्दगी ज़ाया नहीं कर रहे। बच्चों के अमेरिका जाने के बाद और अपनी रिटारयमेंट के बाद, वह खुद को अनुपयोगी महसूस करने लगी थी।

भट्टाराई जी कुछ कहने ही वाले थे, पर वाक्य शुरू करने से पहले ही अचानक रुक गए। उसे एहसास हो गया था कि भट्टराई जी अपनी पत्नी के बारे में कहने वाले थे।

“क्या आपने आस-पड़ोस के बच्चों को उनके पाठ में मदद करने की कभी कोशिश की है? इससे अच्छा समय कट जाएगा।” भट्टराई जी ने कहा। भट्टराई जी खुद जब रिटायर हुए, उन्होंने सबसे पहले यही किया था।

“आस-पड़ोस के बच्चों के स्कूल खत्म होने के बाद वे इस तरह से का समय उपयोग कर सकती हैं।”

समय काटने के लिए चीजों की एक सूची बनाने के बारे में भट्टराई जी सोचने लगे।

“कैसा रहेगा अगर आप कम्प्यूटर चलाना और बच्चों को ई-मेल करना सीख लें?”

“मुझे ई-मेल करना आता है और दिन में तीन से चार बार *लॉगिंग इन – लॉगिंग आउट* करके मैं ऊब चुकी हूँ।” एक तरफ बच्चे थे जो बड़ी मुश्किल से कभी-कभार ही कुछ शब्दों में जवाब देते थे और एक तरफ यह थी, जो अपने ई-मेल को दिलचस्प और मज़ेदार बनाने की कोशिश करती - कुत्तों की शैतानियों से लेकर रोबोट के गुस्से का आवेश सब कुछ लिखती थी। इस उम्र में एक औरत का कंप्यूटर सीखना काफी काबिल-ए-तारीफ की बात है। भट्टराई जी जो एक रिटायर्ड इंजीनियर थे, उन्हें सीखने में स्वयं कई हफ्ते लग गए थे। वह भी इसीलिए सीखा क्योंकि विदेश में जो उनका बेटा रहता है, उसने सालों से कंप्यूटर सीखने के लिए नाम में दम कर रखा था। भट्टाराई जी के बेटे भी अमेरिका में रहते हैं। भट्टराई जी के बच्चे से ही इनके बच्चे प्रभावित हुए थे। बच्चों के अमेरिका जाने के बाद, इन दिनों भट्टाराई जी की पत्नी जब दिन में पाँच से सात घंटे सोती है, तब वे चित्र बनाने बैठ जाते हैं।

“चित्र बनाना अच्छा लगता है,” उसने पूछा।

“अच्छा तो लगता है।” भट्टाराई जी ने जवाब दिया। अच्छे चित्रकार तो नहीं थे, पर भट्टराई जी को अपनी चित्रकारी उसे दिखाने में कोई आपत्ति भी नहीं थी। भट्टराई जी ने किसी दिन घर पर आने का न्यौता दिया।

एक दिन जब उसके पति ने उसे *मिलस एंड बुन्स* पढ़ते देखा, तो वह हँस पड़ा और पूछने लगा।

“यह कौन सा कचरा उठाकर पढ़ रही हो।”

“जल्द ही इन किताबों में जिस तरह के आदमी के बारे में बताया है, वैसा चाहने लगोगी और मैं उस जैसा नहीं बन सकूँगा,” उसने कहा।

“आपको क्या पता यहाँ किस तरह का वर्णन है?”

“पता है, लम्बा-चौड़ा, सांवला और सुंदर। शायद मुझे थोड़ा सांवला होना चाहिए था।”

“शायद आपने खुद भी पढ़ा होगा। वरना आपको कैसे पता इसमें मर्दों का किस प्रकार वर्णन किया गया है।”

“ना, मैं कचरा नहीं पढ़ता। ऐसी किताबें दिमाग में ज़हर भर देता है। क्या हुआ तुम्हारे टॉलस्टॉय पढ़ने की बड़ी योजनाओं को?”

“काफी अरसे से मैंने पढ़ा नहीं है। मैं सोचती हूँ, थोड़ी हल्की किताबों से शुरूआत करूँ।”

“हाँ, जैसे *टिंकल कॉमिक*।” वे आज बड़े खुश लग रहे थे। “या *पींकी* या *चाचा चौधरी*। याद है, राकेश को यह सब किताबें कितनी पसंद थी?”

“हाँ और मुझे याद है, ये कॉमिक पढ़ने के चक्कर में कितनी बार उसकी स्कूल बस छूट गई थी।”

“उसने आज फोन किया था। मैंने उससे पूछा, अमेरिका में *चाचा चौधरी* की कॉमिक मिली या नहीं।”

“आपने मुझे उसके फोन के बारे में बताया क्यों नहीं?”

“हम दोनों के पास करने को कुछ नहीं है, फिर भी एक-दूसरे से ज़्यादा मिलते नहीं, यह तदा अजीब सा नहीं है, उसके पति ने कहा।

देखा जाए तो उनकी बात सही भी थी। जब श्रीमती सैर पर निकल रही थी, तब वह जगता भी नहीं। श्रीमान को शाम के वक्त सैर पर जाना पसंद था और कोशिश करता था कि उसकी पत्नी भी शाम को साथ आए, लेकिन हर सुबह वह पाँच बजे उठ जाती थी, और उसे समझ नहीं आता था कि वह करे तो क्या करे। सैर पर जाना ही सबसे अच्छा तरीका था समय काटने के लिए और इन दिनों वह अपने रोमाँटिक उपन्यास में इतनी गहराई से घुसी हुई थी कि उन्होंने कई दिनों से ताश बिल्कुल ही नहीं खेला था।

वह अपने बेटे से बात नहीं कर पाई क्योंकि वह एक दूसरे आदमी के साथ बातचीत में व्यस्त थी, जो कि उसका पति नहीं था। उस सुबह उसके अलसीसियन कुत्तों को बिठाने की भट्टराई जी की कोशिश को याद करके वह मन-ही-मन मुस्कुराने लगी।

“उसने क्या कहा?” श्रीमती ने पूछा।

“वही रोज़ की बातें।”

“क्या उसे पैसे की जरूरत है?’

“उसने कुछ नहीं कहा। बातें तो ज़्यादा मैं ही कर रहा था।”

“क्या मैं उसके खाते में पैसे डाल दूँ? ताकि ज़रूरत पड़ने पर काम आ जाए?”

“ऐसा तुम क्यों करोगी? उसने पैसे माँगे ही नहीं हैं।” श्रीमान ने गुस्से से कहा।

“फिर भी।”

“नहीं,” उसने अब आराम से कहा। “उसे हम कोई पैसा नहीं देंगे। अगर उसे कुछ चाहिए, तो उसे खुद माँगना सीखना चाहिए।”

“फिर तो मांगने से रहा।”

“तो फिर उसे सीखने दो।”

“अच्छा, तुम चाहते हो कि वह विदेश में जाकर भूखा मरे?”

“भूखा रहने दो। अगर यही उसे मर्द बनाएगा, तो यही सही। तुम्हारे लाड प्यार ने उसे ऐसा बना दिया है।”

दराज से ताश की गड्डी निकाल चुके उसके पति को बिल्कुल भी पता चलने नहीं देगी और वह चुपचाप जाकर राकेश को दो लाख रुपए भेज देगी। आखिरकार राकेश सबसे छोटा था। वह विचार करने लगी कि विदेश में जिनके बच्चे हैं, वे माँ-बाप अपने बच्चों की मदद किस तरह से करते हैं? वह कल यह जानकर रहेगी।

अगली सुबह भट्टाराई जी उन्हें देखते ही पूछा कि उनके कुत्ते कहाँ है? वे बहुत उधम मचाते हैं और सैर करते वक्त उसकी रफ्तार में रुकावट लाते हैं, इसलिए उन्हें घर छोड़ आए। उसका चेहरा लाल होते हुए कहा कि शायद आपके जैसा कोई चाहिए जो उन्हें अनुशासित कर सके, इतना कहते ही उसके गाल शर्म से लाल हो गए। भट्टाराई जी ने बताया कि उनके पिता फौजी थे और लोहे की तरह सख्त हाथों से उन्होंने उसे बड़ा किया था। अगर टेबल पर एक दाना चावल का रह जाता तो उसे कान पर एक घूसा मिलता था। दोनों हँसने लगे। लेकिन भट्टराई जी अपने बच्चों के साथ सख्त बनने की कोशिश करने पर भी, उसका मन नहीं मानता था। और इधर श्रीमती और उसका पति बच्चों को अनुशासित करने की कोशिश के बावजूद सफल नहीं हुए। उन्होंने कोशिश तो की थी मगर हमेशा नाकामयाब रहे। उसका बस चलता तो वह किसी को विदेश नहीं भेजती। विशेषकर जबसे उसके बड़े बेटे ने बताया कि विदेश में पढ़ने का बहाना लेकर लोग अवैध रूप से नौकरी करते हैं। यह सुनकर विदेश की सारी मोह-माया खत्म

हो गई थी। विदेश में रहने वाले बच्चों को उनके माँ-बाप के सुझाव के बावजूद वे, पैसे के पीछे जाने से रोक नहीं पाते है, है न? उसने पूछा। उनकी स्थिति भट्टाराई जी से मिलती थी, दोनों के ही बच्चे विदेश में रहते थे, इसी कारण भट्टाराई जी उनकी चिंताओं को समझ सकते थे।

क्या भट्टाराई जी के बच्चों ने कभी आर्थिक सहायता ली थी? चाहे उसके छोटे बेटे ने पैसे न माँगे हों, फिर भी वह उसकी मदद करना चाहती थी लेकिन उसके पति इसके बिल्कुल खिलाफ थे। भट्टाराई जी के परिवार में उनके बड़े बेटे ने मदद ली थी और उन्होंने उसकी मदद भी की थी। लेकिन भट्टाराई जजी का छोटा बेटा ज़िम्मेदार था। वह तो शुरूआत में दिए गए पैसे भी लौटाना चाहता था। और एक तरफ इनके बच्चे, जो बिल्कुल भट्टाराई जी के बच्चों के विपरीत थे। इनके बड़े बच्चे काफी जिम्मेदार और महत्वाकांक्षी थे, उनके लिए उसे ज़्यादा चिंता नहीं थी। पर छोटा लड़का बातें कम करता था। उसे गए हुए ज़्यादा समय नहीं हुआ था, फिर भी वह उसके लिए हमेशा परेशान रहती थी। अगर वह शराब और सिगरेट पीने लगेगा तो क्या होगा? वह जानती थी कि उसे अब अपने छोटे बेटे को अपनी ज़िन्दगी अपने दम पर जीने देना चाहिए, पर चाहे वह जितनी भी कोशिश कर ले, उसे बेटे की चिंता लगी रहती है। क्या भट्टाराई जी को भी बच्चों की चिंता रात-भर जगाए रखती है?

उन्होंने कहा, नहीं। जवान बेटों के बारे में सोचकर अपनी नींद हराम करने से कोई फायदा नहीं और जहाँ तक पीने की बात है, उन्हें अपने चारों ओर देखना चाहिए। आजकल के बच्चे पीते ही हैं, अगर उनके बेटे ने भी थोड़ी बहुत पी भी ली, तो वह अपराधी नहीं बन जाएगा। थोड़ी मात्रा में पीने से स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं है। श्रीमती जी के परिवार में अधिकतर लोग रोगी थे। वह जानना चाहती थी कि भट्टाराई जी ने अपने आपको तन्दुरूस्त रखा है। उनका स्वास्थ्य बीस साल के लड़के की तरह है। वह मुस्कुराते हुए जवाब देते हैं कि वह सुबह-सवेरे की सैर और बातूनी लोगों के चलते, वह अभी तक जवान हैं। यह सुनकर श्रीमती का चेहरा लाल हो गया, जब भट्टाराई जी ने ‘बातचीत’ के बदले ‘बातूनी’ शब्द का प्रयोग किया। शराब और उनकी लत से उन्हें डर लगता है, यह बात भट्टाराई जी को भलीभांति पता थी और अगर उनका बेटा थोड़ी मात्रा में पीए, शायद वह पीता भी हो, तो भी यह कोई चिंता की बात नहीं है। पर यह उसके और उसे पति के लिए चिंता का ही विषय है, उसने जवाब दिया। उनके परिवार में कोई एक बूंद शराब तक नहीं पीता और उन्होंने अपने बच्चों को ऐसे अच्छे संस्कार दिए है, लेकिन लुभावनी चीजें हर जगह हैं, विशेषकर विदेश में, हालांकि, वह खुद कभी भारत से बाहर नहीं गई थी। भट्टाराई जी ने कहा, लेकिन एक व्यक्ति के लिए माँस अगर स्वादिष्ट है, तो वही माँस दूसरे व्यक्ति के लिए ज़हर हो सकता है। मूल्य एवं परिवेश सभी के अलग होते हैं। इतना समझाने के बाद भी वह समझी नहीं। भट्टाराई जी ने उदाहरण देने की कोशिश की, जो कि अच्छा खासा उदाहरण था, पर उन्होंने पहले ही कह दिया इस उदाहरण से वे अपमानित महसूस न करे। भट्टाराई जी शराब पीते हैं और उनके बेटे भी पीते हैं। वह चौंक गई।

“उन्हें क्या यह अस्वीकार्य नहीं लगा?” जबकि भट्टाराई जी बिल्कुल भी नहीं चौंके।

“लेकिन अगर भट्टाराई जी और उनके बेटों ने श्रीमती, श्रीमान और उनके बच्चों को एक साथ जुआ खेलते देखा, तो वे भी चौंक जाएँगे। वहीं जुआ उनके घर में खेलना वर्जित है। ठीक है, दूसरा उदाहरण देता हूँ। कुछ परिवारों में शादी-शुदा महिलाएँ स्वतंत्र रूप से पुरुषों के साथ घुलती-मिलती हैं, जबकि कुछ परिवारों में इस बात से बवाल मच जाएगा।”

हालांकि उसे जवाब पता था, फिर भी वह बीच में पूछ उठी, “आपका परिवार किस तरह का है?”

“कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि मेरा परिवार किस तरह का है, क्योंकि किसी को नहीं पता कि सुबह-सुबह मैं किससे बातें करता हूँ,” भट्टाराई जी ने कहा।

“नहीं, नहीं, मेरा यह मतलब नहीं था,” उसने कहा। भट्टाराई जी को पता था कि वह क्या कहना चाहती है और हाँ यह भी पता था कि उसके पति सही हैं, बेटे को पैसे भेजने से वह और भी ज़्यादा उन पर निर्भर हो जाएगा।

जब वह घर पहुँची तब उसके पति ताश की एक गड्डी लेकर खेलने के लिए तैयार थे।

“बड़ी पत्ती जिसकी होगी, वही बाँटेगा,” ताश की गड्डी से एक पत्ती खींचते हुए उसने कहा। नौ की पत्ती निकलती है। “चलो किट्टी खेलते हैं।”

उसने एक पत्ती निकाली, वह बादशाह था, उसने बाँटना शुरू कर दिया।

“घर के काम के लिए ही दाव लगाना है?” श्रीमती ने पूछा।

“काम तो कुछ है ही नहीं। चलो पैसे के लिए खेलते हैं।”

“कितना?”

“एक सौ रुपए। नियम वही रहेंगे।”

“आपको नहीं लगता, यह काफी ज़्यादा हो गया? यह तो असल जुए की तरह है।”

“तुम्हें कब से पैसे की चिंता होने लगी है? हम सभी जुआरी हैं, यहाँ तक कि राकेश भी।”

“मैं सोच रही थी, लोग हमारे बारे में क्या-क्या कहते होंगे?”

पहले दो हाथ उसके बहुत ही अच्छे आए थे। पहले डबल रन और दूसरा रन। उसका आखिरी हाथ कमज़ोर आया, बस दो हाथ और उसकी जीत तय थी।

“तुम जुए की बात कर रही हो? सभी को पता है, हमारा पूरा परिवार जुआरी है।”

“मुझे डर है, कहीं लोग यह धारणा न बना लें कि हम जुआरी हैं।”

“जब दूसरे लोग ताश खेलते हैं, उनके बारे में तो हम कोई राय नहीं बनाते, है न?”

“पर जो शराब पीते हैं, उनके लिए हम धारणा बना लेते हैं कि वह शराबी है।” यह बात वह उठाना नहीं चाहती थी, पर अपने आपको रोक नहीं पाई।

“शराब पीना और ताश खेलने में फर्क है,” अपने बात के बचाव में कहता है।

“कुछ लोगों के लिए ताश खेलना शराब पीने से भी बदतर है। बहुत सारे समुदाय में शराब पीना, उनकी संस्कृति का एक हिस्सा है। इन लोगों की संस्कृति में पीना दोषपूर्ण न हो, पर जुआ खेलना हो सकता है।”

“तुम्हें ताश खेलना है या नहीं?” हार मान कर पति ने पूछा।

“खेलना है।”

“फिर बंद करो बातें करना, क्या अच्छा है, क्या बुरा। तैयार हो जाओ?”

“ठीक है, मैंने बांटा था। तुम अपने पत्ते पहले दिखाओ।” पति ने अपने तीन गुलाम के पत्ते दिखाए, जिसने उसके डबल रन को हरा दिया। शायद अब वह हारने वाली थी।

“आहा, अंदर से मुझे महसूस हो रहा है कि मैं जीत जाऊँगा,” उत्तेजित होकर उसका पति चिल्लाने लगा। उसने अपनी मुट्ठी जोर से बंद की और हाथों को हवा में हिलाने लगा।

भट्टाराई जी के बड़े बेटे ने ग्रीन कार्ड के लिए आवेदन दिया था, जिसकी स्वीकृति का वह इंतज़ार कर रहा था। फिर तो उन्हें पिता होने के नाते आसानी से वीज़ा मिल जाएगा? मिल तो जाएगा, पर इसका वे क्या करेंगे? उसे अपनी पत्नी का ख्याल रखना है, जिसकी तबीयत डॉक्टरों के कोशिशों के बावजूद दो साल पहले जैसी थी, वैसी ही है। अब उसकी पत्नी की स्थिति कैसी है? पिछले हफ्ते से उनका आक्रामक व्यवहार बंद हो गया है, लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि अब भी वह न भट्टाराई जी को पहचानती है और न ही किसी और को। नियति ने एक के बाद दूसरी मुसीबतों के पहाड़ उसके सामने रख दिए, फिर भी वे कैसे इतने खुशमिजाज़ रह सकते हैं? कुछ चीज़ें उसके बस में नहीं थीं, जिनको वह बदल नहीं सकता था, वह कुछ कर सकता था, तो उनके प्रति अपना नज़रिया बदलना।

“नहीं नहीं, एक पत्नी है...” वह शब्द ढूंढ़ने लगी, फिर आगे कहने लगी। “स्वास्थ्य जिस तरह दिन-ब-दिन बिगड़ता जा रहा है, जिसकी ठीक होने की आशा बहुत कम है। आपके लिए काफी मुश्किल होती होगी। क्या उन्हें कभी इन सबसे छुटकारा पाने का मन नहीं करता?”

यह बहुत ही जोखिम भरा और व्यक्तिगत सवाल था, ऊपर से बहुत सारे बंदिशें थीं, क्योंकि दोनों किसी और के पति और पत्नी थे। लेकिन भट्टाराई जी बेफिक्र दिखे।

"हाँ, बिल्कुल यह मुश्किल है और ऐसा एक दिन नहीं गया जब मेरा इन सबसे छुटकारा लेने का मन न किया हो। मेरे बच्चों ने भी मुझे काफी मनाने की कोशिश की। उनके अनुसार उनकी माँ को नर्सिंग होम में रख देना चाहिए, ताकि उनका चौबीसों घण्टे सही से देख-रेख हो सके। सीलीगुड़ी में जो नए नर्सिंग होम खुले हैं, उनमें से किसी एक में अपनी पत्नी को भर्ती कर देने के लिए मन न ललचाया हो, यह कहना झूठ होगा। लेकिन मुझे डर है कि समाज क्या कहेगा।" और आगे कहा। "हाँ, वैसे आप वह कभी भी चित्र देखने के लिए घर आ सकती हैं। कल दिन भर मैंने चित्र बनाए थे। यह बहुत ही अच्छा चित्र था, आपको ज़रूर पसंद आएगा," उन्होंने कहा। भट्टाराई जी उनकी आंखों में लगातार देखे जा रहे थे। उसने गौर किया कि भट्टाराई जी की आंखों का रंग काफी हल्का है।

"श्रीमती भट्टाराई अब थोड़ी अच्छी होती दिख रही है,"' बुरे ताश के पत्ते आने से मुँह बनाते हुए वह कहने लगी।

"इसका मतलब है, वह किसी का खून करने की कोशिश नहीं कर रही है?" पति ने पूछा।

"ज़ाहिर सी बात है कि इनका हिँसक विस्फोट होना अब बंद हो गया है।"

"यह तो अच्छी बात है। और कोई सुधार?"

"भट्टाराई जी कहते हैं कि वह अब भी उन्हें नहीं पहचानती है।"

"वह एक मजबूत आदमी है। वह अपनी पत्नी का तीन साल से ध्यान रख रहा है।"

"और वे कभी-भी शिकायत नहीं करते," उसने कहा।

"हमें केसे पता चलेगा?" उसके पति ने कहा। "हम इतने भी करीबी दोस्त नहीं हैं। शायद वह अपने करीबी दोस्तों से अपनी दयनीय जीवन की शिकायत करता होगा।"

वह विचार करने लगी कि अगर उसके पति को उसके और भट्टाराई जी के सुबह-सवेरे की बातचीत के बारे में पता चलेगा, तो वह क्या कहेंगे। उसे यकीन था कि उसका पति चौक जाएगा जब उसे यह पता चलेगा कि भट्टाराई जी अपनी पत्नी को नर्सिंग होम में रखने की सोच रहे हैं। अचानक वह सचेत हो गई, उसे अहसास हुआ कि वह भट्टाराई जी को अपने पति के सामने अच्छा दिखाने की कोशिश कर रही थी। यह अजीब बात थी - भट्टाराई जी के बारे में उसका पति क्या सोचता है, दुनिया क्या सोचती है उसे इसकी क्यों परवाह हो?

"उनके बच्चे चाहते हैं कि अपनी माँ को नर्सिंग होम में भर्ती कर दें।"

“हमारे समाज में ऐसा काम भला कौन करेगा?” उसने उल्टा सवाल किया। यह साफ था कि उसके पत्ते अच्छे नहीं आए थे।

“अभी तो ठीक है, पर जब आक्रामक हो जाती है तब क्या? तुम्हें नहीं लगता कि नर्सिंग होम चले जाना ही अच्छा है?”

“भारत में नर्सिंग होम पैसे बनाने की मशीन है,” उसके पति ने कहा। “मुझे नहीं लगता कि कोई नर्स उनका अच्छी तरह से ख्याल रखेगी।’

“कम-से-कम उन्हें यह चिंता तो नहीं रहेगी कि वह किसी को चोट न पहुँचा दे।”

“हमारे बच्चे अगर हमें बूढ़े होने पर वृद्धाश्रम भेज देंगे, तो क्या तुम्हें अच्छा लगेगा?” पति ने पूछा।

“हाँ, अच्छा लगेगा। बल्कि मैं सोच ही रही थी, उनसे इस बात पर चर्चा करूँ।”

“और दुनिया को क्या सफाई दोगी?”

“आसान सी बात है कि मैं अपने बच्चों पर बोझ नहीं बनना चहती।”

“और दुनिया के लिए हँसने की एक वस्तु बन जाओ? जो भी हो, तुम्हें क्या लगता है, हमारे बच्चे हमें वृद्धाश्रम में रख देंगे?”

“मुझे लगता है, रख देंगे?”

उसने तीन हाथ जीत लिए थे, जितना उसने पत्ते खराब सोचे थे, उससे काफी अच्छे थे।

“नहीं, सिर्फ सचिन ही ऐसा करेगा। वह ढीठ और स्वार्थी है। लता ऐसा नहीं करेगी और राकेश तो कभी नहीं करेगा।”

“अगर भट्टाराई जी के बच्चों को लगता है कि अपनी माँ को नर्सिंग होम में भर्ती करना सही है, तो हमारे बच्चे भी ऐसा कर सकते हैं?”

वह दूसरा हाथ भी जीत गई।

“क्योंकि हमने अपने बच्चों को अच्छी परवरिश दी है।”

“बेचारे, उस आदमी को क्यों बुरा-भला कह रहे हो?” उसने कहा।

“नहीं, मैं ये नहीं कह रहा कि वह शैतान है। मुझे लगता है उनके बच्चे शैतान हैं।”

“लेकिन शायद उनके बच्चे ही चाहते हैं कि उनके पिता इस बोझ से मुक्त हो जाएँ।”

"उनकी माँ से छुटकारा पाने के बाद उनके पिता क्या करेंगे, क्या? वे उनसे नई पत्नी लाने को कहेंगे? और उससे भी बुरा जब वे बीमार हो जाएँगे, तो उन्हें भी नर्सिंग होम भेज देंगे?"

"अगर कभी कोई ऐसी परिस्थिति आ जाए, जहाँ मैं अपने लिए ही निर्णय न ले सकूँ, तो मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे नर्सिंग होम में भर्ती कर दो।"

तीसरा हाथ किसने जीतना, उससे उसे कोई मतलब नहीं था। उसने पूरी बाज़ी ही जीत ली थी और तीनों हाथ जीतने पर जो बोनस मिलने वाला था, उससे उसे कोई सरोकार नहीं था। उसे अपने पति को हराना अच्छा लगता था, जब उसने देखा कि तीसरा हाथ भी अच्छा है, तब उसने जीत की ख़ुशी में मुट्ठी बना ली और टेबल पर रखे दो सौ रुपये उठा लिए।

"मैंने सच में सोचा था कि कम-से-कम मैं दो हाथ तो ज़रूर जीतूँगा," उसके पति ने कहा।

"मुझे सलामी भी दो।"

"कैसा रहेगा, अगर में तुम्हें अभी भर्ती कर दूँ तो?" सौ रूपए का नोट देते हुए अनिश्चित होकर उसने कहा। "तुम ऐसी बातें कर रही हो मानों तुम्हें पागलखाने में भर्ती होने की ज़रूरत है। लो, अभी पत्ते बांटो।"

एक आलस भरे शनिवार के दिन चित्र देखने वह भट्टाराई जी के घर गई। जाने से पहले उसे फोन करना चाहिए था, पर उसके पास भट्टाराई जी का नम्बर नहीं था। थोड़ी अलग दिखने के लिए, उसने बालों को बांधकर एक जोड़ा बना लिया था, पर जब देखा कि माँग की सिंदूर ज़्यादा दिख रही है, उसने दुबारा अपने बाल रोज़ की तरह खोल लिए। पहले सोचा था कि अपने साथ काम वाली की बेटी को ले जाएगी, लेकिन आखिरकार अकेली ही चली गई। दरवाज़े की घंटी बजाते वक्त उसका हाथ कांपने लग गया था, वह सोचने लगी कि दरवाज़ा कौन खोलेगा। अगर उनकी पत्नी ने खोला तो बहुत ही अज़ीब लगेगा। शुक्र है, भट्टाराई जी सामने आए, उनके हाथ में तांबे का गुलदस्ता था, जो ऑर्किड फूलों से भरा था।

"संयोग की बात है, मैं आपके लिए ऑर्किड के फूल तोड़ ही रहा था और आप वह खुद ही सामने आ गई," भट्टाराई जी ने कहा।

शायद वे झूठ बोल रहे थे, पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वे थोड़े निराश दिख रहे थे, क्योंकि इस साल पिछली साल की तरह ऑर्किड उतना अच्छा नहीं खिला था। उसने फूलों की तरफ देखा, पर उसे कोई कमी नज़र नहीं आई। वैसे भी वह कोई बागवानी की विशेषज्ञा तो नहीं। उसे पता नहीं था कि भट्टाराई जी को फूलों में इतनी दिलचस्पी है।

“क्या पहले से आपकी बागवानी में दिलचस्पी थी?”

“बागवानी केवल शौक ही नहीं, बल्कि यह मुझे तनाव से भी आराम दिलाता है।”

“आप चाय या कॉफी क्या लेना पसंद करेंगी?”

“पानी ठीक है,” उसने जवाब दिया। उसने अपनी कामवाली से कहा कि वह दो गिलास जूस बना दे। उन्हें विशेषकर अपनी जूस में लिचि पसंद थी।

“आपकी रिटायरमेंट अब कैसी बीत रही है?”

उसने बताया कि अब उसने *मिल्स एंड बुन* पढ़ना शुरू कर दिया है। वह बहुत ही मनोरंजक है। उसके पति जल्द ही अब किताब छुपाने लग जाएँगे, क्योंकि वह उसके साथ ताश नहीं खेलती। जिस तेजी से वह पढ़ रही है, उतना तो वह बच्चों के पैदा होने से पहले भी नहीं पढ़ती थी।

भट्टाराई जी के घर में वह पहले भी आ चुकी है। वास्तव में एक बार इसी बैठक वाले कमरे में श्रीमती भट्टाराई ने उनके ऊपर खाली कचरे का डब्बा फेंका था। उसने गौर किया कि बैठक वाले कमरे में बहुत सारे बदलाव आ गए हैं। काँच का कॉफी टेबल गायब था। टेबल-कुर्सी के नुकीले कोनों से कहीं उनकी पत्नी को चोट न लग जाए इसलिए सभी किनारों को कपड़े से ढककर, उसपर टेप लगा दिए थे।

“हाँ, ताकि मंजू को चोट न लग जाए।”

“हाँ, ताकि उन्हें चोट न लग जाए,” उसने भी दोहराया। भट्टाराई जी की पत्नी मंजू कहीं दिख जाए, इसलिए वह अपनी आँखे दौड़ाने लगी। मंजू कहाँ है, वह भट्टाराई जी से पूछ सकती थी, लेकिन उसने पूछा नहीं।

भट्टाराई जी ने उनके स्टूडियो में चलने को कहा। वास्तव में वह स्टूडियो नहीं था, बल्कि उनके गेस्ट हाउस का एक हिस्सा था, जिसे उन्होंने अपना कार्यस्थल बना लिया था। घर के किनारे वाले दरवाज़े से वे बाहर आए। उनकी पिंडली में एक जोंक चिपक गया था, जिसे निकालने वे आधे में ही रूक गए। उन्होंने एक सूखी लकड़ी उठाई, ताकि जोंक उस पर चढ़ जाए। शायद ऑर्किड तोड़ते समय चिपक गया होगा। जोंक पर नमक छिड़क कर मारने की सलाह वह देने ही वाली थी, लेकिन जब देखा कि भट्टाराई जी जोंक सही-सलामत बचने की कोशिश कर रहे हैं, तो उसे अपनी सोच पर शर्मिंदगी महसूस हुई। पर साथ ही संतोष भी था कि उसने अपना सुझाव नहीं दिया। भट्टाराई जी की पिंडली लाल हो गई थी, जिसे वह गलती से छूने ही वाली थी।

“क्या करूँ आखिर माँ हूँ, आदत कभी छूटती नहीं है,” यह कहकर उसने स्पष्ट किया और आगे पूछा, “आपको किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं?”

"नहीं, किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, बगीचा जाने पर कीड़े-मकोड़ों का मिलना तो आम बात है।"

वह खुद कोई कलाकार नहीं थी, जो भट्टाराई जी के कार्य का मूल्याँकन करे। एक चित्र था, कनचनजंघा पर्वत की कोख से सूर्योदय होता हुआ, दूसरी ओर पर्वत का अधिकतर हिस्से बादल से ढके हुए थे, वे ज़्यादातर प्रतिमाएँ बनाते हैं। अधिकतर चित्र अपने बेटे के बना रखे थे।

"क्या आप बहुत पहले से चित्र बनाते हैं?"

"नहीं, कुछ महीने पहले ही चित्र बनाना शुरू किया है।"

भट्टाराई जी ने आठ साल से अपने बड़े बेटे को नहीं देखा था और छह साल से छोटे बेटे को। श्रीमती को डर था कि अपने बच्चों को देखने के लिए कहीं उसे भी इतना लम्बा या उससे भी लम्बा इंतजार करना न पड़ जाए। भट्टाराई जी ने उसे एक चित्र दिखाया। उन्होंने उस चित्र में शरीर के दूसरे हिस्से को छोड़ केवल आँखों पर ध्यान देने को कहा।

"केवल देखने पर डरावनी लगती हैं।"

"मेरी पत्नी की आँखे आजकल वैसी ही डरावनी और पीड़ित दिखती हैं।" भट्टाराई जी ने कहा।

वे फिर ऊपर वाले कमरे में गए, जहाँ उसने अपनी चित्र देखी - एक चित्र में वह अकेली दौड़ रही है, दूसरी जहाँ वह चिंता मग्न चल रही है और तीसरा चित्र जहाँ कुत्ते उसे अलग-अलग दिशाओं में खींच रहे हैं।

"सुबह साथ दौड़ने वाले साथियों के भी चित्र बनाते हैं?" उसने पूछा।

"एक बार मैंने पीपल के पेड़ के नीचे बैठे एक जोड़े का चित्र बनाने की कोशिश की थी, लेकिन जब पुरुष की रूपरेखा सही से नहीं बन पा रही थी, तो मैंने वह चित्र बनाना ही छोड़ दिया।" भट्टाराई जी ने जवाब दिया।

"कुत्तों के साथ वाला चित्र क्या मैं ले जा सकती हैं? मैं इसे खरीदने के लिए पैसे भी देने को तैयार हूँ।"

"क्या उसके पति को बुरा नहीं लगेगा कि उसकी पत्नी का चित्र किसी और मर्द ने बनाया है?"

"ऐसी बातें मैं सोचती नहीं।"

"समय आ गया है कि इस पर विचार करें।" दोनों एक-दूसरे को देखने लगे।

“अगर आपको आपत्ति नहीं तो मैं आपको सबसे उत्कृष्ट चित्र दिखाना चाहता हूँ। मैं कलाकार हूँ और कलाकार लोग कई बार समाज में जो चीज़ें स्वीकृत नहीं है, वही करते हैं।”

“क्या आप देखना पसंद करेंगी?”

“अब यहाँ आ ही गई है, तो क्यों नहीं?”

भट्टाराई जी ने जब उस चित्र से पर्दा हटाया, वह दंग रह गई। उस चित्र में एक महिला है, जिसका चेहरा उससे हूबहू मिलता है और वह एक पुरुष को अपना दूध पिलाते हुए दिखाया गया था।

“आपके छोटे बेटे के प्रति आपकी ममता को देखकर, मुझे यह उत्कृष्ट चित्र बनाने की प्रेरणा मिली है। यह चित्र हर जगह से मातृत्व का प्रतिनिधित्व करता है। मातृत्व पवित्र प्रेम का प्रतिरूप है। स्तन नहीं दिखाए क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि तस्वीर अश्लील दिखे।” भट्टाराई जी ने अपने चित्र की व्याख्या की।

“मुझे अभी जाना है,” वह कहती है।

“रूकिए,” उसने चिल्लाया। भट्टाराई जी चाहते थे कि वह अपने साथ ऑर्किड घर ले जाए।

“मैंने आपके लिए ही फूल तोड़े थे। मेरा मतलब है,आपके घर के लिए मैंने फूल तोड़े थे।” उन्होंने बात को स्पष्ट करते हुए कहा।

“मैं समझ गई हूँ, आप जो कहना चाहते हैं।” उसने कहा।

“सारे ऑर्किड उठाकर ले जाना मेरे लिए मुश्किल, अगर आप बुरा न मानें तो आपकी कामवाली को फूलों का गुलदस्ता बाद में नीचे ला देने को कह दीजिए।”

“अरे! अभी तो जूस आया नहीं है, भट्टाराई जी ने कहा।

“मुझे थोड़ी जल्दी है,” या कहकर वह हड़बड़ाते हुए घर चली जाती है।

श्रीमान ने जब दोबारा ताश की गड्डी की गिनती की तो देखा कि बस इक्यावन पत्ते हैं।

“मुझे लगता है कि चिड़िया का गुलाम गायब है,”श्रीमान ने कहा।

अपने पति से गड्डी लेकर, चार हिस्सों में रंग और आकर देखते हुए अलग करने लगी।

“नहीं वह पत्ती तो यहीं है। कोई और पत्ती होगी।” चिड़िया के गुलाम को हाथ में पकड़ते हुए कहा।

“मुझे यकीन है, ये कल नहीं था,” पति ने कहा।

“ये कल था। मुझे याद है कल कई बार यह पत्ती मुझे मिली थी।’

कल के बारे कहते ही, उसके कान मे कल की घटना गूँजने लगी। उसका पति कुछ ढूंढ़ने के लिए उठा ओर एक बेरंग पुराने मिठाई के डब्बे के साथ लौटा, जिसमें विभिन् रंग-बिरंगा ताश का मिश्रण था।

“इस हफ्ते शायद हम एक नयी ताश की गड्डी खरीदेंगे।” पति ने कहा। “ठीक है, जिसकी पत्ती बड़ी होगी वही बांटेगा। शायद हम कुछ और रचनात्मक शौक अपनाने चाहिए जैसे चित्रकारिता या लेखन कार्य।”

“चलो घर के कामों की एक लिखित सूची बनाएँ,” उसने महसूस किया कि उसकी आंखें झुकी हुई हैं। “जब भी मैं जीतती हूँ, आप हमेशा झूठ बोलते हो कि हमने आसान काम के लिए दांव लगाया था।”

“अच्छा है, आज खेल की शुरूआत सकारात्मक बात से ही हो रही है,” उसके पति ने कहा। उसकी आवाज़ में कटाक्ष छुपा हुआ था। “यह मिल्स एण्ड बुन्स पढ़ने का असर है।”

“आलू छीलना, किराने का सामान लाना, ऑर्किड तोड़ना, गेस्ट रूम साफ करना। इस क्रम में हमें काम करना होगा,” उसने अपनी खूबसूरत लिखाई में सूची बनाई।

“क्या रोबॉट ऑर्किड नहीं तोड़ सकता? क्या हमें भट्टाराई जी से कुछ ऑर्किड नहीं मिले हैं?”

“ठीक है, चलिए ऑर्किड को हटाकर चाय बनाना सूची में रखते हैं।” उसके पैर में खुजली होने लगी।

“सबसे उत्कृष्ट खिलाड़ी की जीत हो,” मिस्सी फेंकते हुए पति ने कहा। “सवेरा होते ही दिन के बारे में पता चल जाता है।”

“बिल्कुल जैसे आदमी का भविष्य बाल्यकाल में ही दिख जाता है,” उसने कहा। उसने पंजा उठाया ओर कहा, “अब तुम बांटो।”

पति ने दोनों को नौ-नौ पत्ते बांटे ही थे कि जब श्रीमती का फोन कहीं पर बजने लगा।

“मैं फोन लेकर आती हूँ,” उसने कहा।

“ठीक है,” शरारत भरी मुस्कान से पति ने कहा।

“कोशिश अच्छा है - तुम्हें क्या लगा मैं पूरी ताश गड्डी के साथ तुम्हें यहाँ अकेला छोड़ दूँगी?”

“तुम्हारे पास कोई और चारा है?”

“यह बारी हमें रद्द करनी पड़ेगी। न मैंने अपने पत्ते अभी तक देखे हैं और न ही तुमने,” श्रीमती ने कहा।

उसने सभी पत्ते उठाए और सेलफोन ढूंढ़ने भाग गई। जब तक वह फोन पर पहुँची, बजना बंद हो गया।

“यू.एस. से फोन है,” कितनी बार फोन उठा नहीं पाई, वह देखने लगी। “जरूर लता का फोन होगा। उसने एक बार फोन किया है। नहीं, हम जब नाश्ता कर रहे थे, तब भी किया था।”

“वह ज़रूर दोबारा फोन करेगी।“

“शायद,” श्रीमान पत्ते बांटने लगा। “शाम को हम ही उन्हें फोन कर लेंगे। आज मैंने सचिन और राकेश से बात की थी। दोनों का मानना है कि तुम्हारा विचार इतना भी बुरा नहीं है।”

“हमेशा उनका फोन कैसे मुझसे छूट जाता है?” उसने कहा। “किस विचार के बारे में कह रहे हो’?

“वृद्धाश्रम वाली बात।”

“ओह, उसके बारे में तो मैं भूल ही गई।”

“पर उनकी शर्त है कि वृद्धाश्रम अमेरिका में ही हो।”

“आपको नीचे बागडोगरा तक यात्रा करना अच्छा नहीं लगता। मुझे यकीन है, अमेरिका का वृद्धाश्रम आपके लिए सबसे अच्छा रहेगा।”

“जरा सोचो, वह अमेरिका है। भट्टाराई और छेत्री के सामने हम डींगें हाँक सकते हैं कि हम अमेरिका के वृद्धाश्रम में रहते हैं।”

उसके पति के उपहास को न समझने वाला तो कोई मूर्ख ही होगा।

“और हम एक प्लेन रिज़र्व करेंगे ताकि आपके लम्बे टांगों से आपको कोई तकलीफ न हो और आप आराम से यात्रा कर सकें।”

“तुम्हें मज़ाक करना नहीं आता,” श्रीमान ने परिहास किया।

“वैसे भी, यह मूर्ख विचार था,” उसने कहा।

“क्या मूर्ख विचार?”

“वृद्धाश्रम में रहना। मैं राकेश के खाते में दो लाख रूपए डालने ही वाली थी, पर मुझे यह विचार सही नहीं लगा।”

“तुमने अपना मन कैसे बदल लिया?” पति ने पूछा।

“आप सही कहते हैं, मैं उसके लिए बेकार की चिंता करती रहती हूँ। अब वह दूध पीता बच्चा नहीं। हमें उसे स्वतंत्र रूप से उड़ने देना चाहिए।”

“मैं जानता हूँ, तुम्हारा स्वभाव,” अंदर-ही-अंदर श्रीमान ने हँसते हुए कहा। “अब जब तुम्हारी बात से सहमत होने वाले कुछ लोग मिल गए हैं, अब तुम्हें अपना विचार सही नहीं लग रहा है। जो तुम कुछ सुझाव देती हो, वह बस लोगों को उकसाने के लिए होता है, है न?”

“तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो। तभी तो, इतने लंबे समय से हम शादी के बंधन में जुड़े हैं।”

“लगता है, किसी को मिल्स एण्ड बुन्स की खुराक ज़्यादा पड़ गई।’

“मैं इन्हें पढ़ना छोड़ दूँगी,” ताश को फेंटते हुए उसने कहा। “उनके रोमाँस की धारणा ही अजीब है। मुझे कुछ भी समझ नहीं आता।”

*****

प्रवासी

मुझे पता था कि इस रेस्टोरेंट से मैं जब निकलूंगा तब, मसाले की गंध के साथ निकलूँगा। सौभाग्य से, मैंने बहुत पहले ही भोजनालय की गंध की तीव्रता को कम करने का उपाय सीख लिया था। किसी भी दक्षिण एशियाई रेस्टोरेंट में कदम रखने से पहले अपने पी.कोट को अपने बैग में रख लेना। वेटर, जो वहाँ का बावर्ची भी था, उसने मुझे अंदर आते देखा और एक बनावटी मुस्कुराहट के साथ स्वागत किया और फिर सब्ज़ियाँ काटने में लग गया। मेरी पसंदीदा सीट के खिड़की के बाहर मेनहट्टन की सड़कों पर बारिश की बूंदे छलक रही थी। बाहर एक पशम कोट पहने बुजुर्ग महिला, जो की *अपर ईस्ट साइड* की लग रही थीं, उस पर मेरी नज़र पड़ी। वह पागलों की तरह टैक्सी के लिए ज़ोरों से हाथ को हिला-हिलाकर रोकने का इशारा कर रही थी। साथ ही, दूसरे हाथ से छतरी को सँभालने की कोशिश कर रही थी। लेकिन हवा के कारण छाता उल्ट जा रहा था।

विशेष रूप से जब एक ज़ोर के झोके के चलते उसकी छतरी उड़कर आधे रास्ते पहुँच गई, तब उसने गुस्से से अपनी तर्जनी ऊँगली[101] ड्राइवर को दिखाई। मुझे उस महिला की मदद करनी ही थी- वह काफ़ी कमज़ोर दिख रही थी और अच्छे कपड़े भी पहने हुए थी, अगर इस परोपकारी भाव से कुछ हासिल नहीं हुआ, तो कम-से-कम तीन अनमोल पल एक अमीर व्यक्ति के साथ गुज़ारने को मिलेंगे और ऐसे अभिनय से मुझे हमेशा धनवान और खुशी का एहसास होता है। बावर्ची से मैंने अपने लिए दो प्लेट मोमो बनाने को कहा और मूसलधार आसमान की तरफ मेरा ध्यान गया। अपनी छतरी को लेकर मैं भोजनालय से आँधी की तरह निकल पड़ा। जैसे ही, मैं तेज़ी से भीगी महिला के पास गया, मेरी छतरी का हत्था पीछे लुढ़कते हुए ट्रैफिक के बीच चला गया और बाकि बची छतरी को मैंने बारिश से बचने के लिए अपनी ढाल की तरह इस्तेमाल किया।

"बहुत-बहुत धन्यवाद, आप बहुत ही दयालु आदमी हैं," महिला ने जल्दी से छतरी के नीचे आते हुए कहा।

"आपका स्वागत है," सबसे सुन्दर मुस्कराहट के साथ मैंने जवाब दिया। उन्होंने शायद मेरे बाहर निकाले हुए, धूसर रंग के असमान दाँतों के भराव देख लिए थे। "लगता नहीं कोई टैक्सी मिलेगी। जब तक बारिश रुक न जाए, अच्छा होगा अगर आप रेस्टोरेंट के अंदर इंतजार कर लें?"

"न कहने की कोई वजह नहीं," बिना हिचकिचाहट उस महिला ने कहा। उसका रवैया बिल्कुल धनवान *न्यू योर्क* वालों की तरह था।

---

[101] पश्चिमी देशों में अश्लील भाव दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

भोजनालय में प्रवेश करने के बाद महिला ने अपना कोट उतारकर चारों ओर कोट लटकाने की जगह ढूंढी, न मिलने पर उन्होंने अपने बगल वाले सीट पर रख दिया।

"क्या दिन है! " मैंने टिप्पणी की। बाहर ज़ोरों से बारिश हो रही थी।

"मैं एन हूँ," उसने कहा।

"अमेन?" मैंने कहा। शुरुआत में ही मैंने उनका गलत परिचय 'अमेन' अपने हिसाब से समझ लिया था और मैं हैरान था जब उन्होंने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया। मैंने अपना होश संभाला और कहा, "मेरा नाम अमित है और आपका नाम क्या है?"

"मेरा नाम एन है," उसने दोबारा दोहराया।

"अच्छा, अच्छा एन आपने मुझे पहले ही बताया है," बेवकूफों की तरह मैंने कहा। "माफ कीजिएगा।"

"कोई बात नहीं अहमद....है न?"

"अमीत ऐ-एम्-आई-टी।" जब से मैं अमेरिका आया हूँ, यह मेरे साथ ऐसा इतनी बार हो चुका है कि इससे मुझे अब कोई फर्क नहीं पड़ता।

हम वहाँ बैठकर एक-दूसरे को घूरते रहे। यह बहुत ही अजीब था।

"आपको कितनी भूख लगी है?" मैंने पूछा।

"बहुत ज़्यादा भूख लगी है," उन्होंने कहा। "तुम यहाँ अक्सर आते हो?"

वैसे मैं यहाँ आता था। मैं कई दफा *कैफे हिमालया* में आ चुका था। इतने लम्बे अरसे तक घर से दूर रहने के बावजूद, मुझे इस जगह से कोई ज़्यादा लगाव नहीं था, लेकिन जब मोमो की बात आती है, तो मेनहट्टन का *कैफे हिमालया* ही एक ऐसी जगह है, जहाँ सबसे अच्छी तिब्बती मोमो मिलती है और जो दार्जिलिंग मोमो के स्वाद से काफ़ी मिलता-जुलता है। *न्यू योर्क* में आने के बाद कई महीनों तक, मैंने चाइना टाउन में मोमो के बदले डिमसम विकल्प खोज लिया था। वहाँ डिमसम के साथ सोया सॉस देते थे, वह बिल्कुल भी मोमो के साथ खाने में अच्छा नहीं लगता था और वह आटा भी बहुत मोटा था, जो वाकई निराशाजनक था। डम्पलिंग का स्वाद ऐसा लगता था, मानो मेरे पसंदीदा खाने को किसी अनुभवहीन ने बनाने का प्रयास किया हो। मैं इसे अपने खुशनसीब दिनों में से एक मानता हूँ, जिस दिन मैं इस कैफे के पास से गुज़रा, जो एक *बार*[102]और एक *थाई* रेस्टोरेंट के बीच दबा हुआ था, जिसके कारण वह साफ-साफ़ दीखता नहीं था। अगर मैं दीवार पर बड़ा-सा दलाई लामा का चित्र गौर

---

[102] शराबखाना

नहीं करता, तो मेरी जिज्ञासा न ही बढ़ती और न मैं यहाँ आता। उसके बाद से मैं हफ्ते में दो बार ज़रूर आता था।

"चिकन मोमो मेरा पसंदीदा है," मैंने मेन्यू कार्ड की ओर इशारा करते हुए कहा। "आमतौर पर मैं दो प्लेट खाता हूँ। ये बहुत ही स्वादिष्ट है। मैंने पहले ही ऑडर दे दिया है।"

"ओ, मोमोस," एन ने खुशी से टिप्पणी की। "मैंने पिछले हफ्ते ही खाया था।"

यह वाकई दिलचस्प था, ऐसा आमतौर पर नहीं होता कि किसी अमरीकी को मोमो के बारे में जानकारी हो। जब मैं लोगों को बताता हूँ कि मैं नेपाली मूल का हूँ, तो लोग सहज ही मुझे पूछते हैं कि क्या मैंने माउण्ट एवरेस्ट पर चढ़ाई की है? और जब मैं नकारात्मक जवाब देता हूँ, तो वे निराश हो जाते हैं। न मैंने कभी माउण्ट एवरेस्ट चढ़ा है और न मैं किसी को जानता हूँ, जो चढ़ चुका है। जब भी मैं लोगों को बताता हूँ कि मैं दार्जिलिंग से हूँ, अक्सर वह मुझे चाय के बारे में सवाल पूछने लग जाते हैं। मैं उन्हें बताता हूँ कि मैं चाय के प्रकार का अंतर नहीं पहचान पाता हूँ और न मैं चाय पीता हूँ, तब वे हक्का-बक्का रह जाते हैं। और अगर मैं किसी को भी बताता कि मैं नेपाली मूल का भारतीय नागरिक हूँ, तो वे मेरी ओर आश्चर्य भरी नज़रों से देखते हैं। इस सम्मिश्रण के बारे में जानने के लिए कभी-कभी तो वे मुझ पर दबाव भी डालते हैं। मुझे अपने परिवार के इतिहास के विषय में सोचने में कोई आपत्ति नहीं, जब तक यह सवाल सामने न आ जाए 'अच्छा तो तुम आधे नेपाली और आधे भारतीय हो?' कभी-कभी मैं एक नक्शा बनाकर, जातीयता और राष्ट्रीयता के बीच अंतर के बारे में भाषण सुनाने लग जाता हूँ। वैसे अधिकतर मैं चुप ही रहता हूँ और कभी-कभी इन लोगों को उनके अशिक्षित, असूचित बुलबुले के साथ जीने के लिए छोड़ देता हूँ।

"आपको मोमो के बारे में कहाँ से जानकारी मिली?" अपने उत्सुकता को छुपाने में असमर्थ होकर, मैंने पूछा।

"क्या आप नेपाली हैं?"

"जी हाँ," मैंने कहा। "मैं भारत का नेपाली हूँ।"

"अच्छा, तुम्हारी तरह बहुत हैं भारत में, है न? हिमाचल?"

"नहीं, दार्जिलिंग।"

"बहुत खूबसूरत जगह है।" उन्होंने बाहर देखा। दो युवतियाँ जमे हुए कीचड़ पर कूदकर, राहगीरों पर छीटें छिड़क रही थीं।

"आप कभी वहाँ गई हैं?" मैंने पूछा

"यह बारिश ज़रूर तुम्हें अपनी जगह की याद दिला रही होगी।"

"हाँ, वहाँ बारिश तो बहुत होती है और भूस्खलन भी होता है, लेकिन मार्च के महीने में इस तरह की बारिश नहीं होती। अभी-भी वहाँ बहुत ठंड होगी।"

"*न्यू योर्क* में अभी ठंड है। यहाँ अप्रैल के मध्य तक ठंड बरकरार रहेगी।"

"तो, क्या आप कभी दार्जिलिंग गई हैं?" मैंने दुबारा पूछा। दार्जिलिंग में जिस तरह बारिश होती है, वैसी ही बारिश होने लगी, ऐसा लगा मानों घर के रसोईघर से आने वाली आवाज़ यह इतल्लाह कर रही हो कि अब मोमो परोसा जाने वाला है। एन के साथ दार्जिलिंग की उन जगहों के बारे में बातचीत करना चाहता था, जहाँ पर वे शायद गई हों - चौरस्ता, ग्लेनेरिस, चिड़ियाघर और घूम मोनेस्ट्री[103]। इस उदासीन मौसम में इन सभी जगहों के बारे में बात कर, समय बिताने का एक अच्छा बहाना था।

"नहीं, मैं वहाँ नहीं गई हूँ।" उसने कहा।

मैं थोड़ी देर रुका, इस उम्मीद में कि वह आगे कुछ कहे, लेकिन उसके पास बाते करने को कुछ नहीं था। इस वक्त मैं दुनिया की बातचीत करने में सबसे बुरे व्यक्ति के साथ बैठा था।

"पर आपकी बातों से लगता है कि आप दार्जिलिंग से काफी परिचित हैं।"

"माफ करना। मैं किसी के बारे में सोच रही थी। नहीं, मैं कभी दार्जिलिंग नहीं गई हूँ। लेकिन मेरे यहाँ काम करने वाली नेपाली हैं। मुझे उसकी याद आ गई। हाल ही में उसने मेरे यहाँ काम करना शुरू किया है। वह काफ़ी अच्छा मोमो बनाती है। वैसे मैं दूसरी जगहों के बारे में काफी पढ़ती हूँ।"

उसने चोपस्टिक से मोमो उठाई और एक ही बार में पूरे का पूरा मुंह में डाल दिया और जानवरों की तरह चबाने लग गई।

"बहुत अच्छी लड़की है।" उन्होंने *डम्पलिंग* निगलते हुए कहा। "उसकी भाषा थोड़ी कमज़ोर है, पर वह मुझे अच्छी तरह समझ लेती है और मेरे पोते-पोतियों के साथ काफ़ी घुलमिल गई है। मैं उसे बताऊँगी कि मैं तुमसे मिली थी।"

"क्या वह आपके साथ रहती है?" मैंने पूछा।

"नहीं, वह *क्वीन्स* में रहती है। *जेकसन हाईटस* के आसपास रहती है।"

"*क्वीन्स* के बारे में मुझे अधिक जानकारी नहीं है," मैंने बढ़ा-चढ़ाकर कहा। मैं उम्मीद कर रहा था कि वह मुझसे पूछेगी कि मैं कहाँ रहता हूँ, पर उन्होंने नहीं पूछा।

---

[103] बौधिक मठ

उसने गहराई से सोचा। "*सन्नी साईड*? नहीं। *वूडसाईड*, हाँ वह वूड*साईड* में रहती है।" अब वह तीसरा मोमो खा रही थी। "यह बहुत अच्छा है। इसके अंदर बहुत मसाला नहीं है। यह मुझे सबसे अच्छा लगा।"

"जी, हम दार्जिलिंग वाले, नेपाल वालों से थोड़ा अलग मोमो खाते हैं। हमारे यहाँ मोमो के सादा बनता है। सारा तीखापन चटनी में होता है।"

"मुझे चुटनी पसंद नहीं है।" उसने चटनी को चुटनी उच्चारित किया। "इसे खाने से मेरे सीने में जलन होती है।"

"आपके घर में काम करने वाली, क्या वह काठमांडू से हैं?"

"हाँ, मगर उसका मूल घर किसी पहाड़ के एक गाँव में है। वह एक अच्छी लड़की है, पर कभी-कभी बातचीत करने में कठिनाई आती है। पर जिस किसी भी काम को वह करती है, उसमें वह माहिर है।"

"क्या वह हर दिन आती है?"

"उसकी शनिवार और मंगलवार को छुट्टी रहती है। मैं उसे खाना पकाने से मना करती हूँ, लेकिन उसे रसोईघर पसंद है। वैसे कभी-कभी वह अच्छा भी बना लेती है। अब तक वह भी जान गई है कि मुझे ज़्यादा तीखा खाना पसंद नहीं है। हालाँकि मुझे मसाले की वह कच्ची और ताज़ी महक बहुत अच्छी लगती है।"

हाँ, ये मसाले जो आपके घर, कपड़े और बालों में गंध फैला देते हैं। न जाने इस रेस्टोरेंट के मसाले की गंध कितनी देर तक मेरे कपड़ों में चिपकी रहेगी। कितनी भी एहतियात बरतना क़ाफी नहीं होता।

"मेरी कामवाली हफ्ते में दो दिन आती है," मैंने झूठ कहा। वह दो हफ्ते में एक बार आती है। "वह बहुत अच्छी है, मगर मुझे हमेशा से ही दक्षिण एशियाई काम करने वाली चाहिए थी। मैं तीन वक्त का खाना बाहर खाते-खाते थक चुका हूँ। वैसे मैं नाश्ता छोड़ देता हूँ, बाकी समय का खाना में बाहर ही खा लेता हूँ। बहुत ही बढ़िया होता अगर कोई हफ्ते में एक बार आकर खाना बना जाए जो कि खाने के लिए कुछ दिनों तक चल जाए और सिर्फ चावल उबालना पड़े।"

मैंने उम्मीद की कि मेरी यह झूठी सूचना से वह प्रभावित हो जाए। यह बात जब भी मैं किसी को बताता कि मेरे पास नौकरानी है, तब वे चौंक जाते। यहाँ वैसा ही है, जैसे मेरे मेनहट्टन वाले अपार्टमेंट के बारे में बताना, जो मेरा है, न की भाड़े का। यह सच है, कि यह *हारलेम* के बीचोंबीच है, इस ज़िले को मध्य वर्ग के अनुरूप बनाने की प्रक्रिया शुरू भी नहीं हुई थी और न ही शहरी नवीनीकरण

ने ही इस जगह को छुआ है। मेरे अपार्टमेंट की पूरी जगह मेरे दार्जिलिंग के कमरे के बराबर ही है। लेकिन यह बहुत ही खूबसूरत बिल्डिंग में था और मुझे पता था कि मैंने दमदार पूंजी निवेश किया है।

“एक काम कीजिए, आप साबित्री को काम पर रख लीजिए,” एन ने कहा। यह साफ था कि इस लखपति को न तो यह बात छू पाई कि एक पच्चीस वर्षीय नौजवान मैनहेट्टन के एक टुकड़े का मालिक है और न ही यह कि एक पच्चीस साल के लड़के के पास नौकरानी है। “वह हमेशा मुझसे कहने की कोशिश करती है कि उसे और काम चाहिए। लेकिन भाषा की समस्या के कारण मेरे कोई भी दोस्त उसे रखना नहीं चाहते। बेचारी! अमेरिका में पाँच साल से है, पर उसकी अंग्रेजी में ज़्यादा सुधार नहीं हो पाया है। छुट्टियों के दिनों में वह आपके यहाँ काम करने आ सकती है। शायद, आप उसे अंग्रेज़ी सिखा सके।”

मैंने कभी नेपाली नौकरानी नहीं ढूँढ़ी थी। मुझे मेरी जर्मन नौकरानी पसंद थी। मैं और मेरा एक पाकिस्तानी दोस्त कॉलेज में इस बात पर मज़ाक करते थे कि एक काले आदमी की सबसे बड़ी तमन्ना यही होगी कि वे किसी गोरी को अपने यहाँ काम पे रखे। सच कहूँ तो, उस मज़ाक में भी थोड़ी सी सच्चाई थी। मेरे लिए गोरी नौकरानी रखना इस बात का संकेत था कि हाँ, मैंने कुछ हासिल कर लिया है। मेरे पास एक जर्मन काम करने वाली है, दुनिया को यह बताने से मुझे गर्व महसूस होता है और अपने को बेहतर महसूस करता। दूसरों को न सही पर अपने पाकिस्तानी दोस्त को तो ज़रूर सुनाता हूँ। इससे मुझे ऐसा महसूस होता है, मानो मैंने सफलता की एक और सीढ़ी चढ़ ली है। मन-ही-मन मैं सोचता देखो बाबा! आप ही ने मुझे अमरीका जाने के लिए हतोत्साहित किया था और चेतावनी दी थी कि मुझे यहाँ बर्तन धोने पड़ेंगे? इन सभी गोरे लोगों के बर्तन? आमा, मैंने दार्जिलिंग के एक कॉलेज में एक प्रशिक्षक से बड़े ओहदे का सपना देखा, तब जाकर मुझे यह सब हासिल हुआ है। आज न्यू योर्क में मेरा अपना अपार्टमेंट है और एक गोरी जर्मन नौकरानी भी, जिससे छुटकारा पाने का मेरा कोई इरादा नहीं है। हालाँकि, हर दिन घर का खाना खाने का विचार काफी आकर्षक लगा।

“क्या वह बहुत पैसे लेती है?” मोमो ख़त्म करते हुए मैंने पूछा। आजकल एक प्लेट काफी नहीं होता। “मैं जर्मन कामवाली को काम से निकालना नहीं चाहता। मुझे दोनों को साथ ही रखना होगा।”

“वह मुझसे सत्तर डॉलर दिन का लेती है,” हमारे वेटर रसोईए ने उदारतापूर्वक आज जो चाय दी है, उसे एन ठंडा करते हुए कहती है। “अगर उसे आपसे अंग्रेज़ी सीखनी है, तो उसे कुछ पैसे कम करने तो पड़ेंगे ही।”

“नहीं, नहीं पैसे की बात नहीं है,” मैंने कहा। “क्या वह उतनी अच्छी है, जितना आप कह रही हैं।”

“आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं। वह बहुत ही अच्छी है।”

“क्या आप मेरा नम्बर उसे दे सकती हैं?” मैंने अपना कार्ड एन को दे दिया।

मूसलाधार बारिश अब थमकर फूहार में तब्दील हो गई थी। चेक आते ही मैंने पैसे देने के लिए हाथ बढ़ाए। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि एन ने मना तक नहीं किया।

“क्या हम एक टैक्सी में चलें?” मैंने पूछा।

“तुम कहाँ रहते हो?”

“हाल ही में, मैंने *रिवरसाईड ड्राइव* के पास अपना एक अपार्टमेंट खरीदा है।” इस अवसर को मैंने हाथ से निकलने नहीं दिया। “जहाँ मेरा अपार्टमेंट था, वह बहुत अच्छा नहीं था पर वह *रिवरसाईड ड्राइव* से पाँच सौ मीटर से ज़्यादा दूर नहीं था।

“मैं *ग्रामरसी* में रहती हूँ,” जैसे ही हम बाहर निकले, उन्होंने कहा। “शायद आपको दूसरी टैक्सी लेनी पड़ेगी।”

एक टैक्सी सामने आकर खड़ी हो गई। मैंने अपना कोट बैग से निकाला।

“छतरी और मोमो के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया,” उन्होंने विनम्रता से कहा। “मैं यकीन दिलाती हूँ कि साबित्री आपको ज़रूर फोन करेगी।”

कुछ लोगों के लिए एक बीस वर्षीय लड़के का बिना अपने माता-पिता की सहायता से मेनहट्टन में अपना अपार्टमेंट लेना कोई बहुत बड़ी बात नहीं।

अगले ही दिन मैं काम पर था, जब साबित्री ने मुझे फोन किया। मैं अपने टेबल पर नहीं था, क्योंकि मैं अपने बॉस के साथ मानव संसाधन विभाग के निर्देशक के साथ बैठक में था। जहाँ, मेरे एच-1बी आवेदन पत्र का विवरण निकालने के लिए बैठा था। इस वीज़ा के ज़रिए मैं अगले तीन साल तक कानूनी रूप से अमेरिका में रह कर काम करने के योग्य बन जाऊँगा। तीन वर्ष के कार्यकाल की समाप्ति के बाद और तीन साल के लिए वीज़ा बढ़ाया जा सकता है, जिसके बाद मैं ग्रीन कार्ड के योग्य बनजाऊँगा। मेरा भविष्य अमेरिका में था, सब कुछ की मैंने योजना बना ली थी और अगले बड़े कदम के लिए मैं बहुत ही उत्सुक था।

सुबह की बैठक काफी कठिन थी, मैं अपनी कम्पनी को प्रायोजन के लिए राज़ी करने में सफल हुआ। शुरूआत में मेरे बॉस इस विचार के बिल्कुल ख़िलाफ थे। यह खुश खबरी को किसी से बाँटना चाहता था - फोन उठाया पर समझ में नहीं आया किसे फोन करें। फिर किसी को फोन करने के बजाय

सीधे वॉयस मेल पर चला गया। कुछ ही देर बाद आवाज़ आई, “हेलो” जिसके साथ “छि हौ”[104] और एक घबराई हुई हँसी थी। यह साबित्री ही हो सकती थी। मैंने उसे वापस फोन किया।

“मैं अमित बोल रहा हूँ,” मैंने अंग्रेजी में कहा। “शायद, एन ने तुम्हें मुझे फोन करने के लिए कहा होगा।”

“ओह, मैडम!” उसने नेपाली में बोलना शुरू कर दिया, “जी, मैंने आपको आज फोन किया था। मुझे मालूम नहीं था कि उन्होंने मेरा नम्बर भी आपको दे रखा है।”

“नहीं, नहीं,” मैंने नेपाली में समझाने की कोशिश की। “मुझे यह नम्बर मेरे फोन से मिला है। उन्होंने बताया है कि आपको अंग्रेज़ी सिखने में दिचलस्पी है।”

“अच्छा, आप नेपाल के किस इलाके से हैं?” उसने पूछा। “भारत के एक नेपाली से मिलने की बात मैडम ने मुझे बताई थी। मैं बड़ी उलझन में पड़ गई थी।” वह जैसी ठेठ नेपाली बोल रही थी, उस तरह की भाषा का हम दीर्जिलंग में मज़ाक बनाते थे और गंवार बोली कहते थे। इस संकल्पना को हमने स्कूल में बड़ी मुश्किल से सीखी थी, पर जिसका शैक्षिक दुनिया के बाहर प्रयोग नहीं करते थे।

“मैं भारत से हूँ। दार्जिलिंग। आप कहाँ से हैं?”

“मूलघर मेरा रोल्पा में है, मगर मेरे माता-पिता इलाम के पास जमुना में आ बसे हैं। क्या आप वहाँ गए हैं?”

“नहीं, मैं कभी नेपाल नहीं गया हूँ।”

“क्या आप कभी अपने देश गए ही नहीं हैं?” वह सच में चौंक गई थी।

“मेरा देश भारत है। मैं हमेशा से नेपाल जाना चाहता था, लेकिन कभी गया नहीं।”

“फिर आप इतनी बढ़िया नेपाली कैसे बोल लेते हैं ?”

“दार्जिलिंग में सभी लोग नेपाली बोलते हैं। घर में हम सभी नेपाली भाषा बोलते हैं। मैं नेपाली हूँ।”

“लेकिन एक नेपाली के नाते आपकी नेपाली काफी ख़राब हैं।”

“नेपाल की नेपाली से हमारी नेपाली अलग हैं।”

उसने बात को आगे नहीं बढ़ाया।

---

104 छी

“मैडम बता रही थी कि आपको कोई कामवाली चाहिए, जिसे नेपाली खाना बनाना आता हो। मुझे बनाना आता है। मैं शनिबार और मंगलबार को आ सकती हूँ।” उसने दिनों के नाम लेते वक्त नेपाली उच्चारण किया। दादी को छोड़, मैं ऐसा किसी को नहीं जानता जो दिनों के नाम लेने के लिए ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करते हों। दार्जीलिंग में हो-न-हो, कम-से-कम मेरे पीढ़ी के लोगों ने नेपाली में अंग्रेज़ी भाषा का मिश्रण कर लिया था।

“अंग्रेज़ी में उन दिनों के लिए क्या शब्द है?” उसने मुझसे पूछा।

“क्या हम इस हफ्ते से शुरू कर सकते हैं?” उसने पूछा। उस दिन गुरुवार था। यह अजीब हठी नेपाली मेरे यहाँ शनिवार के दिन आने को तैयार थी। जल्द ही, मैं अपने काम पर जल्द ही हल्दी में डुबकी लगाकर आने की महक को लेकर पहुँचूँगा और हमने अभी तक पगार की बात तो की ही नहीं थी।

“तुम कितने पैसे लोगी?” मैंने पूछा।

“पैसे की बात बीच में कहाँ से आ गई?” उसकी आवाज़ में गंभीर हो गई। “एक नेपाली दूसरे नेपाली की मदद कर रहा है। मैं आपके लिए खाना पकाऊँगी और आप मुझे अंग्रेज़ी सिखाएगे। समस्या समाप्त। अब एक दूसरे को छोटा महसूस कराना बंद करते हैं।”

उसकी सजीवता या उसका फुर्तीलापन उतना ही खतरे का संकेत कर रही थी, जितना कि उसके भारी-भरकम नेपाली शब्द।

उसके स्वभाव के बस यही पहलू नहीं थे, जिसने मुझे चौंकाया हो। उसे तो मेरे समय की कोई कदर ही नहीं थी। शनिवार के सुबह मुझे उसका फोन आया और वह मुझसे पूछने लगी कि हमें मिलना कब है।

“क्या दो बजे की बात नहीं हुई थी?” घड़ी की ओर देखते हुए मैंने पूछा, उसे तोड़ने की इच्छा हुई मगर मैंने अपने गुस्से पर काबू किया।

“दो बजे? अगर आप चाहें हैं, तो मैं थोड़ा जल्दी आ सकती हूँ। थोड़ा साफ-सफाई भी कर लूँगी।”

“घर की साफ-सफाई के लिए मेरे पास दूसरी काम करने वाली है,” मैंने कहा।

मुझे एक अजीब सी खामोशी ने घेरा। अंग्रेज़ी शब्द मेड की तुलना में नेपाली का कामगर्ने[105] शब्द काफी हद तक कोमल है। जिसका अंग्रेज़ी पर्यायवाची अनुवाद सर्वेंट शब्द बहुत इस्तेमाल होता है, यह मर्यादाहीन शब्द है, और अभी उसे मैंने इसी कोटि में रख दिया था।

"तुम जानती हो, वह मेरे कपड़े धोती है और बाथरूम भी साफ करती है।" मैंने सोचा कहीं मैं स्थिति को और बिगाड़ तो नहीं रहा। "मैं नहीं चाहता कि तुम यह सब करो। यह सही नहीं होगा। अगर तुम जल्दी आना चाहो तो आ सकती हो। मैं अभी उठा हूँ। तुम्हें यहाँ पहुँचते-पहुँचते एक घंटा लग जाएगा।"

"मैं वहाँ आधे घण्टे में पहुँच सकती हूँ," उसने कहा।

जब तक वह पहुँची, मैं नहा चुका था और दाढ़ी भी बना ली थी।

"नमस्ते ।" उसने अभिवादन किया। दिखने में साधारण सी लड़की लग रही थी, सस्ती सी जींस और एक कुर्ती पहने पहुँच गई। उसकी नाक काफ़ी नुकीली थी। अगर यही रूप घर पर देखते तो यह सामान्य या मामूली सी दिखती, जिस पर मेरा ध्यान तक नहीं जाता। पर, कई साल अमेरिका में रहने के चलते खूबसूरती के स्तरपर प्रभाव पड़ा है, जिससे मुझे वह काफ़ी आकर्षक लगी। "आमा मामा"[106], इस इलाके में तो बहुत हब्शी लोग हैं।"

"यह हारलेम है," मैंने कहा। "यह कभी ब्लैक अमेरिका की राजधानी थी, तो बेशक यहाँ काले लोग ही मिलेंगे। लेकिन अब यह जगह काफी बदल गई है। बहुत सारे युवा काम करने वाले आकर यहाँ बसने लग गए हैं। यह जगह मैंने दो महीने पहले ही खरीदी है, पर अब मेरी तरह काफी सारे लोग आने लग गए हैं।"

"खरीदा?"

"हाँ।" मैं कोशिश कर रहा था कि मैं घमण्डी न दिखूँ।

"यह बहुत ही महँगा होगा।"

"ठीक-ठाक है।"

"मैं अभी तक किसी नेपाली से नहीं मिली जिसने यहाँ घर खरीदा हो।" उसने अपना पर्स कॉफी टेबल पर रखा। "किसी भी नेपाली ने आज तक न ही वूडसाईड में घर ख़रीदा है, न ही जैक्सन हाईटस में और मेनहेटन की तो बात ही नहीं।"

---

105 कामवाली

106 हे भगवान

“मुझे यकीन है, बहुत सारे होंगे जिनके पास अपनी जगह है। हालाँकि मैं भारतीय हूँ। तुम यहाँ कितने समय से रह रही हो?"

“यही कुछ पाँच साल के करीब।” उसने मेरे अपार्टमेंट के चारों ओर देखा।

“क्या तुम...,” मुझे सवाल पूछने में हिचकिचाहट हुई। “पहली बार टूरिस्ट वीज़ा में आई थी?” मेरा अंदाजा था कि वह एक गैरकानूनी अप्रवासी है, वह भी उन हज़ारों लोगों में से है, जो पर्यटक वीज़ा में आते हैं, पर लौटे कभी नहीं।

“नहीं, अब मैं यहाँ की नागरिक हूँ,” उसने जवाब दिया, उसकी आँखें दुबारा से अपार्टमेंट की बारीकी से जाँच करने लग गई। “मैंने डी. वी. लॉटरी[107] जीती है।”

अच्छा, वह एक *डाइवर्सिटी वीज़ा* की विजेता है। हमेशा से मुझे इस तरह के लोगों से जलन होती है। अमेरिका अपनी विविधता को प्रोत्साहित करने के लिए एक कार्यक्रम करते हैं, जिसमें प्रत्येक पिछड़े देश के लोग इस लॉटरी में शामिल हो सकते हैं। जिसके चलते जो खुशनसीब है, जैसे की साबित्री उन्हें सीधा ग्रीन कार्ड मिल जाता है और हम जैसे आम जीवों को आग के दरिया को पार करने के बाद कहीं जाकर ग्रीन कार्ड मिलता है। लेकिन क्या नागरिकता के लिए अंग्रेज़ी परीक्षा में सफल होना नहीं पड़ता? जैसा कि एन ने बताया था, अगर साबित्री को भाषा की दिक्कत है, तो ज़रूर नागरिकता की परीक्षा में सबसे उदार स्वाभाव के साक्षात्कार ने उसकी जांच होगी।

“तुम खुशनसीब हो,” मैंने कहा। “इसे जीतने के लिए तो लोग अपने बच्चों को छोड़ देंगे।”

“नेपाल में भी लोग यही कहते हैं,” उसने कहा। “पर, मैं तो यहाँ नौकरानी का काम कर रही हूँ। यह बात मेरे घर में किसी को पता नहीं है।”

“उन्हें लगता है कि मैं किसी दफ्तर में काम कर रही हूँ। कोई नहीं जानता कि मेरे साथ और सात लोग रहते हैं, जिनमें से तीन पुरुष हैं। लगभग सभी अवैध रूप से यहाँ रह रहें हैं।”

भारत और दक्षिण एशिया की गरीबी से जो वाकिफ है, जैसा कि मुझे पता है कि एक कमरे वाले अपार्टमेंट में सात लोगों का एक साथ रहना कोई बड़ी बात नहीं। मैंने दिमाग में वाक्य बनाने की कोशिश की ताकि मैं कम-से-कम अपमानजनक वाक्य में उसे बता सकूँ कि जब वह बोलती है, मैं समझ सकता हूँ।

“भान्सा कोठा [108]थोड़ा छोटा है, पर यह जगह अच्छी है,” उसने कहा।

---

[107] Diversity Visa Lottery

[108] रसोईघर

दोबारा, उसने रसोईघर के लिए नेपाली शब्द का प्रयोग किया। एक ऐसा शब्द जिसे मैं बहुत पहले भूल चुका था। वह रसोईघर को घूरते हुए कह रही थी, वरना मैं अनुमान ही नहीं लगा पाता कि वह किसकी बात कर रही है।

“एक कमरे वाले अपार्टमेंट में सात लोगों का रहना इतना बुरा भी नहीं होगा। क्या सच में बुरा है? मुझे यकीन है कि इससे तो काफी बड़ा होगा।”

उसने मेरे अपार्टमेंट को अच्छी तरह देखा-परखा।

“हाँ, बड़ा तो है मगर इतना अच्छा नहीं है। इन लोगों में से ज़्यादातर के पास बहुत कम पैसे हैं, इसी कारण उनके लिए हमारा कमरा बहुत अच्छा है। मुझे पसंद नहीं, लेकिन मुझे शिकायत भी नहीं करनी चाहिए। यहाँ आने के लिए लोग अपने बच्चों तक को छोड़ देते हैं, है न?” वह मुस्कुराई। उसके दांत मुझसे काफ़ी अच्छे थे, लेकिन मुस्कुराने पर भी उसके चेहरे पर कोई चमक नहीं थी।

“एन के साथ काम करके कैसा लग रहा है?” मैंने पूछा।

“वह अच्छी है, बहुत अच्छी लेकिन मुझे पता है अगर मुझे हमेशा के लिए वहाँ रहना पड़े तो मैं मर जाऊँगी,” उसने जवाब दिया। “वहाँ काम करने को कुछ है ही नहीं। अमेरिकी लोग साफ-सुथरे होते हैं। कभी-कभी उनके पोते-पोतियाँ आती हैं, पर वे बहुत ही अनुशासित बच्चे हैं। उनकी पोती चाहती है कि मैं उसे एक नेपाली नृत्य सिखाऊँ। मुझे तो खुद नाचना नहीं आता।”

मेरी नज़र से यह बात चूकी नहीं कि वह मुझे पुकारने के लिए सर्वनाम का परहेज कर रही थी। नेपाली भाषा के सर्वनाम में तीन प्रकार के मध्यम पुरुष होते हैं, अधिकतर आदर, सम्मान, उम्र, आत्मीयता और घनिष्ठता पर निर्भर करता है। मैंने उसे उसी सर्वनाम से सम्बोधित किया, जो मैं बड़ों के लिए इस्तेमाल करता हूँ। सुनने में बड़ा बनावटी लग रहा था और साफ था इससे वह बेचैनी महसूस कर रही थी।

“कुछ पिएँगी?” बेतूका-सा सवाल जानते हुए भी मैंने पूछा। एक कामवाली से मालिक ने पूछा । अगर हम घर पर होते तो ऐसी बात सोच भी नहीं सकते थे।

“मैं ही कुछ बनाती हूँ,” उसने कहा। “कॉफी?”

यकीनन रसोइघर में कॉफी नहीं थी और फ्रीज भी खाली पड़ा था। मैंने उससे पूछा अगर उसे मेरे साथ किराने की दुकान तक जाना है। अभी तक के बातचीत में वह केवल इसी प्रस्ताव को सुनकर बहुत खुश हुई।

“इससे मुझे एक अंदाजा हो जाएगा कि भविष्य में मुझे क्या खरीदना है,” उसने कहा।

सुपर मार्केट की गलियारों में हम घूमने लगे। दक्षिण एशियाई खाने की प्रधान सामग्रीयों की खोज करने लगे। चावल, दाल, चना, लौंग, जायफल और मसाले जिनका अंग्रेजी नाम मुझे घर पहुँचने तक पता भी नहीं था। जब हम दुकान पर पैसे देने के लिए खड़े थे, तभी साबित्री ने हमारे आगे काले रंग के आदमी को देखा और वह मेरे पास झुककर फुसफुसाने लगी और अपनी बेचैनी को बयाँ किया। उसके इस नज़दीकीपन को देखकर मैं दंग रह गया, मैंने कोशिश की कि मैं इसके बारे में ज़्यादा न सोचूँ। यहाँ आए हुए पाँच साल होने के बावजूद, वह अच्छी तरह लोगों से घुली-मिली नहीं थी और देखा जाए तो घर पर चमड़ी के रंग को लेकर अपमानजनक टिप्पणी करना कोई बड़ी बात नहीं थी। मैं उसे पकड़कर अमरीकी मापदंडों के बारे में अभी नहीं सिखा सकता था।

बाज़ार से लौटने के बाद मैं किराने के समान को रखने में उसकी मदद कर देता, अगर रसोईघर हम दोनों के लिए इतना छोटा न होता। वहाँ एक दूसरे से बिना टकराए काम नहीं कर सकते थे।

“मैं टीवी देखता हूँ,” मैंने कहा। “अगर कुछ चाहिए हो, तो मुझे बता देना।”

“ठीक है,” उसने जवाब दिया।

मैं उसे बताना ही भूल गया कि मसाले कम डाले, लेकिन सोचा कि जब तक सूंघ न लूँ और खाने को चखकर न देख लूँ, कुछ कहूँगा नहीं। रसोईघर में चहल-पहल शुरू हो गई। बॉलीवुड के गानों के साथ बर्तन के टकराने की आवाज़ गूंजने लगी। कभी न इस्तेमाल किए हुए कूकर से सींटी बजने लगी और ब्लेंडर में मसाले पीसने की आवाज़ आने लगी। मैंने मन-ही-मन मुस्कराया और टीवी पर पुर्नप्रसारण कार्यक्रम द फूल हाउस पर ध्यान देने की कोशिश की। लेकिन रसोईघर में जो घूसपैठ हुई है, उससे परेशान नहीं था। जल्द ही अपार्टमेंट काफी गर्म हो गया। जब एक जूते के बक्से जितने छोटे कमरे में पकाते हैं, तब ऐसा तो होने ही था। चाहे वह मार्च का महीना ही क्यों न हो। फिर मैंने साबित्री से पूछा अगर वह चाहती है तो मैं एसी चला देता हूँ। उसने जवाब दिया कि उसे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि वह इन सुविधाओं के बिना ही रहती है।

अपार्टमेंट जल्द ही बहुत सारी खुशबुओं से भर गया। कौतूहल के चलते मैं रसोइघर में घुस गया। आधा दर्जन टप्परवेयर के डब्बे में किनारों तक दाल भरी हुई थी, भुना हुआ पालक और आलू की तरकारी सभी फ्रीज़र में डलने के लिए तैयार थे। साबित्री ने कौन से डब्बे में क्या है, सभी के ऊपर नेपाली में सूची लिखकर चिपका दी थी। पीले रंग ने रसोईघर के बरतनों और फर्श पर प्रभुत्व जमा रखा था। मेरे लिए खाना परोसने से पहले जैसे ही उसने हफ्ते भर के मेरे खाने की चीज़ों को फ्रीज़र में रखने की तैयारी की, तब तक दार्जिलिंग और कैफे हिमालया के सम्मिश्रण के गंध से मेरी नाक चिढ़ चुकी थी।

“आपकी थाली कहाँ है?” मैंने पूछा।

“मैं बाद में खाऊँगी।”

"नहीं, आप मेरे साथ खा सकती हो।"

उसने एक थाली ली और मुझसे जो कुर्सी सबसे दूर थी, वहाँ जाकर बैठ गई।

"आपके माता-पिता क्या करते हैं?"

मैंने उसके खाने की तारीफ की। खाना बहुत अच्छा नहीं बना था, फिर भी मुझे अच्छा लगा। मैं यह हमेशा से मानता हूँ कि नेपाली खाने में उत्तर भारत के पकवानों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इन दिनों नेपाली खाने में मसालों और तेल का इस्तेमाल बहुत ज़्यादा मात्रा में होता है, अपनी व्यंजनों की मौलिकता को हम खोते जा रहे हैं और ज़्यादातर यह उत्तर भारत के पकवान की तरह बनता जा रहा है। साबित्री ने जो खाना पकाया था, वह नेपाली खाने की तरह था, जिससे मेरा पेट बिगड़ेगा नहीं, जैसा कि भारतीय रेस्टोरेंट के खाने से होता है। स्वास्थ्य के लिए रुचिकर हो तो मैं उंगली चाटने लायक स्वादिष्ट खाने को भी त्याग दूँ।

"मेरे पिताजी क्लर्क हैं और माँ गृहिणी," उसने कहा। उसे देखकर मुझे बुरा लगा, क्योंकि वह अमेरिका में पाँच साल रहने के बाद भी अपनी बोली में थोड़ी-बहुत अंग्रेज़ी का मिश्रण कर ही बोल पा रही थी।

"और आपके भाई-बहन कितने हैं?"

"एक छोटा भाई है। वह आठवीं कक्षा में पढ़ता है। लेकिन पिछले साल वह फेल हो गया था।"

"क्या वह काठमांडू में पढ़ता है?"

"नहीं, वह इलाम में मरी चाची के साथ रहकर माउण्ट मेची स्कूल में पढ़ता है।" यह एक ऐसा स्वर था, जो चाहता था कि मैं स्कूल से परिचित हो जाऊँ। मैंने सहमति दी।

"तो, क्या पैसे घर भेजती हैं?" अक्सर, जब आप अपने नीचे दर्ज़े के लोगों से व्यवहार करते हो, तब आपको उनसे बहुत ही व्यक्तिगत सवाल पूछना, गलत नहीं लगता। मैं जितने भी टैक्सी ड्राइवर से मिलता हूँ, सभी से मैं पूछबैठा हूँ वे कितना कमा लेते हैं।

"जी, मैं भेजती हूँ।" रसोईघर जाने के लिए वह खड़ी हो गई। "जब से मैं यहाँ आई हूँ, पहले महीने से ही पैसे भेज रही हूँ। मेरे प्लेन की टिकट और पहले महीने के किराए के लिए हमने लोन लिया था।"

यह मेरे लिए नई खबर थी। हालाँकि मुँह में चांदी की चम्मच लेकर मैं भी पैदा नहीं हुआ था। मेरे माता-पिता दोनों नॉर्थ पोइंट कॉलेज में अध्यापक थे। और न ही मैं किसी को नहीं जानता था, जिसने अमेरिका आने के लिए लोन लिया हो।

"तो हम इस अंग्रेज़ी पाठ की शुरूआत कैसे करें?" रसोईघर से उसने पूछा।

तब तक, सच में मैंने पाठ के बारे में ज़्यादा सोचा नहीं था।

"साबित्री।" उसने मेरी आँखों में देखा, यह पहली बार था कि मैंने उसे उसके नाम से बुलाया था और साथ ही पहली बार हमने एक-दूसरे को इतनी देर तक घूरा था। "आज से हम रोज़ाना अंग्रेज़ी में बातें करेंगे।"

शुरुवात में यह सब अजीब लगता था। मंगलवार को जब वह लौटी, मुझे दिख रहा था कि वह चाहती थी, मैं अंग्रेजी में वार्तालाप के बारे में भूल जाऊँ। जैसे ही उसने कुछ कहने के लिए मुँह खोला, मैंने अंग्रेज़ी में कहा, "मुझे यकीन है, तुम जो भी कहना चाहती हो वह अंग्रेजी में होगा।"

मैंने धीरे-धीरे तीन से अधिक शब्दों वाले वाक्य का उच्चारण किया और ध्यान रखा कि मेरे वाक्य में शब्द, दस से कम हो।

"आपका दिन आज कैसे था," मैंनें अंग्रेज़ी में शुरूआत की।

"*फाइन।*"

"क्या आप इसके बारे में कुछ बता सकती हैं?"

"*सॉरी।*"

"आपके दिन के बारे में बताईए?" हिसाब कर अंग्रेज़ी छह शब्दों में कहा।"आई वेक अप।" कुछ पल के लिए रुकी। "*आई वेक्कड अप, आइ एट माइ फूड्स एण्ड देन वाशिग क्लोत्स, क्लीनिंग हाउस एण्ड देन आइ कूक लन्च। आइ केम हियर।*"

"आप यहाँ कैसे आई?"

"*सबवे।*"

"*सबवे* क्या?" मैंने पूछा।

अनिश्चित होकर उसने मेरी ओर देखा। "*आई टूक सबवे तो कामे हियर।*"

"आज तुम एन के यहाँ नहीं गई?"

"*नो। टुडे हॉलिडे।*"

इस अभ्यास से मैं थक गया था। मैं कभी छोटी बातें करने में अच्छा नहीं था। और यह तो ऐसा था, मानों मैं किसी छोटे बच्चे से बात कर रहा हूँ। इसमें मुझे सुधार करना होगा।

“तुम्हारे परिवार में कितने लोग हैं?”

“फोर।”

“वह कौन-कौन हैं और उनकी उम्र कितनी है?”

“*माय फादर-पूर्णा बहादुर कार्की। हि इज़ फिफ्टी-फोर। माय मदर इज़ फोर्टी। बेनीमाया कार्की। माय ब्रदर इज़ सामिक कार्की। सिक्सटीन ईयर ओल्ड।*”

“तुम्हारे पिता क्या करते हैं?”

“*ही इज़ क्लर्क इन ऑफिस।*”

“क्या वह अच्छा पैसा कमा लेते है?”

“*नो, माय फैमिली वेरी पुअर। आई सेंड देम मनी एव्री मंथ।*”

“क्या आपको यहाँ अपने परिवार की कमी महसूस होती है?”

“*नो। आई लाइक इट हियर।*”

“आपके साथ रहने वाले लोग कैसे हैं?”

“*सम ऑफ देम स्मेल्स।*” उसने अपनी नाक ढंक ली। “*ऑल पुअर पीपल, इवन पुअरर देन मी।*”

“तुम्हारी सबसे अच्छी दोस्त कौन है?”

“*आई लाइक बिनिता, बट लेजी।*”

“आप ऐसा क्यों कह रही हैं?”

“*सी डोंट वांट टू लर्न हाउ टू यूज कंप्यूटर। एंड सी पास हाई स्कूल।*”अन्य नेपाली बोलने वाले लोगों की तरह वह भी अच्छी तरह *शी* और *शावर* का उच्चारण नहीं कर पाती।

“और आपने सिखी है?”

“*आई पास हाई स्कूल, टू, एंड आई लर्न हाउ टू यूज कंप्यूटर फ्रॉम देव।*”

“देव कौन?”

"*माय अनादर रूममेट।*"

"उसे कम्प्यूटर चलाना कैसे आता है?"

"*ही लर्न इन काठमांडू।*"

"तुम कम्प्यूटर पर क्या करती हो?"

"*आई वाच्ड यूट्यूब वीडियोस इन कंप्यूटर।*"

"क्या आपको ई-मेल भेजना आता है?"

"*येस।*"

"आपको हर दिन के बारे में कुछ शब्द लिखकर मुझे ई-मेल करना होगा।"

"*येस।*"

"आपको अपना काम अच्छा लगता है?"

"*आई अर्न बेटर देन फ्रेंड्स।*"

"आपकी अभिलाषा क्या है?"

"*सॉरी।*"

"*एमबिशन?*"

उसने अपना सर हिलाकर दुबारा सॉरी कहा।

"*एम-बी-शुन*, आप ज़िन्दगी में क्या बनना चाहती हैं? एक शिक्षक, डॉक्टर या पायलट?"

"*डोंट नो। मेक ए लॉट्स ऑफ मनी।*"

"कैसे?"

"*ओपन स्टोर वन डे।*"

"किस तरह की दुकान?"

"*क्लोथ्स स्टोर।*"

"अच्छा है," मैंने कहा।

हमने एक शैली अपनाई।

हर मंगलवार को हम मेरे ऑफिस से एक साथ सबवे जाने लगे। घर पहुँचते ही उसने तुरंत खाना पकाना शुरू कर दिया। मैंने बेडरूम में कपड़े बदले और चिल्लाते हुए उससे बातें करना शुरू कर दिया। हम केवल अंग्रेज़ी में बातें करने लगे थे। जब तक रसोईघर में किसी चीज़ पर मसाले डाल कर खटाई होने के लिए रखी, तब तक हम उसके भेजे हुए इमेल के प्रिंटआउट निकालें और मैं उसकी गलतियाँ निकालने लगा और बिना त्रुटि वाले वाक्य पर प्रशंसा करता। वह बहुत ही जल्दी सीखती और गलती दोहराती ही नहीं थी। अगर गलती करती, तो अपने आपको डाँटते हुए कई बार अपने माथे पर मारती। रसोईघर से जैसे ही उसने खाना परोसा, मैंने एक कुर्सी निकाली और उसके पास बैठ गया। उसके बाद एक अनुवाद का खेल खेलना शुरू किया, जिसमें मेरे द्वारा दिए हर नेपाली संज्ञा के लिए उसे अंग्रेज़ी शब्द देने पड़ते। पहले-पहल तंग जगह के कारण परेशानी होती थी और मैं अपनी कुर्सी उससे जितनी हो सके उतनी दूर रखता था। लेकिन रसोईघर काफी छोटी थी। काम के चलते उसे काफी हिलना-डुलना पड़ता था और जब मैं उसे अनुवाद के लिए कोई शब्द देता तो वह स्फूर्ति से मुड़ती, जिससे उसकी चोटी मेरे कंधों को छू जाती थी।

हर शनिवार को वह सुबह आ जाती थी। जब मैं *पेनीसिलवानिया* के कॉलेज में जाता था, वहाँ मैंने खूबसूरत और ताज़े कृषि उत्पाद बाज़ार का अनुभव किया था। पर मैं न्यू योर्क के किसी भी कृषि बाजार में नहीं गया था। साबित्री के सुबह आ पहुँचने से और मेरे रोज़ के समय से पहले उठ जाने के चलते एक कृषि उत्पाद मंडी में जाने से अच्छी और कोई जगह नहीं थी। हर शनिवार, हम आठ बजे से पहले ही मेनहट्टन से आने वाली ताज़ी सब्जियों को लेने के लिए पहुँच जाते थे और लौटते वक्त इतना सारा सामान लाते, जितना तो शायद एक अनाथालय को खिलाने योग्य पर्याप्त सामग्री होगी। साबित्री को मैं सामान रखने में मदद करता था, जिसके बाद वह खाना पकाने में लग जाती और मैं कपड़े धुलाने और सफाई में लग जाता। उसने मुझे जर्मन कामवाली को हटाने के लिए मना लिया। धीमी गति से ही सही पर हम अंग्रेज़ी में यह कठिन बातचीत दिन-भर जारी रखते थे। मैंने उसे सलाह दी कि अगर वह सोचे भी तो अंग्रेज़ी में सोचे। शुरूआत में उसे यह बात अच्छी नहीं लगी। उसने कहा कि जन्म से एक ही भाषा में सोचती आई है, अब अंग्रेज़ी में सोचना असम्भव सा है। मैंने तर्क दिया कि अगर मैं उससे कहता रहूँगा, तो वह सपने भी अंग्रेज़ी में देखने लगेगी।

न्यू योर्क और *न्यू योरकर* पत्रिका के पुराने अंक फर्श पर बिखरे हुए थे और एक दिन उसने मुझसे पूछने लगी कि ये पत्रिका फर्श पर क्यों हैं?

“मैं बाथरूम में पढ़ता हूँ,” मैंने कहा।

“मुझे यकीन नहीं होता,” उसने टिप्पणी की।

“हाँ, पढ़ता हूँ। समय का उपयोग करने का यह सबसे अच्छा तरीका है।”

"*बट आई डोंट नोस एनीवन हु डस डेट।*" उसे अब भी शक था।

"मैं करता हूँ और मैं बहुत सारे लोगों को जानता हूँ, जो ऐसा करते हैं।"

"छी," उसने अपनी असहमति दी।

"आपने अभी एक नेपाली शब्द इस्तेमाल किया है," मैंने उसे गुस्से से देखा।

"*बट ओनली वन, एंड इट्स नोट वर्ड इवन।*"

"इसके लिए आप अंग्रेजी शब्द भी इस्तेमाल कर सकती हैं - इयू।"

"*इयू?*"

"हाँ।"

"एन के पोते-पोतियाँ ऐसा ही कहते हैं, जब मैं उन्हें हाथ से मुर्गी का गोश्त खाते हुए दिखाती हूँ।"

"सच में?" मुझे बहुत हँसी आई। "तो अभी आप जान गई हैं कि 'छी' के बदले अंग्रेज़ी में इयू भी कह सकते हैं।"

"*येस, इयू।*" उसने कई बार दोहराया और हँसने लगी। थोड़ी देर में उसने इसका मज़ाक बना दिया। "*इयू, इयू।*"

"इसमें इतनी हँसने वाली क्या बात है?"

"*आई थिंक, आई थिंक्स.....,*" वह सही शब्दों को ढूँढ़ने में संघर्ष कर रही थी और बार-बार हँसती जा रही थी।

"हाँ, बताओ मुझे।"

"*कैन आई से इन नेपाली? टू हार्ड- टफ, रियली हार्ड।*"

"नहीं, अंग्रेज़ी।" मैंने जिद्द की।

उसने एक शब्द बोलने की कोशिश की, जोरों से सर हिलाया, वाक्य का पुनर्निर्माण करने की कोशिश की पर बीच में ही भूल गई। फिर से सब कुछ दुबारा शुरू किया, मुझे उस पर दया आ रही थी, पर साथ ही मैं अपना धैर्य खो रहा था। "ठीक है, पर यह आख़री बार नेपाली में बोलोगी।"

वह तो कुछ भी नहीं था। उसने तो एन के पोते-पोतियों को मुर्गे की हड्डियों में से मांस के टुकड़े उठाने की कला सिखाई, जैसा वह नेपाल में अपने परिवार के साथ खाते समय करती है। साबित्री उनके

घिन को उत्सुकता समझने की भूल कर बैठी थी। अभी उसे अहसास हुआ कि वे उसके खाते हुए चबाने और चुसने की आवाज़ को बढ़ावा नहीं, बल्कि बंद करने के लिए ऐसा कहते थे। उस किस्से को यादकर वह मेरे जांघ पर थपकी लगाते हुए हँसने लगी।

शनिवार की शाम को हम अक्सर सेंटरल पार्क जाते थे, जहाँ मैं उसे हर व्यक्ति से बात करने को प्रोत्साहित करता था। वह लोगों से रास्ता पूछती थी, बच्चों से बातें करती थी और उस पर्यटक की तरह अभिनय करती थी, जिसे कुछ भी जानकारी न हो। जब कोई एक ही बार में समझ जाता तो वह उत्साहित होकर मेरी ओर देखती, फिर खुशी से आगे बढ़ जाती। कभी-कभी विशेषकर बच्चे उसे नहीं समझ पाते थे, उसके दुबारा पूछने पर भी वे नहीं समझते थे। फिर अपने माथे पर खुद कई बार मारती, अपनी मूर्खता को गाली देती और मुझसे पूछती कि उसके सवाल पूछने में गलतियाँ कहाँ की थी। ज़्यादातर उच्चारण और लहज़े में दिक्कत थी, पर उसे यकीन था कि उससे भी बड़ी कोई समस्या है।

जर्मन कामवाली के जाने के बाद साबित्री बर्तन धोती थी, पोछा, सफाई करती थी और साथ ही कपड़े धोने में भी मदद करती थी। मैं उसे बाथरूम साफ करने से मना करता था और मुझे लगता है कि इसके लिए वह शुक्रगुज़ार है। उसके अनुसार मैं उसका आदर करता हूँ। मैं सोचता हूँ कि यह काम उसके योग्य नहीं है। हालाँकि मुझे नहीं लगता कि इस काम को करने से मैं छोटा हो जाऊँगा। उसके पास मेरे अपार्टमेंट की एक चाबी थी, जब एन के यहाँ काम न होता, तो वह मेरे घर पर आ जाती थी और साफ-सफाई कर देती थी और बिना कहे कई पकवान बना देती थी। जिसमे, एक छोटी सी सूची में अंग्रेज़ी शब्दों में व्यंजनों के नाम लिखकर रख देती थी।

मई के महीने में एक लिफाफे में बंद एक समस्या सामने आई। दफ्तर में मेरा एक पत्र लौट आया था, जिसमें *यूनाईटेड स्टेट्स सिटिज़नशिप एंड इमीग्रेशान सरविसेस* के लिए चेक भेजा था। जब मैंने शिकागो में मेरे कॉलेज के एक पाकिस्तानी परिचित व्यक्ति को फोन किया, तो उसने बताया कि उसका भी चेक लौट आया है। हम उन लोगों में से हैं, जिनका एच-1बी वीज़ा आवेदन पत्र अस्वीकार कर दिया गया था। क्योंकि इस बार निर्धारित वीज़ा से कई अधिक आवेदकों की संख्या थी। पिछले वर्ष की तरह इस बार *यूएससीआईएस* ने लॉटरी सिस्टम अपनाई है। इसका कोई तुक ही नहीं बनता। मेरा मेनहेट्टन अपना अपार्टमेंट था, छह आंकड़े की वेतन थी, फिर भी मेरा आवेदन पत्र रद्द कर दिया गया। किस्मत ने मेरे साथ एक भद्दा मज़ाक किया था। इसके बारे में, मैं अपने सहकर्मियों के साथ चर्चा करता और चुपचाप बाथरूम में जाकर रोने लगता था। दिल हल्का करने के लिए, मैंने एक बार अपने बाबा को दार्जिलिंग में फोन करने के बारे में भी सोचा था, पर करने की हिम्मत नहीं हुई। मेरे बॉस और मानव संसाधन के निर्देशक ने भी सहायता के लिए अपना हाथ बढ़ाया, लेकिन मुझे मालूम था यह उनकी बस की बात नहीं है। एक घण्टे पहले ही मुझे मेरे पाकिस्तानी दोस्त ने बताया कि उसका एक दोस्त जिसने येल विश्वविद्यालय से स्नातक किया था, उसकी सिफारिश भी ख़ारिज हो गई है। उसके या मेरे, किसी के हाथ में कुछ न था।

मेरी सारी योजनाएँ चौपट हो गई। मुझे पूरी जानकारी थी कि *न्यू जर्सी* के *आईटी* दफ्तरों में क्या चलता है- फर्ज़ी बा*योडाटा*, डॉक्टरी की उपाधी और *एच-1बी* की दलाली चलती है। मैं कम-से-कम दो ऐसी कंपनियों के बारे में जानता था, जो *एच-1बी* आवेदन पत्र उन लोगों के लिए भेजते थे, जो कभी भविष्य में काम नहीं करेंगे। मैंने सुना और पढ़ा भी है, इस अर्द्ध-कानूनी व्यवसाय के बारे में, जिसे *एच-1बी* को पाने के पागलपन ने जन्म दिया है। अगर *यूएससीआईएस* इस पर जाँच करेगी, तभी अमेरिका को महसूस होगा कि इन्होंने इस प्रावधान को कितने हल्के में लिया है। उन्होंने मनगढंत वेतन बनाया, सब पदों को दुबारा तैयार किया और संख्याओं की दुबारा परिकल्पना तैयार की गई। यह एक आपसी लाभदायी रिश्ता था, एक तरफ कंपनियाँ जो सस्ते में मजदूर चाहते हैं और दूसरी तरफ दक्षिण एशिया के लोग जो *ग्रीन कार्ड* पाने के लिए बस एक मौका चाहते है और अमेरिकी बनने के अपने सपने को पूरा करना चाहते हैं। सभी इतने व्यस्त हैं कि वे अवैध अप्रवासियों के बारे में चिंता नहीं करता, जिसके चलते यह मामला अखबार की सुर्खियों में विशेष जगह नहीं बना पाया है। जो लोग कानून के अंतर्गत गए और जो वास्तव में *एच-1बी* के हक़दार हैं, वह लोग मेरी तरह हार कर बैठ गए हैं।

मैंने अपने बॉस से अपनी नौकरी दिसम्बर तक जारी रखने के लिए बात की क्योंकि मेरी *ओपीटी,* जो मेरे सालभर के रोज़गार को सम्भालती है, उसकी समय सीमा तब तक समाप्त हो जाएगी। उसके बाद या तो मुझे विद्यार्थी वीज़ा में किसी कॉलेज में दाखिला लेना पड़ेगा या देश छोड़ना पड़ेगा। अगर मैं वापस कॉलेज गया तो मुझे नहीं लगता कि मैं किश्त के पैसे का भुगतान कर पाऊँगा। पहले वर्ष से ही मैंने जितने पैसे बचाए थे, सभी इस अपार्टमेंट को खरीदने में खर्च कर दिए। अमेरिका छोड़ना यानि बिना कुछ हासिल किए अपने घर लौट जाना था। मैंने साबित्री को फोन चाहा, फिर सोचा कि बच्चे की तरह उसे सब कुछ बताना पड़ेगा। उस वक़्त मेरा दिमाग जो पागलों की तरह दौड़ रहा था, लेकिन मुझे ऐसा करने से रोक लिया।

अगले मंगलवार, मेरे ऑफिस से *अपटाउन* जाते वक्त साबित्री ने मुझसे पूछा, "क्या बात है।"

"कुछ नहीं," मैंने कहा।

"कुछ तो बात है।"

"क्या मैं आपके साथ नेपाली में बात कर सकता हूँ।"

"नहीं," उसने झटके में कहा। उसे शायद यह विचार अपमानजनक लगा। उसे लगा कि मैं सोचता हूँ, वह मुझे समझ नहीं पाएगी।

"ठीक है। मैं बताता हूँ।"

"हाँ, मैं सुन रही हूँ।"

“मेरा एच-1बी वीज़ा अस्वीकार हो गया है।”

वह चुप थी।

“मेरा *वर्क वीज़ा* ख़ारिज हो गया है।” मैं उम्मीद कर रहा था कि वह मेरे गले में अटकी बात जाने ले। आख़िरी बार मैंने ग्यारह साल पहले रोया था।

“समस्या क्या है?”

“मैं कानूनी तौर पर केवल दिसम्बर के अंत तक ही काम कर सकता हूँ।”

“उसके बाद आप क्या करेंगे?”

“शायद उसके बाद मैं यह देश छोड़कर अपने घर चला जाऊँगा।”

“यानि नेपाल?” अभी तक उसने इस सच्चाई से समझौता नहीं किया था कि मैं भारत से हूँ।

“हाँ, भारत।”

“आपके पास और कोई विकल्प नहीं है?”

“हाँ, कॉलेज जा सकता हूँ।”

“यह बेहतर है।”

“पर मुझे अपना किश्त भी चुकता करना है।”

“वह तो आप चुकता कर सकते हैं। आपको स्कूल में नौकरी मिल ही जाएगी।”

“ऐसा शायद न हो। अगर मुझे अपने अपार्टमेंट में रहना है, तो मुझे न्यू योर्क के किसी कॉलेज में दाखिला लेना पड़ेगा।”

“क्या आपके अपार्टमेंट में किसी और को अपने साथ नहीं रख सकते?”

“आपने तो देखा ही है, मेरा अपार्टमेंट कितना छोटा है। यहाँ पर कौन रहना चाहेगा? यहाँ तक कि बड़ी मुश्किल से कोई बड़ा पलंग कमरे में अंटता है।”

“इसके लिए आप विज्ञापन दे सकते हैं।”

“इसका कोई फायदा नहीं।”

“आप अभी...,” उसने रूक-रूक कहा - ”*पेस्सी पेसिमिटिक* बन रहे हैं।”

ऐसी स्थिथि में यह शब्द सुनकर मुझे हँसी आ गई। किसी ऐसे के लिए जिसे अंग्रेज़ी मुश्किल से आती हो, उसके लिए ऐसे सटीक शब्द का प्रयोग करना एक उम्दा प्रयास था।

"*पेस्सिमिस्टिक*," मैंने शब्द को सही किया।

"हाँ वही," अपने सर पर मारते हुए उसने कहा।

"लेकिन यह बहुत कठिन शब्द है, लेकिन इसे तुम्नें सही जगह पर इस्तेमाल किया है।"

"पर उच्चारण गलत किया।"

"फिर भी मुझे लगता है कि यह अच्छी बात है कि तुमने इसका प्रयोग किया।"

"अच्छा तो अब आप *ऑपटिमिस्टिक* हो जाईये।" वह मुस्कुराई। आज वह मुझे चौंका रही थी।

"मैं कोशिश कर रहा हूँ। बस मेरी सारी योजनाएँ मिट्टी में मिल गई है।"

"मैंने सोचा था कि मैं *बीबीए* के लिए रत्ना राज्य कॉलेज में जाऊँगी। पर अब यहाँ आकर मैं नौकरानी का काम कर रही हूँ।"

"यह अलग बात है।"

"*हाउ डिफरेंट? इट्स द सेम*।"

हे भगवान, उसने 'द' शब्द का सही प्रयोग किया। "तुम प्रगति की ओर बढ़ी रही हो और मैं दुर्गति की ओर बढ़ता जा रहा हूँ।"

"कैसी प्रगति? मैं मैडम के पोते-पोतियों की टट्टियाँ साफ कर रही हूँ। क्या यह प्रगति है?"

"मुझे *ग्रैड स्कूल* जाने का मन ही नहीं।"

"*ग्रैड स्कूल* तो अच्छी बात है।"

"मैं इतना खर्चा कैसे उठाऊंगा?"

"पैसे बचत करके।"

"जैसे कि यह सम्भव है।"

"बिल्कुल, अगर अभी से शुरुआत करें।"

"उफ्! मुझे एक रूममेट ढूँढ़ना पड़ेगा और अब से मुझे सोफे पर सोना पड़ेगा?"

"मुझे लगता है कि रूममेट आपके लिए मिल गया है।"

वाह, आज वह सच में आश्चर्यजनक बाते कह रही थी।

"कौन?"

"अगर लड़की हो तो आपको कोई परेशानी तो नहीं?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं।"

"*मी।*" उसने अपनी अंग्रेज़ी सुधारी और दुबारा कहा, "*आई मीन आई, माइसेल्फ।*"

दो दिन बाद साबित्री मेरे अपार्टमेंट में आ गई। उसने मुझसे बार-बार कहा कि वह यहाँ मेरी किश्त भुगतान की मदद के लिए नहीं आई है, बल्कि इसलिए आ गई क्योंकि वहाँ उसके जो लड़के रूममेट है रात को शराब पीकर आते थे, जिससे उसे और उसकी सहेलियों को असुविधा होती थी। साबित्री के अनुसार नियति को यही मंजूर है। वह अपने साथ एक ही अटेची लाई थी, जो की आधी अंग्रेज़ी किताबों से भरी थी। मेरे कई बार मना करने के बावजूद भी उसने रसोई घर की आलमारी ली, मैंने उसे बताया कि उसके कपड़ों में रसोईघर का गंध भर जाएगा। मैंने काफ़ी बार कहा कि वह बिस्तर पर सोए और मैं सोफे पर सो जाऊंगा, लेकिन उसने एक न सुनी। अगर वह जिद्दी थी तो मैं भी जिद्दी था और इसलिए मैं सख़्त काठ के फर्श पर सो गया। जब मैंने बैठक कमरे में झाँका तो देखा कि वो भी फर्श पर सो रही थी। बिस्तर और सोफा दोनों खाली पड़ा था।

उसके करवट लेते समय काठ के फर्श की चरचराने की आवाज़ आई और मैंने पूछा कि क्या वह सो गई है?

"मुझे नींद तब आती है, जब मैं किसी आरामदायक चीज़ पर सोती हूँ।"

"ऐसी बात है तो फिर बिस्तर ले लो।"

"नहीं।"

"ठीक है, फिर सोफे पर सो जाओ।"

एक चुप्पी छा गई।

"हम दोनों को पता है कि हमें फर्श पर नींद नहीं आएगी।"

"ठीक है, मैं सोफे पर सो जाती हूँ और आप बिस्तर पर सो जाइये।"

“अच्छा, मैं बिस्तर पर सो जाता हूँ।”

वह सोफे पर चढ़ गई।

“इस सोफे को खोल भी सकते हैं,” मैंने कहा।

उसने जवाब नहीं दिया। यह हमारी पहली बहस थी।

अगली सुबह मैं बिस्तर में ही था, जब वह मेरे लिए चाय ले आई।

“आपको यह सब करने की ज़रूरत नहीं,” मैंने नेपाली में कहा। यह सुनने में मुझे भी अजीब सा लगा।

“*आई मेड टी फॉर माइसेल्फ,*” मेरी नेपाली भाषा को सुनकर वह मुस्कुराते हुए कहती है। “*नो एक्स्ट्रा वर्क मेक इट फॉर यू।*”

“फिर भी मैं आपको इस काम के लिए पैसे नहीं दे रहा।”

“लेकिन देखिए मेरी अंग्रेज़ी कितनी सुधर गई है। आज से आप मुझे अंग्रेज़ी का सब कुछ सिखाइये और मैं घर का सारा काम करूँगी। किराने का सामान और घर का किराया हम आधा-आधा देंगे।”

मैं नहीं जानता कि उसके आखिरी वाक्य के कारण या उसके नंगे पैरों को देखने के कारण, मेरे मन में अशांति छा गई। अब तक मैंने उसे बस पतलून और स्कर्ट में देखा था, पर आज सुबह वह रात को सोते वक्त पहने, छोटे पजामे में ही थी। उसने मेरी नज़रों से बचने की कोशिश, पर मेरी बेचैनी शायद दिख गई और वह फटाफट कमरे से बाहर निकल गई।

हमने एक नया नियमित कार्यक्रम तैयार किया। वह मेरे लिए बिस्तर पर कॉफी लाती थी, फिर मैं नहाने चला जाता और हम साथ नाश्ता कर घर से निकलते थे। मैं *मिडटाउन* में उतर जाता था और वह *ग्रामरसी* चली जाती थी। प्रायः वह हमेशा मुझसे पहले घर लौट आती थी और हम एक साथ शाम का खाना खाते थे। हम अपनी दिनभर की बातें करते थे और जब मैं *जीआरएफ* की तैयारी करता था, तो वह बगल में अपनी पढ़ाई करती थी। किसी तरह दार्जिलिंग से मेरे दोस्त ने मेरी कुछ पुरानी *एनिड ब्लेटन नोडी* की किताबें भिजवा दी थी। साबित्री ने सभी किताबों को शुरू से अंत तक पढ़ा, फिर कई बार दुबारा पढ़ा। जब मैं पढ़कर-पढ़कर ऊब जाता या टीवी के आगे बहुत देर बैठता था, तो वह टीवी बंद कर देती और अपना हाथ मेरे कन्धे पर रखकर, फिर मुझे ऐसे धक्का देती जैसे बिगड़ी हुई गाड़ी को धक्का देते हैं और मुझे बेडरूम की ओर ले जाती। उसे शनिवार और मंगलवार के लिए काम मिल गया था, एन के बुर्ज़ुर्ग दोस्तों को लंबी सैर पर ले जाना होता था। उसे अपने छुट्टी के दिनों के नुकसान से

दुःख नहीं हुआ। उसके लिए यह पैसे कमाने का आसान तरीका था और अपनी अंग्रेज़ी पर काम करने का अच्छा मौका, जिसमें काफी सुधार दिखाई दिया।

हम कभी-कभी आपस में बहस भी करते थे। वह चाहती थी कि बाथरूम से सारी किताबें हटा दूँ और यह मैं कतई नहीं चाहता था। जिसके कारण हमने एक बात पर सुलह कर ली कि जब भी मैं कोई किताब पढ़ने के लिए ले जाऊ, तो लौटते वक्त बस सामन को अपनी जगह पर रख दूँ। इस तरह मेरी पत्रिकाएँ और अखबार फर्श पर अव्यवस्थित नहीं फैलेंगे। मैंने उससे कहा मैं कोशिश करूँगा और यह सुनकर उसके चेहरे पर विजयी भाव दिख रहा था।

"आखिरकार, तुमने नौकरानी की सलाह ले ही ली," उसने कहा।

"तुम्हें अपने लिए इस तरीके से हवाला नहीं देना चाहिए। तुम मेरी दोस्त हो।"

"नहीं, नहीं मैं नौकरानी हूँ - एक बार नौकरानी यानि हमेशा के लिए नौकरानी," उसने बेसुरा सा गाते हुए कहा।

"*यू आर नोट ए मैड। यू आर फ्रेंड।*" इन दिनों मैं भी आर्टिकल पर ज़्यादा ध्यान नहीं देता।

"नहीं नौकरानी," उसने बहस की।

"बस करो, भगवान के लिए, बस करो," मैंने कहा। मैं अपनी आवाज़ की तीव्रता से खुद चौंक गया।

उसकी आँखें बड़ी हो गईं और मुझे उनमें डर दिखा। मैंने उसे इस तरह से पहले कभी नहीं देखा था।

उस रात मैं अच्छी तरह सो नहीं पाया। मुझे मालूम था कि उसे भी अच्छी तरह नींद नहीं आई होगी। क्या मुझे उससे माफी माँगनी चाहिए थी? लेकिन वह ही थी जो नौकरानी होने की रट लगा रही थी। वास्तव में वह नौकरानी तो थी, मगर वह उससे कुछ बढ़कर थी। अगर वह नौकरानी नहीं होती तो क्या होती? इन सब विचारों से मेरा सिर भारी हो गया था। जब चार *टाएलेनोल्स* गोली खाने के बाद भी नींद नहीं आई और सोने के हर आसन में सोने की कोशिश की, पर कुछ मदद नहीं मिली, तब लड़खड़ाते हुए मैं बाथरूम गया और ऐसे ही एक किताब उठा ली, इस उम्मीद में कि इससे मेरा ध्यान बट जाएगा।

बत्ती पहले से ही जल रही थी और पालती मारकर कोमोड पर साबित्री किताब पढ़ रही थी।

"*सॉरी।*" मैंने झट से दरवाज़ा बंद किया और तंग रास्ते से लौट आया। "मुझे पता नहीं था कि तुम यहाँ होगी।"

"बैठक के कमरे की लाईट जला कर मैं तुम्हें परेशान करना नहीं चाहती थी। मैं अभी बाहर आती हूँ।"

अपने हाथों को अपनी कमीज़ पर पोंछते हुए बैठक के कमरे में आई। "अच्छा तो तुम भी अब बाथरूम में पढ़ने लग गई हो?" मैंने मुस्कुराने की कोशिश की।

"मैं काफी दिनों से ऐसा कर रही हूँ।"

"पर तुम तो मेरा मज़ाक उड़ाती थी।"

"और आपने मेरे ऊपर चिल्लाया," उसने करारा जवाब दिया।

"यह तुम्हारी गलती है।"

"नहीं।"

"तुम नौकरानी नहीं हो।"

"आप एक आईटी प्रोफेशनल है और मैं एक नौकरानी। सीधी-सी बात है।"

"मुझे माफ करना, मैंने तुम पर चिल्लाया।"

"ठीक है। कोई बात नहीं। दुबारा ऐसा मत करना।"

"मैं नहीं करूँगा।" मेरी आवाज नरम थी।

"धन्यवाद। तुम्हारा चिल्लाना बहुत ही डरावना है।"

"मुझे पता है। मुझे माफ करना। क्या अब हमारे बीच सब कुछ ठीक है?"

"मुझें पता नहीं।"

"तुम बाथरूम में पढ़ती हो?" मैं मुँह दबाके हँसने लगा।

"*यू टीच- यू टोट मी।*"

"मैं बहुत ही अच्छा गुरु हूँ।"

"एक अच्छा गुरु कभी अपने छात्र पर नहीं चिल्लाता।"

"देखा, तुम मेरी नौकरानी नहीं। मेरी छात्रा हो।"

"ठीक है, मैं मान गई। मैं आपकी छात्रा हूँ।"

एक बार जब उसने यह साफ कर लिया कि मेरे साथ उसका क्या रिश्ता है, उसके बाद साबित्री का चेहरा खिल गया और फिर उसने मुझे सुबह अपने माता-पिता से हुई बातचीत के बारे में बताया। उसकी कभी-कभार ही उनसे बात होती है और बातचीत में हमेशा पैसा शामिल रहता था। बस कभी-कभी ही उसके माता-पिता खुश होते थे, लेकिन प्रायः असंतुष्ट रहते थे। वह लोग सीमेंट वाला पक्का घर बना रहे हैं, जैसा कि उसने बताया और पैसों के लिए वे उस पर निर्भर हैं। इससे वह नाखुश नहीं थी, पर बहुत खुश भी न थी। उसने कहा कि उसके पिता सपने में भी नहीं सोच सकते, जितना पैसा वह कमाती है। पर वह ये सारे पैसे अपने परिवार की मदद के लिए कमाती है। विशेष रूप से इसलिए भी क्योंकि वह खुद इतनी खूबसूरत घर में रहती है और सुविधाजनक जीवन बिता रही है। जब पैसे की माँग बढ़ती गई, तब उसने अपनी माँ से कहा कि वह हर महीने उन्हें पाँच सौ डॉलर का निश्चित रकम भेजेगी। उसी के हिसाब से उन्हें चलना पड़ेगा। वैसे मुझे भी उनका लालचपन देखकर बहुत गुस्सा आया पर चुप रहा, यह बहुत अज़ीब था क्योंकि इन दिनों मैं कुछ भी बात अपने तक सीमित नहीं रखता था। जैसे कि कुछ हफ्तों पहले मुझे कोलम्बिया विश्वविद्यालय ने अस्वीकार कर दिया था, उसे बताने के लिए मैं ज़रा भी नहीं हिचकिचाया।

"मैं उदास नहीं हूँ, क्योंकि मुझे पता है मैं उतना योग्य नहीं हूँ," मैंने टीवी खोलते हुए कहा।

"वादा कीजिए आप नाराज़ नहीं होंगे," उसने बीच में टोका।

"नहीं, गुस्सा नहीं करूँगा।" मैंने टीवी बंद कर दी। "मैं वादा करता हूँ।"

"मुझे अभी भी डर है कि आप नाराज़ हो जाऐंगे।"

"मैं वादा करता हूँ, गुस्सा नहीं करूँगा।"

"पहली बात, मैं सोच रही हूँ कि *जीईडी* दूँगी।"

मैं चौंक गया था। मेरे गर्व की सीमा न थी। वह अमेरिकी हाई स्कूल के बराबर की परीक्षा देना चाह रही थी। उसे इस परीक्षा के बारे में जानकारी है, यह सोचकर भी मैं हैरान था।

"वाह, तुम बहुत ही अच्छा करोगी। मैं बहुत खुश हूँ।"

"पर यह सबसे ज़रूरी बात नहीं है।"

वह जीईडी के लिए लगभग तैयार थी। उसकी लगन को देखकर लगता था कि वह किसी भी चीज़ की तैयारी कर लेगी। "क्या बात है?" मैंने पूछा।

"आपको कोलम्बिया में दाखिला नहीं मिला?"

"नहीं, मुझे दाखिला नहीं मिला।"

“फिर क्या होगा? आप घर वापस चले जाओगे?”

“शायद *न्यू योर्क यूनिवर्सिटी* के जवाब का इंतजार करूँगा, हालाँकि मुझे नहीं लगता कि मुझे वे दाखिला देंगे। वहाँ दाखिला लेना उतना ही मुश्किल है, जितना कोलम्बिया।”

“मैंने इस बारे में एक वकील से बात की है,” उसने कहा।

“वाह” - मैंने सोचा उसके पास वकील भी है और इसे ज़ोर से दोहराया।

“येस, एन ‘स सन इज़ ए लॉयर। हिज़ फ्रेंड इज़ एन इमीग्रेशन लॉयर।”

उसके वाक्यों में आर्टिकल का प्रयोग सुनकर अच्छा लगा।

“उसने क्या कहा?”

“आपने वादा किया है कि आप गुस्सा नहीं करेंगे?”

“नहीं करूँगा।”

“ठीक है, पहले सुनिए मैं क्या कहने वाली हूँ।”

“ठीक है।”

“*डू नोट इंटरप्ट मी।*” एक और लाजवाब शब्द का प्रयोग किया। मैं वाकई अच्छा गुरु था।

“बोलो,” मैंने कहा।

उसने अपना गला साफ किया। “मैं जानती हूँ कि मैं केवल एक नौकरानी हूँ।” जब उसने देखा कि मैं कुछ कहने वाला हूँ, उसने झट से अपना हाथ हवा में उठाकर, चुप होने का इशारा किया। “मैं आपके जैसे बड़े परिवार से संबंध नहीं रखती हूँ। और मैं आपकी सिर्फ नौकरानी हूँ। किसी को यह जानना ज़रूरी नहीं। मैं एक अमेरिकी नागरिक हूँ। आपको इस देश में कानूनी रूप से रहना है। आप मुझसे शादी कर सकते हैं, पर यह शादी कागज़ी तौर पर होगी। यह बात किसी को बताने की जरूरत नहीं।” अब वह बेचैन थी और मुझसे आँखे तक नहीं मिला रही थी। “और शादी के बाद, आप अपना काम जारी रख सकते हैं। तलाक हम किसी भी समय ले सकते हैं। कृपया आप मुझ पर गुस्सा मत कीजिए।”

“तुम नौकरानी नहीं हो,” मैंने कहा। “तुम कभी भी नौकरानी नहीं थी। तुम मेरी विद्यार्थी भी नहीं हो। तुम्हारे और मेरे बीच जो है, वह बहुत ही अलग है। आज अगर मैं यहाँ हूँ, तो वह सिर्फ तुम्हारी बदौलत। अगर तुम न होती तो मैं शायद बहुत पहले ही हार मान जाता और अब तक दार्जिलिंग भी लौट जाता। तुम मुझसे वादा करो, कि तुम कभी भी अपने आपको नौकरानी नहीं कहोगी।”

वह बिना हिले, वहीं बैठी रही।

“यह झूठ होगा अगर मैं तुमसे कहूँ कि यह विचार मेरे दिमाग में कभी नहीं आया,” मैंने कहा। “यह विचार हर दिन, हर रात मेरे दिमाग में आता था लेकिन तुम्हारे लिए मेरे मन में बहुत आदर है। मैं तुम्हें बहुत आदर करता हूँ, इसी कारण मैं यह बात छेड़ नहीं पाया। मैंने सोचा कि इससे तुम नाराज़ हो जाओगी और तुम सोचेंगी कि मैं इस रिश्ते का नाजायज़ फायदा उठा रहा हूँ, इसलिए मैंने यह बात नहीं छेड़ी।”

“आपको यह बात बतानी चाहिए थी।”

“और हमारे बीच जो यह अच्छा ख़ासा चल रहा है, उसे बिगाड़ देता?”

“और वह अच्छी चीज़ हमारे बीच क्या है, अमित?” यह पहली बार था जब उसने मेरा नाम लिया।

“हमें पता है यह असाधारण और हटके है, तो फिर इसे बिगाड़ना क्यों?” ऐसा कहने के बाद मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लग गया। हम खुलकर बोलने वाले लोग नहीं हैं और हमेशा से मुझे अपनी भावनाओं के बारे में बात करने में हिचकिचाहट महसूस होती है।

“क्या आप नाराज़ हैं?”

“नहीं तो। मैं सोचता हूँ कि इस देश में रहने के लिए मुझे तुमसे शादी करनी नहीं चाहिए। हम शादी ज़रूर करेंगे जब मैं अपने बलबूते पर ग्रीन कार्ड हासिल कर लूँगा। मैं शादी करूँगा क्योंकि तुम ही वह एक इंसान है, जिससे मैं शादी करना चाहता हूँ।”

“मैं नौकरानी हूँ, आपको मुझसे हकीकत में शादी करने की ज़रूरत नहीं है।”

उसने फिर रोना शुरू कर दिया। पर मैंने उसे रोका नहीं।

*****

चौथा अध्याय

मूल एवं लक्ष्य पाठ में अनुवाद से जुड़ी समस्याएँ

4.1 सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण : सांस्कृतिक प्रतीक, रीति-रिवाज़, स्थानीय विशिष्टता आदि का व्याख्यात्मक विवेचन

4.2 भाषागत संरचनाओं के अनुवाद की समस्याएँ

4.3 समतुल्यता के आधार पर मूल एवं लक्ष्य पाठ का विश्लेषण

मूल एवं लक्ष्य पाठ में अनुवाद से जुड़ी समस्याएँ

विदित है कि अनुवाद की समस्याएँ काफ़ी हद तक स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के पारस्परिक संबंधों पर निर्भर करती हैं। भाषिक, सांस्कृतिक और सामाजिक स्तरों पर जिन भाषाओं के बीच जितनी भिन्नता होगी, अनुवाद में उतनी ही समस्याएँ आएँगी। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के रूप में अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों एक-दूसरे से भिन्न हैं। अंग्रेज़ी और हिंदी भाषा के अंतर को स्पष्ट करते हुए अपने लेख 'अंग्रेज़ी वाक्यांशों/ संरचनाओं के हिंदी अनुवाद की समस्या' में तुमन सिंह ने लिखा है, "अंग्रेज़ी भाषा और हिंदी भाषा में पारस्परिक बोधगम्यता नहीं है। दोनों भाषाओं की संरचना का स्तर भी बिल्कुल भिन्न है। दोनों भाषाएँ स्थिति, परिवेश, पर्यावरण, सामाजिक परिस्थिति, चिंतन तथा अर्थ-क्षेत्र की दृष्टि से भी एक दूसरे से काफ़ी दूर हैं।"[109]

अनुवाद करते समय कथ्य और शिल्प से जुड़ी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। स्रोत भाषा के कथ्य और शिल्प को लक्ष्य भाषा में बदलना पड़ता है। मनुष्य के चिंतन-मनन, व्यवहार आदि में काफ़ी समानताएं होती हैं, परन्तु भाषाओं की भिन्नता के कारण उन आचरणों की अभिव्यक्ति भिन्न हो जाती है। कभी-कभी कालगत संदर्भ में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा नई और पुरानी भी होती है। दोनों भाषाएँ भिन्न संस्कृति, इतिहास, सभ्यता और परंपरा को लेकर विकसित होती हैं। इसी कारण दो भाषाओं का शब्द-सामर्थ्य, व्याकरण, भाषा की प्रकृति और शिल्पगत विधान प्रायः भिन्न-भिन्न होते हैं। अतः अनुवादक को इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखकर अनुवाद करना पड़ता है। "अनुवादक स्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में सहज, निकट तथा समतुल्य रूप से संप्रेषित करता है। वह अनुवाद प्रक्रिया का सबसे महत्त्वपूर्ण चरण है। इसमें स्रोत भाषा की सामग्री के भाव, अर्थ, विचार, कथ्य, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ, भाषिक विशिष्टताएँ तथा शिल्प आदि को लक्ष्य भाषा में यथावत संप्रेषित करने का कठिनतर दायित्व अनुवादक अपनी सीमा में वहाँ करता है।...इसमें विचारों और शिल्प के अतिरिक्त स्रोत भाषा के बिम्ब, प्रतीक, मिथक, सामाजिक तथा व्यंग्यात्मक प्रयोग कहावतें आदि को (ध्यानपूर्वक) लक्ष्य भाषा में ले जाना पड़ता है।"[110]

साहित्यिक अनुवाद करते समय अनुवादक को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा की परीक्षा देनी पड़ती है। अनुवाद चाहे साहित्यिक पाठ का हो या वैज्ञानिक पाठ का, सृजनात्मकता की प्रक्रिया हर परिस्थिति में समाहित रहती है। किसी भी पाठ को बेहतर तभी कहा जाएगा, जब अनुवादक मूल पाठ के भावों के साथ-साथ उसकी शिल्पगत विशेषताओं का भी लक्ष्य भाषा में अंतरण करे। एक अनुवादक उत्तम कोटि का तभी बन सकता है, जब वह अनुवाद में रचनात्मक संवेदना तथा व्याकरणिक भंगिमा

---

[109] गोपीनाथन,जी., एस. कंदस्वामी (सं.), *अनुवाद की समस्याएँ*, पृ. 96

[110] सिंह, अनुज प्रताप, *अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार*, पृ. 46

को शत-प्रतिशत लक्ष्य भाषा में ला सके। अनुवादक को न केवल मूल पाठ का, बल्कि मूल लेखक के विचारों को भी पूर्ण रूप से समझने की चेष्टा करनी पड़ती है और साथ ही अपनी निष्ठा को सहेजना-सँवारना पड़ता है। इन सभी मुद्दों पर इस शोध में विशेष रूप से ध्यान दिया गया है। अनुवाद की सभी शर्तों को भी पूरा करने की कोशिश की गई है।

पाठाधारित समस्याओं के अंतर्गत द *गोर्खास डॉटर* के अनुवाद के दौरान शोधार्थी को जिन समस्याओं से जूझना पड़ा, उनका वर्णन समाधान के साथ किया गया है। कथा साहित्य में पूरे पाठ को एकल इकाई के रूप में प्रस्तुत और ग्रहण करने से उसका अर्थ स्पष्ट होता है अर्थात सम्पूर्ण पाठ एक माला की तरह आपस में गुथा होता है और प्रत्येक कड़ी अगली या पिछली कड़ी का अर्थ प्रदान करती है। इस तालमेल को अनुवाद में कायम रख पाना एक समस्या हो सकती है। अनुवादक को मूल एवं लक्ष्य भाषा के ज्ञान के साथ-साथ विषय-ज्ञान होना अत्यावश्यक है। शोधार्थी को इस कृति के अनुवाद के लिए नेपाली भाषा से लेकर उनकी संस्कृति आदि से रू-ब-रू होना पड़ा है। कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार "प्रत्येक भाषा का संबंध हर समाज और संस्कृति से होता है। वह जिस समाज और संस्कृति को अभिव्यक्त करती है, उसी समाज और संस्कृति की सूक्ष्मताओं को भी अपने भीतर वहन करती है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दो भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी समाजों का प्रतिनिधित्व करती हैं और कभी-कभी यह भिन्नता बहुत अधिक होती है, कभी-कभी बहुत कम। विभिन्न भारतीय भाषाओं में सांस्कृतिक एकता अधिक मिलती है जबकि विदेशी भाषाओं में अधिक सांस्कृतिक समानता नहीं होती। वास्तव में अनुवाद प्रक्रिया में किया जाने वाला भाषांतर एक हद तक सांस्कृतिक अंतरण भी होता है। इसमें कथ्य को स्रोत भाषा की संस्कृति से लक्ष्य भाषा की संस्कृति में अंतरित किया जाता है जिससे कई बार समस्या पैदा होती है।"[111] प्रज्वल पराजुली द्वारा लिखित द *गोर्खास डॉटर* में नेपाली समाज के संघर्ष, उनके धर्म, संस्कृति, राजनीति आदि सभी पहलुओं का वर्णन किया गया है।

4.1 सामाजिक- सांस्कृतिक विश्लेषण: सांस्कृतिक प्रतीक, रीति-रिवाज़, मुहावरे, स्थानीय विशिष्टता आदि का व्याख्यात्मक विवेचन

जी. गोपीनाथन एवं एस. कंदस्वामी द्वारा संपादित *अनुवाद की समस्याएँ* नामक पुस्तक की भूमिका में अनुवाद की समस्या पर लिखा गया है, "अनुवाद में अर्थ की प्रमुख समस्या सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के अंतरण में पैदा होती है। सामाजिक-सांस्कृतिक विभिन्नताएँ हिंदी एवं विदेशी भाषाओं के बीच में ही नहीं, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के बीच भी दृष्टव्य हैं। ये समस्याएँ सामाजिक-सांस्कृतिक शब्दावली, मुहावरों और लोकोक्तियों, लोक बिम्ब, अलंकार एवं मिथक तथा हास्य-व्यंग्य के अनुवाद में विशेष रूप से पैदा होती हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक शब्दावली काफ़ी व्यापक है और इसके अंतर्गत

[111] गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञानं की भूमिका*, पृ.87

सामाजिक-सांस्कृतिक शब्दावली के विभिन्न प्रयोग आते हैं, जैसे पारिवारिक शब्दावली, आचारपरख शब्द, गाली के शब्द, कृषक शब्दावली, रंगों के शब्द, ऋतु संबंधी शब्द, तथा पेड़-पौधे, जानवर आदि से सम्बंधित शब्द।"[112] द *गोर्खास डॉटर* कहानी-संग्रह नेपाली समाज के लगभग हर पहलू पर प्रकाश डालने में समर्थ हुआ है। लेखक ने नेपाली समाज का पूर्ण अध्ययन करने के बाद यह लोकप्रिय कहानी-संग्रह लिखा है। अनुवाद कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण होने के कारण अनुवादक को पूर्ण निष्ठा और सतर्कता से जितना हो सके मूल पाठ के निकट का अनुवाद प्रस्तुत करना होता है। किसी भी सामग्री या विधा के अनुवाद में कई समस्याएँ सामने आती हैं, यह अनुवादक पर निर्भर करता है कि वह उन समस्याओं का समाधान किस प्रकार करता है। उस समाधान पर ही किसी अनूदित कृति की सफलता या विफलता निर्भर करती है। द *गोर्खास डॉटर* कहानी-संग्रह में आठ लम्बी कहानियाँ हैं, जिनका अनुवाद करते समय शोधार्थी के सामने भी कई समस्याएँ सामने आई हैं। इस अध्याय में उन समस्याओं के विषय में चर्चा की गई है और साथ ही उन समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया गया है।

"कथा-साहित्य के अनुवाद में सबसे बड़ी चुनौती मूल कथ्य के संप्रेषण से कहीं ज़्यादा संस्कृति-सापेक्ष कथ्य के संप्रेषण की होती है।"[113] कथा-साहित्य देश या स्थान विशेष के जन-जीवन का जीवंत दर्पण होता है। इसलिए उनके रीति-रिवजों, जीवन-मूल्यों, आस्थाओं, त्यौहारों, परिवेश, वनस्पतियों, सांस्कृतिक स्थानों एवं वस्तुओं इत्यादि का भी इसमें विशिष्ट महत्त्व होता है। ऐसे स्थानों पर शब्दानुवाद या यांत्रिक ढंग के अनुवाद की अपेक्षा ऐसे अनुवाद की आवश्यकता होती है, जो स्रोत भाषा की संस्कृति एवं परिवेश को लक्ष्य-पाठ में पुनः सर्जन द्वारा प्रत्यक्ष करा सके। अन्य भाषाओं के कथा-साहित्य के अध्ययन में वहाँ की सांस्कृतिक विशिष्टताओं का अंतरण अनिवार्य है, क्योंकि संस्कृति की तात्त्विक जानकारी इन्हीं विशिष्टताओं के कारण मिलती है।[114]

द *गोर्खास डॉटर* का अनुवाद करते हुए स्रोत भाषा के प्राण-तत्त्व की रक्षा का पूरा प्रयास किया गया है। ऐसा सदैव नहीं होता कि लक्ष्य भाषा अनुवादक की अपनी भाषा हो। कई बार वे विदेशी भाषा से या विदेशी भाषा में अनुवाद करता है, ऐसे अनुवाद में अनुवादक को विचार के एकदम भिन्न परिवेश या क्षेत्र में प्रवेश करना पड़ता है। वह विचार परिवेश अनुवादक की अपनी जीवन-शैली, आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान आदि से बिल्कुल अपरिचित होता है। उन्हें सूक्ष्म विचारों और धारणाओं का अत्यधिक सावधानी से अंतरण करना पड़ता है। इस कारण समन्वय की प्रक्रिया का अनुवाद में महत्वपूर्ण स्थान है। जिस भाषा की सामग्री का अनुवाद करना है या जिस भाषा के परिवेश का अनुवाद करना है, उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों का अध्ययन करना ज़रूरी होता है, क्योंकि भाषा का स्वरूप सदा परिवेशबद्ध होता है। प्रत्येक अनुवादक के लिए भाषागत सांस्कृतिक सन्दर्भों की जानकारी आवश्यक है। साहित्यिक विषय के अनुवाद में अनुवादक को सांस्कृतिक सन्दर्भों के अनुवाद में हमेशा संघर्ष करना पड़ता है। एक अनुवादक के दायित्व के विषय

---

[112] गोपीनाथन, जी., कंद्स्वामी एस, *अनुवाद की समस्याएँ*, पृ. 13

[113] वत्स, जितेंद्र, *हिंदी-अनुवाद, समस्या और समाधान*, पृ.39

[114] गोपीनाथन, जी., *अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग*, पृ.32

में एम.पी. पाण्डेय अपने लेख में लिखते हैं, अनुवादक को इस तथ्य को कभी अनदेखा नहीं करना चाहिए कि शब्दों के प्रत्यक्ष और अलंकारिक अर्थों के अलावा भी उनकी अपनी मौखिक और लिखित परंपरा है।...इसलिए किसी अन्य व्यक्ति (लेखक) की सम्पूर्ण समझ के अलावा, अनुवादक को उसकी राष्ट्रीय संस्कृति और उनके साहित्य को समझना भी उतना ही अनिवार्य है।[115] नाईडा ने और भी स्पष्ट शब्दों में अनुवादक की भूमिका के विषय में लिखा है कि अनुवादक को स्रोत और लक्ष्य भाषा का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, विषय को भली-भांति समझे, लेखक से सहानुभूति रखे और लक्ष्य भाषा की शैली से परिचित हो।[116] स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में सही प्रतीकों का चयन कठिन तथा समस्याप्रद होता है। उदाहरणार्थ- किसी हिंदी कहानी में हिन्दू विवाह के सात-फेरों के पीछे सात वचनों को प्रतीक रूप में दूसरी भाषा में उतारना जहाँ इस तरह की संकल्पना भी समस्याजनक हो, तो समझा जा सकता है कि प्रतीक खोजना कितना दुष्कर कार्य हो सकता है। अनुवाद के दौरान जो समस्याएँ सामने आई, उसका ब्यौरा नीचे प्रस्तुत है –

सांस्कृतिक प्रतीकों के अनुवाद की समस्या :

सांस्कृतिक प्रतीकों के अनुवाद में आने वाली समस्याओं का मुख्य कारण, दो संस्कृतियों के बीच मौजूद असमानताएँ हैं। सांस्कृतिक प्रतीकों का अनुवाद करने के लिए अनुवादक द्वारा शब्दों के लक्ष्यार्थ को समझना आवश्यक है। अनेक शब्द सामाजिक-सांकेतिक सन्दर्भों में कई अन्य विशेषताओं को प्रतीकित करते हैं। अर्थात अनुवादक को वाच्यार्थ के साथ-साथ लक्ष्यार्थ का भी ज्ञान होना अपेक्षित है। कोई शब्द उस सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था में क्या अर्थ अभिव्यक्त कर रहा है, यह जाने बिना अनुवादक लक्ष्य भाषा में उसके अनुवाद के प्रति पूर्ण न्याय नहीं कर पाता है।

सी.एस. पीयर्स ने प्रतीक को वह वस्तु माना है जो किसी व्याख्याता के लिए अन्य वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है।[117] 'प्रतीक' को संस्कृति का एक हिस्सा माना जाता है। हर समाज की संस्कृति एक-दूसरे से भिन्न होती है, इसलिए किसी एक समाज में जो प्रतीक शुभ माना जाता है, वही दूसरे समाज में अशुभ माना जा सकता है। उदाहरणार्थ - विश्व में हर जगह सूर्यास्त प्रकृति के सौन्दर्य का प्रतीक माना जाता है, पर पूर्वोत्तर भारत के कुछ समुदायों में अशुभ माना जाता है। उनका मानना है कि सूर्यास्त देखने से ढलते सूरज की तरह ही उनके जीवन के हर काम में गिरावट आती जाएगी या उनकी तरक्की रुक जाएगी। पुनः कुछ पूर्वी देशों में चमगादड़ को शुभ माना जाता है, लेकिन मध्य-यूरोपीय देशों में इसे

---

[115] The translator must not lose sight of the fact that apart from their direct and figurative meanings, words often have their own tradition of existence in the spoken and written usage…Therefore besides having a thorough understanding of another person (the author), the translator has also got to have a remarkable grasp of another national culture and its literature.

--Gopinathan G. , Kandawamy S., *Problems of translation*, p. 21

[116] calls for a person who has complete knowledge of both source and receptors languages, intimate acquaintance with the subject matter, effective empathy with the original author and the content, and stylistic facility in the receptor language.

--Eugene A. Nida, *Towards a science of translating* (Leiden : E.J. Brill, 1964), p.154

[117] गोस्वामी, कृष्णकुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, पृ.20

राक्षसी आत्माओं का प्रतीक माना जाता है। “स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा यदि एक ही संस्कृति की है, तो प्रतीक दूसरी में भी काम दे सकता है। भारतीय सांस्कृतिक में विविधता है। धार्मिक रूप एक होने पर भी आनुष्ठानिक रूप में भिन्नता है।”[118]

भाषा और संस्कृति दोनों का अटूट सम्बन्ध है। इसके ज़रिए किसी भी समाज के बारे में काफी सूचनाएँ मिल जाती है। अनुवादक को सम-सांस्कृतिक भाषाओं की अपेक्षा विषम-सांस्कृतिक भाषाओं के अनुवाद में अधिक समस्याएँ आती हैं। वस्तुतः जब दो संस्कृतियाँ समान हों अथवा एक-दूसरे से संबंधित हो, तब अनुवादक को यह छूट होनी चाहिए कि वह लक्ष्य भाषा की सांस्कृतिक शब्दावली को स्रोत भाषा की प्रकृति के प्रसंगानुसार बदल ले। यदि विषम संस्कृति हो तब भी प्रसंगानुसार परिवर्तन आवश्यक है, अन्यथा उससे सटीक अर्थ की प्रतीति नहीं हो पाएगी।

“दोनों भाषाओं के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि अपने-अपने संदर्भ और परिवेश होते हैं जो प्रायः एक समान नहीं होते। हर भाषा की अपनी अगाध शक्ति और जातीय संवेदना होती है। अतः इन भाषाओं की इन विशिष्टताओं पर विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के भाषायी संस्कार पर कुठाराघात होगा और अनुवाद की संप्रेषणीयता तथा बोधगम्यता पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।”[119] सांस्कृतिक प्रतीकों का अनुवाद करते समय एक समस्या यह आती है कि सांस्कृतिक परिवेश सहित उनका अंतरण कैसे किया जाए? ऐसे शब्दों को ज्यों का त्यों रख दिया जाए या लक्ष्य भाषा के समकक्ष पर्याय की खोज की जाए? उन शब्दों के अर्थ को कोष्ठक में दिया जाए या पृष्ठ के अंत में या कृति के अंत में व्याख्यात्मक एवं परिचयात्मक टिप्पणियों के साथ उनकी प्रस्तुति की जाए? ऐसी स्थिति में अनुवादक को सांस्कृतिक शब्दावली को वैसे ही रख देना चाहिए। कोई भी लेखक या उस भाषा से सम्बंधित पाठक यह नहीं चाहेगा कि सांस्कृतिक नामों को लक्ष्य भाषा के अनुरूप परिवर्तित कर दिया जाए। इससे उस संस्कृति विशेष को क्षति पहुँच सकती है। अनुवादक को पाद-टिप्पणी मूल पाठ के साथ-साथ न देकर पृष्ठ के अंत में अन्यथा अनूदित कृति के अंत में देना चाहिए, जैसे- ‘ए फादर्स जर्नी’ कहानी में ‘Mua’, ‘Bua’ शब्दों का प्रयोग किया है। अनुवाद करते समय इसे ‘मुआ’, ‘बुआ’ ही रखा गया है, बस लिप्यंतरण कर दिया गया है। जिसका हिंदी में अर्थ माता और पिता है। ‘मुआ’ अथवा ‘बुआ’ न केवल नाते-संबंधी शब्द है, बल्कि ये किसी समाज की संस्कृति का हिस्सा हैं। इस कहानी में सिक्किम के ब्राह्मण परिवार की कहानी दिखाई गई है। मुख्यतः नेपाली ब्राह्मण परिवारों में माता-पिता के लिए मुआ-बुआ शब्द का प्रचलन है। अन्य एक उदाहरण ‘खुकरी’ का ले सकते हैं। यह एक चाकू का प्रकार है, परंतु इसकी बनावट तथा इसका प्रयोग केवल युद्ध में दुश्मनों को मारने के लिए किया जाता है। ‘खुकरी’ नेपाली वीरता का प्रतीक है। उनकी वीरता विख्यात है, जिस कारण गोर्खा आर्मी भारत में तो है ही, पर आज भी इंग्लैंड की एक मुख्य फ़ौज है। उनकी वीरता के विषय में कई लोगों ने कई चीज़ें कही हैं, जैसे लेफ्टिनेंट मैक डोवेल ने अपनी रचना *Martial Races The military, race and masculinity in British imperial culture* में इसका विस्तार

[118] दुबे, महेन्द्रनाथ, *अनुवाद-कार्यदक्षता भारतीय भाषाओं की समस्याएँ*, पृ. 133
[119] गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, पृ.23

से वर्णन किया है।[120] जर्मन चांसलर कैसर विलियम II ने टिप्पणी की थी कि गोर्खा का नाम सुनते ही, मेरा दिल काँपने लगता है।[121] तथा टी.बी. सुब्बा के अनुसार गोर्खा सिपाहियों की इमानदारी और निडरता को देखकर ही अंग्रेज़ों ने इन्हें 'मर्सिअल रेस' की उपाधि दी थी।[122] भारतीय सेना, गोर्खा को लड़ाकू नस्ल मानती है। इस वजह से भी गोर्खा रेजिमेंट को कई सुविधाएँ दी जाती हैं। अपने देश भारत की रक्षा के लिए गोर्खा जवानों ने पाकिस्तान और चीन के खिलाफ हुई सभी लड़ाइयों में शत्रु के सामने अपनी बहादुरी दिखाई है। गोर्खा रेजिमेंट को इन युद्धों में अनेक पदकों एवं सम्मानों से सम्मानित किया गया है, जिनमें महावीर चक्र और परमवीर चक्र भी शामिल है। उनकी वीरता का सबसे बड़ा उदाहरण है, सन् 1814-1815 'नालापानी युद्ध' जो ब्रिटिश और गोर्खा के बीच हुआ था। देहरादून के पास यह युद्ध लड़ी गई थी। इस युद्ध में गोर्खा हर गए थे, परन्तु अंग्रेज़ों के सामने छोटी सी सेना होते हुए भी उन्होंने बराबर की टक्कर दी थी। उनकी वीरता को देखकर इस युद्ध के बाद अंग्रेज़ों ने उनको 'मार्शल रेस' (Martial Race) अर्थात योद्धा, रणप्रिय प्रजाति की संज्ञा दी। केवल खुकरी के प्रयोग से ही उन्होंने कईयों को मार गिराया। उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि 'खुकरी' किस प्रकार नेपाली वीरता का प्रतीक है।[123]

नाते-रिश्तेदारों से संबंधित नाम के अनुवाद में आने वाली समस्या :

कहानी 'पासिंग फैंसी' का अनुवाद करते समय संबंधों को लेकर कई बार समस्या सामने आई है। कहानी में कुछ ही पात्रों के नाम होने के कारण संबोधन वाले वाक्यों में कठिनाई आई है। कहानी में दो पात्रों के लिए बस 'husband' और 'wife' अर्थात पति और पत्नी शब्द थे। अंग्रेज़ी में यह इतना अटपटा नहीं लगता परन्तु हिंदी भाषा में अजीब लगता है। इसके लिए हिंदी में अनुवाद करते समय पति-पत्नी के स्थान पर श्रीमान तथा श्रीमती जैसे पर्याय शब्द का प्रयोग किया गया है, क्योंकि प्रसंगानुसार ये अधिक सटीक है। "अनुवाद में रिश्ते के शब्दों के लिए पर्याय ढूँढना मुश्किल काम है। आजकल अंग्रेज़ी के आंटी, कजिन, अंकल चल पड़े हैं और इनके भारतीय पर्याय शब्द हैं ही नहीं। क्योंकि इनका प्रयोग रिश्ते के मूल अर्थ में 'नहीं' – विशिष्ट और विशाल अर्थ में चलता है।"[124]

इस कहानी-संग्रह में 'आमा' संज्ञा का भी बहुत बार प्रयोग हुआ है, इस शब्द को यथावत रखा गया है, क्योंकि 'माँ' शब्द को चाहे किसी भी भाषा में क्यों न सुनें, सुनते ही उसका अर्थ स्पष्ट हो

---

[120] Streets, Heather, *Martial Races The military, race and masculinity in British imperial culture, 1857-1914,* Manchester University Press, New York, 2004, pg.78

[121] I do not feel afraid of sending my dear soldiers against any forces in this world .But the moment I hear of Gorkha soldiers, my heart starts trembling.

--Lama, Mahendra P. (1997), *Makers of Indian Literature Thakur Chandan Singh,* pg. 76

[122] The perception of 'loyal and brave Gorkhas' and possibly reflects the 'martial race' (Caplan 1995) ascription of the British.

--Subba, Tanka Bahadur, A.C. Sinha(2016), *Nepali diaspora in a globalised era,* pg. 124

[123] Dixit, Kunda (2016), The sharp edge of history, *Nepali Times,* Retrieved from, URL: nepalitimes.com/article/review/The-Khukri-Braves-review.2945

[124] दुबे, महेन्द्रनाथ, *अनुवाद-कार्यदक्षता भारतीय भाषाओं की समस्याएँ*, पृ. 93

जाता है। भारत में कई भाषाओं में 'माँ' के पर्याय शब्द 'आमा' का प्रयोग किया जाता है। जैसे – नागालैंड में, फिर अरुणाचल प्रदेश के मोनपा, शेर्दुक्पन समुदाय आदि की भाषाओं में 'आमा' ही कहा जाता है। इस शब्द के लिए और भी कई मिलते-जुलते शब्द मौजूद हैं, जैसे अम्मा, अम्मी इत्यादि। अंग्रेज़ी भाषा के लिए प्रायः हिंदी क्षेत्रों के रिश्ते-नातों को सही रूप में अनुवाद करना कभी-कभी संभव नहीं हो पाता। उदाहरणार्थ - 'मिस्ड ब्लेसिंग' कहानी में 'Uncle' तथा 'Aunt' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'Uncle' ताऊ, चाचा, मामा, फूफा आदि कुछ भी हो सकते हैं और 'Aunt' ताई, चाची, मामी, फूफी आदि कुछ भी हो सकती हैं। ऐसी स्थिति में अगर प्रसंग स्पष्ट न हो तो एक अनुवादक और पाठक भ्रम की स्थिति में पड़ जाएगा। मूल पाठ में संबंधों से जुड़े कुछ शब्दों की सूची यहाँ प्रस्तुत है-

मूल शब्द	**अनूदित शब्द**	**अर्थ**
Bua	बुआ	पिता
Mua	मुआ	माता
Aapa	आपा	पिता
Aama	आमा	माता
Bada	बड़ा	ताऊ
Badi	बड़ी	ताई
Daai	दाई	भाई
Bhauju	भऊजू	भाभी
Bhanja	भांजा	भांजा
Naati	नाती	नाती, नवासा
Saasu-buhari	सास-बहू	सास-बहू
Mama	मामा	मामा

प्रस्तुत कहानी-संग्रह में प्रयुक्त नाते-रिश्ते संबंधी शब्दावलियों के अनुवाद में कई स्थानों पर मूल की अपेक्षा अनुवाद ही अधिक सक्षम रहा है। नाते-रिश्तों की शब्दावली में जैसा विरोधाभास अंग्रेज़ी भाषा में बना रहता है, वैसा हिंदी भाषा में नहीं है। इस दृष्टि से देखें तो हिंदी भाषा अधिक समृद्धशाली है।

धर्म से जुड़ी आस्थाओं के अनुवाद की समस्या :

किसी धर्म से जुड़े प्रतीकों का अनुवाद भी काफ़ी कठिन है, क्योंकि हर धर्म की अपनी विशिष्टता होती है। जो प्रतीक किसी ख़ास धर्म से जुड़े होते हैं, दूसरे समाज में सामान्यतः अनुपस्थित होते हैं। नेपाली समाज में बौद्ध, हिन्दू, इस्लाम, इसाई, जैन आदि सभी धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। नेपाल में मुख्यतः हिन्दू तथा बौद्ध धर्म से जुड़े लोग अधिक हैं। 'कड़ा', 'जनेऊ', 'ढोग', 'तिहार', 'मीतेरी',

'मांगलिक' आदि नेपाल के हिन्दू समाज से जुड़े धार्मिक शब्द हैं। धर्म से जुड़े शब्दों की ख़ास मान्यता होती है। उदाहरण के लिए 'जनेऊ' शब्द को लें। 'जनेऊ' का उल्लेख कहानी 'ए फादर्स जर्नी' में कई बार हुआ है। यज्ञोपवीत (जनेऊ) एक संस्कार है। इसके बाद ही द्विज बालक को यज्ञ तथा स्वाध्याय करने का अधिकार प्राप्त होता है। विवाह से पूर्व तीन धागों की तथा विवाह के बाद छह धागों की जनेऊ धारण की जाती है। पहले जनेऊ पहनने के पश्चात् ही बालक को पढ़ने का अधिकार मिलता था। कुछ लोगों का मानना है कि जनेऊ स्वास्थ्य को सही रखने के लिए पहना जाता है। मल-मूत्र विसर्जन के पूर्व जनेऊ को कान पर कस कर दो बार लपेटना पड़ता है। इससे कान के पीछे की दो नसें जिनका संबंध पेट की आँतों से है, आँतों पर दबाव डालकर उनको पूरा खोल देती है, जिससे मल-विसर्जन आसानी से हो जाता है।

उपर्युक्त विवरण का तात्पर्य यह है कि जनेऊ जैसे सांस्कृतिक शब्द का अनुवाद करना लगभग नामुमकिन है। इससे जुड़ी जितनी भी संकल्पनाएँ हैं – धर्म, स्वास्थ्य, नियम, संयम आदि उनका अनुवाद कठिन है। दूसरे समाज में जहाँ जनेऊ पहनने की प्रथा मौजूद नहीं है, वहाँ उसे समझना और समझाना काफ़ी मुश्किल है। मूल पाठ में लेखक ने 'janaai' शब्द का प्रयोग किया है। 'जनेऊ' को ही नेपाली भाषा में 'जनई' कहते हैं।

मूल पाठ – All right, I'll wear the janaai tomorrow.[125]

हालाँकि हिंदी में इसका अनुवाद 'जनेऊ' हो सकता है, परन्तु इसका हिंदी अनुवाद शोधार्थी ने 'जनई' ही किया है। मात्र लिप्यंतरण कर दिया गया है। कहानी का परिवेश नेपाली समाज है तथा इस कहानी-संग्रह में नेपाली हिन्दू समाज को प्रस्तुत किया है, हालाँकि लेखक 'janaai' के स्थान पर 'sacred thread' रख सकते थे, फिर भी उन्होंने 'janaai' इसीलिए रखा क्योंकि हिन्दू धर्म से जुड़े धार्मिक संस्कारों के नाम आदि समान हैं। यह प्रयोग काफ़ी हद तक सही है। क्योंकि केवल 'sacred thread' कहने मात्र से उसका मूल अर्थ सामने नहीं आ पाता। यहाँ तक कि स्रोत भाषा अंग्रेज़ी के पाठकों को भी इससे मूल अर्थ की प्रतीति हो पाना कठिन है। क्योंकि वास्तव में यह केवल पवित्र धागा ही नहीं है, इसमें धर्म, संस्कृति, स्वास्थ्य संबंधी भाव भी हैं, जो अनुवाद में व्यंजित नहीं हो पाते। 'sacred Thread' कहने पर भ्रम भी उत्पन्न हो सकता है। हिन्दू धर्म में 'पवित्र धागा' या 'sacred thread' मात्र 'जनेऊ' ही नहीं है, बल्कि 'मौली' भी होती है, जो कलाई में बाँधी जाती है और साथ ही उसे पेड़ों पर भी बाँधा जाता है। 'जनेऊ' का रंग सफ़ेद होता है, जबकि 'मौली' कई रंगों की होती है। दोनों से जुड़ी अवधारणाएँ भी भिन्न-भिन्न हैं। यही कारण है कि 'janeu' या 'janaai' के लिए 'sacred thread' शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है।

नेपाली संस्कृति के भी कई रूप हैं, क्योंकि नेपाली समाज काफ़ी व्यापक हैं। नेपाल में हिंदुओं की बहुलता तो है ही, साथ ही वहाँ आदिवासी समाज अर्थात तमांग, लिम्बू , गुरुंग, थापा, राई आदि की भी मौजूदगी है। हालाँकि अब यह बौद्ध, हिन्दू तथा ईसाई धर्म मानने लगे हैं, परन्तु पहले ये

[125] मूल पाठ पृष्ठ. 81

प्रकृति की पूजा करते थे। यहाँ का आदिवासी समाज आज भी अपने धार्मिक अनुष्ठानिक नियमों का पालन करते हैं। अन्य आदिवासी समुदायों की तरह इनके यहाँ भी हर शुभ कार्य या अनुष्ठान में शराब का होना अनिवार्य है। 'ए फादर्स जर्नी' कहानी में नेपाली आदिवासी समाज की इस प्रथा का वर्णन है। "The Matwalis they dip their thumb in alchohol and have their new born babies suck on it."[126] अन्नप्राशन्न के दिन इनके यहाँ बच्चों के मुँह में एक बूंद पारंपरिक शराब 'छांग' या 'जाड़'[127] डाली जाती है। यह प्रथा दूसरों को भद्दी लग सकती है, पर इसकी मान्यता इनके समाज में कहीं ऊपर है।

अन्य एक उदाहरण हेतु मूल पाठ के 'मीतेरी' शब्द को ले सकते हैं। जब दो व्यक्ति सामान्य मित्र से भी अधिक घनिष्ठ रिश्ता बनाते हैं, तब नेपाली में उसे 'मीतेरी' कहते हैं। कहानी 'ए फादर्स जर्नी' इस शब्द का प्रयोग किया गया है। 'मीतेरी'[128] के लिए विशिष्ट अनुष्ठान किया जाता है। यह रिश्ता खून के रिश्ते से भी अधिक घनिष्ठ होता है। यह प्रथा मुख्यतः उत्तर-पूर्वी तथा पश्चिमी नेपाल में अधिक प्रचलित है। इस तरह की प्रथा का अनुवाद किसी दूसरी भाषा में करना कठिन है। इसी शब्द से जुड़े कुछ और शब्द भी मौजूद हैं – 'मीत', 'मितिनी'। लक्ष्य पाठ में इस प्रकार के हिन्दू धार्मिक प्रतीकों का सफल अनुवाद करने का प्रयास किया गया है। अनुदित पाठ में सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतीकों के शब्दों को भी अधिकतर वैसे ही रखा गया है। अनुवाद की गई सामग्री में संस्कृति, रीति-रिवाज़ आदि को ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत करना अनिवार्य होता है।

स्थानीय शब्दों के अनुवाद की समस्याएँ :

अनुवाद करते समय एक और समस्या सामने आती है, वह है स्थानीय शब्दों के अनुवाद की समस्या। इसमें ऐसे नेपाली शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो साहित्यिक भाषा में न होकर आम बोलचाल में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरणार्थ – 'chee hau', 'aye' इत्यादि। इस प्रकार के शब्दों का नेपाली लोग बहुत प्रयोग करते हैं। परन्तु अनुवाद करते समय शोधार्थी को दुविधा यह हुई कि इस प्रकार के शब्दों को वह जैसे का तैसा रख दे ताकि नेपाली परिवेश का प्रभाव रहे या उसे हिंदी के स्वरूप के अनुसार उसके लिए 'छी', 'अच्छा' जैसे शब्दों का प्रयोग करे। "ऐसे शब्दों के लिए कैटफर्ड कहते हैं कि इनका अनुवाद न कर इन्हें यथावत रखा जाए और उसी पृष्ट के नीचे उसकी पाद-टिप्पणी दी जाए या संदर्भ के अनुसार कोई अर्थ बनता हो तो कोष्ठक में दिया जाए। इससे एक लाभ यह होगा कि इसके निकटतम समतुल्य की जानकारी हो जाएगी। दूसरा, इससे मूल की गंध आएगी तथा पाठ को स्थानीय सांस्कृतिक

[126] मूल पाठ पृष्ठ. 81

[127] चावल, गेहू या कोदो द्वारा बनाई गई शराब

[128] Messerschmidt, Donald A. (1982), Miteri in Nepal: Fictive ties that Binds, in *Kailash: A Journal of Himalayan Studies*, Vol.IX, NO.4

सूक्ष्मताओं की जानकारी मिलेगी,...।"[129] स्थानीय एवं अपरिचित शब्दों से तात्पर्य है, ऐसे शब्द जिनसे पाठक वर्ग परिचित नहीं है और जिनका मूल्यांकन करने से नेपाली समाज के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त होगी। इस शीर्षक के अंतर्गत नेपाली समाज से सम्बंधित उन स्थानीय शब्दों को रखा गया है, जिनका मूल कृति में प्रयोग है और जिनसे अंग्रेज़ी या हिंदी भाषा के पाठक अपरिचित हैं। इस प्रकार के शब्दों के स्पष्टीकरण के लिए एक तालिका के अंतर्गत पहले मूल एवं अंग्रेज़ी रोमन लिपि के शब्द हैं, अगले खाने में हिंदी के अर्थ रखे गए हैं।

अपरिचित, स्थानीय शब्द

अंग्रेज़ी/ रोमन लिपि में	**अर्थ (हिंदी में)**
Bokshee	चुडेल
Jumra	जुए
Kuiree	गोरे विदेशी लोगों के लिए अनादरसूचक शब्द
Dashain	दशहरा
Lobhi	लालची
Bahun	ब्राह्मण
Dhog	आशीर्वाद लेना
Bekaamey	बेकार
Bajiya	नाजायज़ संतान
Bua	पिता
Mua	माता
Aapa	पिता
Aama	माता
Bada	ताऊ
Laurey	सिपाही
Daai	भईया
Kuiree	गोरे विदेशी
Chulhai nimto	निमंत्रण
Aaimai	युवती
Kinema	एक प्रकार के फलिया को सिर्का कर रख दिया जाता है, जिसे किनेमा कहते हैं।

[129] गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, पृ.78

मूल-कहानी संग्रह में लेखक ने नेपाली समुदाय का वातावरण या माहौल प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। तभी उन्होंने कई नेपाली शब्दों का प्रयोग किया है, जबकि उन शब्दों का अंग्रेज़ी शब्द मौजूद है। इस बात को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने कुछ स्थानों के नाम नेपाली में ही लिख दिए हैं।

मुहावरों एवं लोकोक्तियों के अनुवाद में समस्याएँ :

हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का बृहत् कोष उपलब्ध है। इसमें समाज की सम्पूर्ण जीवन की अनुभूति संचित होती है। समाज, धर्म, इतिहास, राजनीति आदि के संबंध में समाज का दृष्टिकोण सूत्र रूप में अभिव्यंजित करने का कार्य कहावतें करती हैं। मुहावरों, लोकोक्तियों का अनुवाद प्रायः कठिन होता है। क्योंकि भाषा की सामाजिकता मुहावरों और लोकोक्तियों में समाहित होती है। प्रायः इनका अनुवाद करते समय दो पद्धतियों का सहारा लिया जाता है । पहला लक्ष्य भाषा के समानार्थक मुहावरों तथा लोकोक्तियों का अनुवाद करना और दूसरा अनुवादक की सृजनशील प्रतिभा से मूलपाठ के मुहावरों और लोकोक्तियों का लक्ष्यपाठ में अनुवाद करना। "किसी भी भाषा के मुहावरों और लोकोक्तियों में उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक सत्यता का परिचय मिलता है। मुहावरे और लोकोक्तियाँ भाषा को अधिक प्रभावशाली एवं व्यंजक बनाती है। उनके अनुवाद में उसी प्रकार की प्रभावशीलता और व्यंजना को लाने की समस्या पैदा होती है।"[130] कई बार ऐसा भी होता है कि लक्ष्य भाषा में समानार्थी लोकोक्तियाँ या मुहावरे उपलब्ध नहीं होते। ऐसे में उनका भावानुवाद कर दिया जाता है। *द गोर्खास डॉटर* में भी लोकोक्तियों तथा मुहावरों का प्रयोग किया गया है। यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं –

मूल पाठ - grown a spine
अनुवाद – बड़ी चर्बी चढ़ गई है
मूल पाठ - grabbed the opportunity
अनुवाद – हाथ से निकलने नहीं दिया
मूल पाठ - …my plan went out the window
अनुवाद – पानी फेर देना
मूल पाठ - Smiled ear to ear
अनुवाद – बत्तीसी दिखाना
मूल पाठ - A silver spoon in my mouth
अनुवाद – चांदी का चम्मच मुँह में लेकर पैदा होना
मूल पाठ – barking dog seldom bite
अनुवाद – जो गरजते हैं वे बरसते नहीं

---

[130] गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, पृ.78

मूल पाठ – a black sheep

अनुवाद- घर का भेदी लंका ढाहे

मूल पाठ – Disappearing in the thin air

अनुवाद – ज़मीन खा गई या आसमान निगल गया

मुहावरे और लोकोक्तियाँ समाज के लिए सामूहिक अनुभव की ठोस अभिव्यक्तियाँ होती हैं। सामान्य शब्दावली के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति की तुलना में मुहावरों तथा लोकोक्तियों के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली होती है। मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ एक पाठ या वाक्य को जितना प्रभावशाली बनाते हैं, परन्तु अनुवाद करते समय उतना ही संघर्ष करना पड़ता है। अनुवाद करते समय समानार्थक मुहावरा गढ़ना पड़ता है या फिर भाव तथा दृष्टिकोण के आधार पर लक्ष्य भाषा में उस भाव पर आधारित मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ ढूँढनी पड़ती है।

पुरखों के अनुभव भरे वचन और जन साधारण की उक्तियाँ लोकोक्तियों अथवा मुहावरों के माध्यम से जीवित रहते हैं। मूल लेखक बिम्ब, प्रतीक, व्यंग्य, ध्वनि के साथ-साथ मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से भी अभिव्यंजना में वृद्धि करता है। मुहावरों एवं लोकोक्तियों का मूल स्रोत उस देश, समाज या भाषा की संस्कृति हुआ करती है। वे उस देश, समाज या भाषा की सांस्कृतिक चेतना के वाहक होते हैं और भाषा की अभिव्यक्ति को विशिष्टता प्रदान करते हुए उसे सशक्त स्वरूप प्रदान करते हैं। मुहावरों का भाषिक प्रयोग, वक्ता ही नहीं बल्कि उस भाषिक समाज की भावाकांक्षा से जुड़ा एक अभिप्राय है। मुहावरा उस भाषा-विशेष को बोलने वाले की विशेषता को भी रेखांकित करता है और भाषिक विशेष को भी। मूल कहानी-संग्रह में प्रज्वल पराजुली ने अपनी भाषा को जीवंत बनाने के लिए मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल प्रयोग किया है। भाषा को सजीव और रोचक बनाने का एक साधन मुहावरा है। मुहावरेदार भाषा में साधारण शब्दों के माध्यम से बात न कहकर ऐसे प्रभावी शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जो पाठक पर निश्चित रूप से असर डालते हैं। मुहावरों की प्रमुख विशेषता है, कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक बात कह देना। साथ ही, ये किसी भी भाषा की संरचना के प्रमुख एवं प्रभावी अवयव होते हैं।

4.2 भाषागत संरचनाओं के अनुवाद की समस्याएँ

लिप्यंतरण- वर्तनी में आई समस्याएँ

कैलाश चंद्र भाटिया ने लिप्यंतरण की बहुत ही सरल शब्दों में व्याख्या की है। साथ ही, लिप्यंतरण किस स्थिति में आवश्यक है, उसका भी वर्णन किया है, "लिपि से तात्पर्य है 'लिपि का अंतरण' जिसके लिए संस्कृत में 'लिप्यंतर' शब्द प्रयोग में आता था। 'एक भाषा को एक लिपि से दूसरी भाषा में लिखा जाना' ही लिप्यंतर है। अनुवाद के मध्य भी निम्नलिखित स्थितियों में लिप्यंतरण की आवश्यकता पड़ती है :-

1. जब कोई लिखित भाषा किसी सामाजिक, राजनीतिक तथा भाषिक करों से दूसरी लिपि को अपनाती है।
2. जब एक भाषा दूसरी भाषा में प्रयुक्त व्यक्तिवाचक एवं स्थानवाचक शब्दों को अपनी लिपि में लिखती है।
3. जब किसी भाषा का कोई 'उद्धरण' ज्यों का त्यों किसी अन्य भाषा की अपनी लिपि में लिखा जाए।
4. जब किसी भाषा में अन्य भाषा के आगत शब्दों तथा मिश्र आगत शब्दों को लिखा जाए।

लिप्यंतरण में स्रोत भाषा की वर्तनी में प्रयुक्त अक्षरों के स्थान पर लक्ष्य भाषा में प्राप्त समध्वनीय अक्षरों में और उनके न होने पर निकटतम समध्वनीय में कर देना होता है और नवीन ध्वनियों के लिए नए 'वर्णों' की व्याख्या करनी होती है, जैसे – 'Gallery' शब्द का लिप्यंतरण 'गैलरि' के स्थान पर 'गैलरी' की जाती है। इसमें प्रकृति के अनुसार अंतिम स्वर को दीर्घ कर दिया गया है। दूसरा उदाहरण 'Parcel' शब्द का लिप्यंतरण 'पारसल' के स्थान पर 'पार्सल' किया जाता है। इसमें वर्तनी के अनुसार 'र' वर्ण का रहना और आक्षरिक 'ल' के 'अल' का प्रयोग किया गया है।"[131] मुख्तः लिप्यंतरण, वर्तनी के आधार पर ही किया जाता है। "लिप्यंतरण से तात्पर्य ही वर्तनी के अनुसार अंकन है।"[132] परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि अंग्रेज़ी में शब्दों और उसके उच्चारण में स्पष्ट रूप से बहुत अधिक अंतर दिखता है। जैसे – 'Knife' को 'कनाइफ' उच्चारित नहीं करते, 'नाइफ' कहते हैं। ऐसी स्थिति में जहाँ तक संभव होता है, वहाँ उच्चारण के अनुसार ही लिप्यंतरण किया जाता है। यदि वर्तनी से अंकन किया जाने लगे, तो जो रूप बनेगा उससे कोई अर्थ निकालना नामुमकिन होगा। फिर स्वरों की वर्तनी तथा उच्चारण में किसी प्रकार का तारतम्य न होने के कारण यह रूप और भी हास्यस्पद हो जाएगा। कैलाश चंद्र भाटिया के अनुसार "आवश्यकता इस बात की है कि बहुप्रयुक्त शब्दों, व्यक्ति-स्थानवाचक नामों तथा सुप्रसिद्ध पुस्तकों को लिप्यंकित कर लिया जाए और एकरूपता की दृष्टि से हिंदी में ही नहीं, सभी भारतीय भाषाओं में इसके रूप स्थिर कर लिए जाएं।"[133]

मूल कृति में आए ऐसे शब्द जिनका अनूदित कृति में लिप्यंतरण किया गया है, उनका ध्वनि स्तर पर हुए विचलन की दृष्टि से विश्लेषण करने के लिए निम्न सूची का हवाला दिया जा सकता है-

मूल शब्द	**अनूदित शब्द**
Matwalis	मतवाली
Kaiyas	कईया
The Alchemist	द अल्केमिस्ट
Manhattan	मेनहट्टन
JNU	जेएनयू

---

[131] गोपीनाथन एवं कंदस्वामी, *अनुवाद की समस्याएँ*, पृष्ठ.81

[132] गोपीनाथ एवं कंदस्वामी, वही. पृ. 85

[133] वही पृ. 86

Gorkhaland	गोरखालैंड
Dzongkha	ज़ोंगखा
Congress	कांग्रेस
Nepal	नेपाल
Mills & Boons	मिल्स एंड बूंस

उपरोक्त उदाहरण के आधार पर निष्कर्ष यह निकलता है कि शोधार्थी ने लिप्यंतरण को बखूबी अपनाया है। मूल पाठ में आई व्यक्तिवाचक संज्ञा और पारिभाषिक शब्दावली के लिए, पुस्तकों के नाम, देशों के नाम, नगरों के नाम, संस्था आदि के नाम के लिए लिप्यंतरण को आधार बनाया गया है। मूल पाठ के इस प्रकार के शब्दों को ज्यों-का-त्यों या थोड़े-बहुत ध्वन्यात्मक परिवर्तन के साथ लक्ष्य भाषा में रख दिया गया है। संज्ञा वाले शब्दों तथा विश्व के विख्यात व्यक्तियों के नामों में किसी प्रकार का परिवर्तन किया जाना अनुवाद की दृष्टि से सही माना नहीं जाता है।

उच्चारण संबंधी समस्याएँ :

मूल पाठ का लक्ष्य पाठ में अनुवाद करते समय कुछ ऐसे शब्द भी सामने आते हैं, जिनके उच्चारण और वर्तनी में पर्याप्त अंतर होता है। इस कहानी-संग्रह में कई नेपाली शब्द रोमन लिपि में लिखे गए हैं। क्योंकि नेपाली भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, इस कारण उच्चारण में समस्या आना सामान्य बात है। लिप्यंतरण करते समय कुछ ऐसे भी शब्द आए, जिनमें उच्चारण एवं वर्तनी में भिन्नता है। उदाहरणार्थ - "Are you alright, Bahini?"[134] अंग्रेज़ी में 'bahini' लिखा गया है, जबकि नेपाली में इसे 'बोइनी' या 'बईनी' कहते हैं। अन्य एक स्थान पर 'Baahun' लिखा गया है "Lobhi Baahun"[135], जबकि नेपाली में इसे 'बाउन' कहते हैं। शोधार्थी ने अनुवाद करते समय वर्तनी के स्थान पर प्रचलित उच्चारण को अपनाया है। जिससे हिंदी पाठक को नेपाली सही शब्द का ज्ञान हो सके। ऐसे शब्दों का लिप्यंतरण करते समय वर्तनी के स्थान पर उच्चारण पर ध्यान देना आवश्यक है। वर्तनी के अनुसरण में उनके लिप्यंतरण को पहचानना कठिन हो जाता है। ध्वनि की दृष्टि से शब्द के उच्चारण पर ही हमें ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, वर्तनी पर नहीं। "यों तो हिंदी और अंग्रेज़ी की वर्तनी से कम उलझी हुई है। इसमें उच्चारण के ही अनुसार लेखन चलता है। मगर उच्चारण बड़ी गड़बड़ी करता है। एक ही मातृभाषा के शब्दों का मौखिक व्यवहार सभी से एक ही प्रकार से नहीं किया जाता। इस उच्चारण के दो प्रकार के तत्त्व हैं – अन्तरंग और बहिरंग। ध्वनि का उच्चारण करने वाले अवयवों का गठन, आयु आदि अंतरंग तत्त्व हैं तो जाति, स्थान, शैक्षणिक स्थिति, वातावरण आदि बहिरंग तत्त्व कहला सकते हैं। दोनों प्रकार के तत्त्व उच्चारण पर हावी होते हैं, तदनुसार लेखन पर भी।"[136] विश्वनाथ अय्यर के

---

[134] मूल पाठ पृ. 41

[135] मूल पाठ, पृ. 66

136 अय्यर, विश्वनाथ, *अनुवाद भाषाएँ- समस्याएँ*, पृ.34

अनुसार, "प्रत्येक व्यक्ति की अपनी उच्चारण-शैली तथा शब्दावली होती है और अनुवादक यदि मौखिक रूप से बोलने वाले की उच्चारणगत विशिष्टता से परिचित नहीं है, तो उसका शुद्ध अनुवाद नहीं हो पाता।"[137] अनुवाद करते समय ऐसे शब्द आए हैं, जिनके लक्ष्य भाषा में एक से अधिक उच्चारण प्रचलित हैं। जैसे – कहानी 'द इमिग्रेंट्स' में 'restaurant' शब्द कई बार आया है। "I knew I'd leave the restaurant smelling like spices."[138] इस शब्द के लिए हिंदी में 'रेस्तौरेंट', 'रेस्तौरां', 'रेस्तरां' आदि प्रचलित है। शोधार्थी ने 'रेस्तौरेंट' का प्रयोग किया है। एक अन्य उदाहरण में – 'New Delhi' को 'नई दिल्ली', 'न्यू डेल्ही' दोनों ही कहा जाता है। लेकिन 'नई दिल्ली' का ही प्रयोग किया जाता है, क्योंकि आम बोलचाल की भाषा में यही प्रचलित शब्द है।

अतः कहा जा सकता है कि भाषा के आतंरिक ज्ञान के लिए उच्चारण ध्वनियों पर शोधार्थी ने बहुत ध्यान दिया है। भाषा के स्वर-व्यंजन, क्रम, लहज़े आदि की पकड़ जब अनुवादक को होती है, तब अनुवाद उत्तम कोटि का बन जाता है। साथ ही शोधार्थी ने यह भी ध्यान रखा है कि स्रोत भाषा की ध्वनि-व्यवस्था, लक्ष्य भाषा की ध्वनि-व्यवस्था पर हावी न होने पाए। शोधार्थी ने अनुवाद करते समय वर्तनी के स्थान पर उच्चारण, परंपरा एवं प्रचलन को ज़्यादा महत्त्व दिया है। शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से कम ही भाषाओं की ध्वनियाँ आपस में पूर्णतः समान होती हैं। पर, यदि शुद्ध वैज्ञानिकता को कसौटी न बनाया जाए, तो कहा जा सकता है कि विभिन्न भाषाओं की कई ध्वनियाँ मोटे रूप में आपस में समान होती हैं। अतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए वर्तनीगत समानता बनाए रखने के स्थान पर कई बार प्रचलन तथा परंपरा अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं। प्रस्तुत अनूदित पाठ में भी मूल पाठ की बोद्धगम्यता को बनाए रखने के लिए लिप्यंतरण के स्तर पर आवश्यकतानुसार परिवर्तन किए गए हैं, जिसके कारण ध्वनि स्तर पर विचलन होना स्वाभाविक है।

नेपाली शब्दावली के अनुवाद में आई समस्याएँ :

चयनित मूल कहानी-संग्रह अंग्रेज़ी भाषा में है, जिसका अनुवाद हिंदी में किया गया है। दोनों भाषाओं की प्रकृति एक-दूसरे से भिन्न है। मूल लेखक ने मुख्य रूप से नेपाली समाज को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है, जिसे सार्थकता प्रदान करने के लिए लेखक ने अंग्रेज़ी के साथ कुछ नेपाली शब्दों का चयन अपने कहानी-संग्रह में किया है, जिसका अनुवाद करते समय शोधार्थी के सामने कठिनाई आई है। कुछ शब्दों के अर्थ नेपाली शब्दकोश में भी मौजूद नहीं थे, इसी कारण एक-एक शब्द के लिए कई बार भिन्न-भिन्न लोगों से साक्षात्कार करना पड़ा। हेमंत जोशी, अपने एक लेख 'फ्रांसीसी-हिंदी अनुवाद की भाषावैज्ञानिक समस्याएँ' में सांस्कृतिक मूल्यों के विषय में लिखते हैं – "कुछ शब्द और वस्तुएं ऐसी भी हैं, जिनका हमारी संस्कृति में एक विशेष अर्थ है और वह केवल हमारे यहाँ ही पाई जाती

---

[137] गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, पृ. 134

[138] मूल पाठ पृ. 243

हैं...[139]" अर्थात ऐसे संस्कृति विशेष शब्दों का अनुवाद न कर, वैसे ही रखना बेहतर है। मूल पाठ में प्रयोग किए गए नेपाली शब्दों की सूची यहाँ प्रस्तुत है –

मूल नेपाली शब्द	**अनुवाद**	**मूल अर्थ**
Dharey	जुएँ	बाल की जुएँ
Bokshee	चुडैल	चुडैल
Khanchuwee	भुक्खड़	भुक्खड़
Maiyya	मैय्या	प्यार से छोटी लड़की को मैय्या कहते हैं।
Saasu-buhari	सास-बहू	सास-बहू
Khasi	मटन	बकरी का मांस
Sisnu	सिस्नु	एक प्रकार का कांटेदार पौधा।
Daai	दाई	बड़ा भाई
Jwaai	जवाई	दामाद
Bajiya	हरामी	यह शब्द मुख्यतः पुरुष के लिए प्रयोग किया जाता है।
Kuire	विदेशी	गोरे विदेशियों को कहते हैं
Potey	पोते	नेपाली हिन्दू महिलाओं का मंगल सूत्र।
Hulas		झुण्ड
Keti	बेटी	बेटी
Chyaa	छी	छी
Dashain	दसई	दशहरा
Baini	बईनी	बहन
Naani		बच्ची
Bahun	बाउन	ब्राह्मण
Lobhi	लालची	लालची
Janaai	जनई	जनेऊ

[139] गोपीनाथन जी., कंदस्वामी एस., अनुवाद की समस्याएँ, पृ.115

Chulhai nimto	चुलहाई निम्तो	निमंत्रण
Thet	धत्	धत्
Khadas	खादा	पूज्य लामा एवं अतिथि का सत्कार करने और अन्य शुभ अवसरों पर भेंट पूर्वक दिया जाने वाला महीन, रेशम से बना पारंपरिक कपड़ा।
Bekaamey	बेकार	बेकार
tika	टिका	दशहरा के दौरान आशीर्वाद के रूप में घर के बड़े टिका लगाते हैं।
Kinema	किनेमा	नेपाली आचार
Lya lutey		
Condo	पिछवाड़ा	नितम्ब
Daura-suruwal	दाऊरा-सुरुवाल	नेपाली समाज के पुरुषों के पोशाक।
Khukri	खुकरी	एक प्रकार की चाकू
Loo hera	देखो ज़रा	देखो ज़रा
Bhara-kuti	बर्तन	बर्तन
kaiyas	कईया	मारवाड़ी
Aayo bir gurkhali	आयो बीर गोर्खाली	वीर गोर्खा के लिए यह वाक्य कहा जाता है।
Pittu	पिट्टू	एक खेल
Mit	मीत	दोस्त
Mitini	मितिनी	सहेली
Miteri	मीतेरी	अनुष्ठान
Jardiya	शराबी	शराबी
Laureys	लाऊरे	गोर्खा सिपाही
Tongba	तोंग्बा	बाजरे से बनी शराब
Guniu-cholo	गुनिऊ-चोलो	नेपाली महिलाओं की पोशाक।

Dhog	आशीर्वाद	आशीर्वाद
Alooko achar	आलू का अचार	आलू का अचार
Sel-roti	सेल-रोटी	चावल के आटे से बनी एक पकवान।
Aapa	आपा	पिता
Kam garne	काम वाली	नौकरानी
Bada	बड़ा	ताऊ
Badi	बड़ी	ताई
Cheehou	छी	छी
Amma-mama	आम्मा-मामा	चौंकना
Matwalis	मतवाली	नेपाली आदिवासियों के लिए ब्राह्मण इस शब्द का प्रयोग करते थे, मूलतः इसका अर्थ शराबी है।
Bhailinee	भईलीनी	नेपाली युवतियां टोली में दीपावली के समय में मिलकर नाच-गान करती हैं।
Tihar	तिहार	दीपावली
Abbui	आबुई	चौंकना

अंग्रेज़ी शब्दों के अनुवाद में आई समस्याएँ :

हिंदी भाषा हमेशा से कई विदेशी शब्दों को अपने अनुरूप बनाती आई है। देखा जाए तो यह सबसे लचीली भाषा है। अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेज़ी आदि के शब्द हिंदी में इस तरह घुल-मिल गए हैं कि इन्हें अलग करना नामुमकिन है। प्रस्तुत कहानी-संग्रह में भी कई ऐसे अंग्रेज़ी शब्द मिले, जिनका हिंदी शब्द मौजूद होते हुए भी, उनका प्रयोग करने में हिचकिचाहट होती है। कई बार हिंदी शब्दों का प्रयोग इसलिए भी अटपटा लगता है क्योंकि उन शब्दों का आम जीवन या आज के ज़माने में प्रयोग नहीं किया जाता। ऐसे शब्दों के अनुवाद के समय शोधार्थी दुविधा में पड़ जाता है। ऐसे में उसे उन शब्दों का विश्लेषण करने की आवश्यकता पड़ती है। "अंग्रेज़ी लंबे समय तक हमारे काफ़ी निकट रही है तथा सभी भारतीय भाषाओं में तीन-तीन, चार-चार हज़ार अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग हो रहा है। अतः जो अंग्रेज़ी

शब्द हमारी भाषाओं में चल रहे हैं, उन्हें चलने दिया जाए। कुछ नए शब्द भी आवश्यक होने पर अनुकूलित करके लिए जा सकते हैं किन्तु इन्हें सभी दृष्टियों से उपयुक्त होना चाहिए।"[140]

प्रस्तुत कहानी-संग्रह में विश्लेषण के बाद जिन अंग्रेज़ी शब्दों का चलन हिंदी में है, उन्हें लिप्यंतरित कर हुबहू रख दिया गया है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत है –

अंग्रेज़ी शब्द (मूल पाठ)	**लिप्यंतरण (अनुवाद)**	**हिंदी शब्द, अर्थ**
Waiter	वेटर	बैरा, बायरा, चाकर
Number	नंबर	संख्या,अंक
Petrol	पेट्रोल	तेल
Retire	रिटायर	सेवा-निवृत्ति, कार्यमुक्ति
Medical	मेडिकल	चिकित्सा-संबंधी
College	कॉलेज	महाविद्यालय
Doctor	डॉक्टर	चिकित्सक
Table	टेबल	मेज़
Traffic	ट्रैफिक	यातायात
Order	आर्डर	आदेश, आज्ञा
Plate	प्लेट	थाली
Madam	मैडम	महोदया
AC	एसी	वातानुकूलन
Loan	लोन	उधार, क़र्ज़
Line	लाइन	क्रम
Park	पार्क	बगीचा
Liv-52	लिव-52	दवा
Solitaire	सॉलिटेयर	कंप्यूटर का एक खेल
Robot	रोबोट	यंत्र मानव
Hotmail	हॉटमेल	ऑनलाइन ईमेल सेवा
Dollar	डॉलर	अमेरिका की मुद्रा
Chicken momo	चिकन मोमो	एक प्रकार की डंपलिंग

140 गुप्त, अवधेश मोहन, राजभाषा सहायिका, पृ. 97

Chopstick	चोप्सस्टिक	चम्मच के स्थान पर दो लकड़ियों को चीनी, जापानी आदि लोग इस्तेमाल करते हैं
Tupperware	टप्परवेर	बर्तनों के एक ब्रांड का नाम है
H-1B visa	एच-1बी वीज़ा	गैर-अप्रवासी आज्ञापत्र
Visa	वीज़ा	आज्ञापत्र

अंग्रेज़ी से अनुवाद करते समय एक और समस्या सामने आई है। जैसे, हिंदी के 'ड़' ध्वनि के लिए अंग्रेज़ी में कोई ध्वनि नहीं है। यहाँ 'D' को ही 'ड़' के लिए प्रयुक्त किया जाता है। ऐसी स्थिति में शोधार्थी ने इस ध्वनि को लक्ष्य भाषा की निकटवर्ती ध्वनि में ढाल दिया है। यदि श्रोता को समझाने में कोई कठिनाई न हो, तो मौखिक अनुवाद में ऐसे शब्दों का मूल ध्वनियों के उच्चारण के समान ही उच्चारण किया जा सकता है। यदि मूल ध्वनियों में उच्चारण संबंधी कठिनाईयाँ हो या ऐसा प्रतीत हो कि लिखित रूप में मूल उच्चारण देने की कोई संगति नहीं है, तो ऐसे में इस प्रकार के उपाय अपनाने चाहिए। निकटवर्ती ध्वनियों में ढालकर सरल बनाना ही सबसे बेहतर उपाय है।

अनुवाद में आई बहुअर्थ की समस्याएँ :

प्रस्तुत कहानी-संग्रह का अनुवाद करते समय कुछ ऐसे भी शब्द सामने आए जिनके बहुअर्थ मौजूद हैं। हालाँकि प्रसंग को पढ़कर तथा परिस्थिति को समझकर, अर्थ को समझा जा सकता है, परन्तु कभी-कभी प्रसंग को पढ़ने के बावजूद अर्थ को समझना कठिन हो जाता है। उदाहरण के लिए मूल पाठ के कुछ वाक्यों को देखा जा सकता है। जैसे –

मूल पाठ : "She would've sucked out your blood, minced you into pieces, roasted you and eaten you like a khasi." [141]

'khasi', मूल पुस्तक में बकरी के मांस की बात की जा रही है। परन्तु 'खासी' का एक अन्य अर्थ भी मौजूद है, पूर्वोत्तर भारत के मेघालय राज्य में 'खासी' एक मुख्य समुदाय है। समुदाय का नाम भी 'खासी' और उनकी भाषा भी 'खासी' कहलाती है। एक दिलचस्प तथ्य यहाँ कहना आवश्यक है, पूर्वोत्तर में खासी ही एक जनजाति है, जो मंगोल नस्ल की नहीं है। वे ऑस्ट्रो-एशियाटिक नस्ल के हैं, जो पूरी तरह से मातृ-सत्तात्मक समुदाय है। एक अन्य उदाहरण में -

---

141 मूल पाठ पृष्ठ. 18

"Shraddanjali, my naani, not so little anymore, huh?"[142]

नेपाली में 'naani'(नानी) शब्द का अर्थ है 'छोटी सी लड़की', जबकि हिंदी में माँ की माँ को नानी कहते हैं। हिंदी भाषा में आक्षेप रूप में भी नानी शब्द का प्रयोग किया जाता है। जैसे – 'अच्छा ठीक है मेरी नानी', आदि। अर्थ न समझने पर, अर्थ का अनर्थ हो सकता है। एक और उदाहरण –

"The reality of alcoholism is different for us than it's for u, Bua."[143]

हिंदी में 'बुआ' पिता की बहन को कहते हैं और नेपाली समुदाय के ब्राह्मण परिवारों में पिता के लिए 'बुआ' शब्द का प्रयोग किया जाता है। यदि हिंदी अनुवादक को नेपाली समाज तथा भाषा का ज्ञान न हो, तो इस प्रकार के शब्दों के कारण अर्थ में भ्रान्ति हो सकती है। अर्थ न समझने पर अर्थ का अनर्थ हो सकता है। शोद्धार्थी को नेपाली भाषा का ज्ञान होने के कारण ऐसे शब्दों के अनुवाद में बहुत अधिक कठिनाई नहीं आई।

अनूदित पाठ में शैली के रूपांतरण की समस्या :

व्याकरणिक संरचना की दृष्टि से भाषा की सबसे बड़ी इकाई 'वाक्य' को माना जाता है। वाक्य एक बहुआयामी संरचना है। संरचना की एक इकाई के रूप में देखें, तो वाक्य एक ऐसी रचना है, जो कुछ घटकों जैसे शब्दों, पदबंधों से मिलकर बना है। उसी प्रकार जैसे शब्द एक रचना है, जो ध्वनियों से मिलकर बना है। वाक्यों के विभिन्न घटकों के बीच एक प्रकार की क्रमबद्धता होती है, जिसे पदक्रम या शब्द्क्रम कहते हैं। पदक्रम से तात्पर्य वाक्य में प्रयुक्त पदों या पदबंधों के उस क्रम से है, जिस क्रम में वे वाक्य में स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त होते हैं। इसके अंतर्गत कर्ता, कर्म, क्रिया, क्रिया विशेषण आदि पदबंधों के प्रयोग-स्थान शामिल हैं। "वास्तव में वाक्य-संरचना कथन की शैली का परिचय देती है।"[144]

अनुवाद में वास्तविक अंतरण वाक्य के स्तर पर होता है। इसी कारण इसमें वाक्य-विन्यास का विशेष महत्त्व है। हिंदी और अंग्रेज़ी भाषा के वाक्य-विन्यास की तुलना की जाए, तो साफ़ है कि उनमें काफ़ी अंतर है। हिंदी में साधारणतः छोटे-छोटे वाक्यों पर ज़ोर दिया जाता है, जबकि अंग्रेज़ी में संश्लिष्ट शैली भी काफ़ी अपनाई जाती है, जिसमें संयोजकों, वियोजकों तथा उपवाक्यों के प्रयोग से कभी-कभी वाक्य इतने लम्बे और बोझिल हो जाते हैं कि आगे क्या कहा जा रहा है, उसका पूरा अर्थ समझने के लिए पीछे के वाक्यों को पढ़ना पड़ता है। अजित लाल गुलाटी के अनुसार, "साहित्य के अनुवाद में हिंदी की प्रकृति या संरचना के अनुरक्षण का प्रश्न, अंग्रेज़ी के संयुक्त, सम्मिश्रण या जटिल

---

142 मूल पाठ पृष्ठ. 46

143 मूल पाठ पृष्ठ. 95

144 दुबे, महेन्द्रनाथ, *अनुवाद कार्यदक्षता – भारतीय भाषाओं की समस्याएँ*, पृ.131

वाक्यों को तोड़कर हिंदी के छोटे-छोटे वाक्यों को प्रयोग में लाने का कार्य यदि अनुवादक कर सके तो इस प्रकार के अनुवाद में भी सहज प्रवाह आ सकता है।”[145] उदाहरण –

मूल पाठ : “For their everyday needs, the neighbourhood people – and pedestrians who passed by the busy thoroughfare leading to the bus stand – depended on Munnu’s convenience store for paan, chips, chocolate bars, toffee, condoms (safely concealed in a drawer, of course), soft drinks, pens, notebooks and cigarettes.”[146]

अनुवाद : “हर दिन की ज़रूरत के लिए, आस-पड़ोस के लोग और राहगीर, जो उस व्यस्त रास्ते से बस.स्टैण्ड की ओर गुज़रते है- सभी पान, चॉकलेट बार्स, चिप्स, टॉफी, कॉण्डम (दराज़ में छुपा कर रखता था, स्वाभाविक सी बात है), सॉफ्ट ड्रिंक, पेन, कॉपी और सिगरेट आदि के लिए मुन्नू के सुविधाजनक दुकान पर निर्भर करते थे।”

मूल पाठ : “Notebook in hand, Supriya lazily stretched her tiny legs across the sofa and on to her father Prabin’s lap, struggling to align the slash of her Nepali words with the lines on the paper.” [147]

अनुवाद : “आलस्य भाव से सोफे पर अपने छोटे.छोटे पाँव फैलाए, सुप्रिया पिता प्रबीन की गोद में बैठी हुई थी। उसके हाथ में नोटबुक थी। नेपाली शब्दों को कागज़ की लकीरों के साथ सजाने में लगी हुई थी।”

अन्य एक समस्या, कहानी ‘पासिंग फैंसी’ के अनुवाद के दौरान आई है। इस कहानी-संग्रह में पात्रों के बीच संवाद होते हुए भी संवाद-शैली का प्रयोग नहीं किया गया है, जिसके कारण अनुवाद करते समय शोधार्थी को कठिनाई आई है कि वह मूल शैली में ही अनुवाद करे या संवाद शैली को अपनाए। अंत में शोधार्थी ने संवाद शैली को ही अपनाया क्योंकि इस शैली से कथानक अधिक स्पष्ट लगता है। कभी-कभी मूल पाठ के कुछ अनुच्छेदों को दुबारा पढ़ना पड़ रहा था कि आखिर वक्ता है कौन? उदाहरण –

मूल पाठ : “How fitting that he should pluck the orchids for her home and she was here now, he said. He could have been lying; he had to be lying, but it didn’t matter. He was afraid, though, that the quality of orchids this year wasn’t as decent as last year’s. She looked at the

---

145 गोपीनाथन, कंदस्वामी, *अनुवाद की समस्याएँ*, (अंग्रेज़ी से हिंदी में मानक ग्रंथों के अनुवाद की समस्याएँ) पृ.100

146 मूल पाठ पृष्ठ. 42

147 मूल पाठ पृष्ठ. 65

flowers and didn't notice anything lacking, but she was hardly an expert in horticulture. She didn't know he was this interested in plants – had he always been? Gardening was his hobby; it was therapeutic. Would she prefer tea or coffee? Water was good, she replied. He would ask the maid – the robot (ha ha) – to squeeze some fruit for two glasses of juice. He especially wanted lots of lychees in his drink. Was her retirement any better? She had begun reading Mills & Boon, and it was engrossing. Her husband would hide the books soon because she didn't play cards with him. Going by the way she was, she'd soon be reading more than she did before the children came along." (मूल पाठ पृ. 232-233)

उपर्युक्त अनुच्छेद का अनुवाद इस प्रकार किया गया है –

अनुवाद :"संयोग की बात है, मैं आपके लिए ऑर्किड के फूल तोड़ ही रहा था और वह खुद ही सामने आ गई," भट्टाराई जी ने कहा।

शायद वे झूठ बोल रहे थे, पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वे थोड़े निराश थे, क्योंकि इस साल पिछले साल की तरह ऑर्किड उतना अच्छा नहीं खिला था। उसने फूलों की तरफ देखा, पर उसे कोई कमी नज़र नहीं आई। वैसे भी वह कोई बागवानी की विशेषज्ञा तो थी नहीं। उसे पता नहीं था कि भट्टाराई जी को फूलों में इतनी दिलचस्पी है।

"क्या पहले से आपको बागवानी में दिलचस्पी थी?"

"बागवानी केवल शौक ही नहीं, बल्कि यह मुझे तनाव से भी आराम दिलाता है।"

"आप चाय या कॉफी क्या लेना पसंद करेंगी?"

"पानी ठीक है," उसने जवाब दिया। उसने अपनी कामवाली से कहा कि वह दो गिलास जूस बना दे। उन्हें विशेषकर अपने जूस में लीची पसंद थी।

"आपकी रिटायरमेंट अब कैसी बीत रही है?"

उसने बताया कि अब उसने मिल्स एँड बुन पढ़ना शुरू कर दिया है। वह बहुत ही मनोरंजक है। उसके पति जल्द ही अब किताबें छुपाने लग जाएँगे, क्योंकि वह उनके साथ ताश नहीं खेलती। जिस तेजी से वह पढ़ रही है, उतना तो वह बच्चों के पैदा होने से पहले भी नहीं पढ़ती थी।"

उपर्युक्त अनुवाद से यह ज्ञात होता है कि इस प्रकार की संवाद शैली से अर्थ अधिक स्पष्ट होता है। इस प्रकार के लम्बे अनुच्छेद तथा वाक्य इस कहानी-संग्रह में भरे पड़े हैं। जिसके अनुवाद में समस्याएँ आई हैं। ऐसे लम्बे वाक्यों को उचित रूप में छोटे-छोटे वाक्यों में विभाजित कर पाठक के लिए सरल बनाने की कोशिश की गई है। अतः अनूदित पाठ में अनुवाद संबंधी समस्याओं का विश्लेषण इस पाठ में किया गया है। अनुवाद की समस्याओं की गिनती करना कठिन है, क्योंकि स्रोत भाषा का पाठ पूरी तरह अनूदित नहीं किया जा सकता। हर पाठ में कई ऐसे भाषिक रूप होते हैं, जिनका अनुवाद संभव नहीं हो पाता। इसमें कई बार भाषा संबंधी कठिनाइयाँ सामने आती हैं और कई बार सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ भी। इसी संदर्भ में कैटफर्ड ने अनुवाद की दो सीमाएँ बताई हैं। पहली भाषापरक और दूसरी सामाजिक-सांस्कृतिक। भाषापरक सीमा से अभिप्राय यह है कि स्रोत भाषा के शब्द, वाक्य-रचना इत्यादि का पर्यायवाची रूप लक्ष्य भाषा में नहीं मिलता। सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के अंतरण में भी काफ़ी सीमाओं का सामना करना पड़ता है, क्योंकि प्रत्येक भाषा का संबंध अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था से जुड़ा होता है।

4.3 समतुल्यता के आधार पर मूल एवं लक्ष्य पाठ का भाषिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

अनुवाद प्रक्रिया में स्थिति के संदर्भ में समरूपता परिलक्षित होती है, जिसमें कुछ तत्त्वों में साम्य लाने का प्रयास रहता है। अनूदित कृति में दो भाषाओं की संरचना और संस्कृति एक दूसरे में निहित होकर संश्लिष्ट रूप में स्थित होते हैं। साहित्यिक कृति चाहे वह उपन्यास, कहानी, नाटक आदि जो भी हो, उसमें भावों और विचारों की समग्रता रहती है, साथ ही उसमें प्रतीक विधान, बिंब विधान, सूक्ष्म अर्थवत्ता, व्यंग्यार्थ आदि अंतनिर्हित होते हैं। इन सबका अंतरण नई भाषा में करना होता है। अंतरण की प्रक्रिया में आगम, लोप आदि विभिन्न तत्त्वों की भी अपनी विशेष भूमिका रहती है। इसके अतिरिक्त शब्दानुवाद, आगत शब्द, शब्द-निर्माण, क्रम-परिवर्तन, रूपांतरण, अनुकूलन, लिप्यंतरण और भावानुवाद आदि समतुल्यता के सिद्धांत में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्रोतभाषा के पाठ का जब लक्ष्यभाषा में अनुवाद किया जाता है तो वह पूर्णतः समान नहीं होता। इस स्थिति में अनुवादक का यह प्रयास होता है कि वह लक्ष्यभाषा के अर्थ को स्रोत भाषा के निकट रखे। अर्थ की इस निकटतम समानता को समतुल्यता कहा जाता है। समतुल्यता का सिद्धांत अनुवाद के सभी सिद्धांतों में सबसे प्रमुख सिद्धांत माना जाता है। अनुवाद की सभी प्रमुख परिभाषाओं में दोनों भाषाओं में समान अर्थ तथा समान प्रभाव लेने की बात कही गई है। वैसे अनुवाद में दोनों पाठों में पूर्ण समतुल्यता तथा दोनों भाषाओं के पाठकों पर समान प्रभाव पैदा करना काफ़ी कठिन कार्य है। विद्वानों का भी यह मानना है कि किसी भी पाठ की व्याख्या बार-बार एक जैसी नहीं हो सकती। यह

एक स्वाभाविक सी बात है कि यदि कोई व्यक्ति एक ही पाठ की व्याख्या कई बार करे तो हर बार उसकी व्याख्या समान नहीं होगी। इन कारणों से भी लक्ष्य भाषा के पाठकों पर स्रोत भाषा जैसा प्रभाव डालना आसन कार्य नहीं है।

"स्रोत भाषा का मूल पाठ और लक्ष्य भाषा का अनूदित पाठ पूर्णरूप से एक समान नहीं होता इसलिए अनुवादक को लक्ष्य भाषा के अर्थ को स्रोत भाषा के अर्थ के मूलगुण से यथासंभव निकटतम समान रूप में प्रस्तुत करना पड़ता है। अर्थ के इस निकटतम सादृश्य को समतुल्यता की संज्ञा दी गई है।"[148] समतुल्यता में समानता की खोज की जाती है। "मूल पाठ और अनूदित पाठ पूर्णरूप से **समरूप** (identical) नहीं होते, बल्कि **समतुल्य** (equivalent) होते हैं।"[149] अर्थात यह भी कहा जा सकता है कि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की भाषापरक और अर्थपरक अभिव्यक्तियाँ समान मूल्य की होनी चाहिए। प्रसिद्ध आधुनिक अनुवादशास्त्री कैटफॅर्ड और नाइडा ने 'समतुल्यता' की परिभाषा इस प्रकार दी है - "कैटफॅर्ड के अनुसार 'अनुवाद एक भाषा के पाठपरक उपादानों का दूसरी भाषा के पाठपरक उपादानों के रूप में समतुल्यता के सिद्धांत के आधार पर प्रतिस्थापन है।"[150] कैटफॅर्ड ने मुख्यतः समतुल्यता के सिद्धांत के लिए पाठपरक उपादानों की समतुल्यता की अपेक्षा रखी है। "नाइडा के अनुसार अनुवाद का संबंध स्रोत भाषा के संदेश का पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्यभाषा में निकटतम, स्वाभाविक तथा तुलयार्थक उपादान प्रस्तुत करने से होता है।"[151] नाइडा ने पाठ में निहित अर्थ और शैली दोनों के समतुल्य उपादानों के प्रस्तुतीकरण पर ज़ोर दिया है।

भारत और नेपाल का पारस्परिक संबंध :

प्रस्तुत कहानी-संग्रह नेपाली समाज के इर्द-गिर्द घूमता है, इसी कारण भारत और नेपाल के भौगोलिक संबंधों के विषय में जान लेना आवश्यक है। इससे पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि सीमा विभाजन से पूर्व यानी प्राचीन काल से दोनों देशों में आपसी संबंध है। "भौगोलिक दृष्टि से नेपाल तीन विभिन्न पट्टियों में विभाजित है - दक्षिण में तराई (मैदानी भाग), मध्य में पहाड़ियाँ और उत्तर में उच्च पर्वत शृंखलाएँ। तराई क्षेत्र भारत के गंगा के मैदान का प्रसार है और नेपाल के कुल क्षेत्रफल का 17 प्रतिशत अंश इसमें सम्मिलित है।"[152] नेपाल चारों ओर से दूसरे देशों की सीमाओं से घिरा हुआ है, जो तीन दिशाओं से भारत से जुड़ा हुआ है तथा एक ओर चीन से। नेपाल के उत्तर भाग की सीमा- चीन के 'ज़ींनजीआंग स्वायत्त परिषद्' (China's Xinjiang Autonomous Council Tibet) से जुड़ी है

---

[148] नगेन्द्र, *अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं अनुप्रयोग,* पृ. 61

[149] नगेन्द्र, वही, पृ. 70

[150] The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language. Catford नगेन्द्र, वही, पृ. 70

[151] Translating consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and secondly in style. Nida नगेन्द्र, वही, पृ. 70

[152] झा, हरिवंश, *नेपाल में तराई समुदाय एवं राष्ट्रीय एकता,* पृ.1

तथा बाकी की तीन सीमाएँ भारत के राज्यों से जुड़ी हैं, पश्चिम में 'उत्तराखण्ड', दक्षिण में 'उत्तर प्रदेश', बिहार, बंगाल (सिलिगुड़ी)।

भारत और नेपाल के भौगोलिक संबंध बनने का एक कारण 'सिगौली संधि' 1815 है। यह संधि भारत की आज़ादी से पूर्व हुआ था, क्योंकि ब्रिटिश इंडिया और नेपाल के बीच युद्ध हुआ था। इस युद्ध के पूर्व दोनों पक्षों के बीच लम्बे समय तक शांति तथा मैत्री का संबंध था। उसी को बरकरार रखने के लिए 2 दिसम्बर 1815 को 'सिगौली संधि' हुई। इस संधि के अंतर्गत धारा 1 में ईस्ट इंडिया कम्पनी और नेपाल के राजा के बीच स्थायी शांति रहेगी। धारा 6 में नेपाल के राजा प्रतिज्ञा करते हैं कि वे सिक्किम के राजा को उनके अधिकार-क्षेत्र को लेकर कभी परेशान नहीं करेंगे और इस बात की सहमति व्यक्त करते हैं कि नेपाल राज्य और सिक्किम के राजा या उनके नागरिकों के मध्य कोई मतभेद उत्पन्न हो तो उन्हें वे ब्रिटिश सरकार के समक्ष मध्यस्थता के लिए प्रस्तुत करेंगे, जिसके निर्णय को मान्यता देने के लिए नेपाल के राजा वचन बद्ध होंगे।[153] भारत की आज़ादी के बाद भी शांति और मैत्री का संबंध बनाए रखने के लिए अन्य एक संधि 'शांति एवं मैत्री-संधि' 'Treaty of Peace and Friendship' 31 जुलाई 1950 को की गई। इसके बाद दोनों देशों के बीच निम्न प्रकार से सहमति हुई -

धारा 1 : भारत सरकार और नेपाल सरकार के मध्य स्थायी शांति और मित्रता रहेगी। दोनों सरकारें एक-दूसरे की संपूर्ण सम्प्रभुता, भौगोलिक एकता तथा स्वतंत्रता को मान्यता और आदर प्रदान करने को सहमत हैं।

धारा 5 : नेपाल सरकार भारतीय क्षेत्र से अथवा बरास्ता भारतीय क्षेत्र नेपाल की सुरक्षा के लिए अनिवार्य हथियार, गोला, बारूद अथवा युद्धक सामग्री और उपकरणों का आयात करने के लिए स्वतंत्र होगी। इस समझौते को लागू करने के लिए दोनों सरकारें पारस्परिक परामर्श से व्यवस्था का निर्धारण करेंगी।

धारा 6 : प्रत्येक सरकार इस बात के लिए प्रतिश्रुत होती है कि भारत और नेपाल के मध्य पड़ोसी मित्रता के प्रमाण स्वरूप दूसरे देशों के नागरिकों के साथ अपने राज्य में औद्योगिक और आर्थिक विकास तथा इस विकास हेतु रियायतें और अनुबंध प्रदान करने में राष्ट्रीय व्यवहार करेगी।

धारा 7 : भारत और नेपाल की सरकारें सहमत हैं कि पारस्परिक आधार पर एक राज्य के नागरिक को दूसरे के राज्य में आवास, सम्पत्ति स्वामित्व, व्यापार और विपणन, आवागमन तथा अन्य सुविधाएँ समान रूप से प्रदान करेंगी।

---

153 झा, हरिवंश, *नेपाल में तराई समुदाय एवं राष्ट्रीय एकता,* पृ.111,112

धारा 8 : जहाँ तक इनमें वर्णित विषयों का संबंध है, यह संधि भारत के लिए ब्रिटिश सरकार तथा भारत सरकार के बीच की गई समस्त पूर्व-संधियों समझौतों तथा व्यवस्थाओं को निरस्त करती है।

उपर्युक्त भौगोलिक संबंध के दर्शन के लिए राजनीतिक संदर्भ देना आवश्यक है तथा यह विषय को और स्पष्ट कर देता है।[154]

व्यापार के कारण नेपाल भारत पर निर्भर है, इसका एक अन्य कारण भौगोलिक भी है, क्योंकि व्यापार में आयात-निर्यात के लिए नेपाल के पास बंदरगाह नहीं है। नेपाल को यदि किसी अन्य देश से व्यापार करना हो, तो भी भारत के रास्ते ही आना पड़ता है। इसी कारण नेपाल, भारत के प्रदेशों एवं बंदरगाहों पर पूरी तरह निर्भर है। इसी को ध्यान में रखते हुए 1950 अक्टूबर में 'व्यापार और वाणिज्य की संधि' (Treaty of Trade and Commerce) हुई।[155]

नेपाल के तराई क्षेत्र में भारतीय मूल के लोग बहुसंख्या में बसे हैं। हिंदी भाषा के एक कोश 'भार्गव कोश' Bhargava (हिंदी-अंग्रेज़ी) में 'तराई' का अर्थ Marshy Ground (दलदली भूमि), a meadow (घास का मैदान) आदि दिया है। तराई नेपाल का वह क्षेत्र है जो हिमालय पर्वत का निचला क्षेत्र और विंध्य पर्वत श्रंखला का उत्तर भाग है। यहाँ के निवासी 'मधेशी' हैं। उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कैसे नेपाल, भारत से भौगोलिक तौर पर जुड़ा है।

समतुल्यता के आधार पर भाषिक विश्लेषण :

भाषापरक समतुल्यता का आधार भाषिक सामग्री है। इसमें मुख्यतः शब्दों, पदबंधों, वाक्यों आदि का चयन किया जाता है। उदाहरण के लिए मूल पाठ के शीर्षक द *गोर्खास डॉटर* को ले, तो कहा जा सकता है कि इसका सीधा शब्दानुवाद हुआ है। अनूदित हिंदी पाठ में *गोर्खा की छोरी* शीर्षक रखा गया है। दोनों नेपाली और हिंदी भाषा में 'छोरी' शब्द का एक ही अर्थ है। इसमें भावानुवाद आदि की आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि इसका शब्दानुवाद शीर्षक के पूर्णतःअनुकूल है एवं निकटतम समतुल्य भी है। वैसे 'डॉटर' के लिए अन्य शब्द जैसे पुत्री, लड़की आदि भी है, परंतु यह शीर्षक के लिए आकर्षक नहीं है। इस कहानी-संग्रह में अधिकतर कहानियाँ ग्रामीण परिवेश से जुड़े हैं, शीर्षक में 'छोरी' शब्द के प्रयोग से आंचलिक रूप आया है। 'Gurkha' अर्थात 'नेपाली' भी कह सकते हैं, भारतीय नेपाली समुदाय ने 'गोर्खा' शब्द के लिए काफ़ी संघर्ष किया है और अब वे अपनी पहचान, अपना अस्तित्व 'गोर्खा' शब्द

---

[154] झा, हरिवंश, *नेपाल में तराई समुदाय एवं राष्ट्रीय एकता*, पृ.119,121

[155] Nepal and India share an 'open' border as per the agreements of a bilateral treaty signed in 1950. According to the treaty, Nepalis and Indians can travel and work across the border and are to be treated at par with the native citizens. Rural Nepalis, who have for long been suffering poverty, unemployment and more recently a civil war, have been migrating to India in thousand every year.

--Bhattarai, Raju (2007), "International migration, multi-local livelihoods and human security: Perspectives from Europe, Asia and Africa", *Institute of Social Sciences*, Netherlands, Retrieved from, condesan.org/mtnforum/sites/default/files/publication/files/1139.pdf

से जोड़ते हैं, इसी कारण 'Gurkha' के समतुल्य अन्य कोई शब्द सटीक नहीं होता। 'नेपाली' कहने पर कई लोगों के भावों चोट भी पहुँचती है। कई लोग इस शब्द को अब अपमानजनक शब्द के रूप में प्रयोग करते हैं, जो बहुत ही दुःख की बात है। एक और शब्द 'बहादुर' है, जो अब एक अनादरसूचक शब्द बन गया है।[156] अतः कहा जा सकता है कि शीर्षक का सफल अनुवाद हुआ है। अर्थात यह एक प्रकार से शब्दानुवाद ही है। इस प्रकार के शब्दों का हिंदी में खुले आम प्रयोग करने पर सवाल खड़े करने से पूर्व, नेपाल और भारत का ऐतिहासिक संबंध जानना आवश्यक है।

वाक्य संरचना :

अनुवाद करते समय अन्य समस्याओं के साथ-साथ मुख्यतः दो समस्याएँ विशिष्ट हैं। प्रथम, वाक्य-संरचना से सम्बंधित समस्याएँ। उदाहरण स्वरुप अंग्रेज़ी के किसी वाक्य के सभी शब्दों के हिंदी रूप मौजूद होते हुए भी कभी-कभी लक्ष्य भाषा में वाक्य-निर्माण करना कठिन हो जाता है। ऐसी समस्याएँ वाक्य-संरचना की समस्याओं के अंतर्गत आती हैं। तथा दूसरी, शब्दों से सम्बद्ध समस्याएँ - शब्दों के अंतर्गत मुहावरे, पदबंध आदि सभी आते हैं। वाक्य रचना की दृष्टि से हिंदी तथा अंग्रेज़ी की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। एक अनुवादक के लिए इनकी जानकारी आवश्यक है। इनके अभाव में अनुवाद यांत्रिक लग सकता है। इसलिए अनुवादक के लिए दोनों भाषाओं की प्रकृति से परिचित होना ज़रूरी है, ताकि स्रोत भाषा के विचारों को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप ढाला जा सके। स्रोत भाषा की वाक्य-रचना के अनुसार अनुवाद करने से यह अस्वाभाविक लग सकता है। सफल अनुवाद वही माना जाता है, जिसमें अनुवाद का प्रभाव नज़र न आए।

संरचना की दृष्टि से हिंदी और अंग्रेज़ी – दोनों भाषाओं में तीन प्रकार के वाक्य होते हैं - सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य। समीक्ष्य पुस्तक में दोनों भाषाओं की संरचना का पालन किया गया है। नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत है -

मूल पाठ : "Munnu was born in Kalimpong."[157]

अनूदित पाठ : मुन्नू का जन्म कलिम्पोंग में हुआ था।

मूल पाठ : "Munnu heard a thud and a clink behind him but didn't turn."[158]

अनूदित पाठ : मुन्नू ने अपने पीछे किसी चीज़ के गिरने की या खनकने की आवाज़ सुनी, पर वह मुड़ा नहीं।

---

[156] Bahadur, means brave, has become a derogatory term for Nepali servants. They are also called Gaukhs. Retrieved from www.rsdb.org/race/nepalese

[157] मूल पाठ पृ. 48

[158] मूल पाठ पृ. 45

मूल पाठ : "She frequently beat up neighbourhood boys as a grisly overweight child, but she was now as thin as a bamboo stick."[159]

अनूदित पाठ : भारीभरकम बच्ची होने के कारण, वह आए दिन पड़ोस के लड़कों को मारती थी, लेकिन अब वह बांस से भी अधिक पतली हो गई थी।

पहला उदाहरण सरल वाक्य का है, जिसमें एक उद्देश्य और एक विधेय है। इसका अनुवाद भी सरल वाक्य है। दूसरा उदाहरण संयुक्त वाक्य का है, जिसमें दो उपवाक्य हैं तथा दूसरे उपवाक्य का उद्देश्य अव्यक्त है। इसके अनुवाद में भी यही पद्धति अपनाई गई है। तीसरा उदाहरण मिश्र वाक्य का है, जिसमें एक प्रधान उपवाक्य है तथा दो आश्रित उपवाक्य हैं, इन्हें 'but' से जोड़ा गया है। वाक्य-संरचना की दृष्टि से इसका अनुवाद भी मिश्र वाक्य है जिसमें 'लेकिन' के माध्यम से वाक्यों को जोड़ा गया है। अनुवाद में यह आवश्यक नहीं है कि सरल वाक्य का अनुवाद सरल वाक्य में, संयुक्त वाक्य का संयुक्त वाक्य में तथा मिश्र वाक्य का मिश्र वाक्य में ही हो। संयुक्त वाक्य का अनुवाद मिश्र वाक्य में तथा मिश्र वाक्य का अनुवाद संयुक्त वाक्य में भी हो सकता है। यह वास्तव में लक्ष्य भाषा के ढाँचे पर निर्भर करता है। इनमें प्रसंग के अनुसार, चरित्र के अनुसार तथा शैली के अनुसार कुछ बदलाव किया जा सकता है। मूल पाठ में कई जगहों पर काफ़ी लम्बे वाक्य मिले, जिनको एक ही वाक्य में अनुवाद करना मुमकिन तो था, परन्तु कहीं अटपटा न लगे इसी कारण एक ही वाक्य का अनुवाद एक से अधिक वाक्यों में किया गया। उदाहरण-

मूल पाठ : "Outside the window of my favourite seat, the rain pattered on the Manhattan streets, and a fur-coat-clad elderly woman, classically Upper East Side, caught my eye."[160]

अनुवाद : "मेरी पसंदीदा सीट से खिड़की के बाहर हो रही बारिश, मेनहट्टन की सड़कों पर छलक रही थी। पश्मीना कोट पहने एक बुज़ुर्ग महिला, जो अपर ईस्ट साइड की लग रही थी, उस पर मेरी नज़र पड़ी।"

इस तरह के अनुवाद से पाठक को पढ़ने में आसानी होती है तथा अनूदित पाठ मूल पाठ के समतुल्य भी रहता है।

साथ ही, मूल पाठ के कई लम्बे वाक्यों का उसी तरह के लम्बे वाक्यों में अनुवाद आसानी से भी हुआ है।

मूल पाठ : "Despite having been away from home for so long, I didn't have a real yearning for it, except when it came to momos, and Café

---

[159] मूल पाठ पृ. 44

[160] मूल पाठ पृष्ट. 243

Himalaya was the only place in Mahattan where you could get decent Tibetan Dumplings, the closest thing to Darjeeling momos in the city."[161]

अनुवाद : "इतने लम्बे अरसे तक घर से दूर रहने के बावजूद, मुझे इस जगह से कोई ज़्यादा लगाव नहीं है, लेकिन जब मोमो की बात आती है, तो मेनहट्टन का कैफ़े हिमालया ही एक ऐसी जगह है जहाँ सबसे अच्छी तिब्बती मोमो मिलती है और जो दार्जीलिंग मोमो के स्वाद से मिलता- जुलता है।"

लेखक ने संवाद शैली का प्रयोग किया है। संवाद द्वारा परिवेश का ज्ञान हो जाता है। कहानी-संग्रह में संवाद से मूल कथ्य और उसमें आए पात्रों की मनःस्थिति को स्पष्ट रूप से अंकित किया गया है। पात्रों के संवाद में स्थानीय रंग झलकता है। हिंदी की शैली समय के साथ तेज़ी से बदलती जा रही है। बरसों से अंग्रेज़ी के प्रभाव के कारण कई शब्द हिंदी में इस तरह घुलमिल गए है कि उनका हम हर दिन प्रयोग करते हैं। लक्ष्य पाठ में शोधार्थी ने ऐसे कई शब्दों का खुले आम प्रयोग किया है, जैसे- बस, फ़ोन, टीवी, कॉफ़ी टेबल आदि, दूसरी तरफ, लूट, घेराव, कच्चा रोड जैसे हिंदी शब्द अंग्रेज़ी के शब्दकोश में शामिल हो चुके हैं। हिंदी और अंग्रेज़ी के मिश्रण ने एक नई प्रकार की भाषा-शैली को जन्म दिया है, जिसे 'हिंग्लिश' (हिंदी + इंग्लिश) कहा जाता है। विशेषकर युवा पीढ़ी इस प्रकार की शैली का खुलकर प्रयोग करती है। इस तरह की भाषा को 'code mixing' भी कहा जाता है। वैसे 'हिंग्लिश' का प्रचलन भारत में काफ़ी पहले से है। स्वातंत्र्योत्तर दौर की कहानियों में भी इसका प्रयोग देखने को मिलता है। प्रस्तुत कहानी-संग्रह द *गोर्खास डॉटर* की एक कहानी 'द इमिग्रेंट्स' में इस प्रकार की शब्दावली का बहुलता से प्रयोग किया गया है। आज हिंग्लिश की शब्दावली और भी विशाल हो गई है। इंटरनेट, सोशल नेट वर्किंग साइट्स ने आज की पीढ़ी पर काफ़ी प्रभाव डाला है। इस कारण एक नई प्रकार की शब्दावली विकसित हो रही है। इस पुस्तक में ऐसे कई स्थल हैं, जहाँ इस शैली का प्रयोग देखने को मिलता है। उदारहण –

मूल पाठ : "The phone in the hallway put a stop to Kaali's day dream." [162]

अनुवाद : "दालान में फोन बजते ही काली के मनमोहक दिन का सपना वहीं रूक गया।"

उपर्युक्त उदाहरण में 'फ़ोन' अंग्रेज़ी शब्द हैं, उसको हिंदी में अनुदित करने की ज़रूरत नहीं। दोनों भाषाओं में समतुल्यता स्थापित करने के लिए यदि हिंदी का 'दूरभाष यंत्र' में अनुवाद करने पर यह

---

[161] मूल पाठ पृष्ट. 245

[162] मूल पाठ पृ. 6

अटपटा हो जाता। इस कारण इस तरह के शब्दों को लिप्यंतरित कर ज्यों-का-त्यों रख दिया है। कुछ अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत है-

अंग्रेज़ी शब्द (मूल पाठ)	लिप्यंतरण (अनुवाद)	हिंदी शब्द, अर्थ
Phone	फोन	दूरभाष, दूरभाषण यंत्र
Tv	टीवी	दूरदर्शन
Surgery	सर्जरी	शल्यचिकित्सा
School	स्कूल	विद्यालय
Pencil	पेंसिल	कूंची, तूलिका
Driver	ड्राईवर	चालक
Seat	सीट	आसन, गद्दी
Bottle	बोतल	बोतल
Shampoo	शैम्पू	केशमार्जक, केशमार्जन

समतुल्यता के आधार पर सांस्कृतिक विश्लेषण :

किसी भी साहित्यिक विधा के अनुवाद का सांस्कृतिक विश्लेषण करते समय सबसे मुख्य बात है कि अनुवादक, अनुवाद की मूल कृति में गहरे स्तरों में विद्धमान संस्कृति को लक्ष्य भाषा में कितना सुरक्षित रख पाया है। अनुवादक द्वारा संस्कृति बोधक शब्दों को जानना अतिआवश्यक है क्योंकि इन शब्दों के पीछे हजारों वर्षों की संस्कृति विद्धमान होती है। मूल कृति में ऐसे कई शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो हिंदी भाषा के हैं, परन्तु नेपाली भाषा में भी वैसे ही प्रयोग किए जाते हैं, जैसे- 'paan'।[163] ऐसे शब्दों को ज्यों-का-त्यों लिखना पड़ता है, क्योंकि अंग्रेज़ी में इनके शब्दों के लिए शब्द नहीं हैं। समतुल्यता के लिए 'पान' के समतुल्य 'बीटल नट' लिख सकते थे, परन्तु 'पान' उससे काफ़ी भिन्न है। इसलिए कई बार हिंदी व नेपाली के कुछ शब्दों का बस लिप्यंतरण कर प्रयोग किया जाता है।

भारतीय जीवन में पश्चिमी सभ्यता इस प्रकार घुलमिल गई है कि अब इनका हम सामान्य रूप से रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में प्रयोग करते हैं और हमें पता भी नहीं चलता। कठिनाई तब आती है जब हम इनका अनुवाद करने बैठते हैं। इनका अनुवाद हिंदी में करना लगभग नामुमकिन होता है। इस कारण हम जहाँ तक हो सके इनका समतुल्य अर्थ देने का प्रयत्न करते हैं। जैसे प्रस्तुत कहानी 'ए फादर्स जर्नी' में एक स्थान पर 'Hi-Five' शब्द का प्रयोग है। इसे 'High Five'[164] भी कहते हैं। ऑक्सफ़ोर्ड शब्दकोश में इसकी व्याख्या इस प्रकार की है, "A gesture of celebration or greeting in which two people slap each other's palms with their arms raised." इस शब्द के

[163] मूल पाठ पृ. 42
[164] मूल पाठ पृ. 73

समतुल्य हिंदी में 'दे ताली' शब्द मौजूद है, परन्तु शारीरिक भंगिमा एक दूसरे से बिल्कुल विपरीत। 'Hi-Five' में 'High' मौजूद है, अर्थात ऊपर, ऊँचा, जहाँ ताली हथेली को उठाकर ऊपर दी जाती है, जबकि 'दे ताली' कहने पर एक के ऊपर एक हथेली से ताली दी जाती है। भाव एक ही है, भंगिमा ही केवल अलग है, इसी कारण अनुवादक ने इस समतुल्य शब्द का प्रयोग किया। एक अन्य स्थान पर "… showed middle finger…" लिखा है। इसका सामान्य अर्थ निकलता है, बीच की अँगुली दिखाना या मध्यमा दिखाना, परन्तु पश्चिम में इसका अर्थ बहुत ही अश्लील है। इस अँगुली को दिखाने पर लोगों में मार-पीट, गाली-गलौच शुरू हो जाती है। अगर अनुवादक पश्चिमी सभ्यता से रूबरू नहीं होता तो इस भंगिमा का अर्थ समझना मुश्किल होता। इसके समतुल्य उन्होंने 'थप्पड़ मारने का इशारा किया' रखा है। इस भाव-भंगिमा का हिंदी में अनुवाद करना नामुमकिन है, क्योंकि भारतीय संस्कृति में ऐसी परिकल्पना मौजूद नहीं है। फलतः इसका समतुल्य शब्द प्रयोग करना पड़ा।

प्रस्तुत कहानी-संग्रह की भाषा अंग्रेज़ी है, परन्तु कई नेपाली शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। उनका समतुल्य हिंदी शब्द मिलने पर भी कई बार यह समस्या आ जाती कि उनका हिंदी समतुल्य रखें या मूल नेपाली शब्द रखकर ही उसका लिप्यंतरण कर दें। जैसे – 'laureys', 'khukkri', 'Tihaar', 'Dashain', 'Bhailinee' आदि। 'Bhailinee' शब्द का उदाहरण ले सकते हैं। भारत में लक्ष्मी माता की पूजा की जाती है और लड़की तथा गाय दोनों को 'लक्ष्मी' का ही रूप माना जाता है। वैसे ही नेपाली समाज में भी लक्ष्मी की पूजा होती है। 'भइली' नाम से गाया जाने वाला गीत मुख्यतः नारी को लक्ष्मी के रूप में दर्शाता है। लड़कियों की टोली यह गीत गाते हुए आशीष देती है। यहाँ 'भईलीनी' यानि 'लड़कियों की टोली' माता लक्ष्मी का प्रतीक है और वह गीत इस प्रकार है –

"भईलीनी आयों आँगन, बरारी कुरारी राखन, आउसी को दिनागाय तिहारो भईलो।"

अर्थात भईलीनी घर के आँगन में आ पहुँची है। घर की साफ़-सफाई कर रख लो। अमावस के दिन 'गाय माता' की आराधना की जा रही है। "प्रथाओं और रीति-रिवाजों को लिपिबद्ध करते समय उन स्थानीय पारिभाषिक शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए जिनके पर्यायवाची या समानार्थक शब्दों का हिंदी भाषा में अभाव है।"[165]

अनुवाद के दौरान ऐसे भी कुछ नेपाली पद सामने आए जिनका समतुल्य अर्थ होते हुए भी मूल शब्द को ही रखा गया। जैसे – 'Aayo bir Gurkhali'[166], जिसका हिंदी अर्थ है, वीर गोर्खा सिपाही आ गए हैं, वास्तव में यह पद उक्ति के रूप में प्रयोग होता है। मुख्यतः यह उक्ति 'गोर्खा रेजिमेंट' द्वारा कही जाती है। इस उक्ति का अनुवाद करने से इसके अर्थ में तो कोई बदलाव नहीं आएगा, परन्तु मूल तत्त्व अर्थात उक्ति का सार ही नष्ट हो जाएगा। मूल पाठ में प्रयुक्त नेपाली के कुछ पदों को अनुवादक ने हू-ब-हू लिप्यंतरित कर पाद-टिप्पणी द्वारा समतुल्य हिंदी अर्थ दिया है और ऐसा करने से अनुवाद हिंदी भाषी

[165] उपाध्याय, कृष्ण देव, लोक साहित्य की भूमिका, पृ. 5
[166] मूल पाठ पृ. 177

पाठकों के लिए बोधगम्य बन पड़ा है। इससे मूल कथ्य की गंध भी रहेगी और पाठक को स्थानीय सूक्ष्मताओं की जानकारी भी मिलेगी।

समतुल्यता के आधार पर अपशब्दों का अनुवाद :

अपशब्द अथवा गालियाँ भी संस्कृति का हिस्सा हैं। गालियाँ भी लोक व्यवहार या बोलचाल से उत्पन्न होती हैं। गालियों का प्रचलन समाज और स्थान पर भी निर्भर होता है। किसी समाज में अपशब्दों का बहुत अधिक प्रयोग होताहै, तो किसी समाज में बहुत कम। अनुवादक को यह ध्यान रखना चाहिए कि जिस अपशब्द का वह अनुवाद कर रहा है, वह शब्द लक्ष्य भाषा के लिए कुछ कम या अधिक, कठोर या भद्दा न हो। अनुवाद करते समय जितना हो सके उतना समतुल्य शब्द रखने का प्रयास किया गया है। कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत है –

मूल पाठ :

1. *She's thirty-five and has the mouth of a fifteen-year-old bitch.* (142)
2. *A whore calling a decent woman a whore.* (142)
3. *Of course, you are, you fool.* (8)

अनुवाद :

1. *खुद पैंतीस की होकर, ज़ुबान तो कैंची की तरह ऐसे चला रही है, जैसे पंद्रह साल की कुतिया हो।*
2. *खुद एक रंडी होकर, चरित्रवान औरत को वेश्या कह रही है।*
3. *बेशक तू भी जा रही है, गधी।*

मूल पाठ अंग्रेज़ी में है, जिसके कारण कुछ तो अंग्रेज़ी अपशब्दों का प्रयोग हुआ है। साथ ही, हिंदी एवं नेपाली के अपशब्दों का भी प्रयोग हुआ है। इस कहानी-संग्रह में नेपाली समाज के अनपढ़ तथा पिछड़े वर्ग को भी दर्शाया गया है। हर समाज तथा भाषा की अपनी गालियाँ होती हैं और नेपाली भाषा इससे अछूती नहीं है। नेपाली और हिंदी भाषा एक-दूसरे के काफ़ी नज़दीक होने के कारण हिंदी भाषा के अपशब्द नेपाली भाषा में घुलमिल गए हैं।

नेपाली अपशब्द	**हिंदी अर्थ**
Bokshee	चुडैल, डायन
Kukkur	कुत्ता
Bekaamey	बेकार
Condo	नितंब
Lutey	आलसी, दुबला-पतला इंसान
Bajiya	अवैध संतान, नाजायज़ संतान

Kuiree	गोरे विदेशी लोगों के लिए अनादरसूचक शब्द

हिंदी अपशब्द	**लिप्यंतरण**
Adivasi	आदिवासी
Randi	रंडी
Chutiya	चुतिया
Hapshis	हब्शी

अंग्रेज़ी अपशब्द	**अर्थ**
Uncivilised being	गंवार
Rascal	दुष्ट
Whore	वैश्या
Slut	पतुरिया
Bitch	कुतिया
Mangy dogs	मैला कुत्ता

समतुल्यता के आधार पर मुहावरे एवं लोकोक्ति का विश्लेषण :

मुहावरों की विशेषताओं के संदर्भ में संतोष खन्ना के अनुसार, "मुहावरे भाषा की चुनर में टंगे सितारों की तरह भाषा के सौन्दर्य को बढ़ाते हैं, मानव-मन के गहन-भावों, विचारों एवं संकल्पनाओं को स्पष्ट करने और उन्हें सार गर्भित अर्थ देने में सहायक होते हैं। मानव जीवन के चिरसंचित कटु-मधुर अनुभवों को सुन्दर, संक्षिप्त एवं सटीक अभिव्यक्ति देने के साथ मुहावरे अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच सेतु होते हैं।"[167] प्रस्तुत अनूदित पाठ में मूल पाठ के मुहावरों अथवा मुहावरेदार प्रयोगों का रूपांतरण प्रतिस्थापित करने में अनुवादक को काफी सफलता मिली है। कहीं-कहीं एक-दो स्थानों पर समतुल्य मुहावरा अनूदित पाठ में नहीं है, परंतु अनुवादक ने उसकी समानांतर अभिव्यक्ति तथा भावानुवाद प्रस्तुत किया है। कभी-कभी ऐसी स्थिति सामने आती है, जहाँ मूल पाठ में मुहावरे और लोकोक्तियाँ नहीं होते, केवल सामान्य वाक्य होते हैं, परन्तु ऐसे वाक्यों में लक्ष्य भाषा के मुहावरे और लोकोक्तियाँ बिल्कुल सही बैठ जाते हैं। प्रस्तुत कहानी-संग्रह का अनुवाद करते समय, ऐसी परिस्थितियाँ कई बार सामने आईं और शोधार्थी को जहाँ संदर्भ के अनुरूप मुहावरे सही लगे, वहाँ मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है।

[167] खन्ना संतोष, *अनुवाद के दर्पण में मुहावरों के तेवर, अनुवाद*, अंक 57 पृ.79

उदाहरण –

मूल पाठ : 'It was devoid of self-pit, and nothing he said insinuated that their parenting skills were lacking… '(पृ. 213)

अनुवाद : "उसकी बातों में कहीं भी अपने लिए दया का भाव नहीं था, न ही वह अपने माँ-बाप की परवरिश पर अँगुली उठा रहा था।"

मूल पाठ : 'I hoped she wouldn't catch the ballooning lump in my throat.'(पृ. 270)

अनुवाद : "मैं उम्मीद कर रहा था कि वह मेरे गले में अटकी बात को पकड़ न ले।"

आज के समय में भाषा अभिव्यक्ति मात्र का साधन न रहकर समाज की सांस्कृतिक विशिष्टताओं को भी उभारने लगी है। लेकिन, अपनी समस्त क्षमताओं के बावजूद मानव अपनी प्रत्येक अनुभूति को शब्द देने में सफल नहीं हुआ है। इसी कारण मानव जाति ने शब्दशक्ति के लक्षणा तथा व्यंजना का सहारा लेकर मुहावरे और लोकोक्ति का निर्माण किया है। यह वाक्यांश न होकर स्वतंत्र वाक्य है। इसका एक विशिष्ट अर्थ होता है, जो सामाजिक पृष्ठभूमि से रूढ़ होता है। सीमित वाक्यों में वह पूरी बात या अव्यक्त संदेश बयान करने की क्षमता रखता है। उसके शब्द चयन और वाक्य-विन्यास लयात्मक होते हैं, इसलिए इन्हें कंठस्थ करना आसान होता है। अनुवादक ने शब्दों को वैसे ही रहने दिया, जिससे सांस्कृतिक अर्थ अपने आप संप्रेषित हो जाता है।

उपसंहार

किसी भी साहित्यिक विधा के अनुवाद में अनुवादकों को समान समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अनुवाद के दौरान दो भाषाओं का आपसी संचार, अनुवादक की संवेदना तथा स्रोत साहित्य की मूल संस्कृति की समझ, प्रतीक, मुहावरा एवं लोकोक्ति का भरपूर ज्ञान आदि ऐसे गुण हैं, जो साहित्यिक अनुवाद के लिए अपरिहार्य हैं। साहित्यिक अनुवाद के लिए प्रतिभा, क्षमता और अभ्यास अत्याधिक महत्त्वपूर्ण है। कहानी-संग्रह में लेखक ने परिवेश को साकार एवं जीवंत बनाने का अथक प्रयास किया है। इस कृति में परिवेशगत एवं पात्रगत वर्णन ही इस कहानी-संग्रह के प्राण हैं।

अनुवाद की छात्रा होने के कारण भी शोधार्थी ने शोध में अनुवाद का एक पूरा अध्याय रखा है। अनुवाद अत्यंत ही रोचक विधा है। अनुवादक को एक कहानी या पाठ को दुबारा जीने का मौका मिलता है। परन्तु यह भ्रम नहीं रखना चाहिए की रोचक का अभिप्राय सरल है। किसी भी अनुवाद की सफलता के लिए विषय ज्ञान, भाषा ज्ञान के साथ-साथ अनुवादक की निष्ठा, प्रतिभा और परिश्रम पर भी निर्भर करता है। *द गोर्खास डॉटर* नामक पुस्तक का अनुवाद *गोर्खा की छोरी* करते समय प्रस्तुत शोधार्थी के सामने विषय, ज्ञान, शब्द संबंधी जो समस्याएँ आई, उनका समाधान नेपाली तथा हिंदी से सम्बंधित अनेक श्रोतों की सहायता से किया है। मूल पाठ के विभिन्न कहानियों में विषय की भिन्नता को देखते हुए, कहीं-कहीं शब्दानुवाद की आवश्यकता नज़र आई, तो कहीं भावानुवाद की। शोधार्थी ने अनुवादक होने की थोड़ी सी अनुवाद करते समय आज़ादी ली है। विशेषकर कहानी *पासिंग फैंसी* में शोधार्थी ने संवाद शैली को अपनाया है, क्योंकि मूल कहानी में संवाद शैली न होकर लम्बे-लम्बे अनुछेद में सामान्य वाक्य में लिखे हैं। इस कारण यह अंग्रेज़ी पाठकों के लिए भी यह जानना मुश्किल हो जाता है कि आखिर संवाद कर कौन रहा है? संवाद शैली में अनुवाद करने पर यह पाठकों के लिए आसन हो गई है। अनेक स्थानों पर लिप्यांतरण भी किया गया और कई स्थानों पर यथावत भी रखा गया, हालाँकि कई शब्दों के अर्थ को पाद-टिप्पणी के द्वारा प्रस्तुत किया गया। शोधार्थी ने समतुल्य सिद्धांत के अनुकूल लक्ष्य पाठ को मूलपाठ के जितना हो सके उतना समतुल्य रखने की चेष्ठा की है।

नेपाली समाज अपने को चाहे आधुनिक समाज माने, पर अब भी उनका समाज रुढ़िवाद ही है। अन्य समाज की तरह नेपाली समाज भी शिक्षा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव के चलते रूढ़ियों, कुरीतियों, व्यभिचारों जैसी विकृतियों का अड्डा बन गया है। इस कृति में छुआछूत, बाल विवाह, विधवा विवाह पर रोक एवं वेश्यावृत्ति का चलन, जैसी इस सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। छुआछूत का व्यवहार मानवीय मूल्यों का स्पष्ट उल्लंघन करता है, परन्तु दुर्भाग्यवश यह समाज में सबल ढंग से प्रवेश कर चुका है। यद्यपि युवा पीढ़ी ने इस तरह के सामाजिक मानदंडों को छोड़ दिया है, लेकिन इसे नकारा नहीं जा सकता कि सामाजिक और धार्मिक विश्वासों में ये आज भी समाहित है।

नेपाली समाज में जातिप्रथा पर आधारित भेदभाव जब तक समाप्त नहीं होगी, तब तक 21वीं शताब्दी में भी नेपाली समाज सच्चे अर्थों में आधुनिक समाज नहीं बन पाएगा। इन बुराइयों को समाज से पूरी तरह से मिटने में सबसे बड़ी समस्या सामाजिक स्वीकृति की आती है। इसमें बदलाव लाए बगैर किसी आमूलचूल परिवर्तन की उम्मीद व्यर्थ है। केवल युवा और आधुनिक पीढ़ी से ही शायद बदलाव की ऐसी उम्मीद की जा सकती है; संभवतः हमारे देश में सामाजिक न्याय वे ही ला सकेंगें।

विश्वयुद्ध के बाद कोई देश अपनी लम्बाई-चौड़ाई मीलों में नहीं नापता। विश्व अब सीमित हो गया है। इसी प्रकार भाषिक तथा सांस्कृतिक व्यापकता भी सिमट गई है। नेपाली तथा भारतीय दोनों संस्कृतियाँ भी काफ़ी मिलती-जुलती हैं। अनूदित पाठ *गोर्खा की छोरी* में कई सांस्कृतिक शब्दों को वैसे-का-वैसा रख दिया गया है, क्योंकि दोनों ही भाषाएँ तथा संस्कृति एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं। लेखक की अंग्रेज़ी भाषा में पकड़ बहुत मजबूत है। उनकी भाषा लचीली, रूपांतरित, परिवर्तनशील तथा सशक्त है। अनुवाद करते समय उसी के अनुकूल शब्दावली का प्रयोग करने की कोशिश की गई है। मूल कृति में अनेक मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। काफी हद तक हिंदी के समतुल्य मुहावरे रखने में सफलता हासिल हुई है। लेखक ने संवेदनशीलता और सूक्ष्मता से नेपाली समाज के संदर्भ में अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम का प्रयोग किया है। उनकी कृति के पात्र नेपाली समुदाय के परिवेश से ही उपजे हैं। इसी कारण नेपाली के कुछ शब्दों का आना सामान्य सी बात है। मूल कहानी-संग्रह में पात्रों का सामान्य नेपाली नाम रखा गया है, जैसे Prabin, Sabitri आदि। अनुवाद करते समय इनको 'प्रवीण' तथा 'सावित्री' न कर, 'प्रबीन' और 'साबित्री' रखा गया है, क्योंकि नेपाली में अधिकतर लोग 'व' के स्थान पर 'ब' का प्रयोग करते हैं। इससे नेपाली परिवेश स्थापित करने में सहायता मिली है। कुछ शब्दों के अनुवाद में अननुवाद्यता की स्थिति भी ई, उन्हें लक्ष्य भाषा में लिप्यंतरित कर यथावत रखा गया है। ऐसे शब्दों का विश्लेषण किया गया है। शोध में नेपाली समाज की जीवन शैली, आस्था, परम्पराएँ, कुरीतियाँ आदि जीवंत रूप में दर्शाने का सफल प्रयास किया गया है। इसके अनुवाद से नेपाली समुदाय विशेष की समस्याओं और संस्कृति को अन्य समाजों तक पहुँचाने में सहायता मिलेगी।

अनुवाद कार्य के दौरान शोधार्थी ने व्यक्तिगत क्षमता, मूल विषय का ज्ञान, स्रोत तथा लक्ष्य भाषा का ज्ञान, अनुवाद के उद्देश्य, सीमाएँ, परिक्षण विधि आदि सभी चीज़ो का ध्यान रखा है। साथ ही अनुवाद की सफलता के लिए अर्थपक्ष, शैलीपक्ष, संप्रेषणीयता एवं सौन्दर्यात्मकता का भी विशेष ध्यान रखा है। भाषाशैली और सांस्कृतिक स्तर पर अनुदित पाठ का विश्लेषण उदाहरण सहित किया गया है। पाठाधारित समस्याएँ के अंतर्गत *द गुर्खास डॉटर* के अनुवाद के दौरान शोधार्थी को जिन समस्याओं से सामना हुआ उनका वर्णन समाधान के साथ किया गया है। अनूदित पाठ की भाषा और शैली पर चर्चा करते हुए यह देखने की कोशिश की गई है कि लक्ष्य भाषा हिंदी किस तरह नेपाली समाज व्यवस्था की मान्यताओं, मूल्यों, जातीय मानसिकता और दुराग्रहों को व्यक्त करने में कितनी सक्षम हुई है। अनुवाद के विश्लेषण भाग में अपरिचित तथा स्थानीय शब्द, जिनका मूल पुस्तक में प्रयोग हुआ है और जो शब्द

अंग्रेज़ी या हिंदी पाठक के लिए अजनबी शब्द हैं। ऐसे शब्दों के स्पष्टीकरण के लिए एक तालिका के अंतर्गत पहले मूल अंग्रेज़ी लिपि में शब्दों को दिया गया है, साथ ही उन शब्दों के अर्थ भी दिए हैं। ऐसे कई अंग्रेज़ी शब्द होते हैं, जिनका हिंदी में एक से अधिक पर्याय एवं प्रतिरूप उपलब्ध हैं। लेकिन किसी एक प्रतिरूप के प्रयोग से अर्थ-विस्तार या अर्थ-संकोच की संभावना बनी रहती है और इस कारण हिंदी जगत में भी विद्वानों द्वारा इनका लिप्यंतरित रूप ही प्रयुक्त किया जाता है। प्रस्तुत अनुवाद में भी इस सीमा के कारण ऐसे शब्दों को लिप्यंतरित ही किया गया है एवं अनुवाद में आवश्यकतानुसार पाद-टिप्पणियाँ दी गई है।

शोध कार्य के दौरान ही गोर्खालैंड आंदोलन ने भयावह रूप ले लिया, जिसके चलते शोध में थोड़ा फेर-बदल करने की आवश्यकता पड़ गई। नेपाली अस्मिता पर विचार विमर्श करने पर यह पाया कि अस्मिता के इस संघर्ष द्वारा, वे अपने माथे से ‘भारतीय नेपाली’ या ‘भारतीय गोर्खा’ का ठप्पा हटाकर, अपना अस्तित्व केवल ‘गोर्खा’ शब्द से जोड़ना चाहते हैं। बहुत हद तक उनकी यह मांग सही है, क्योंकि ऐसे कई समुदाय हैं, जो भारत में भी हैं और दूसरे देशों में भी हैं, जैसे बंगाली, भारत तथा बांग्लादेश दोनों में हैं, सिंधी भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में हैं। परन्तु उनको भारतीय सिंधी या भारतीय बंगाली नहीं कहा जाता। इस कारण नेपाली अपना जन्मसिद्ध अधिकार ही नहीं, बल्कि वे अपना राजनीतिक अधिकार भी मांग रहे हैं। दोहरी सरकारों के बीच आरोप-प्रत्यारोप के खेल में ‘गोर्खालैंड मूवमेंट’ एवं मूवमेंट से जुड़े लोग पिसते चले जा रहे हैं। देखना यह है, उनका यह आंदोलन सफल हो पाता है या नहीं।

इस अनुवाद से हिंदी पाठक नेपाली समाज की सामाजिक समस्याओं तथा उनकी पीड़ा से परिचित हो पाएगा। आज ज़रूरत है कि अनुवाद के माध्यम से एक दूसरे के समाज एवं संस्कृति में हो रहे परिवर्तन से रू-ब-रू हुआ जाए तथा मानवता के सुखद भविष्य के लिए एक बेहतर विश्व का सपना देखा जा सके। अनुवाद के दौरान शोधार्थी को नेपाली समाज के विषय में अपने अल्प ज्ञान को विकसित करने का बहुमूल्य मौका मिला है और साथ ही अनुवाद से जुड़ी भ्रांतियों का भी समाधान हुआ है। प्रस्तुत शोध से नेपाली समुदाय के विषय में जानने के इछुक हिंदी पाठकों को लाभ पहुँचने की आशा हैं।

शोध के दौरान कई नए तथ्य नेपाली समाज के विषय पर सामने आए, जैसे नेपाल से नौकरी की तलाश में भारत आए हुए नेपाली, नेपाली प्रवासी की समस्या, चाय बागन के नेपाली मजदूर, बेरोज़गारी, नेपाली भगाओं आंदोलन आदि यह सब नेपाली समस्याओं के कुछ तथ्य मात्र है, जिनका शोध में वर्णन किया गया है। इन समस्याओं पर गंभीर शोध करने की आवश्यकता है। इसके लिए, नेपाली समुदाय से ही विद्वान या शोधार्थी इन विषयों पर शोध करने के लिए सामने आने चाहिए। नेपालियों को क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। ज़्यादातर मामलों में नेपाली लोग अपने अज्ञानता के कारण मुख्यधारा के लोगों का शिकार होते हैं। नेपाली पहचान के मुद्दे को

सुलझाने का एक तरीका है कि वह भारत के संविधान को समझे, सरकार की राजनीति को भलीभांति समझे। इसमें कोई संदेह नहीं कि राजनीतिक और आर्थिक अधिकांश समस्याएँ राज्य और केंद्रीय सरकार की कठोरता के कारण है। पर इससे नेपाली लोगों को हताश नहीं होना चाहिए। अगर वे चाहते हैं कि सरकार उन्हें गंभीरता से ले, तो उन्हें भी अपनी छवि बदलनी होगी। इन लोगों के सहिष्णु छवि के कारण पहले ही इनके समुदाय को अनगिनत क्षति पहुँच चुकी है। पहाड़ी लोगों की यह भी बाध्यता है कि उनके पास कई उभरती प्रतिभाएँ होने के बावजूद, उनके पास कोई मंच नहीं है। किसी बाहर वाले का इंतजार करने से अच्छा है, वे खुद से उस मंच का निर्माण करने की एक पहल करे।

कथा-साहित्य की एक विशिष्टता यह है कि यह किसी भाषा की सीमा में बंधकर नहीं रहता, बल्कि भाषिक सीमाओं को तोड़कर दूसरी भाषाओं के पाठकों के बीच पहुँच जाता है। इस कहानी-संग्रह के अनुवाद से लक्ष्य भाषा हिंदी के लिए यह काफ़ी उपयोगी साबित होगी। नेपाली समाज तथा भाषा पर लक्ष्य भाषा में रचना न के बराबर है, इस कारण स्वयं शोधार्थी को अधिकतर अंग्रेज़ी तथा नेपाली पुस्तकों का हवाला लेना पड़ा। भविष्य में आने वाले शोधार्थी जो, भारतीय नेपाली समाज या नेपाली समाज के इतिहास के बारे में जानना चाहते हैं, उन्हें इस शोध से लाभ होने की उम्मीद है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

(BIBLIOGRAPHY)

प्राथमिक स्रोत (PRIMARY SOURCE)

Parajuly, Prajwal (2012), *The Gurkha's Daughter,* Quercus, London.

द्वितीयक स्रोत : हिंदी पुस्तकें (SECONDARY SOURCE)

1. अग्रवाल, कुसुम (1999), *अनुवाद शिल्प समकालीन संदर्भ*, साहित्य सहकार, नई दिल्ली।
2. अय्यर, एन. ई. विश्वनाथ (1992), *अनुवाद भाषाएँ-समस्याएँ*, ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली।
3. आरसु (1995), *साहित्यानुवाद संवाद और संवेदना*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. कृष्ण, प्रणय (2008), *उत्तर औपनिवेशिकता के स्रोत और हिंदी साहित्य*, हिंदी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. कुमार, सुरेश (2007), *अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
6. गर्गेश, रविन्द्र एवं कृष्णकुमार गोस्वामी सं. (2007), *अनुवाद एवं भाषांतरण*, ओरिएंट लोंग्मन।
7. गोपीनाथन, एस. कंदस्वामी (1993), *अनुवाद की समस्याएँ*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. गोपीनाथन, जी. (2004), *अनुवाद: सिद्धांत और प्रयोग*, लोकभारतीय प्रकाशन, इलाहबाद।
9. गोस्वामी, कृष्ण कुमार (2008), *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. गुप्त, मोतीलाल (1972), *आधुनिक भाषा विज्ञान*, रिसर्च प्रकाशन, दिल्ली।
11. गुप्त, अवधेश मोहन (2008), *राजभाषा सहायिका*, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
12. गुप्ता, आर. ए. (2010), *लोकोक्तियाँ-हिंदी तथा अंग्रेज़ी*, पुस्तक महल, नई दिल्ली।
13. गुप्ता, मनोरमा (1995), *भाषा अधिगम,* केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
14. गुप्ता, विभा (2008), *अनुवाद के भाषिक पक्ष*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

15. टंडन, पूरनचंद, हरीश कुमत सेठी सं. (2005), *अनुवाद के विविध आयाम*, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।

16. टंडन, पूरनसिंह एवं मुनीश शर्मा (2003), *वस्तुनिष्ठ हिंदी,* जगतराम एंड संस, नई दिल्ली।

17. तिवारी, भोलानाथ (1986), *हिंदी भाषा की वाक्य संरचना*, साहित्य सहकार, नई दिल्ली।

18. तिवारी, भोलानाथ (1988), *अनुवाद कला*, शब्दकार प्रकाशन, नई दिल्ली।

19. द्विवेदी, महावीर प्रसाद (2007), *हिंदी भाषा*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

20. द्विवेदी, कपिलदेव (2005), *भाषा विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

21. नगेन्द्र (1993), *अनुवाद विज्ञान: सिद्धांत और अनुप्रयोग,* हिन्दी कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली।

22. नवीन, देवशंकर (2016), *आधुनिक अध्ययन का परिदृश्य*, प्रकाशन विभाग, दिल्ली।

23. पाण्डेय, मथुरादत्त (1970), *नेपाली और हिंदी : भक्ति.काव्य कातुलनात्मक अध्ययन*, भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली।

24. पांडे, हेमचन्द्र (2008), *अनुवादशास्त्र व्यवहार से सिद्धांत की ओर*, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।

25. भाटिया, कैलाश चंद्र (2004), *भारतीय भाषाएँ और हिंदी अनुवाद समस्या-समाधान*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

26. भाटिया, कैलाश चन्द्र (2004), *अनुवाद प्रक्रिया और स्वरूप*, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।

27. रेड्डी, राचमल्लू रामचन्द्र (1998), *अनुवाद के सिद्धांत समस्याएँ और समाधान*, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।

28. वत्स, जितेंद्र (2011), *हिंदी-अनुवाद समस्या और समाधान*, निर्मल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

29. शर्मा, रामविलास (2003), *भारत की भाषा-समस्या,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

30. शर्मा, शिवकुमार (2006), *हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ,* अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

31. शर्मा, सोहन (1984), *अनुवाद : सोच और संस्कार*, सन्मति प्रकाशन, बम्बई।

32. श्रीवास्तव रवीन्द्रनाथ (1995), *हिंदी भाषा : संरचना के विविध आयाम*, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली।

33. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ एवं कृष्णकुमार गोस्वामी सं. (2010), *अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ*, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।

34. सांकृत्यायन, कमला (1986), *नेपाली साहित्य*, लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद।

35. सक्सेना, प्रदीप (2000), *अनुवाद सैद्धांतिकी*, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा)।

36. सिंह, अनुज प्रताप (2008), *अनुवाद : सिद्धांत एवं व्यवहार*, ग्रंथलोक, दिल्ली।

37. सिंह, आशा (1983), *नेपाली और हिंदी का तुलनात्मक अध्ययन*, पारिजात प्रकाशन, पटना।

38. सिंह, रामसेवक (1972), *भारतीय अंग्रेज़ी कथा साहित्य*, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., हरियाणा।

39. सिंह, सूरजभान (2003), *अंग्रज़ी-हिंदी अनुवाद व्याकरण*, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

40. सिन्हा, रमण प्रसाद (2002), *अनुवाद और रचना का उत्तर जीवन*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

41. सिंहल, सुरेश (2008), *अनुवाद संवेदना और सरोकार*, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली।

42. सिंहल, सुरेश (2006), *अनुवाद : अनुभूति और अनुभव*, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली।

सहायक ग्रंथ : नेपाली

1. गिरी, जीवेन्द्र देव (2067 वि.), *नेपाली लोक साहित्यमा जन जीवन,* एकता प्रकाशन, काठमांडू।
2. चापागाई, नरेन्द्र (2045 वि), *केही भाषा : केही साहित्य*, प्रतिभा पुरस्कार प्रतिष्ठान, विराटनगर।
3. छिरिङ.,पासङ. (2002), *कार्यालयीय सहायक,* मञ्जुश्री प्रकाशन, दार्जीलिङ।
4. छेत्री, इन्द्रबहादुर (2009), *केही साहित्यिक समीक्षा*, ग्राफिक प्रिण्टर्स, सिलगढ़ी।
5. छेत्री, लील बहादुर (1986), *ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ*, श्याम प्रकाशन, दार्जीलिंग।
6. नामदुंग, जीवन (2000), *समकालीन नेपाली समालोचना,* साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
7. प्रधान, कृष्णचन्द्रसिंह (वि. सं. 2043), *नेपाली उपन्यास र उपन्यासकार*, साझा प्रकाशन, नेपाल।
8. बन्धु, चुड़ामणि (2066वि.), *नेपाली लोकसाहित्य*, एकता बुक्स, काठमांडू।
9. ताड़तिल, जार्ज, जीवन नामदुंग एवं ललिता राई 'अहमद' सं. (2009), *दार्जीलिंङ को नेपाली भाषी समुदाय सांस्कृतिक र भाषिक संक्रमण,* साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।

10. ताड़तिल, जार्ज एवं जीवन नामदुंग सं. (2005), *नेपाली भाषा साहित्यमा सांस्कृतिक चिह्नारी*, सेलेशियन कलेज, दार्जीलिंग।

11. थापा, बिक्रमबीर (1986), *तीस्ता देखि सतलज सम्म*, नेपाली साहित्य परिषद्, गुवाहाटी।

12. राई, असीत (1986), *भारती नेपाली साहित्यको विकासक्रम*, प्रकाश धवन, वाराणसी।

13. सिंह, लेखवीर (2028 वि.), *नेपाल राष्ट्रको ऐतिहासिक झलक*, नेपाली साहित्य भवन, विराटनगर।

14. ज्ञवाली, सूर्य विक्रम (संवत् 2019, *नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास*, रायल नेपाल एकेडेमी, काठमांडू।

15. शर्मा, बी. सी. एवं सरला भट्टाराई (2015), *गोर्खाकी छोरी,*पब्लिकेशन नेपा-लय, काठमांडू।

16. शर्मा, बाल चन्द्र (2020 वि.), *नेपाली संस्कृति*, काठमाण्डू, नेपाल।

17. शर्मा, बाल चन्द्र (2039वि.), *नेपाली साहित्य को इतिहास*, नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमाडौं।

18. श्रेष्ठ, शरणहरि (2045 वि.), *नेपालको आर्थिक तथा मानव भूगोल*, इन्टरप्राइज (प्रा.) लि., महाकालस्थान, काठमाडौं।

English Books

1. Ahuja, Ram (2006), *Research Method,* Rawat Publications, New Delhi.
2. Bassnett, Susan and Andre Lefevere ed. (1990), *Translation, History and Culture*, Pinter Publishers, London.
3. Bista, Dor Bahadur (1967), *People of Nepal*, Ratna Pustak Bhandar, Kathmandu.
4. Brass, Paul R. (1991), *Ethnicity and Nationalism: Theory and comparison*, Sage Publications, New Delhi.
5. Chakraborty, Piyas (2006), *Anthem Dictionary of Literary Terms and Theory*, Anthem Press, London.
6. Chatterjee, Partha (1994), *Nation and its fragments,* Oxford University Press, New Delhi.

7. Dewan, Dick B. (1991), *Education in the Darjeeling Hills: A Historical Survey, 1835-1985,* Indus Publishing Company, New Delhi.
8. Dixit, Kanak Mani (2002), *The State of Nepal,* Himal Books, Kathmandu.
9. Douglas, Robinson (2002), *Becoming a Translator*, Routledge.
10. Gellner, David N. (1997), *Nationalism and Ethnicity in a Hindu Kingdom: The Politics of Culture in Contemporary Nepal*, Harwood Academic Publishers, Netherlands.
11. Gupta, Dipankar (1996), *The context of ethnicity: Sikh identity in a comparative perspective,* Oxford university press.
12. Hoffman, Eva (1990), Lost in Translation: A life in a new Language, Penguin Books,
13. Hutt, Micheal (1999), *Modern Literary Nepali:An introductory Reader,* Oxford University Press, New Delhi.
14. Kennedy, Dane (1996), *The Magic Mountains: Hill Stations and the British Raj*, University Press, New Delhi.
15. Koul Omkar N., L. Devika (2000), *Linguistic Heritage of India and Asia,* Central Institute of Indian Languages, Mysore.
16. Lama, Mahendra P. (1997), *Thakur Chandan Singh, Makers of Indian Literature Series,* Sahitya Akademi, New Delhi.
17. Lawoti, Mahendra and Susan Hangen ed. (2013), *Nationalism and Ethnic Conflict in Nepal: Identities and Moibilization after 1990*, Routledge, New Delhi.
18. Lawrence, Venuti (2000), *The Translation Studies Reader*, Routledge Publication,
19. Lawrence, Venuti (2005), *The Translator's Invisibility: A History of Translation*, Routledge, London.
20. Malagodi, Mara (2013), *Constitutional Nationalism and Legal Exclusion: Equality, Identity, Politics and Democracy in Nepal (1990-2007),* University Press, New Delhi.
21. Nida, Engene.A and Charles R. Taber ed. (1982), *Theory and Practice of Translation,* The United Bibles of Societies.
22. Rathaur, Kamal Raj Singh (1983), *The Gurkhas: A history of recruitment in the British Indian Army*, Nirala publication, New Delhi.

23. Samanta, Amiya Kumar (2002), *Gorkhaland Movement: A study in ethnic separatism,* A.P.H Publishing Corporations, New Delhi.
24. Sharma, Khemraj (2013), *Gorkhas in the wilderness,* Concept Publishing Company Pvt, Ltd. New Delhi.
25. Singh, Udaya Narayan, P. P. Giridhar ed. (2006), *Translation Today,* Central Institute of Indian Languages, Mysore.
26. Sinha, A.C., Subba T.B. ed. (2004), *The Nepalis in Northeast India: A community in search of Indian Identity,* Indus Publishing Company, New Delhi.
27. Singh, B.N. and B.K.Singh ed.(1987*), History of All India Gorkha League, 1943-1949*, Nirmal Publishers and Distributers, New Delhi.
28. Singh, Udaya Narayan (2006), *Translation Today,* Central Institution of Indian Languages, Mysore.
29. Schulte, Rainer and John Biguenet ed.(1992), *Theories of Translation from Dryden to Derrida*, Chicago University Press.
30. Streets, Heather (2004), *Martial Races The military, race and masculinity in British imperial culture, 1857-1914*, Manchester University Press, New York.
31. St. Pierre, Paul and Prafulla C. Kar. ed. (2005), *In Translation Reflections, Refractions, Transformations*, Pencraft International, New Delhi.
32. Subba, Tanka Bahadur (1992*), Ethnicity, State and Development: A case study of Gorkhaland Movement,* Har-Anand Publications, New Delhi.
33. Subba, Tanka Bahadur, A.C. Sinha ed. (2016), *Nepali diaspora in a globalised era,* Routledge, New York.
34. Subba, T.B., A.C. Sinha, G.S. Nepal and D.R. Nepal, ed. (2009*), Indian Nepalis: Issues and Perspectives*, Concept Publishing House, New Delhi.

Articles

1. Bandhu, C.M (1989), The role of the Nepali language in establishing the national unity and identity of Nepal, in Kailash, *A Journal of Himalayan Studies,* Vol. XV NO. 3-4.

2. Chakraborty, Dyutis (1989), Gorkhaland: Evolution of Politics of Segregation, Special Lecture No. X, *Centre for Himalayan Studies,* North Bengal University, Darjeeling.
3. Gurung, Harka (March 2001), Nepali Nationalism: A matter of Consolidation, in *Himal: South Asia*, Vol. 14. No.3.
4. Messerschmidt, Donald A. (1982), Miteri in Nepal: Fictive ties that Binds, in *Kailash: A Journal of Himalayan Studies*, Vol.IX, NO.4.
5. Mozumdar, Kanchanmoy (April-June 1963), Recruitment of the Gurkhas in the Indian Army 1814-1877, *The Journal of the United Services Institution of India*, Vol. XXXXIII.
6. Onta, Pratyush (1996), Creating a Brave Nepali Nation in British India: Rhetoric of Jati Improvement, Rediscovery of Bhanubhakta and the Writings of Bir History, *Studies in Nepali History and Society*, Vol. 1.
7. Shrestha, Nanda R. (October 1985), The Political economy underdevelopment and external migration in Nepal, in *Political Geography Quarterly,* Vol.4.
8. Subba, Tanka Bahadur (March 1985), Socio-Cultural Aspects of Sikkim: Chie Nakane Re-examined, *Man in India,* Vol.65, No.1.

कोश ग्रन्थ सूची

1. कुमार, अरविन्द (1996), *सामानांतर कोश, हिंदी थिसॉरस (संदर्भ खंड)*, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली।
2. कपूर, बदरीनाथ (2004), *हिंदी-अंग्रेज़ी कोश,* प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
3. तिवारी, भोलानाथ (2002), *हिंदी पर्यायवाची कोश,* प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
4. तिवारी, भोलानाथ, अमरनाथ कपूर, विश्वप्रकाश गुप्त सं. (2007), *सम्पूर्ण अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. *नेपाली-हिंदी कोश* (2009), केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली।
6. *हिंदी-नेपाली कोश* (2004), केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली।
7. बुल्के, फादर कामिल (2005), *अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश*, कैथोलिक प्रेस, रांची।

कोश ग्रन्थ (अंग्रेज़ी)

1. Adhikary, Kamal Raj (2001*), A concise Nepali-English Dictionary*, United Graphic Printer, Kathmandu.
2. Karmacharya, K. L., *Ajanta's Advanced Learner's Dictionary English-English-Nepali,* Ajanta Prakashan, Delhi.
3. Soanes, Catherine (2010), *Oxford English Mini Dictionary*, Oxford University, Press, New Delhi.
4. Pathak, R. C. (2006), *Bhargava's Standard Illustrated Dictionary of the Hindi Language (Hindi-English Edition)*, Bhargava Book Depot, Varanasi.
5. Verma, S. K., R. N. Sahai (2008), *Oxford English-Hindi Dictionary*, Oxford University, Press, New Delhi.

Websites

1. Bhattarai, Raju (2007), International migration, multi-local livelihoods and human security: Perspectives from Europe, Asia and Africa, *Institute of Social Sciences*, Netherlands, Retrieved from URL: condesan.org/mtnforum/sites/default/files/publication/files/1139.pdf
2. Dixit, Kunda (2016), The sharp edge of history, *Nepali Times* Retrieved from, URL: nepalitimes.com/article/review/The-Khukri-Braves-review.2945
3. Frelick, Bill (2008), Bhutan's ethnic cleansing, *New Statesman,* Retrieved from, URL: https://www.hrw.org/news/2008/02/01/bhutans-ethnic-cleansing
4. Khawas, Vimal (2005), Nepali vs. Nepalese, *The Hindu,* Retrieved from, URL: www.thehindu.com/op/2005/06/19/stories/2005061901081400.htm
5. India, Oxford student in two-book deal, *Times of India* (2011), Retrieved from, URL: timesofindia.indiatimes.com/life-style/books/features/Oxford-student-in-two-book-deal/articleshow/10267998.cms?
6. *Leadership and the Gorkhaland Movement* Retrieved from URL: Shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/137574/7/07_chapter_03.pdf
7. *Maiti Nepal* Retrieved from, URL: www.endslaverynow.org/maiti-nepal

8. Parasar, Utpal (2016), "Manipur's new draft bill to control entry of 'non-locals' faces opposition", *Hindustan Times* Retrieved from, URL: www.hindustantimes.com/india-news/manipur-s-new-draft-bill-to-control-entry-of-non-locals-faces-opposition/storO7i7rwdUejZLJWg3aeeO8J.html
9. Prajwal Parajuly(2016) , My book is a love letter to the Nepalis language, Retrieved from, URL: english.onlinekhabar.com/2016/05/03/376327
10. Sharma, Anuradha (2017), Prajwal Parajuly / The Gurkha's son, *livemint,* Retrieved from URL: www.livemint.com/leisure/xvCdCondSh4E0hgiLzDcXK/Prajwal-Parajuly--The-Gurkhas-son.html
11. Shneiderman, Sara and Mark Turin (2006), Seeking the tribe Ethno Politics in Darjeeling and Sikkim, Himal South Asian, Retrieved from : old.himalmag.com/component/content/article/1662-seeking-the-tribe.html
12. www.rsdb.org/race/nepalese accessed on June 13, 2017

परिशिष्ट

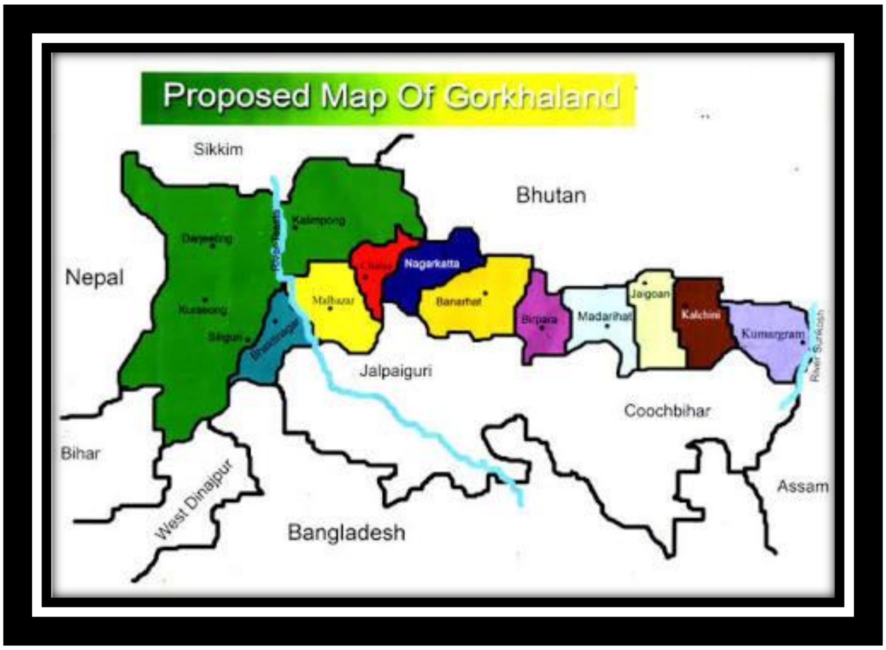

- गोर्खालैंड के लिए प्रस्तावित नक्शा

- खादाक : पूज्य लामा एवं अतिथि का सत्कार करने और अन्य शुभ अवसरों पर भेंट पूर्वक दिया जाने वाला महीनरेशम , से बना पारंपरिक कपड़ा

- गुनिऊ -चोलो : नेपाली महिलाओं का पारंपरिक पोशाक

- दाऊरा सुरुवाल : नेपाली पुरुषों का पारंपरिक पोशाक

- कीरा : भूटानी महिलाओं का पारंपरिक पोशाक

- घो : भूटानी पुरुषों का पारंपरिक पोशाक

- खुकरी : गोर्खा सिपाहियों का अस्त्र

- सिस्नु : बिछु घास

- पोते : नेपाली महिलाओं का मंगलसूत्र

- तोंग्बा : कोदो से बनाया गया पारंपरिक शराब

- सेल रोटी : नेपाली समुदाय का चावल से बनाया गया मुख्य पकवान

- भईलीनी : नेपाली युवतियां टोली में दीपावली के समय मिलकर नाच-गान करती हैं